

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

	र्भ हो ।।श्रीजिनाय नगः।।	Ş	
<b>आ</b> चা৹	🕺 ॥ श्रीआचाराङ्गसूत्रम् ॥	in the second se	सूत्रम्
<b>ા</b> કરશા	र्भू ( मूळ अने शिलांकाचार्ये रचेली टीकानुं भाषांतर ) भाग त्रीजो	オメ	ાહરશા
	माग त्राजा छपाची प्रसिद्ध करनार—पण्डित श्रावक हीरालाल हंसराज (जामनगरवाळा)	**	
	( झितोष्णीय नामनुं त्रीजुं अध्ययन. )	N.	
	ये बीज़ुं अध्ययन कहुं इवे त्रीज़ुं कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे:—पूर्वे कस्तपरिज्ञा नामना पहेला अध्ययनमां आ अध्य- यननो अर्थाधिकार कहा छे. के क्षीत, अने गरमीनो अनुकुळ के पतिकुळ ( सुख-दुःख ) परिषइ आवे; तो, समभावे सहन क- र रवो. ते हवे कहे छे:—	×*-**	
	ै रवो. ते हवे कई छैः— अध्ययननो संवंध शखपरिज्ञामां कहेल महात्रतने धारण करेला; अने, लोकविजय नामना अध्ययनमां बतावेल संयम पाळनारा य	1967	

সামা৹	तथा कपाय विगेरेने जीतनारा मोक्षाभिछापीसाधुने कोइ वखते अनुकुळ के प्रतिकुळ परिषइ आवे छे,ते वखते मन निर्मळ रा- स्वीने तेने समभावे सइन करवा. ए प्रमाणे, संबंधयी आ त्रीज़ं अध्ययन बताव्युं छे. एना उपक्रम विगेरे चार अनुयोगद्वार थाय छे. तेमां उपक्रममां अर्थाधिकार वे प्रकारे छे, नेमां अध्ययननो अर्थाधिकार पूर्वे कह्यो छे. अने उद्देशनो अर्थाधिकार इवे निर्धक्तिकार बतावे छे. पढमे सुत्ता अस्सं जयत्ति. <sup>1</sup> ? बिइए दुहं अणुहवंति <sup>२</sup> । तइए न हु दुक्खेणं, अकरण याए व समणुत्तिं १९८	सुत्रम्
ાજરરા	🕽 पढमे सुत्ता अस्संजयत्ति. १ बिइए दुहं अणुहवंति । तइए न हु दुक्खेणं, अकरण याए व समणुत्ति १९८	ાઇરસા
	🆒 उद्देसीमें चउत्थे, अहिंगारों उ वमणे कसायाणें। पाव विरईओ विउणी, उ संजमी पुरुष मुकुखुति ॥१९९॥ 🎲	
	(१) पहेला उद्देशामां कद्धं छे केः—जे भावनिद्रामां सुता छे, ते सारा विवेकथी रहित छे. मन्नाः—ते क्या छे ? उत्तरः—जे गृहस्थो छे ते. ते भावथी सुतेलाओना दोष कहे छे. तथा जे भावथी जागता छे, तेना गुणोने वतावे छे. सूत्र 'जरामच्चुं विगेरे. (२) बीजा जरेशामां जे गृहस्थो भावनिद्रामां सुतेला छे, तेमने थतां दुःखो वतावे छे. ते मूत्र 'कामेसु गिद्धा'	
	🐒 प्रश्नःते क्या छे ? उत्तरःजे गृहस्थो छे ते.	
	🔆 ते भावथी स्रुतेलाओना दोष कहे छे. तथा जे भावथी जागता छे, तेना गुणोने वतात्रे छे. सूत्र 'जरामच्चुं विगेरे. 🛛 🕅	
Ĩ	🕻 (२) बीजा जोशामां जे गृहस्थो भावनिद्रामां सुतेला छे, तेमने थतां दुःखो बतावे छे. ते मूत्र 'कामेसु गिद्धा'	
	🖒 ते साधु नहीं. ते सूत्र कहे छे. 'सहिए दुक्ख'	
	🕻 चोधा उद्देशामां कषायोन वमन करवुं. एटले न करवाः अने वाकीनां पापो छोडवां. ते पंडित साधन संयम छे. अने मथम	
	त्रीजामां कढ़ुं छे केःफक्त दुःख सहन करवाथीन साधु न कहेवाय पण जो, संयमअनुष्ठान करे; तो ते साधु छे नहींतो, ते साधु नहीं. ते सूत्र कहे छे. 'सहिए दुक्ख' चोथा उदेशामां कषायोनुं वमन करवुं. एटछे न करवा; अने वाकीनां पापो छोडवां. ते पंडित साधुनुं संयम छे, अने मथम क्रीधथी छड्ने छोभ सुधी कषायो दुर थवाथी क्षपकश्रेणिना क्रमथी केवळबान माप्त थाय छे, अने अघातिकर्म दूर थवाथी आठे	

	र्भ कर्मोनो नाज्ञ यतां मोक्ष थाय छे, ने चे गाथामां वताब्धुं छे. नामनिष्पन्ननिक्षेपामां 'जीतोष्णीय' अध्ययन छे माटे जीत उष्ण ब- र्म न्नेना निक्षेपा कहे छे:—	X
<b>आ</b> चা৹	(र्ट) म्नेना निर्क्षेपा कहे छेः— अनामं ठवणा सायं, दबे भावे य होड़ नायठ्वं । एमेव य उपहम्सवि, चउविहो होड निक्स्वेत्रो नि, गा.।२००।	र् सूत्रम्
<b>ા</b> કરરૂ ॥	ी नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव एम चार मकार निक्षेपा छे. तेमा नाम स्थापना सुगमने छाडी द्रव्य निक्षेपी शति अने उष्णनी कई छे.	४ ४ ॥४२३॥ ★
	र्त दब्वे सीयल दब्वे, दब्वुणहं चेव, उण्हदब्वं तु । भावे उ पुग्गलगुणो जीवस्स गुणो अणेगविहो ।२०१। इ शरीर भव्य शरीर छोडी व्यतिरिक्तमां गुण गुणीना अभेदपगाथी द्रव्य शीत ठंडा गुणथी युक्त द्रव्य, अथवा शीतनुं कारण	*
	र्म जे द्रव्य ते द्रव्यना प्रधानपणाथी ने शीत द्रव्य छे, ते वरफ हिम करा विगेरे छे, एज प्रमाणे उष्णमां गरम पदार्थ लेवा. भावयी वे प्रकारे छे एटले पुहालाअयी, तथा जीवाअयी छे, ते माथाना वे पदमां बतावेल छे, तेमां पुहालाअयी ठंडो गुण	× X
	🛠 गुणना प्रधानपणाने बताववारूपे छे, तेम भाव उष्णमां पण जाणवुं. जीवने आश्रयी श्रीत अने उष्ण रुपवाळो अनेक प्रकारे गुण	*
	🖞 छे. जेमके औदयिक विगेरेज भावों छे. तेमां औदयिक ते कर्मना उदयथी प्रगट थयेल नारकी विगेरे जीवोने भवना आश्रयी पो- 🎗 तानी मेळे कपाय थाय छे ते उष्ण भाव जाणवो. अने औपश्रमिक ते सात प्रकृतिना उपश्रमथी उपश्रम सम्यक्त तथा विरति (चारित्र)	1 1 1
	त ताना मळ कराच याच छ त उष्ण माद जाणवा. अन आपसामक त सात प्रकृतिना उपसमया उपसम सम्पत्तत तया विरोत (चारित) के रूप ठंडों भाव छे. तथा क्षायिक भाव पण ठंडो छे. कारणके ते क्षायिक सम्पत्तव तथा चारित्र रुपवालो छे. अथवा बधा कर्मनो दाइ ते (क्षायिकभाव) सिवाय उत्पन्न थतो नथी. माटे ते उष्ण छे. तेज प्रमाणे विवक्षाथी बीजा पण बे	

	र्भ प्रकारे थाय छे (आम बे भाव आव्या, वाकीनामां पण तेज ममाणे जाणवा.)	
<b>आ</b> चा०	जीवना आ भवगुणनुं श्रीतपणुं अने उष्णपणाना रूपनुं वर्णन निर्धुक्तिकार खुलासाथी पोतेज कहे छै. दे सीयं परिसहपमायुवसमविरई सुहं चउण्हं तु । परीसहतचुज्जमकसाय, सोगाहिवेया रई दुक्खं दारं ।२०२।	<sup>४</sup> सूत्रम्
ાકરશા	भ भावशीत, ते अहीं जीवना परिणामरूपे ग्रहण करे छे. ते आ परिणाम छे, के संयममार्गमांथी न पडतां साधुए सकाम	ાકરયા
	ैं निर्जरामाटे परिषदो समभावे सहन करवा, तथा कार्थमां झिथीलता एटले 'विहारमां ममाद' न करवो तथा मोहनीय कर्मने ज्ञांत 🖌 करतुं ते सम्यक्त्व. देज्जविरति तथा सर्व विरति लक्षणवाळा छे अथवा उमज्ञम अेणो आश्रयी छे. ते अथवा क्षपक श्रेणी आश्रवी	
	🛉 कषाय विगेरेना क्षयरूप छे,	<b>*</b>
	了 उदयथी भोगवचुं ते छे. आ परिषइ विगेरे तथा शीत गरमी बन्नेने गाथाना वे पदमां कहे छेः—	¥I S
	🎉 🐘 परिषह पूर्वे कहेला स्वरूपवाळा छे; अने तपमां उद्यय करवो; ते तप वार प्रकारतुं छे, ते इक्ति प्रमाणे आचरवुं; तथा क्रोध 🄇	t j
	ि विगेरे कपायो छे, तथा इष्ट न मळे; अथवा नाज्ञ थाय, तेथो झोक थाय; ते आधि छे, तथा स्त्री, पुरुष, नधुंसक, एम त्रण वेद छे. अरति एटल्ले, मोहना विपाकथी चित्तमां मलिनता थाय ते छे, तथा रोग विगेरे दुःखो छे. आ परिषद विगेरे पीडाकारक होवाथी अरमा तपे तेथी उष्ण छे. आ घमाणे डुंकामां गाथानो अर्थ छे, अने एनुं विज्ञेव वर्णन निर्धुक्तिकार पोते कहे छेः—परिषह,	K K
	🎢 आत्मा तपे तेथी उष्ण छे. आ प्रमाणे ढुंकामां गाथानो अर्थ छे, अने एनुं विज्ञेव वर्णन निर्धुक्तिकार पोते कद्दे छेः—परिषह, 🏻	

	🐔 शीत अने उष्णताना कहा; तैमां मंदबुद्धिवाळाने विचार विना शंका थाय के, उल्र्ड समनाय; तेथी खुलासो करे छे.	₹I
- आचা৹	🤾 इत्थी सकारपरासहो य दो भावसीयला एए । सेसा वीसं उण्हा परीसहा हंति नायव्वा ॥२०३॥ 👘 🗌	ु सूत्रम्
แระจาก	स्त्री-परिसह, अने सत्कार-परिसह, ए बन्ने शीत छे, कारणके, भाव मनने ते गमे छे, बाकीना वीज्ञ परिसह प्रतिकुळ होवाथी ते मनने गमता नथी; माटे उष्ण छे. अथवा परिसहोनुं शीत-उष्णपणुं बीजी रीते कहे छे: जे तिब्वप्परिणामा, परिसहा तेभवे उण्हा उ । जे मंदप्परिणामा परिसहा ते भवे सीया ॥नि. गा. २०४दारं॥	
410 / 70	🎢 तें मननें गमता नथी; साटे उष्ण छे. अथवा परिसहोनुं झीत-उष्णपणुं बीजी रीते कहे छे:—	ક્ષે શકરપા
	🖁 जे तिब्वप्परिणामा, परिसहा तेभवे उण्हा उ । जे मंदप्परिणामा परिसहा ते भवे सीया ॥नि. गा. २०४दारं॥ 🏼	ΣĮ
	🚺 🔰 दुःखेकरीने सहन थाय; तेवा तीव्र स्वभाववाळा गरम परिसह जाणवा, अने जे मंदपरिणामवाळा ( सहेळाइथी सहन थाय: ) 🕅	Ť
	🌒 ते श्रीतपरिसद छे, तेनो खुलासो करे छे के, जे शरीरमां दुःख उत्पन्न करनारा थायः अने सहेलाउथी सहन न थाय. तथा मनमां 🕻	
	🆒 खेद करात्रे; ते तीव परिणामवाळा होवाथी उष्ण छे, अने जे परिषह फक्त शरीरने दुःख उत्पत्र करे छे, पणवळवान पुरुषने मननुं 🖡	R
į	े खेद कराने; ते तीव परिणामवाळा होवाथी उष्ण छे, अने जे परिषह फक्त शरीरने दुःख उत्पन्न करे छे, पणवळवान पुरुषने मननुं दःख तेमां यतु न होय; ते भावथी मंदपरिणामवाळा होवाथी ते शीत-परिषह छे.	Ť
	🖌 अथवा जे घणा जोगमां परिषद आवे ते उत्पा छे. अने जे शरीर तपर धोरी असर करे. ते जीत-परिषद जाणता	
	🗴 हवे, परिषह पछी साथेज श्वीतपणे जे ममादपद लीधुं छे, अने तपश्चर्यामां उद्यम करवो; ते ऊष्णपणे लीधुं छे. ते बन्नेने	R
	र्दे नीचली गाथामां कहे छेः—	ŗ
	हवे, परिषद्द पछी साथेज झीतपणे जे ममादपद लीधुं छे, अने तपश्चर्यामां उद्यम करवो; ते ऊष्णपणे लीधुं छे. ते बन्नेने नीचली गाथामां कहे छे:— अम्मंमि जो पमायइ अरथेवा सीअऌति तं बिंति । उज्जुतं पुण अन्नं तत्तो उगहंति णं बिंति ॥नि.२०५॥	A A

आचा <b>०</b>	धर्म ते अमण धर्ममां जे साधु ममाद करे, पोतानी किया न करे. अथवा जेनाथी अर्थ संघाय ते धन धान्य, सोनुं विगेरे मेळववा उपाय करे, तेवाने ज्ञीत (ठंडो ) परिषद कहे छे, पण जे साधु ममाद न करे अने संयममां ज्यम करे ते उष्ण परिषद्द कहेवाय छे. (सूत्रमां णं' ज्ञोभा माटे छे ) हवे उपज्ञम पदनी व्याख्या करे छे.	स्त्रम्
	सीईभुओ परिनिब्बुओ य संतो तहेव पण्हाणो (रुहोओ) । होउवसंत कसाओतेणु वसंतो भवे जीवो २०६ उपक्षम गुण क्रोध विगेरेना उदयना अभावमां होय छे, अने ते कषाय अग्नि उंढो थवाथी आत्मा ठंढो थाय छे, तथा क्रोध विगेरे अग्निनी ज्वाळा बुझे त्यारे ते परिनिर्हत थाय छे, अने रागद्वेप रुप अग्निना उपश्रमथी अप्सांत छे तथा क्रोधादि परिताप दूर थवाथी आत्मा आनंदित थाय छे अने तेज झुली छे कारण के जेने कषायो शांत छे तेज सुखी छे. अने तेथीज उपश्चांत कषा- यवाळो आत्मा श्रीत थाय छे. आ बधां पदो एक अर्थवाळां छे. एटल्ठे (१) श्रीतीभूत (२) परिनिर्वृत (३) न्नांत (४) मल्हाद. आ उपशांत कषाय कहेवाय छे (आ पदोनो अर्थ क्रोधादिने श्वांत करवानो छे) हवे विरतिपद कहे छे.	
	अभय करो जीवाणं सीयघरो संजमो भवइ सीओ । अस्संजमो य उण्हो, एसो अन्नोऽविपज्जाओ ॥२०७॥ जीवोने अभय करवानो आचार ते शीत (छुख) छे. तेन्तुं घर छे, ते, प्र. क्युं? उत्तर. सतर प्रकारनो संयम पाळवो ते शीत छे. कारणके; तेमां बधां दुःखनो हेतु जे रागद्वेप विगेरेनां जोढलां छे, ते विरतिमां दूर याय छे. एथी, डलटो असंयम ते ऊष्ण छे.	

	ł	आ शीत अने ऊष्ण लक्षणरूप-संयम, असंयपनो बीजो पर्याय, सुख दुःखरूप छे. ते विवक्षाना कारणथी थाय छे. तेथो हवे, प्रयापन्थं किन्ना करे ले	R	
সাৰ্ঘা০	¥	છાલ્યપદ્વુ વિવર્ષ્ય અર છે.	रे सः	त्रम्
ાાઝરણા	2	निवाणसुहं सायं सोईभूयं पयं अणाबाहं । इहमवि जं किंचि सुहं तं सोयं दुक्खमवि उण्हं नि. ॥२०८॥		
1167011	Ď	मोक्षसुखतुं स्वरुप	A 118-	રહા
	X	अहींयां सुखने शीत कढ़ुं छे, अने ते रागद्वेप विगेरेनां वधां जोडकां दूर यवाथी घणुंज अने एकांत वाधारहित लक्षणवाछ	Ş.	
	I A	निरुपाधिक परमार्थ चिंतामां विचारतां मुक्तिनुं सुल ठेज साचुं सुख छे, पण बीजुं नथी. अने ते सुख आठे कर्मनो ताप दूर थवाथी	Č.	
	¥	शीत छे. ते निर्वाण सुख बतावे छे, अने निर्वाण ते बधा कर्मनो झय जाणवो, अथवा विशिष्ट आकांश प्रदेशवाळं स्थान (सिद्धिस्थान)	Æ	
	ST.	तेमां (जीव निश्वल पणे) रहेवाथी निर्वाण सुख छे. अने आ वधां पदो एक अर्थवाळां छे. एटले साता श्रीतीश्रुत, अनावाधपद ए	Ž	
	Ś	त्रणेनो अर्थ निर्वाण सुख छे. अने आ संसारमां पण सातावेदनीयना विपाकथी उदयमां आवेर्छ सुख ते मनने आनंद आपवाथी शीत छे. अने तेथी उलटुं पापथी उदयमां आवेर्छ दुःख ते उष्ण छे.	Ç,	
	×	साप छ. अन तथा उल्ड सापथा उदयमा आवछ दुत्स त उष्ण छ. हवे कषाय विमेरे पदो कहे छे.	Ŝ.	
			Č.	
	₽	डज्झइ तिव्वकसाओ सोगभिभूओ उड्झवेओ य । उण्हयरो होय तवो कसायमाईवि 'जं' डहइ ॥२०९॥ तीव्र एटले घणा प्रमाणमां विपाक उदयमां आवतां कषायो जेने उदयमां आव्या होय ते बळे छे. आ कपाय अग्निवाळो जीव		
	X	ા આ જુએ છે. મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય મુખ્ય છે. મુખ્ય સંખે છે કે આ મારકામ ગામવા આવે 🛔	₩I	

आचा० ॥४२८॥	फक्त बळे छे, एटलुंज नहीं पण शोक एटले व्हालांना वियोगथी उत्पन्न थयेल शोकथी मूद बनीने शुभ व्यापार (धर्म) ने जे शुले ते पण बळे छे. तथा जेने संसारी सुख भोगववानी इच्छा थइ होय, तेबोपण बळे छे कारण के पुरुष बेदवाळो स्त्रीने इच्छे छे. अने स्त्री पण पुरुषने इच्छे छे, अने नधुंसक तो बंनेने इच्छे छे तेनी माप्ति न थाय तो आकांक्षा पुरी न थवाथी ते अरति दाहे बळे छे, अने (च) श्रब्दथी (शब्द विगेरे पांच इन्द्रियना विषयोनी) इच्छा अने कामनी माप्ति न थाय तोपण जीव अरतिना दाहे बळे छे, तेथी आ ममाणे कषायो शोक अने वेदनो उदय ए त्रणे जीवने बाळनारा होवाथी ते उष्ण छे. अथवा बधुं मोहनीयकर्म, अथवा आठे मकारनुं कर्म उष्ण छे आधी पण वधारे दाहकपणावाळुं तप छे ते अडधी गाधामां बताव्युं छे, कारण के उष्ण कपा- रे तेम शोक अने वेद उदयने पण बाळे छे. आ ममाणे अनेक रीते शीत उष्ण बतावी जे अभिमायवडे आचार्ये द्रव्यभावथी भेदवाळा	<b>सूत्रम्</b> ॥११२८॥
	प्र छ, तथा आ ममाण कथाया शाक अन वदना उदय ए त्रण जावन बाळनारा हावाया त उच्च छ. अथवा बधु माहनायकम, अथवा आठे प्रकारतुं कर्म उच्च छे आधी पण वधारे दाहकपणावाळुं तप छे ते अडधो गाथामां बताव्युं छे, कारण के उच्च कथा- यने पण तप तपावे छे. माटे ते तप उच्चतर छे. मूळ गाथामां कषाय जोडे आदि शब्द छे. तेथी एम जाणचुं के तप कथायने बाळे; तेम शोक अने वेद उदयने पण बाळे छे. आ ममाणे अनेक रीते शीत उच्च बतावी जे अभिमायवडे आचार्ये द्रव्यभावथी भेदवाळा परिषह ममाद उद्यम विगेरे रूपवाळा शीत उच्च बतावेल छे, ते आचार्यना अभिमायने हवे प्रगट करे छे. सीउण्हफाससुहदुह्यरीसहकसायवेयसोधसहो । हुजा समणो सया उज्जुओ, य तवसंजमोवसमे ॥२१०॥ श्रीत अने उच्च प बन्नेनो जे स्पर्श छे, तेने सहन करे; एटले, शीतस्पर्श अने उच्च क्यां छल अने विपरित थतां दुःख अनु- जीववेदनाने अनुभवतो होय; छतां आर्तध्यान न करे; एटले, शरीर अने मनने अनुकुळ थतां छल अने विपरित थतां दुःख अनु- भवे; तथा परिषह कषायवेद तथा शोक जे ठंडी तथा गरमीथी उत्पन्न थाय ते बधाने सहे छे. आ प्रमाणे ठंड अने उच्च विगेरे	

ł	ł	सहीने साधु इंमेशां तप अने संयमना ऊपक्षममां ज्यमवाळो थाय (अर्थात् ग्रहस्थ उनाळामां के शियाळामां जीवोने दुःखरूपी-पाणी	đ	
आचা৹	2	तराग साबु इमरा। तेप अने संयमना अपसम्मा उद्यमवाळा याथ (अयात् ष्टब्स्य उनाळाना का संयाळाना गावाग पुरल्खरा वागा छांटवानुं के, अग्नि बाळवानुं पाप करे छे. तथा हायपीट करे छे, अथवा, बगीचा विगेरेमां जइ वनस्पतिने दुःख आपी पोते सुख मानी अहंकार करे छे तेवुं साधुए न कार्डु; पण सुखदुःखने समभावे सहन करीने समाधिमां रहेवुं.) हवे समाप्त करतां ए टंड तापने घणा प्रमाणमां सहेवां ते बतावे छे.		सुत्रम्
1122811	Ŷ	भानी अहंकार करे छे तेवुं साधुए न कार्डु; १ण सुखदुःखने समभावे सहन करीने समाधिमां रहेवुं.) हवे समाप्त करतां ए टंड जागरे प्रचर परणणगं प्रदेशं ने जगरे ले	Ķ	ાકરડા
86 Q \ 341	$\hat{\mathcal{P}}$	तीपण वर्णा प्रमाणमा सहवा त वताव छ. सीयाणि य उण्हाणि य, भित्रखूगं हुंति विसहियबाइ।कामा न सेवियबा, सीओसणिज्ञस्स निज्जुत्ती २११		11.20 1 248
	7	परिषर-ण्यात ज्याग-निरति मन्तरप जे पतो पतें दंहपणे यताव्यां. तथा परिषरतप जराम-कषाय जोकवेत अरतिरूप पतें	ľ. ∕	
1	Å	जण्णरूपे बताव्यां छे. ते बधांने मोक्षाभिलाषी साधुए सहेतां; पण, ते सुखनो हर्ष, अने दुःखनो शोक न करवो; ते परिषहोने	× *	
I	XXXXXXX	सम्यक् दृष्टि जीव जो कामनी अभिलाषा दूर करे; तो तेनाथी सहन थाय छे, माटे, निर्युक्तिकार कहे छे केगमेतेवा परिषह	Ś	
ł	X	ठंड के, उष्णताइना आवे; तोपण, ते कामो (सोटी इच्छाओ) मां चित्त न राखवुं तथा कुमार्गे न जवुं.	СI Я	
	×	आ प्रमाणे, त्रीजा अध्ययननो नामनिष्पन्न निक्षेपो कह्यो. हवे, सूत्र अनुमममां अस्खलित विगेरे गुणवाळं निर्दोष वचन कहेवुं ते आ छे— राज्य अप्रकी स्वयद मार्ग्रीयो ज्यापतंत्रि (पान्य, १०४)	ζ.	
	X	सुत्ता अमुणा सथा मुणाणा जागरात (सूत्र० १०३) एवं मन माथे मनो संबंध नगवे के बाकोना आई (नवाना) मां जे भगे ते बाखी के गरले आ लोकमां जेवा भाव	Č.	
-	X	सुत्ता अमुणी सया मुणीणो जागरंति (सूत्र० १०५) पूर्व सूत्र साथे एनो संबंध बतावे छे, दुःखोना आर्त्त (चक्रावा) मां जे भमे ते दुःखी छे, एटले आ लोकमां जेओ भाव निद्रामां अज्ञानी जीवो सुताछे, ते दुःखोना चक्रावामां भमवाथी दुःखी छे. कड्युं छे केः—		

	Ś	नातः परमहं मन्ये, जगतो दुःखकारणम् । यथाऽज्ञान महारोगो, दुरन्तः सर्वदेहिनाम् ॥१॥	¥	
সাৰা৹	Ś	्था जगतमां जे अज्ञानरूपी महारोग सर्वे जीवोने दःखे करीने दूर थाय तेवो असाध्य छे, तेनाथी बीजुं दुःखसुं कारण हुं	S.	सुत्रम्
<b>ા</b> કરંગા	\$	आ जगतमां जे अज्ञानरूपी महारोग सर्दे जीवोने दःखे करीने दूर थाय तेवो असाध्य छे, तेनाथी बीज़ुं दुःखसुं कारण हुं मानतो नथी, विगेरे छे. अहिंआं सुतेला वे मकारना छे, द्रव्यथी अने भावथी तेमां निद्रा प्रमादवाळा द्रव्यथी सुता छे, अने मिथ्यात्व अने अज्ञानरूप महानिद्रार्थी सूढ वनेला जेओ मिथ्यादृष्टि (मोक्ष मार्गथी विम्रुख) अम्रुनि छे. तेओ निरंतर भावथी सुतेला जाणवा,		118રંગા
	5	कारणके तेओ (सर्व जीवोने अभय दान आपवा रूप) सम्यक्झान तथा चारित्रनी क्रियाथी रहित छे. पण निद्रामां पढेळानुं आ भमाणे समजबुं के वखते मिथ्यादृष्टि होह अने सम्यक् दृष्टि पण होय, आ अम्रुनि माटे वताव्युं हवे मुनिओनुं वर्णन करे छे. तेओ	× *	
	3	इंमेशां सुबोधयी युक्त अने मोक्षमार्भथी चलायमान थता नथी पण निरंतर हितने मेळववा अहितने छोडवा. संयम पाळवा प्रयास करे		
	ž	तेथी तेओ जागता छे अने शरीरनी स्वभाविक अशक्तिथी द्रव्य निदा तेओने होय ( सुदे ) तो पण रातना नवथी त्रण वाग्या सुधी	Ž	
	S	शास्त्रमां वतावेली विधए सुवाथी तथा अल्प निद्राशी तेओ जागताज ले, आज भाव स्वाप ( सुवुं ) तथा जागरण करवुं ते संबंधी निर्युक्तिकार गाथा कहे लेः—	X ₹	
	Ś	सुत्ता अमुणिओ सया मुणिओ सुत्ता वि जागरा हुंति । धम्मं पडुच एवं निदासुत्तेण भइयवं ॥नि. २१२॥	Ň	
I	いキャンチャ	सुत्ता अमुणिओ सया मुणिओ सुत्ता वि जागरा हुंति । धम्मं पडुच्च एवं निद्दासुत्तेण भइयवं ॥नि. २१२॥ द्रव्यथी अने भावथी बन्ने मकारे सुता छे, तेमां निद्राथी सुतेलानुं वर्षन पछी कहेक्षे. अने भावथी सुतेलानुं पहेलां कहे छे, जेओ अम्रुनि ( गृहस्थो ) मिथ्यात्वथी तथा अज्ञानथी घेराइने हिंसा विगेरे पांच आसव सदा वर्ते छे, तेओ भावथी सुतेला छे. अने	× *	
	×.	जआ अम्रान ( गृहस्था ) मिय्यात्वया तथा अम्रानया पराइन हिंसी विगर पाच आख्व संदी वते छ, तआ भावया सुतला छ, अन्	Ť.	

	अ सुनिओने मिथ्याता अज्ञानरुष निद्रा दूर थवाथी सम्यक्त विगेरेनो बोध पामीने भावथी तेओ जागता छे.	<u>X</u>
স্তাবাণ	के, आचार्थनी आज्ञानरेप निद्रा दूर पंचाया सम्पत्ति विपत्ति वाय समाप नायपा तजा जानता छ. जो के, आचार्थनी आज्ञा छड्ने, मुनिओ नवथी त्रणसुधो रात्रीना बोजा त्रोजा पदारे दीर्घसंयम माटे क्षरीर आधाररूप ढोवाथी ये सुवे; तोफ्ण तेओ सदाए जागताज छे. आ प्रमाणे धर्मने आश्रयीने सुता अने जागताबताव्या. हवे, द्रव्यनिद्रामां सुतेलामां भजना	ें सुत्रम
	🖞 सुवे; तोषण तेओ सदाए जागताज छे. आ प्रमाणे धर्मने आश्रयीने सुता अने जागताबताव्या. हवे, द्रव्यनिद्रामां सुतेलामां भजना	₹ ¥
1185811	🕺 जाणवी; एटले, तेमनामां धर्म होय अथवा न पण होय.	કે ાકરંશ
·	एटले जो भावथी जागे; अने निदाथी आंखो घेरावाथी सुवे तोपण तेने धर्म छे, अने भावथी जागतो होय; पण निदा अने	<b>∛</b> I
	भ ममादमां तेनुं ध्यान होयतो, तेने न पग होय; पण जे द्रव्यभाव बन्नेमां सुता छे, तेने न होय; एम भजनानो अर्थ छे. अक्षाद्रव्यथी सुतेलाने धर्म केम न होय ?	×
	र्भ प्रक्षःद्रव्यथी स्रुतेलाने धर्म केम न होय ?	X
	f उत्तर:-द्रव्यथी सुतेलाने निद्रा होय छे, ते निद्रा दुःखेथी दूर थाय छे, कारणके, स्त्यानर्द्धि (थीणद्धि) त्रिकना उदयमां स-	₫I
	🖗 म्यक्त्वनी प्राप्ति मोक्षमां जनारा भवसिद्धि जीवोने पण थतो नथी; अने तेनो वंध मिध्यादृष्टि, अने सास्वादननी साथे अनंतानुवंधी	¥
	🐧 कषायना बंधवाळाने होय छे.	S.
	🏌 💦 अने तेनो क्षय अने अनिष्टत्ति बादर गुणस्थान काळना संख्येय भागोमांना केटलाक भाग जायत्यांसुधी होय छे. तेज प्रमाणे	ζ.
	🖌 निद्रा, अने मचलाना उदयमां पण पूर्व माफक छे.	2
	ीं बंधनो उपरम (दूर थवुं.) तो, अपूर्व करणकाळना असंख्येय भागना अंतमां थाय छे. पण तेनों क्षय तो, ज्यारे बधा कषायो दूर थाय; तेना द्वीचरम समयमां (छेछानो पहेलामां) थाय छे.	X
1	🍹 दूर थाय; तेना द्वीचरम समयमां (छेल्लानो पहेलामां) थाय छे.	<u> </u>

आचा० ॥४३२॥	अने द्रव्यथी निद्रामां सुतेले दुःख पामे छे. (जेमके, ऊंघणसी माणस घरमां आग लागतां बळीजाय छे, घरमांथी घन चो- राइ जाय छे.) तेज म्माणे भावथी सुतेला पण दुःख पामे छे ते वतावे छे. जह सुत्त मत्त मुच्छिय असहीणो पावए बहुं दुक्खं । तिब्वं अपडियारंपि वट्टनाणो तहा लोगो ॥नि. २१३॥ निद्रार्था सुतेलो तथा दा॰ विगेरेना निज्ञार्थी गांडो थएलो तथा घणो मार मर्मस्थनमां पडवार्थी वेश्रुद्ध बनेलोतथा वायु विगेरे दोषथी चक्री आवतां परवज्ञ थएलो जोव बहु दुःख पामे छे छतां पोते ते वखते बदलो के उपाय लइ ज्ञकतो जथी तेज म्माणे भाव निद्रा एटले मिथ्यात्वअविरति, ममाद, कपाय विगेरेमां सुतेलो जीव समूह नरक विगेरेना भवनां दुःखो भोगवे छे, इवे बीजी नीते जलटा दर्षांतथी उपदेश देवा कहे छेः—	1	रुत्रम ४३२॥
Str. Sort	रात उख्या रहातमा उपरक रत कर छन एसेव य उवएसो पदित्त पयलाय पंथमाईसुं । अणुहवइ जह सचेओ सुहाइं समणाऽवि तहचेव ॥नि.२१४॥ उपर कहेलो उपदेश जे विवेक अने अविवेक संबंधी थाय छे. ते बतावे छे जेमके सचेतन (बुद्धिमान) विवेकी आग लागतां		

आचা৹ 🛛	तेमांथी नीकळीने सुखी थाय छे अने विघ्नवाळा अने विघ्नरहित एवा मार्गतुं ज्ञान जेने छे ते सुखेथी पार पहोंचे छे. आदि शब्दथी जाणवुं के चोर विगेरेना भवमां विवेकी माणस सुखथी ते विघ्रने दूर करी सुखी थाय छे. तेज ममाणे साधु पण भावर्थी सदा विवेकी होवाथी जागतो रहिने बधां कल्याणने मेळवे छे सुता अने जागता सबंधी गाथाओ कहे छे:—	ु सुत्रम
ાષ્ટર્ગા	दोवाथी जागतो रहिने वधां कल्याणने मेळवे छे मुता अने जागता सबंधी गाथाओ कहे छेः— जागरह एरा णिझं जागरमाणस्स बङ्रुए बुद्धी । जो सुअइ नसो धएणो जो जग्गइ सो सया धन्नो ॥१॥ जागता माणसोनी बुद्धि वधे छे माटे हे माणसो ! तमे जागो ( अल्पनिद्रा करो. ) जे मुवे छे, ते धन्यवादने योग्य नथी, पा जागतो माणम धन्यवादने योग्य ले	K 1183311
	जागता माणसोनी बुद्धि बधे छे माटे हे माणसो ! तमे जागो ( अल्पनिद्रा करो. ) जे सुवे छे, ते धन्यवादने योग्य नथी,	Ķ.
	पण जागतो माणस धन्यवादने योग्य छे.	
	🎗 सुअइ सुअं तस्स सुअं संकियखलियं भवे पमत्रस्स । जागरमाणस्स सुअं थिरपरिचिअमप्पमत्तस्स ॥२॥ 🕻	
	🖒 👘 जे घणुं सूचे छे तेने ममादथी तेन भणेल शंकावाळ तथा भूलोवाळ यांच छे. पण अपमादी जागता साधून भणेल स्थिर परि-	
K	र चयत्राळं (धुल नगरनुं) रहे छे.	ř
	🖌 नालस्तेण समं सुबखं, न विज्ञा सह निद्दया । नवेरग्गं पमाएणं, नारंभेण दणलुया ॥३॥	
	आळसनी साथे सुख नथी. ( आळसुने सुख न होय; ) तथा निद्रानी साथे विद्या न होय; ममादनी साथे वैराग्य न होय; तथा	
	हे आरंभ करनारने दया न होय.	k
k	🕺 जागरिआ धम्मीणं, आहम्मीणं तु सुत्तया सेआ । वच्छाहिव भगिणाए अकहिंसु जिणो जयंतीए ॥४॥ 🛛	K

	👔 धर्मीजीवोने जागवुं सारुं, अधर्मीने सुवुं सारुं एवुं भगवान् महावीरे वत्स देशना राजानी बेन जयंती श्राविकाने कढुं छेः—	<b>X</b>
आचা৹	र सुयइ य अयगरभूओ सुअंपि से नासई अमयभूअं । होहिइ गोणब्मूओ नर्टमि सुए अमयभूए ॥५॥	र्रे सूत्रम
	जे अजगरनी माफक सुवे छे, तेनुं अमृत जेवुं भणेखुं नाश थाय छे, तथा तेने अमृत जेवुं भणेखुं नाश थनां मुडदाल-बळदीया	1
118381	No internet and the contract of the contract o	1 1183811
	🗙 आ ममाणे दर्शनावरणीय कर्मना उदयथी कोइक वखत कोइ साधु सुतो होय; पण मोक्षाभिलाषी, अने यतनावाळो होवाथी;	X
	🗐 तथा तेणे दर्शन मोहनीयरुप-निदा दर करवाथी ते जागतोज छे. पण जेओ. अज्ञानना उदयथी सतेला छे, ते अज्ञानीज खरा	Ś
		¥
	र्भ सुतेला छे, अने अज्ञान ते महादुःख छे, अने ते दुःख जंतुआने आहतकारों छे, ते सूत्रकार बतावे छे. अत्र लोयंसि जाण अहियाय दुवखं, समयं लोगस्स जाणित्ता, इत्थ सत्थोवरए, जस्सिमे सद्दा य के रूवा य रसा य गंधा य फासा य खभिसमन्नागया भवंति (सन्न १०६)	Y Y
	र रूवा य रसा य गंधा य फासा य खभिसमन्नागया भवंति (सूत्र १०६)	S.
	छ जीवनीकाय संबंधी तं दःखने जाणः एटले अज्ञान अथवा, मोह (मुढपणुं) ते जीवने नरकादि भवमां दःख आपनारुं अ-	₫.
	🖏 हितने माटे छे, अथवा तेनुं अज्ञान, तेने अहींयाज बंधने माटे, वधने माटे, तथा शरीर, अने मन संबन्धी पीडाने माटे थाय छे.	X
	🗴 (अर्थात् गुरु शिष्यने कहे छे केः—आ संसारमां अज्ञानी जीवो पोने अज्ञानदशामां पापो करीने नरक विगेरेमां जाय छे, अने त्यां	S.
	तिया, अहीं अनेक मकारनां दुःख सहे छे,) ते तुं ध्यानमां राख; अने अज्ञानने छोड. इवे एय जाणवानुं फळ बतावे छे.	<b>§</b>
		<b>?</b> )1

	द्रव्य अने भाव ए वे प्रकारनी निद्रांथी सुतेला जीवो अज्ञानी छे. तेमने थता दुःखथी दूर रहेवुं ए ज्ञानवुं फळ छे.	<u></u>
সাৰা৹	🖌 सन्दी सामय गरले आनगाव्यवमां बतावेल अनुहान (संयम्) ने जाणीने अथवा लोक एटल जविसमुद्दन जाणान तन 🛛	<b>∛ सुत्रम</b>
	र्रे 🗅 🚬 👝 🔄 👌 🛶 नर्ज के स्वरण के स्वरण के स्वरण के स्वरण के स्वरण की तर होते हैं स्वरण की स्वरण के स्वरण की स्वरण के स्वरण की सामाण है।	ก () แบรนท
1183711	र पहेलांना सत्र साथे बोजा सत्रनो संबन्ध छे. कारण के संसारी जावा भोगना अभिलापीपणाथी जावाहसा विगर कपाय इतुवल्छि	
	र कर्म बांधीने नरक विगेरे पीडाना स्थानमां उत्पन्न थाय छे. त्यांथी कोइ वखते नीकळीने बधा दुःखोतुं नाश करनार धर्मतुं कारण	×.
	किम बायान नरक विगर पाडाना स्थानना उत्तन नाव छुट त्यांवा तेल तत्यां पान के त्यांवाने बदछे ) महा मोइना कारणे मोहित मति- ो जेमां छे तेचुं आर्यक्षेत्र विगेरेमां मनुष्य जन्म पामे छे. बळी त्यां पण (धर्म पाठवाने बदछे ) महा मोइना कारणे मोहित मति-	Ž.
	वाळो बनी ( इन्द्रियोना स्वादने माटे ) एवां एवां कार्थ करे छे के जेने लीधे ते नीचेनीचे (नारकीमां) जाय छे, पण संसारमांथी पार पहोंचतो नधी (आबुं लोकोनुं वर्तन जाणीने तेबुं तमारे न करबुं.) अथवा समभाव एटले समता (समयनो अर्थ समता लीघो)	*
	वाळा बना (हान्द्रयाना स्वादन माट) एवा एवा काय कर छ के जन लाव ते नावनाव (तारकाना) नाव छो पूर्ण तताताना पार पहोंचतो नधी (आबुं लोकोनुं वर्तन जाणीने तेबुं तमारे न करबुं.) अथवा समभाव एटले समता (समयनो अर्थ समता लीघो) छे तेने जाणीने वधा जीवो उपर एटले पॉताना आत्मा बरोबर परने जाणीने अथवा रात्रु मित्रने समभावे आणीने तेमना उपर राग द्वेप तुं न कर, अथवा बधा जीवो एकेन्द्रियथी पंचेन्द्रिय सुधी पोताना उत्पन्न थवाना स्थानमां रमवानी इच्छावाळा छे, मरणथी इरे छे, सुखना चाइक छे. दुःखना द्वेपी छे आबुं तेओनुं समानपणुं जाणीने साधुए शुं करवुं ते कहे छे, छ जीवनीकायना द्रव्य	ž)
	र राग द्वेग तुं न कर, अथवा बधा जीवो एकेन्द्रियथी पंचेन्द्रिय सुधी पोताना उत्पन्न थवाना स्थानमां रमवानी इच्छावाळा छे, मरणथी	
	🖌 ढरे छे, सुखना चाइक छे. दुःखना ढेषी छे आवुं तेओनुं समानपणुं जाणीने साधुए शुं करवुं ते कहे छे, छ जीवनीकायना द्रव्य	Х́І
	ी भावना भेटवाळा जस्वधी हर रहेवा धर्म जागरणथी जागतो रहे. अथवा जेजे संयमना शुखा छे ते ते आसवहार माणातिपति विगर	<u>J</u>
	छे. अथवा शब्द विगेरे पांच मकारना काम गुणो (विषयभेम) छे. तेनाथी जे दूर रहे ते मुनि छे. तेज सूत्रकार कहे छे के जे मुनिने	)
	्रि छे. अयवा शब्द विगर पांच मकारना काम खुगा (तपपपप) छे. जातना ज हुए रेर जिल्ला छेर के स्वर्थ के स्वर्थ के सुंदर अने पोताना आत्माना अनुभवेला बीजा बधा प्राणी संबन्धी इन्द्रियोनी प्रहत्तिना विषयरूप शब्द, रूप, रस, गंध अने स्वर्ध ते सुंदर अने	×1

<mark>आच</mark> ा० ॥४३६॥	विरुप एम वे भेद छे, ते समीप आवतां अनुकूळ वहाला, अने मतिकूळ ते अणगमता लागे छे, तेवुं जे मुनि जाणे ते लोकने जाणे हे. तेनो अर्थ आ छे केःमुनिष तेवा विषयो माप्त थाय; तोपण अनुकूळमां राग 'न' करवो; अने मतिकूळमां द्वेष न करवो; तेज स्वरीरीते तेओनुं अभिसमन्वा ममन (जाणवापणुं) छे, पण बीजुं नथी. (आ संसारमां मुनिने विदार विगेरेमां पुण्योदयथी मधुर अवाज, सुंदर देखाव, रमणीय सुगंधी खटरस-मोजन, तथा कोमळ स्पर्श विगेरे माप्त थाय छे, तथा पापना उदयथी तेथी उलटुं याय छे. तेवा समयमां संसारी-जीवो हर्षखेद करे छे, तेम मुनिए न करवो.)	सूत्रम् ॥४३६॥
	🕺 थाय छे. तेवा सगयमां संसारी-जीवो हर्षखेद करे छे, तेम मुनिए न करवो.)	Ŕ
	अथवा आलोकमांज शब्द विगेरे विषयो प्राणीओने दुःखने माटे थाय छे, तो परलोकनुं तो, शुं कहेतुं ? कढुं छे केः	(
	🐒 उक्तंच रक्तः शब्दे हरिणः स्पर्शे नागो रसे च वारिचरः । इपणपतङ्गो रूपे भूजगो गन्धे नन् विनष्टः ॥१॥	2
	अथवा आलोकमांन शब्द विगेरे विषयो प्राणीओने दुःखने माटे थाय छे, तो परलोकनुं तो, शुं कहेतुं ? कतुं छे केः उक्तंच रक्तः शब्दे हरिणः स्पर्शे नागो रसे च वारिचरः । क्रपणपतङ्गो रूपे सुजगो गन्धे ननु विनष्टः ॥१॥ हरिण शब्दमां रक्त थयलो, हाथी स्पर्शमां, माछलुं रसमां, अने रूपमां गरीब पतंगीयुं, तथा सगंधीमां साप, (अयवा भमरो) सरेखर, नाश पाम्या छे, पचसु रक्ताः पञ्च विनष्टा यत्रायहीतपरमार्थाः । एकः पञ्चसु रक्तः प्रयाति भस्मान्ततामनुधः ॥२॥	
	🕻 खरेखर, नाज्ञ पाम्या छे,	5
	🛃 पचसु रक्ताः पञ्च विनष्टा यत्राग्रहीतपरमार्थाः । एकः पञ्चसु रक्तः प्रयाति भस्मान्ततामबुधः ॥२॥ 👘 🏹	R .
4	🎾 आ ममाणे, पांच इन्द्रियोमांथी एकमां रक्त थयेळा परमार्थ न जागनारा ते, पांचे अहींयां नाज्ञ पाम्या छे, तेम मूर्ख माणस	2
	🗙 एकल्रो पांचेमां रक्त थतां तेनो नाज्ञ थाय छे. अथवा, पुष्पञाळथी ज्ञब्दमां भद्रा नाज्ञ पामी अर्जुन चोररुप जोवा जतां नाज्ञ पाम्यो:	
	आ ममाणे, पांच इन्द्रियोमांथी एकमां रक्त थयेला परमार्थ न जाणनारा ते, पांचे अहींयां नाश पाम्या छे, तेम मूर्ख माणस एकलो पांचेमां रक्त थतां तेनो नाश थाय छे. अथवा, पुष्पशाळथी शब्दमां भद्रा नाश पामी अर्जुन चोररुप जोवा जतां नाश पाम्यो; गंधमां गंध प्रियकुमार नाश पाम्योः रसमां सौदास, अने स्पर्शमां सत्यकि विद्याधर, अथवा सुकुमारीकानो पति ललितांग नाश पाम्यो;	6

	अने तेओने परभवमां नरक विगेरे दुःख भोगववानो भय वाकी रहे छे. आ प्रमाणे गायन विगेरे बन्ने खोकमां दुःख आपनारा जाणीने जे ग्रुनि तजे, ते केवा गुणो मेळवे ते कहे छेः—	× *
- आचা৹ /	जाणान जे मुनि तज, ते केवा गुणा मळवे ते कहे छै:	२ सुत्रम
୲୲୫ଽଡ଼୲୲	से आयवं नाणवं वेयवं धंमवं बंभवं पन्नाणेहिं परियाणइ लोयं, मुणिति वुच्चे, धम्मविऊ उज्जू आवद्दसोए संगमभिजाणइ (सू० १०७)	ୁ ଜୁ ୩୪३७॥
	जे ग्रुनि मद्दामां इनिद्रामां सुतेला लोकोने अहितने माटे थतुं दुःख जाणे; ते लोक समयदर्शी छे, ते शस्त्रथी दूर रहीने मधुर गायन विगेरे पांच कामगुणो एकलाज दुःखना हेतुओ तरीके ब्र-परिव्रावहे जाणे छे, तथा मत्याख्यान परिव्रावहे त्यागे छे, ते मोक्षा- भिलाषी ग्रुनि छे, अने ते आत्माने जाणनारो छे. एटले, ज्ञानादिक गुणवाळो आत्मा तेणे मेळव्यो; ते आत्मावान छे, कारणके, श्रब्दादि विषय त्यागवाथी एणे आत्मानुं रक्षण कर्युं छे, जो, तेम रक्षण न कर्युं होत; तो, पोतानां पापथी नारकी, तथा एकेन्द्रिय विगेरेमां उत्पन्न थतां आत्मानुं कार्य मोक्षमां जवानुं न करवाथी तेनो आत्मा केवी रीते गणाय ? (आत्मानुं कार्य झानमां रमणता करी; चारित्र पाळी; मोक्षमांज जवानुं छे, ते जे प्राप्त करे; तेणे आत्मा मेळव्यो जाणवो; अने तेज आत्भानाळो छे.) अने तेज ज्ञानवान् पण छे. एम जाणवुं; अथवा, बोजा प्रतिमां आयवी नाणवी छे, तेनो अर्थ आ छे के: पोताना आत्माने क्षभ्र (नरक) विगेरेमां पढतां अटकावे; ते आत्मवित् (आत्माझानी) छे तथा मधुए जेवुं पदार्थनुं स्वरुप बताव्युं; तेचुं जाणे, ते ज्ञानवित् (तत्त्वज्ञानी) ते, तथा जीवादि स्वरूपने जेनावढे जाणे; ते वेद एटले, आचाराक्न विगेरे मूत्र जा- वताव्युं; तेचुं जाणे, ते ज्ञानवित् (तत्त्वज्ञानी) ते, तथा जीवादि स्वरूपने जेनावढे जाणे; ते वेद एटले, आचाराक्न विगेरे मूत्र जा-	- X + X -

आचा० ॥४३८॥	जाणे तेने मुनि कहेवो; कारणके, जगतनी त्रणे काळनी अवस्थाने माने अथवा. जाणे तेने मुनिशास्त्रमां कह्यो छे. धर्म ते चेतन. अने अचेतन द्रव्यना स्वभावरुप, अधवा अतचारित्ररुप-धर्मने जाणे; ते धर्मवित् जाणवो. रुजु (सरळ) शानदर्शन-चरित्र नामना मोक्षमार्यनां जे अनुष्टान छे, तेनाथी अकुटिल छे, अथवा पथार्थरीते पदार्थनुं स्वरुप जाणवाथी सरल छे अथवा वधी उपाधिथी शुद्ध ते अवक्र (सरल) छे आ प्रमाणे धर्म जाणनार रुजु मुनि होय तेने शुं लाम मळे ते कहे छे. आवट्ट एटले भाव आवर्त्त ते जन्म जरा मरण रोग शोकना दुःख आपवाना स्वभाववाळो संसार छे, कह्युं छे के, रागदेष बझाविऊं. सिथ्या दर्शन दस्तरम् ॥ जन्मावत्तें जगरिक्षप्तं, प्रमादादस्त्राम्यते भृठाम् ॥१॥	1
	रागद्वेष वशाविद्धं, मिथ्या दर्शन दुस्तरम् ॥ जन्मावत्तें जगरिक्षप्तं, प्रमादाद्श्राम्यते भृशम् ॥१॥ रागद्वेषना वग्नथी विंधायेल मिथ्यादर्शनना कारणे दुस्तर अने जन्मना आवर्त्तमां फेंकायछं जगत् ले. तेमां प्रमादथी जीवो	* *

For Private and Personal Use Only

	पणुं भ्रमण करे छे. भाव श्रोतपण शब्दादि काम गुगनो विषय अभिठाव छे. अने ते वन्ने 'आवर्त्त' अने श्रोत मळीने आवर्त्त श्रोतः भच्द बने छे ते बन्नेमां रागद्वेववडे संग (संबंध) थाय छे, तेने जाणे छे के आ आवर्त्त अने श्रोततुं कारण छे. आ जाणनारो स्वरी रीते कोने कदेवो ? ते कहे छे, जे अनर्थने जाणीने त्यागे, ते जाणनारो छे. अर्थात संसार श्रोत ते रागद्वेष रूप र्सग छे. तेने जाणीने जे त्यागे तेज आवर्त्त श्रोतना संगनो खरो जाणनारो छे. उपर बताच्या ममाणे सुता अने जागताना दोषो तथा गुणोने शाणनारो क्या गुणो मेळवे, ते कहे छे. साउसिगचाई से निग्गटे अरइरइसहे, फरूलयंनो वेएइ, जागर वेरोवरए, वीरे एवं दुक्खा पमुख्खसि, जरामच्चुवसो वणिए नरे सययं मृढे धंमं नाभिजाणइ (सूत्र १०८) ते आत्मार्थी मुनि बाग्र अर्थ्वतर ग्रंथ रहित (निर्धथ) बनीने शीत अने उष्णतानो त्यागी एटले सुख दुःखने न गणनारो अ- यवा ठंड तापना परिषहने सारी रीते समभावे सहन करनारो संयममां रति (मेम) अने असंयममां अरति बतावनारो बनी पीडा	*
आचা৹	🥊 भन्द बने छे ते बन्नेमां रागद्रेववडे संग (संबंध) थाय छे, तेने जाणे छे के आ आवर्त्त अने श्रोतनुं कारण छे. आ जाणनारो	४ सूत्रम
<b>॥</b> ४३९॥	स्वरी रीते कोने कहेवो ? ते कहे छे, जे अनर्थने जाणीने त्यांगे, ते जाणनारों छे. अर्थात् संसार ओत ते रागद्वेष रूप संग छे.	કુ દ્રાષ્ટ્રરા
·	र्भ पा जागान ज त्यान तज आवत्त आतना समना त्यता जाणनारा छ. उपर बताव्या मनाण तुवा जन जानताना पाना पना उना न ते झाणनारो क्या गुणा मेळवे, ते कहे छे.	Č
	🗡 साउसिगचाई से निग्गहे अरइरइसहे, फरूलयंनो वेएइ, जागर वेरोवरए, वीरे एवं दुक्खा	ð l
	🖌 पमुख्खसि, जरामच्चुवसो वणिए नरे सययं मृढे धंमं नाभिजाणइ (सूत्र १०८)	
	४ पमुख्खसि, जरामच्चुवसो वणिए नरे सययं मृढे धंमं नाभिजाणइ (सूत्र १०८) ते आत्मार्थी ग्रुनि वाह्य अभ्यंतर ग्रंथ रहित (निर्ध्रथ) बनीने शीत अने उष्णतानो त्यागी एटळे सुख दुःखने न गणनारो अ- ४ थवा ठंड तापना परिषहने सारी रीते समभावे सहन करनारो संयममां रति (प्रेम) अने असंयममां अरति बतावनारो बनी पीडा	X
	🛠 थवा ठंड तापना परिषहने सारी रीते समभावे सहन करनारो संयममां रति ( प्रेम ) अने असंयममां अरति बतावनारो बनी पीडा	
	👔 करणारी संस्पर्वे अने अपसंगीनी केठीर पदनीन सह छ, पंध पुडिकिस्टि मानती मयुर्ग, रणम समयुक्तमाळन्छ रातरार, कांगा मह	
	टीनी पाळ बांधी माथामां बळता अंगारा भर्या, ते समये घणी पीडा थइ, छतां तेणे संसरानो उपकार मान्यो, अने केवळ ज्ञान	at∖ ≱r
	🐐 पामी मोक्षमां गयो. तेम बीजा साधुए करबुं) अथवा संयम के तपथी शरीरमां पीडा थतां परुषता (कठोरपणुं) आवे अथवा कर्म	3
	े जना रोळ पांची मायामा बळता जनारी मया, ते समय चला रोडा पर, छता चयर सराराना उपकार पांच्य, जन करण के प्र र पामी मोक्षमां गयो. तेम बीजा साधुए करतुं) अथवा संयम के तपथी श्वरीरमां पीडा थतां परुषता (कठोरपणुं) आवे अथवा कर्म र छेप दूर थवाथी संसारथी खेदी मनवाळो मोक्षाभिलापी निराबाथ सुखनो चाहक बनीने संयम तपमां पीडा थाय तो पण् समभावे	7 8

आचा० ॥४४०॥	सहे पण खेद न पामे. 'जागर' एटछे असंपम निद्रा दूर थवाथी पोते संयक्ष्मां जागतो छे अने अभिमानथी थता अमर्ष (अदेखाइ) एटछे बीजानुं बगाडवानो अध्यवसाय (विचार) ते बैर छे. ते वैरथी पोते दूर छे एटछे जागर अने बैर उपरत गुणवाळो वीर बने छे, ते कर्म शत्रु दे दूर करवानी शक्तिवाळो छे तेवा वीरने उद्देशीने गुरु कहे छे हे वीर ! तुं उपरना गुण धारण करीने पोताने अ- यवा बीजाने संसारना दुःखथी अथवा दुःखना कारणरुप कर्मथी वचीक्ष अने वचावीक्ष. अने उपरना उत्तम गुणोथी रहित ममादी जीव संसारना चक्रमां अने दुःखना प्रवाहमां संग करीने उंवतो रहीने ते शुं मेळवे छे ते कहे छे. जरा अने मृत्यु ए बेने वक्ष थड़ने ते माणी निरंतर महा मोहथी मूढ बनेलो स्वर्ग अने मोक्ष आपनार धर्मने जाणतो नथी अने संसारमां जीवने एवं कोइ पण स्थानज नथी के ज्यां जरा मृत्यु न होय. मक्ष:देवताओने जरा (बुढापो) नथी.	
	उत्तर—देवताओने पण त्यांथी च्यववाना छ महिना पहेलां उत्तम लेक्स सुख प्रद्वत्व अने सुंदर वर्णनी हानि थाय छेन तेथी तेमने पण जरानो सद्भाव छे, क्सुं छे के. देवा णं भंते ! सब्वे समवण्णा ? नो इणटे समठे, सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ गोयमा! देवा दुबिहा—पुबोववणग्गा य पच्छोववणग्गा य तत्थ णं जे ते पुबोववणग्गा तेर्ण अविसुद्धवण्णयरा, जे णं पच्छोववणग्गा ते णं विसुद्धवण्णयरा	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

সাৰা৹	गौतमनो मक्ष—दे भगवन् ? बधा देवता समान रुपवाळा छे ? ७० —तेम नथी. म० —तेन्तुं शुं कारण ? ड० — हे गौतम ! देवो वे प्रकारना छे. पहेलां उत्पन्न थयेला अने पछी उत्पन्न थता तेमां जे पहेलां उत्पन्न थयेल छे ते कं इक मांखा रुपवाळा अने जे पाछळ्थी उत्पन्न थया ते विशुद्ध सुंदर रूपवाला होय छे. तेज म्माणे लेडया विगेरेमां पण जाणवुं.	५ ५ ५ सुत्रम्
11884 U	भू अने च्यवनना वखते तो बधाने बधु झांखुज होय छे. जेमके	ğ แรงรม
	मरूयम्लानिः कल्पद्क्ष प्रकम्पः श्री हीनाशो वाससां चोपरागः ।	<b>C</b>
	दैन्यं तन्द्रा कामरागङ्गभङ्गो, दृष्टिभ्रान्तिर्वेषयुश्चारतिश्च ॥१॥	<i>k</i>
	🕥 माला करमाइ जाय छे कल्पहक्ष कंपतं देखाय छे, श्री अने हीनो नाज थाय छे कपडां उपरथी प्रेम उठी जाय छे. दीनता आवे	X
	🗴 छे. आळस थाय छे. काम रागनो अने अंगनो भंग थाय छे. इष्ट्रियां आंति थाय छे. अने कंपारो थाय छे. अने वधुं रमणिक ते	<b>X</b>
	अरमणिक लागे छे. (जेम, अहींयां मनुष्यने मरती बखते घरनी ऋदि के, बैभव उपरथी अणगमो थाय छे, तेम देवताने पण देव- त्रे लोक छोडतां घणो खेद थाय छे, अने कल्पांत करे छे.)	T.
	) लाक छाडता घणा खद थाय छ, अन कल्पात कर छ.) 	
	जो, आवी रीते छे तो, नकी थयुं के, बथा जीवो जरा मृत्युने वज्ञ छे तो, तेषुं जाणीने पंडित मुनि थुं करे ? ते कहे छे:	<b>Å</b>
:	र्मे पासिय आउरपाणे अप्पत्तो परिवए, मंता य मइमं, पास आरंभजं दुक्खमिणंतिणच्चा, माई	X
	🟌 पमाई पुण एइ गब्भं, उवेहमाणो सहरूवेसु ऊज्जू माराभिसंकी मरणा पमुच्चई, अपमत्तो	C1

<b>आ</b> चার্ল 🖇	कामेहिं, उवरओ पावकम्मेहिं, वीरे आयगुत्ते खेयन्ने जे पज्जवजाय सत्थस्स खेयन्ने, अस- त्थस्स खेयन्ने जे अत्थस्स खेयन्ने से पज्जवज्जायसत्थस्स खेयन्ने, अकम्मस्स ववहारो न चि-	् र सत्रम्
ાકકરા કે	जड़ कम्मुणा उत्राही जायड़, कम्मं च पडि लेहाए (सूत्र १०९) ते भावथी जागतो मुनि भावनिद्रामां सुतेला जीशोने मन संबंधी दुःखोधी पीडाता जुबे छे. ते दुःखी जीबो विचारे छे के, हवे अमारे शुं करवुं ? एम मृढ बनेला तथा, दुःखसागरमां डुवेलां प्राणीओने देखीने पोते तेवां दुःखमां न पडवा माटे म्रुनि अप-	ું 1188રા હ
5-4-8-4-8-	ूर जनार छ करेषु उर्प पूर्व करता गया, कुरवसागरमा डुवळा प्रायाजान उर्खान पात तथा दु.खना न पडवा माट झान अप- मत थइने विचरे; अने संयम अनुष्ठानने बरोबर करे; तेवा झिष्यने ग्रुरु फरीथी कडे छेः—हे बुद्धिमान्! हे भणेला झिष्य ! तुं भा- वनिद्रार्था सुतेला दुःखीओने जो, अने जागताना गुणो तथा सुताना दोषोने जाणीने सुवानी मति न कर (ममादी न था.) वल्ली पाप क्रियानो आरंभ करनारानां दुःखो तथा दुःखना कारण कर्म, तेने तुं मत्यक्ष जो! जेओ जीवर्हिसा (खुन) चोरी विगेरे करे छे.	
17 X 10	पोप किथोनी आरम करनारानी दुःखा तथा दुःखना कारण कम, तन तु मत्यक्ष जाए जमा जानाइसा (खुन) चारा विगर कर छ. तेओने थती शिक्षा साक्षात जो! अने ते जाणीने आरंभ रहित बनीने आत्महितमां जाग्रत था! (जेओ साधु छे तेमने मोक्ष साधवानो होवाथी ग्रहस्थ माफक खेती विगेरे आरंभ करवानो नथी छतां जेओ त्यागी नाम	S S
X SC X	रोप किंगे विशेष साक्षात जो ! अने ते जाणीने आरंभ रहित बनीने आत्महितमां जाग्रत था ! (जेओ साधु छे तेमने मोक्ष साधवानो होवाथी ग्रहस्थ माफक खेती विगेरे आरंभ करवानो नथी छतां जेओ त्यागी नाम अरावी खेती बिगेरे करे छे ते पण ग्रहस्थ माफक दुःखी थाय छे.) पण जे विषय कषायथी मलीन चित्तवाळो भावज्ञायी (पमादी) छे, ते शुं मेळवे ते कहे छे. मायी वने, छे, अने माया लेवाथी बधा कषायोवाळो बने तेज कहे छे, क्रोधी मानी मायी लोभी बनीने दारु विगेरेना नसामां पमादी थइ नारकीनां दुःख अनुभवी	

🗶 पाछो तिरीचमां गर्भना दुःखने अनुभवे छे. पण जे मुनि कपायरहित अपमादा छे तेने शुं लाभ थाय छे. ते बताव छे. राज्द रुप	
भार्चा० पि पाछो तिर्यचमां गर्भना दुःखने अनुभवे छे. पण जे मुनि कपायरहित अभमादी छे तेने शुं लाभ थाय छे. ते बतावे छे. शब्द रुप आचा० मित्रिमां जे रागद्वेष थाय छे तेनी उपेक्षा करतो रुजु (सरल) यति थाय छे. एटले खरी रीते जे यति (साधु) छे ते रुजु छे. पण प्रहस्थ तो स्ती विगेरे पदार्थ प्रहण करवाथी वक छे (स्ती विगेरेने मेळदवा राजी राखवा ग्रहस्थने कपट करवुं पडे छे.) वळी ते	सुत्रम्
) गृहस्थ ता स्ना विगर पदार्थ ग्रहण करवाथा वक्त छ (स्ना विगरन मळदवा राजा राखवा गृहस्थन कपट करवु पड छ.) वळा त	
॥४४३॥ 🕻 सरछ साधु गायन विमेरेनो उपेक्षा करतो मरण (मार) नी ज्ञंका करे छे. एटछे बीजाने मारतां (दुःख देतां) डरे छे. तेथी पोते 🔇	ાકઠક્રા
🥂 पण मरणथी बचे छे. वळी ते काम (पाप चेष्टाओ) थी अभमादी रहे छे. अने जे साधु काम चेष्टाना पापोथी दूर रहे, तेज खरी 🥂	
॥४४३॥ दि सरल साधु गायन निमेरेनो उपेक्षा करतो मरण (मार) नी शंका करे छे. एटले बीजाने मारतां (दुःख देतां) डरे छे. तेथी पोते पण मरणथी बचे छे. वळी ते काम (पाप चेष्टाओ) थी अभमादी रहे छे. अने जे साधु काम चेष्टाना पापोथी दूर रहे, तेज खरी रीते मन बचन कायाना पापथी उपरत (बचेलो) छे. कोण बचे छे? ते कहे छे. जे वीर छे तेज ग्रप्त आत्मा छे. अने ते खेदझ छे (एटलें बीजा जोवोना खेदने जाणे छे तेथी कोइने दुःख देतो नथी। ते खेदझ साधु गायन विमेरेना आनंदना विषयोना पर्यव	
🛠 (एटलें बीजा जीवोना खेदने जाणे छे तेथी कोइने दुःख देतो नथी। ते खेदज्ञ साधु गायन विमेरेना आनंदना विषयोना पर्यव 🗴	
🕻 (भागो) अनुकुळ थतां पोते तेना निमित्तना ऋस्रने माणीओने दुःखकारक जाणीने तेमां छीन न थतां ते निषुण साधु निरवद्य अ- 🥳	
🖌 नुष्ठान जे अशस छे ते करे छे. अने ते संयमना खेदने जाणनारो पर्यव जात शस्त्रना खेदने जाणनारो छे, तेनो सार आ छे के जे 🎜	
🖒 सांधु पासे शब्दादि पर्यायो संदर के विरुप आवे तो छेवानी के त्यागवानी क्रिया वीजा जीवोने दुःखरुप छे तेम जाणे छे अने 🔊	
🙀 मध्यस्थपणुं राखवुं; ते अपीडाकारक होवाथी जे अज्ञस्नुरुप–संयम छे. ते पोताने अने परने उपकार करनारो छे, एवुं जाणे छे. [ 🐧	. *
🕴 आ ममाणे, जाणीने बालने छोडे, अने अशस (संयम) तेने ग्रहण करे; एटछे बानलं फळ ए छे के; विषयोन: आनंदने 🦊	
🔥 छोडनारों; समभाव राखनारो जीवोने बचावी संयम पाळे छे, (अने जीवो उपर रागद्वेष करे; तो, संयम पाळी शकतो नथी.) 🛛 🕺	
(भागो) अनुकुळ थतां पोते तेना निमित्तना शस्त्रने माणीओने दुःखकारक जाणीने तेमां छीन न थतां ते निपुण साधु निरवय अ- नुष्ठान जे अशस्त छे ते करे छे. अने ते संयमना खेदने जाणनारो पर्धव जात शस्त्रना खेदने जाणनारो छे, तेनो सार आ छे के जे साधु पासे शब्दादि पर्यायो सुंदर के विरुप आवे तो छेवानी के त्यागवानी क्रिया वीजा जीवोने दुःखरुप छे तेम जाणे छे अने मध्यस्थपणुं राखवुं: ते अपीडाकारक होवाथी जे अशस्त्ररूप-संयम छे. ते पोताने अने परने उपकार करनारो छे, एवुं जाणे छे. आ ममाणे, जाणीने शस्त्रने छोडे, अने अशस्त्र (संयम) तेने ब्रहण करे; एटछे ज्ञाननुं फळ ए छे के; विषयोन; आनंदने छोडनारों: समभाव राखनारो जीवोने बचावी संयम पाछे छे, (अने जीवो उपर रागद्वेष करे; तो, संयम पाळी शकतो नथी.) अथवा, गायन विगेरे पर्यायोथी, अथवा गायन विगेरेथी उत्पन्न थयेल रागद्वेषना पर्यायोधी जे ज्ञानावरणीय विगेरे कर्म	

<b>সামা</b> ০	× × × ×	बंधाय छे, तेने दाइकपणाथी तप ते शस्त छे, ते तपना खेदने जाणे; ते खेदब छे. कारणके तेना ब्रान तथा योग्य अनुष्ठानवडे जे अब्रस्ट—संयम छे, तेने पण जाणनारो छे, अने संयम तप खेदने जाणनारो आश्रवनिरोध विगेरेथी भवभ्रभणां क्षर्म जे पूर्वे एकठां कयी छे, तेनो क्षय थाय छे, अने कर्मक्षयथी जे लाभ थाय छे, ते कहे छे:	४ ५ १ सूत्रम्
19883II	くれまいのできまたできます	अकर्म गुंटले, जेने आठ मकारनां कर्ममांथी एक पण कर्म न होय; ते छे, अने ते नारक, तिर्यंच, नर, देव एवी चार गतिमां अमण करवानो व्यवहार नथी: तथा, पर्याप्त-अवर्याप्त अवस्था नथी; तथा बाळपण, तथा इमारपणुं विगेरे संसारी व्यवदेशो (जुदी जुदी व्यवस्थान नाम) नथी; अने जे सकर्मी छे, तेने कर्मवर्ड नारकादि व्यपदेश होय छे. तथा ते कर्मनी उपाधिवडे एटले, झानावरणीय विगेरेथी जुदां जुदां विशेषणो कर्भ संवंधी थाय छे ते कहे छे:जेमके, मति, श्रुत अवधि, मनःपर्याय झानवाळो होय; तेने तेनी बुद्धिना ममाणमां मंदबुद्धिवाळो, अथवा तीक्ष्ण बुद्धिवाळो कहेवाय छे. (१) तथा चश्चदर्शनी अचश्चदर्शनी निदाळ विगेरे छे. (२) तथा सुखीदुःखी कहेवाय छे. (३) मिध्यादृष्टि, सम्यग पिध्यादृष्टि, स्रीपुरुष नपुंसक-कषायी विगेरे छे. (४) तथा सोपक्रम निरुषक्रम आयुवाळो, अल्प आवखावालो; विगेरे छे. (५) नारक तिर्यचयोनीवाळो, तथा एकेन्द्रिय, बे इन्द्रिय, पर्याप्तो-अपर्याप्तो, सुभग-दुर्भग विगेरे छे. (६) उंचगोत्रवाळो, नीचगोत्रवाळो छे, (७) ठुएण, त्यानी, निरुष भोगी, निर्चीर्थ छे. (८) आ ममाणे आठे कर्मने लीघे संसारी जीवो ओळखाय छे. को आवी रीते छे तो शुं करवुं ते कहे छे. झानावरणीय विगेरे कर्म छे	2424 2424 2424 2424 2424 2424 2424 242

	तेनी उपेक्षा करीने अथवा तेना बंधने प्रकृति स्थिति अनुभाव प्रदेशरुपे विचारीने तेनी सत्ता विषाकने पामेला प्राणीओ जेवी रीते भू भावनिद्रामां सुए छे ( अने दुःख भोगवे छे ) ते विचारीने कर्म तोडवामां भाव जागरण करवा साधुए उद्यम करवो, ते कर्म तोड-	8
- আন্থা০	🛉 भावनिद्रामां सुए छे ( अने दुःख भोगवे छे ) ते विचारीने कर्म तोडवामां भाव जागरण करवा साधुए उद्यम करवो, ते कर्म तोड-	<b>४</b> सुत्रम
	1/4 3 (m) 3413(1 50.4) 3 (m) 59.	i na seconda de la composición de la co
แรรรแ	मधम आठ कर्मवाळो माणस छे ते दीक्षा लड़ने मोइने तोडे पछी अप्रमादी यह क्षपकश्रेणी करे ते आठमे गुणस्थाने क्रो- धादि ओछा करी अम्यारमे गुणस्थाने लोभनो सर्बथा नाझ करे अने वारमा गुणस्थानना अंते ज्ञानावरणीय, दर्जनावरणीय तथा	X 1122.711
	🕻 धादि ओछा करी अन्यारमे गुणस्थाने लोभनो सर्बथा नाज्ञ करे अने बारमा गुणस्थानना अंते ज्ञानावरणीय, दंजनावरणीय तथा	<u>ç</u>
	अंतराय कर्म दूर करी तेरमे गुणस्थाने चार अघाती कर्मवाळो रहे. आ गुणस्थाने जघन्ययी अंतर्म्रहुर्त. अने उत्कृष्टयी पूर्व कोडीमां	τ.
	है थोडो ओछो काळ रहे, त्यारपछी १४मे गुणस्थाने पांच हूस्त अक्षर बोलवा जेटलो काळ बैलिशी अवस्थाने अनुभवीने अकर्म थाय छे.	X
	हचे, उत्तरप्रकृतिओनुं छतापणुं-अछतापणुं वतावे छे. ज्ञानावरणीय, तथा अंतराय ते दरेकनी पांच पांच मेदनी मकृति चौदे	S.
	अ जीवस्थानमां होय छे. तथा, चौद सुणस्थानमां मिथ्याइष्टिथी मांडीने बारमा राणस्थान सुधी पांचे प्रकृतिओ होय छे. तेमां बीजो	1 1
1	🗶 विकल्प थतों नथी: तथा, दर्शनावरणीयना त्रण संतुर्भमेना स्थान छे. (संत्यम एटल सत्ती छ.)	2
1 1 1 1	पांच निद्रा, अने चार दर्शन, ए नव प्रकृति सर्व जीवस्यानमां रहे छे. (१) अने गुणस्थानमां अनिवृत्ति वादर्काळना संख्येय	<u>S</u>
	भाग सुधी होय छे. (२) केटलाक संख्येय भागना अंतमां थीणदिनिद्रात्रिक क्षय थवाथी छ कर्भवाळुं बीजुं स्थान छे.	đ
	🐔 त्यारपछी, क्षीणकषायना अंत समयना पहेला समयमां निद्रा अने प्रचला, ए बेना क्षय थवाथी चार कमेतुं स्थान छे. अने ते	
	र्प पण क्षय थवाथी क्षीणकषाय काळना अंतमां त्रीजुं स्थान छे.	8

সাৰা৽	वेदनीय-कर्मनां वे सत्तास्थान छे. ते आ मगाणेः— (१) साता अने असाता बन्ने होय. (२ तथा वन्नेमांथी एक साता, अथवा असाता ज्यारे पोते शैळीशी अवस्थामां सौथी छेळा समयना पहेला समयमां मोक्ष जवाना काळमां होय; त्यारे कोइपण एक साता के, असाता भोगवे ते बीखुं स्थान छे. मोहनीयकर्मनां	र र र र सुत्रम्
ม <b>8</b> 8ส์แ	पंदर सत्तास्थान छे ते आ ममाणेः— (१) सोळ कपाय, नव नो कपाय अने त्रण दर्शन होय; त्यारे सम्यक्दष्टि जीवने अद्वाधीश मकुति होय छे. (२) सम्यक्त वमतां मिश्रदष्टिए सत्तावीश होय छे. (३) स्वभावथी अनादि मिथ्याद्दष्टि होय; अथवा वे दर्शन वमतां छवीश होय (४) सम्यक्दष्टिने अद्वावीश मकुतिमांथी अनंता- तुबंधी चार कपाय वमतां अथवा, क्षय थतां चांवीश होय. (५) तेनेज मिथ्यात्व क्षय थतां २३ (६) मिश्रद्दष्टि क्षय थतां २२ (७) क्षायिक सम्यक्दष्टिने २१ (८) अमत्याख्यान अने मत्याख्यान-कपाय जतां १३ (९) कोइपण एक वेद क्षय थतां १२ (१०) बींजो वेद क्षय थतां ११ (११) हास्यादि छ दूर थतां ५ (१२) पुरुषवेदना अभावमां ४ (१३) संज्वलन क्रोध क्षय थतां ३ [१४] मान क्षय थतां २ (१५) मायाक्षय थतां ए एक लाभ रहे. अने ए लोभ दूर थतां मोइनीय सत्ता पण गइ.	1188211 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

×	नामनां वार स्थान कहे छे.	X
आचा० 🤾	नामकर्मनी प्रकृतिनां वार सत्तास्थान छे, ते आ ममाणेः	४ सूत्रम्
	(१) ९३ (२) ९२ (३) ९१ (४) ८८ (५) ८६ (७) ७९ (८) ७८ (९) ७६ १० । ७५ ११ ]९ १२ ] ८ तेनी विगतः-	8 8 1188011 8
1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1	करतां ८९ छे तेमांथी पण तीर्थकर नामकर्म बाद करतां ८८ तथा देवगति तथा अनुपूर्वी बमेली बाद करतां ८६ अथवा नरकगति योग्य बांधतां तेनी गति तथा अनुपूर्वी तथा वैक्रिय चतुष्ठ बांधनारने ८० साथे आ छ मेळवतां ८६ छे तथा देवगति मायोग्य बांध- नारने पण ८६ छे अने नरक गति तथा अनुपूर्वी मळी बे तथा वैक्रिय चतुष्क चार ए छ वमतां ८० रहे छे. वळी मनुष्यगति अनुपूर्वी बन्ने वमतां ७८ छे. आ अक्षपक जीवोनां कर्मनां सत्ता स्थान छे अने हवे क्षपकवाळानां कहे छे. ९३ प्रकृतिमांथी नरक तिर्यक गति तथा अनुपूर्वी बन्नेनो मळी तथा १, २, ३, ४, इन्द्रिय जाति मळी चार तथा आतप	₹ ₹

সামাণ	र उद्योत स्थावर सूक्ष्म साधारण मळी कुल १३ मकृति क्षय थतां ८० मकृति रहे छेतथा तीर्थंकर नाम न होय तो ९२मांथी १३जतां ७९छे. तथा आहारकचतुष्ट्रय दूर थतां ९३ मांथी ८९ रहे अने तेमांथी नारकी विगेरे संबंधी १३ दूर यतां ७६ रहे अने तीर्थंकर नाम न होय तो ८९ मांथी १ दूर थतां ८८ रहे अने तेमांथी १३ जतां ७५ रहे छे.	५ २ २ ५ ५ ५ ५
<u> 188</u> 41	तेमां ८० अथवा ७६ मांथी तीर्थंकर केवळी क्षैल्लेक्री अवस्थामां पहोंचेलाने छेल्लाना पहेला [ढिचरम] समयमां तीर्थंकर नाम र कर्म उमेरवाथी चेदाती नव कर्म मक्रति सिवायनी प्रकृति दूर थतां वाकी अंत समये नव प्रकृति सत्तामां रहे छे ते कहे छे.	X   884
	[१] मनुष्य गति [२] पंचेन्द्रिय जाति [३] त्रस [४] बादर [५] पर्याप्तक [६] सुभग [७] आदेय [८] यक्षकीर्ति [९] तीर्थ- कर ए नव सिवायनी बाकीनी ७१ अथवा ६७ दिचरम समयमां नष्ट थाय छे अने तीथंकर सिवायना केवळीने आठ होय छे एटछे तेने तीर्थंकर नाम छोडीने बाकीनी आठ मकृति सत्तामां होय छे आ तेनुं छेछुं स्थान छे [त्यार पछी मोक्षमां जतां एक पण मकृति नथी] गोत्रनां बे सत्तास्थान छे. उंच नीच गोत्रना सद्भावमां एक सत्तास्थान छे तथा अग्रिकाय अने वायुकायने उंच गोत्र वमतां महिनभाववाळी अवस्थामां फक्त नीच गोत्रनी सत्ता रहे छे. अथवा अयोगी गुणस्थाने दिचरम समये नीच गोत्रनी सत्ता दूर थता उंच गोत्र एकछुं रहे छे एटछे बे गोत्रनी अवस्थामां प्रथम सत्ता स्थान छे अने बंनेमांथी एक होय ते बीछुं सत्ता स्थान छे [अंत- रायनी पांचे मकृतिओ साथे दूर थती होवाथी तेनुं छुदुं वर्णन बताच्युं नथी.) आ ममाणे कर्मोनी सत्ता जाणीने साधुए ते सत्ताने दूर करवा भयत्न करवो. वळी बीछुं कहे छे,	あんろうとうのなまんでんないないないない

	सुत्रम्
अर्भनुं मूळ कारण मिथ्यात्व अविरति ममाद कषाय यांग छे एने समजीने क्षण एटले हिंसा ते माणी त्रोने दुःख देवारुप छत्य कर्मनुं मुख्ल्य मुळ समजीने छोडवुं. पाठांतरमां 'कम्ममाहूअ' पाठ छे तेनो अर्थ आ छे के उपादान क्षण आ कर्मना छे ते क्षण कर्म छे ते कर्म मेळवीने तेज क्षणे निष्टति करें तेनो भावार्थ आ छे; अज्ञान ममाद विगेरेथी जे क्षणे कर्मना हेतुरुप अनुष्ठान कर्यु तेज क्षणे चित्त स्थिर करीने तेना जपादान हेतुने निष्टत्ति करें (जेनाथी कर्भ बंधाय तेने छोडे अथवा तेनी गुरु पासे क्षीघ्र आलोचना ले) वळी उपदेश करे छे पूर्व कहेलां कर्मने समजीने तथा कर्मना विरुद्ध (कर्म हणनार) गुरुनो उपदेश सांभळीने जे रागद्वेष अंतरुषे छे तेनाथी दूर रही अथवा तेनो संवन्ध छोडीने अथवा कर्म उपादाननां कारण रागादिकने इ परिज्ञावडे जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे तजे अने रागादिथी मोहित लोक अथवी विषय कपाय लोक जाणीने तथा विषयनी वांछा अथवा धन उपर ममत्त्वभाव छोडीने मर्यादामां रहेलो ते मुनि संयम-अनुष्ठानमां मयत्न करे; अथवा विषयतृष्णा, अथवा छरिषुर्वर्गने. अथवा आठ कर्मने आवतां अटकारे. आ प्रमाणे सुधर्मा- स्वामी कहे छे के हुं कहुं छुं. क्षीतोष्णीय नामना अध्ययननो पहेलो उदेशो समाप्त थयो.	1188 <i>2</i> 11

	बीजो उद्देशों 	<b>X</b>
স্তাৰাণ	ાં 🗶 सुवाधा ''दृःख एडवाज्ञ' फेळ बताव છ. एम त बनना खबन्व छ, सुत्र अनुगम हावाया खून कह छ.—	" 🤾 सूत्रम
118401I	🕺 जाइं च वुद्धिं च इहऽज ! पासे, भृएहिं जाणे पडिलेह सायं, तम्हाऽतिविजे परमंतिणचा,	1184011
	र्भ संमत्तदंसी न करेइ पावं ॥१॥	¥
	🐐 जाति एटछे, जन्मथी लइने बाळकुमार-यौवन बुढापा सुधी टुद्धि छे, ते मतुष्यलोकमां, अथवा संसारमां इमणांज (काळन	п 🛐
	्री विछंब विना) तुं जो. तेनो सार आ छे के गुरु शिष्यने कहे छे केः-हे भद्र ! इमणां जनमता जीवोने बुढापासुधीमां शरीर म दे संबन्धी केवां केवां दुःखो भोगवाय छे ते तु विवेक चक्षुथी जो, कड्युं छे केः	न 🐧
	ु संबन्धी केवा केवा दुःखा भोगवाय छ त तु विवक चक्षुथा जा, कह्यु छ कः	¥
	🖗 जायमाणस्स जं दुवखं, मरमाणस्स जंतुणो । तेण दुवखेण संतत्तो, न सरइ जाइ मप्पणो ॥१॥	X
	जनमता माणसत्तुं जे दुःख छे, ते माणसने मरमी बखते पडतां दुःखथी ते तपेलो होवाथी पूर्वथी जाती पण विसरी गयो क	ð. <u>Ç</u>
	जनमता माणसत्तं जे दुःख छे, ते माणसने मरमी बखते पडतां दुःखथी ते तपेलो होवाथी पूर्वथी जाती पण विसरी गयो ह है विरसरसियं रसंनो तो सो जोणीमुहाउ निष्फडइ । माऊए अप्पणाऽविअ वेअणमउलं जणेमाणो ॥२॥	₹.
	माना चावेला आहारने गर्भमां बेठेलो बाळक परवक्ष थइने खाय छे, अने पोते जनमती बखते पोताने तथा, माताने घण	ft 🕺
	🕈 पीडा आयीने योनिद्वारा बहार नीकळे छे.	8

		R.
	🗶 हीणभिण्णसरो दीणो विवरीओ विचित्तओ । दुब्बलो दुक्खीओ वसइ, संपत्तो चरिमं दसं !!२॥	¥ I
आचা৹	अने ते कहानस्थामां हीन-भिन्न (म्लोकरो) अनाज होय छे. रांकर प्रस्त तथा विपरीत विकल्प करनारो हर्नेळ दृःखी अवस्थामां	स्त्रम
	🕼 ते पडेलो होय छे, अथवा हे आर्थ ! एवं महावीर प्रधु गैतमने कहे छे, के जाति टुद्धि अने तेनुं मूळ कारण कर्म तथा कार्य दुःख	
1182611	ि छि पन भा, अने दखान बाध पास, अने पतुं जन्म विवर्त्त दुरेल पन ने आप, पतुं सपम अनुष्ठान करे 👔 👔	ાકપ્રશા
	वळी चौद प्रकारना भूत ग्राम (जोवोनां चौद स्थान) छे. तेनी साथे तारा आत्मानुं सुख सरखाव एटले जेम तुं सुखने वांछे	
	👌 छे तेम बधा पण वांछे छे अने तने दुःख गमतुं नथी तेम बीजानुं पण समज, तेथी तुं कोइने दुःखन दे तो तेथी तने जन्मादि दुःख	X
	🐧 नहि मळे. कहां छे के:	
	र यथेष्ठविषयाः सातमनिष्ठा इतरत्तव । अन्यत्रापि विदित्वैवं, न कुर्यादप्रियं जने ॥१॥	
	जेवी रीते तने इन्द्रियोना गस व्हाला छे अने अनिष्ट अभिय छे एवी रीते जाणीने बीजाने अघिय कृत्य न करतो. शिष्य पूछे	<u>Z</u>
	🎾 छे तो शुं करवुं? उ०जाति इद्धि सुख दुःख देखीने तत्व बतावनारी श्रेष्ट विद्याने जाण, अने जे तत्व जाणेला होय, ते मोक्ष अथवा 🖌	Y.
	14. AN IN IN AN	K I
	🕱 मूळ संसारी स्नेदना पासो छे, ते छोडवा उपदेश आपे छे,	K
	ू परम ज्ञान विगेरे अथवा मोक्ष मागेने जाणीने सम्यक्तवदंशी बनीने पाप न करे, अर्थात् सारी साधु पाप व्यापार न करे. हव पापनु मूळ संसारी स्नेहना पासो छे, ते छोडवा उपदेश आपे छे, उम्मुं च पासं इह मच्चिएहिं, आरंभजीवी उभयाणुपस्सी; कामेसु गिद्धा निचयं करंति, सं-	¥.
		<b>T</b> ∖

	🕺 तिचमाणा पुणरिंति गब्म सतूत्र. २॥ काव्य	X
স্পান্থা৹	अा चार प्रकारना कषाय तथा विषयना विमोक्षमां समर्थ आधार रुप मनुस्य लोकमां संसारी मनुष्यो साथे द्रव्यथी तथा भा-	ु सूत्रम्
ાકપ્રશ	र वथी बंने प्रकारे जे पात्र (मोइजाळ) छे, तेने सर्वथा छोड; कारण के ते जन समूह काम भोगनी लालसात्राळो छे तथा ते मेळवत्रा माटे जीव हिंसा विगेरे पापा आरंभे छे. तेथीज सूत्रमां कह्युं छे के ते आरंभथी जीववावाळा छे, अने महारंभ परिव्रहथी रचना	ર્ક્સ શકપરશ
	कराने जावनना उपाय याज छ, तथा उभय एटल शरारना तथा मन संबंधा अथवा आ लाक तथा परलाक सबन्धा (भागाकाक्षा) छे, वल्ली ते काम भोगमां रक्त थइने अशुभ कर्मना उपचय करे छे. अने ते कर्म संचय करीने एक गर्भथी नीकल्ली बीजा गर्भमां मवेश करे छे. अने संसार चक्रवाल (चक्रावा) मां अरटनी घटमाल जेम भराय अने ठलवाय ते न्याये जुनां कर्म भोगवे, अने फरी नवां बांधीने भ्रमण करे छे. वल्ली ते अनिष्टुत (विना विचारनो) आत्मा केवो (दुष्ट) थाय छे ते कहे छे. अविसे हासमासज, हंता नंदीति मर्झई अलं बालस्स संगेण, वेरं वट्ठेइ अप्पणो (सू० ३) काव्य. लजा भय बिगेरेना निमित्तथा चित्तना विप्लववाळुं जे दास्य (दांसी) छे, तेने मेलवीने इच्छा मेमी बनी (क्रीडानी खातर)	¥
	नवां बांधीने भ्रमण करे छे. नळी ते अनिशृत (विना विचारनो) आत्मा केवो (दुष्ट) थाय छे ते कहे छे.	
	अविसे हासमासज, हंता नंदीसि मन्नई अलं बालस्स संगेण, वेरं वडेइ अप्पणो (सू० ३) काव्य.	
	🖌 लजा भय विगेरेना निमित्तथां चित्तना विप्लववाळुं जे दास्य (दांसी) छे, तेने मेळवीने इच्छा प्रेमी बनी (क्रीटानी खातर)	S
	त्री जीवोने हणी [जिकारमां] आनंद माने छे, अने वीजाओने फसाववा ते महा मोहथी पेरायले अशुभ विचारवाळो वोले छे के "आ सन विगेरे प्रश्नओ जीकारने माटे बनाव्यां छे, तथा शिकार सखी प्रस्वीनी क्रीडा माटे छे." जेवी रोते जीव हिंसा सिद करे छे.	
	मूम विगेरे पशुओ शीकारने माटे बनाव्यां छे, तथा शिकार छुखी पुरुवानी कीडा माटे छे.'' जेवी रोते जीव हिंसा सिद्ध करे छे. तेम जुठ चोरीमां पण सिद्ध करे के. आ जुठुं बोली ठगईं के चोरी करवी ए तो बुद्धि बळनुं तथा बहादुरीनुं काम छे विगेरे समजी	
		<b>A</b> F (

	रे है लेवुं जो आवी रीते संसारी मनुष्या पाप करनारा छे. तो साधुए शुं करवुं, ते आचार्य कहे छे.	2	
স্তান্থাত	के जे मनुष्यो जिकारी विगेरे होय, अथवा विषयय कषायमां रक्त होय, तो तेवा बालजीव साथे हास्यादि तथा संग न करवोः जे जो पापीनो संग करे तो मांहोमांहे लडाइ यतां वैर वधे छे, अने परस्पर वैर लेवानो प्रसंग आवे छे. जेमके गुणसेन राजाए जुदी	४ ४ सुत्रम्	
	अग्नि करेखा हास्यना कारणे अग्निश्चर्मा झाछण साथे वेर वधीने नव भव सुधी चाल्युं. [समरादित्य चरित्रमां तेनी कथा छे के अग्निश्नमां झाछणतुं कुरूप जोड राजकुमार गुणसेने तेनी हांसी करी. तेथी झाछणे कंटाळी तापस बनी तप करी विख्यात थयो. अनुक्रमे गुणसेन राजा बनी ते तापस पासे आव्यो पूर्वनी वात सांभळो राजाए क्षमा चाही पारणायां जमवानुं भामन्त्रण कर्युं. त्रणे वार आमन्त्रण वखते राजा भूली गयो. अने तापस पाछो गयो. तेथी तापसने आ दरेक वखते हांसी लागी, अने वैर लेवानुं नियाणुं कर्युं. गुणसेन ते समरादित्य थयो. अने नव भव सुधी तेनी साथे तापसने आ दरेक वखते हांसी लागी, अने वैर लेवानुं नारनो संग पर न करवो] एज प्रमाणे विषय संग विगेरेमां पण दुःख अने वैर वधवानुं जाणी तेवाओनो संग न करवो. जो एम छे, तो साधुए शुं करवुं ? ते कहे छे. तम्हातिविज्जो परमंतिणच्चा, आयंकदंसो न करेइ पावं, अग्गं च मूरुं च विगिंच धीरे,	2 2 2 2 184511	
	पछिचिछिदियाणं निकम्मदंसी (सू० ४) काव्य. बाळ (पापी) नी संगतिथी बैर वधे छे, तेथी अति विद्वान् (गीतार्थ) मुनि परम एटळे मोक्षपद अथवा सर्व संवररुप चारित्र	X	

	अथवा सम्यग झान अथवा सम्यग दर्शन [ए त्रणे उत्तम होवाथी] तेने जाणीने शुं करे ते ग्रुरु कहे छे.	Š.
সানা৹	अग्वन वर्ती	र् सुत्रम
183811	अग्र—चार अघाति कर्म जे भवोषग्राही छे. ते अग्र छे, अने मूल—ते चार घातीकर्म छे. ते मूळ छे. (अथवा बीजीरीते	2 1184811
	र लइए तो) मोइनीय कर्म मूळ छे. वाकीनां सात कर्म अब्र छे. अथवा मिथ्यात्व मूळ छे. बाकी बधी मक्कति अब्र छे. ए ममाणे बधां अब्र तथा मूळ कर्मने दूर कर; आ सूत्रवी एम सूचव्युं के कर्म ते पुद्रलनों समूह छे. तेनों सर्वथा क्षय थतो नथी, पण योग्य अनु-	Ť
	र हान करवाथी आत्माथी सर्वथा दूर थइ झके छे. मोइनीयनुं अथवा मिथ्यात्वनुं चघां कर्ममां मूळपणुं केवी रीते घटे छे ? आम जो कोइने अंका होय तो आचार्य कहे छे के	Ý
	तेना कारणे बाकीनी बधी मकुतिओनो बंध पडे छे. कढ़ुं छे के	Ċ.
	न मोहमतिवृत्य बंध, उदितस्त्वया कर्मणां; न चेकविध बंधनं, प्रकृतिबंधविभवो महान् ॥	\$
Š	अनादिभव हेतुरेष, न च बथ्यते नासकृत; त्वयाऽतिकुटिला गतिः कुशल ! कर्मणां दर्शिता ॥१॥	Ś.
	हे कुन्नळ प्रभो! तमे कर्मानो बन्ध मोह विना बताव्यो नथी, अने ते मोहनुं अनेक प्रकारनुं बन्धन छे अने प्रकृतिनो महान विमय छे; अने आ मोह अनादि अवनो हेतु छे. अने ते अनेकवार बन्धाय एम नथी. पण वारंवार बन्धाय छे. एथी कर्मीनी कु-	\$

आचा॰ ॥४५५॥	टिल गति आपे बतावी छे! तेज प्रमाणे आगम कहे छे— कह्एणं भंते! जीवा अद्व कम्मपगडीआ बंधति,? गोयमा! णाणावरणिज्ञस्स उद्एणं द्रिसणावरणिर्ज्ञ कम्मं नियच्छइ, दरिसणावरणिज्ञस्स कम्मस्स उद्एणं द्सणमोह्लीयं कम्मंनि यच्छइ, दंसणमोह्- णिज्ञस्स उद्एणं मिच्छत्तं नियच्छइ मिच्छत्तेणं उद्दिण्णेणं एवं खठ्ठ जीवे अट्ठकम्मपगडीआ बंधइ ॥ हे भगवान! जीवो केवी रीते आठ कर्म बांधे छे? हे गौतम! ज्ञानावरणोयना उदयथी दर्शनावरणीय कर्म बांधे छे, दर्शनावर- णीय कर्मना उदयथी दर्शनमोहनीय कर्म बांधे छे, अने मिध्यत्वना उदयथी आठे कर्मप्रकृतिओ बांधे छे, तेवी रीते सय पण, मोह- नीयकर्मना झय साथेज क्षय थाय छे. कह्यु छे के:— नायगंमि हते संते, जहा सेणा विणस्सई । एवं कम्मा विणस्संति, मोहणिजं खयं गए ॥१॥ नायक इषाबाधी जेम; सेना नाज्ञ पामे छे, तेवी रीते मोहनीयकर्मनो क्षय यवाथी बीजां सात कर्मे नाज्य थाय छे. अथवा मूळ ते असंयम अथवा कर्म छे, अने अग्र ते संयम तपसा अथवा मोक्ष छे, ते मूळना अग्रमां अक्षोभ्य (अचळ) धीर तुं था; अथवा बुद्धि ए ग्रोभायमान एवा जिप्यने गुरु कहे छे:—हे धीर ; विवेकथी असंययने दुःखन्नुं कारण तथा, संयमने सुखना कारणपणे मान, तथा तथ अने संयमवढे राग विगेरेनां बन्धन अथवा तेनां कार्य जे कर्म छे, तेने छेदोने कर्मरहित तुं बन; पटछे	あるかなかなかるかなど	त्रम् ५५॥
18 A S	छ पार जपना उपने ए सामानान प्रा सार्यन छुए गए छन्न हे पार, प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा पुरुष छु जारव समा, समय छुल्म कारणपणे मान, तथा तप अने संयमवढे राग विगेरेनां बन्धन अथवा तेनां कार्य जे कर्म छे, तेने छेदीने कर्मरहित हुं बन; एटछे तुं पोताना आत्माने कर्मरहित बनाव. एवा स्वभाववाळो निष्कर्मदर्शी कहेवाय छे. अथवा, मोहनीयकर्म क्षय थतां ज्ञानदर्शननां आव-		

	र्भ रण दूर थतां, ते सर्वदर्शा, तथा सर्वज्ञानी थाय छे,अने कर्मर हित थयलो, अथवा सर्वज्ञ बनेलो बीज़ं शुं मेलवे छे ते कहे छे:-		
आস্বা৹	र्षे एस मरणा पमुचइ, से हु दिट्टभए मुणी, लोगंसि परमदंसी विवित्तजीवी उवसंते समिए	🏹 सूत्र	Ą
<u> </u>		दू र ॥8५	ŝ.
	ु दुर थवाथी अघातीकर्ममां रहेछं आयु नवा भवतुं वंधातुं नथी, अथवा वारंवार मरवुं, अथवा क्षणे क्षणे मरवुं ए मरणथी ते मुकाय छे	$\hat{\boldsymbol{\lambda}}$	
	🔨 अथवा वधोज आ संसार मरण युक्त छे तैथी पोते मुकाय छे वळी ते, मुनि संसारमां रहेलो भय, अथवा संसार संबंधी सात प्रकारनो	2	
	अ भय तेने देखे छे. के (संसारीने आवा भयो आवे छे.) ते दृष्टभय कहेवाय छे, वळी ते छ द्रव्यना आधाररुप-लोक अथवा, चौद	Č	
	🖒 जीवस्थानवाळो लोक छे तेमां परम जे मोक्ष छे. अथवा तेनुं कारण संयम छे तेने देखवाना स्वभाववाळो होय ते परमदर्शी छे तथा	*	
	🔮 स्रीप श्च नपुंसक साधुना ब्रह्मचर्यने घात करनार छे, तेनाथी रहित एवा मकानमां रहे छे, ते द्रव्यथी विविक्त कहेवाय. तथा रामद्वेपर्थो	X	
	🔊 रहित निर्मेळ चित्त राखवाथी भावथी विविक्त कहेवाय. ते मुणवाळो होवाथी विविक्तजीवी कहेवाय छे. आवो मनि इंटिय तथा	201	
	🐒 मनने शांत राखवाथी उपशांत छे, अने ने पांच समितिथी युक्त होवाथी अथवा सरळ ते मोक्षमार्गे जवाथी समित छे, अने ज्ञान	ħ.	
	र्द विगेरेथी युक्त छे, तेम अभमादि पण छे. वळी ते मुनि तेवीरीते आखी जींदगी सुधी उत्तम गुणवाळो रहे; से काळ आकांशी कहे-	×.	
	परित गमफ वित संस्थाया मायया वावपत कहमाय, त उपवाळा हावाया विविक्तजाया कहवाय छ. आवा मुान हादय तथा पूर्व मनने शांत राखवाथी उपशांत छे, अने ने पांच समितिथी युक्त होवाथी अथवा सरळ ते मोक्षमार्गे जवाथी समित छे, अने ज्ञान दि विगेरेथी युक्त छे, तेम अममादि पण छे. वळी ते मुनि तेवीरीते आखी जींदगी सुधी उत्तम मुणवाळो रहे; से काळ आवांझी कहे- दे वाय; अने ए ममाणे पंडित मरणनी आकांक्षावाळो संयम-अनुष्ठानमां रहे.	<u></u>	

*	आबुं ज्ञामाटे करे ते कहे छे.	2
আন্বা০ 🤾	आबु शामाट कर त कह छ. मूळ उत्तरप्रकृतिना मेदवाळुं तथा प्रकृति, स्थिति, अनुभाव, प्रदेश, एम चार प्रकारे बन्धवाळुं, तथा बन्ध उदय–सत्तानी व्यव- स्थावाळुं, तथा बांधवुं स्पर्श करवो जोडावुं, एकपणे मळवुं; विगेरे अवस्थावाळुं कर्म छे; अने ते थोडाक काळमां क्षय थाय; तेषुं नथी, तेथी काळ आकांक्षी कह्युं छे.	रे सुत्रम्
2	स्थावाळुं, तथा बांधवुं स्पूर्व करन्ो जोडावुं, एकपणे मळवुं; विगेरे अवस्थावाळुं कमें छे; अने ते थोडाक काळमां क्षय थाय; तेषुं	
184011	नथी, तेथी काळ आकॉसी कह्यु छ.	รู่ แรงอแ
	तेयां वन्ध्रमधाननी अपक्षाए मळ उत्तरमकतिते बहुपण बताबार छाए. जमका	<b>7</b>
$\mathbf{\hat{z}}$	बधी मूळ प्रकृतिओं अंतर्म्रहूर्त सुधी साथे बांधे; ते आठ प्रकारनों कर्मबन्ध छे, अने आयुष्य न बांधे; तो, सात प्रकारनों छे,	<b>.</b>
	अने ते आयुने काळ जघन्यथी अंतर्मुहुत्ती छे, अने उत्कृष्टथी तेना शिवायनां ३३ सागरोपममां पूर्वकोदीनो त्रीजो भाग बधारे छे,	X
X	। अने संक्षेत्रायनों मोहनीयकमें नो बन्ध दर थतां, तथा आयुना बन्धनों अभाव थवाथी छ महारनी क्रेंचन्ध छे, अने त जघन्यथा 🛛	
2	एक समयनो अने उत्क्रष्टथी अंतर्म्र इत्ते छे, तथा उपज्ञांत क्षीणमोह तथा, संयोगी केवळीने सात प्रकारना कर्मना बन्धनो उपरम यतौ	4
. K	एक मकारनुं सातावेदनीयकर्म बन्धाय छे. ते जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्ट्यी पूर्वकोडीमां थोडुं ओछुं छे. इवे, उत्तरमकुतिनां बन्धस्थान कहे छेः—	
*	इवे, उत्तरप्रकृतिनां बन्धस्थान कई छेः—े	3
2	ज्ञान आवरण, अने अंतरायना पांचे भेदनं ध्रववंधीपणं होवाथी एकज बंधस्थान छे, तथा दर्शनावरणीयनां त्रण बंधस्थान कहे छेः—	
	(१) पांच निद्रा अने चार दर्शन साथे रहेवाथी ते नवेतुं धुव बन्धीपणुं होवधी नवविधतुं एक स्थान छे, (२) तेमांथी थीणदि	×
¥	निदात्रिक अनंतानुबंधीनी चोकडी साथे दुर थवाथी ते त्रणना बंधनो अभाव थतां छ प्रकृतिनो बन्ध छे (३) अपूर्व करणना संख्येय	<b>≮</b> I
8	ા વિદ્વાર્ગ બેવલાશુપ્રવામાં પાંજકા સામ કુર પંચાયા હે તેમમાં પંચાય બંધા છે નેષ્ટાહેલા વેખે જે (૨) ગરૂમ સરમાં ઉપ	XI.

:	ू भागे निद्रा अने प्रचलानो बन्ध दूर थतां चार प्रकारना दर्शनावरणनो बन्ध रहेवाथी ते त्रीज़ स्थान छे.	S
<b>आ</b> षा०	रे वेदनीय कर्मतुं एकज बन्ध स्थान छे. चाहे साता बांधे चाहे असाता बांधे, पण एक बीजानी बिरोधी होवाथी बंने साथे न बांधे. मोहनीयकर्भनां दश बन्धस्थान छे.	र् भू सुत्रम्
<b>1184</b> 511	(१) एक मिथ्यात्व १, सोळ कषायो १६, कोइ पण एक वेद १, हास्य रतिन्नुं जोडकुं अथवा अरति झोकनुं एक जोडकुं ते-	2 18420
i	🖕 (२) मिथ्यात्वनो बन्ध दूर थतां सास्वादनगुणस्थनमां २१ नो बन्ध छे.	+
	(३) तेमांथी मिश्रदृष्टि अथवा अरतिसम्पगदृष्टिने अनंतानुबन्धी चोकडी दूर यवाथी १७ मकारनो बन्ध छे.	1
	🐇 (४) तेमांथी देर्झावरति ग्रुणस्थाने अपत्याख्याननी चोकडीना बन्धनो अभाव थवाथी १३ नो बन्ध छे,	9
	😧 (५) तेमांथी ममत्त अपूर्वकरणमां वर्तता साधुने मत्याख्याननी चोकडो दूर थवाथी ९ नो बन्ध छे.	Č.
	(६) तेमांथी हास्य विगेरेनुं जोडकुं तथा भय जुगुप्सा दूर थवाथी फक्त ५नो बन्ध अपूर्व करणना चरम [छेल्छा] समये छे.	4
:	(७) तेमांथी अनिहत्तिकरणना संख्येय भाग वीते थके पुरुष वेदना बन्धनो अभाव धतां चारनो बन्ध छे. (८) तेमांथी तेज गुणस्थाने संख्येय भाग गये थके अनुक्रमे क्रोधनो क्षय थतां ३ नो बध छे.	5
	🛃 🔰 (૮) તમાચા તળ શુખરવાળ સંસ્થય માળ ગય યજ્ય અનુવ્રમ વ્યાવના સંય ચલા ૨ નો વધ છે.	<u>Č</u>
	(९) माननो क्षय थतां २नो बन्ध छे [१०] मायानो क्षय थतां १नो बन्ध छे त्यार पछी अनिदृत्तिकरणना छेल्ला समयमां मो-	¥.
	🗶 इनीयना बन्धनो अभाव थवाथी अबन्धक छे.	X

	र सामान्यथी आयुकर्भनो बन्ध एक मकारनो छे	
জাৰাণ	चार मकारना आयुमांथी कोइ पण एकनो बन्ध होय पण वे अथवा त्रण साथे बन्धावानो अभाव होवाथी एक बन्ध जाणवो	्र सुत्रम्
1840'11	नाम कर्मनां आठ वन्धस्थान छे. (१) २३ मकृति तिर्यंच गतिने योग्य बांधतां थाय छे. ते नीचे प्रमाणे तिर्यंच गति, १ एकेंद्रिय जाति १ औदारिक तेजस कार्मण क्षरीरो ३ हुंड संस्थान १ वर्ण गंध रस स्पर्श ४ तिर्यंग गतिने योग्य अनुपूर्वी १ अगुरु छघु १ उपघात १ स्थावर १ बादर	ર સાકપડ્યા સ
	🕻 सुक्ष्ममांथी १ कोइ पण एक, अपर्याप्तक १ पत्येक साधारणमांथी एक १ अस्थिर १ अशुभ १ दुर्भेग अनादेय १ अयज्ञ कीति १ 🕻	
	(२) ते त्रेवीशमां पराघात अने उच्छ्वास मळी एम २५ पर्याप्ता एकेंद्रियने बन्व जाणवो.[भपर्याप्ताने वदछे पर्याप्ताने २५ मकृति छेवी. (३) एमां आतप अथवा उद्योत एक मकृतिनो बन्ध मेळवतां २६ थाय पण साधारणनी जम्याए मत्येक अने सूक्ष्मनी जम्याए बादर छेवी. (३) एमां आतप अथवा उद्योत एक मकृतिनो बन्ध मेळवतां २६ थाय पण साधारणनी जम्याए मत्येक अने सूक्ष्मनी जम्याए बादर छेवी. (३) इत्यातिने योग्य बांधतां २८ मकृतिनो बन्ध नीचे सुजब छे. देवगति १ पंचेंद्रिय जाति १ वैक्रिय तेजस कार्मण त्रण शरीर ३ समचतुरस्न संस्थान १ अंगोपांग १ वर्ण विगेरे चतुष्ट्य, ४ अनुपूर्वी १ अग्रुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ उच्छवास १ मशस्त १ विद्यायोगति १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ मत्येक १ स्थिर अस्थिरमांथी एक, १ श्रुभ स्रभग १ सुस्वर १ आदेय १ यशःकीर्चि	*
	ि विहायागात १ त्रस १ बादर १ पयोप्त १ मत्यक १ स्थिर आस्यरमाया एक, १ छन ७ ७ छुन्द १ एक, १ छन्द १ गार्थ १ र फाल्म १ अथवा अयन्नःकीत्ति निर्माण २ [टीकामां शुन अधुममांयो कोइ पण एक होय छे, एम लख्युं छे. टीपणमां एकली शुम लीधी	*

	छे] एम कुल २८ नो बन्ध थाय छे. (५) तेमां तीर्थंकर नामकर्म उमेरवाथी २९	8	
आचা৹ 🎗	(५) तेमां तीथेकर नामकर्म उमेरवाथी २९ (६) इवे त्रीश्चनों बन्ध बतावे छे. देवगति, १ पंचेद्रियजाति १ बैकिय आहारक ज्ञनीर २ अंगोपांग २ तेजसकार्मण २ पहेछं	रे सूत्रम	
ાાકદગા 🕺	संस्थान १ वर्णांढि चतुष्क ४ अनपूर्वी १ अगुरुलुष्ठ १ उपयात १ पराधात १ उच्छवास १ प्रश्नस्तविहायो गति १ त्रस बादर पर्याप्त	2 188011	
2450	मत्येक स्थिर शुभ सुभग सुस्वर आदेय यक्षःकीर्त्ति ए दक्षक <sup>१०</sup> तथा निर्माण १ नाम मळी फुल ३० [७] एमां तीर्थकर नाम मेळववाथी ३१ थाय छे. आ प्रमाणे एकेंद्रिय वेइंदिय त्रेथेंद्रिय नरकगति विगेरे आश्रयी अनेक मेदे बन्धना घणा प्रकारो छे. ते कर्म ग्रंथथी जाणवा.	Š	
ž.	(८) अपूर्वकरण आदि त्रण गुण स्थाने देवगति मायोग्य बन्धना उपरमधी यन्नःकीर्तिज कक्त बांधे छे. तेथी एक विधवन्ध	2	
*	छे. त्यारपछी नामकर्मना बन्धनो अभाव छे. गोत्रकर्ममां सामान्यरीते उंच अथवा नीचनो एकनो बन्ध छे. उंच अने नीच बन्ने विरोधी होवाथी साथे बन्धावानो अभाव		
Š	छे. कमेंड्रिं आ ममाणे बन्धदारमां छेक्षथी घणा मकारपणुं क्ताच्युं. सूत्रकार तेथा कहे छे केः—आ कर्म जीवे वांध्यां छे. ते खुछेखुस्छुं छे, कारणके, ते ममाणे भोगवतां इरेकने अनुभवाय छे. [सूत्रमां खलु क्वव्द वाक्यालंकारमां छे अथवा निश्वयअर्थमां छे के, कर्म बहु मकारेण छे.] जो आ प्रमाणे छे, तो ते कर्मबन्धनने	X Č	
	[सूत्रमां खलु ग्रब्द वाक्यालंकारमां छे अथवा निश्वयअर्थमां छे के, कर्म बहु प्रकारेण छे.] जो आ प्रमाणे छे, तो ते कर्मबन्धनने दूर करवा शुं करवुं ? ते कहे छे:	R	

	🐐 सच्चंमि धिई कुवहा, एत्थोवरए मेहावी, सबं पावं कम्मं जोसइ (सू० ११२)	X
आचা৹	🧲 🔰 उत्तम जीवोने हित करनार ते सत्य छे, अने तेनेज संयम कहे छे. ते संयममां धैर्यता राख, अथवा यथावस्थित वस्तुनुं स्वरू	र रू सुत्रम
#કર્શા	🖗 जिनेश्वरे बताववाथी तेमनुं कहेछं मौनींद्र आगम (जैन सिद्धांत) सत्य (तत्व) छे. ते भगवंतना वचनमां उपरत [अतिशय रक्त] बनी 🗴 मेघावी [तत्वदर्शी] साधु वधां पाप कर्म जे संसार समुद्रमां अमण करावे छे तेने [संयम अनुष्ठान तथा तप वडे] क्षय करे छे. अ	11.4 <u>/</u>
	🖌 प्रमाणे अप्रमादी साधुना उत्तम गुणो बताव्या ते अप्रमादनो जत्रु प्रमाद छे, ते कपाय विगेरें ममादथी प्रमत्त बनेलो केवो दुर्गुण	
	🖊 थाय छे. ते कहे छे.	
	🎾 अणेगचित्ते खल्ल अयं पुरिसे, से केयणं अरिहए पूरिण्णए, से अण्णवहाए अण्णपरियावाए	
	🖒 अण्णपरिग्गहाए जणवयवहाए जणवयपरियावाए जणवयपरिग्गहाए (सू० १९३)	X
	अणंगचित्त खलु अयं पुरिसं, सं कंपण आरहए पूरिणणए, सं अण्णवहाए अण्णपरियावाए अण्णपरिग्गहाए जणवयवहाए जणवयपरियावाए जणवयपरिग्गहाए (सू० ११३) खेति वेषार प्रजुरी विगेरे अनेक प्रकारना कार्यमां तेन्नुं चित्त लागवाथी ते संसारी जीव अनेक चित्तवाळोज छे. एटळे स सार सखनो अभिलामी अनेक चित्त (चंचळ चित्त) वाळो होय छे. "आ प्ररुष" एम कहेवाथी संसारी जीव बताव्यो. अहीं प्र	- 3
		i t
	🕻 कहेल दथि घटिका अने कपिल दरिद्रीनो दष्टांत कहेबो. (उत्तराध्ययन सूत्रमां कपिलनो दष्टांत बतावेल छे.) हवे जे अने	Б
	र्म चित्तवाळो छे ते शुं करे छे, ते बतावे छे. द्रव्य केतन एटले चालणी पूरनारो अथवा सम्रुद्द छे. अने भावकेतन ते लोभन दूँ इच्छा छे. एटले पूर्वे कोइए पण भर्धुं नथी, तेने पोते भरवा इच्छे छे, तेनो सार आ छे के पैसाना लोभमां शक्य अथव	t 🔀
	र इच्छा छे. एटले पूर्वे कोइए पण भधे नथी, तेने पोते भरवा इच्छे छे, तेनो सार आ छे के पैसाना लोभमां शक्य अथव	T X

1185511 Dr. 2015	अश्वक्य कार्यमां विचार्या दिना अश्वच्य अतुष्ठानमां वर्ते छे, अने लोभनी इच्छा पूरण करवामां ज्या- कुल मतिवाळो बनीने शुं करे छे, ते कहे छे; ते लोभोओ बोजा पाणीओना चधमां तत्पर थाय छे, अने वीजा जीरोने शरोर तथा मन संबंधी परिताप करावे छे तेज भ्माणे वे पगवाळां मतुष्य चार पगवाळां मतुष्य पशु विगेरेनो संग्रह करे छे, तथा जानपद एउले जन पदमां थएला काळ पष्ट विगेरे अथवा राजा विगेरेनो वध करवा तैयार थाय छे, अथवा लोकोनी निंदा माटे कुल्य करे छे, पटले आ चोर छे एम बीजानो चुगलो करे छे, अथवा पारकानां छिंद्र उघाडे छे, अथवा लोकोनी निंदा माटे कुल्य करे छे, एटले आ चोर छे एम बीजानो चुगलो करे छे, अथवा पारकानां छिंद्र उघाडे छे, अथवा मगध विगेरे देशो जीतवा यत्न करे छे (मूळ सूत्रमां कियापद नथी लीधुं ते लेखुं) आ प्रमाणे लोभीआ मतुष्यो वध विगेरे किया करे छे के वीजुं पण पण करे छे ते बतावे छे. आसेवित्ता एतं (वं) अटं इचेवेगे समुट्टिया, तम्हा तं चिइयं नो सेवे, निस्सारं पासिय नाणी, उववायं चवणं णच्चा, अणण्णं चर माहणे, से नछणे न छणावए छणंतं नाणु जाणइ, निविंद नंदि, अरए पयासु. अणा मदंस्तिनिसण्णे पावेहिं कम्मोहिं (सू० १९४) जपा बताच्या ममाणे बोजा जीवोनो वध करवो. संग्रह करवो, तथा बीजा जीवोने दृःख देखं विगेरे पाप करीने पेताना लो-	2 1185 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7
Set of the set	माद, अरेष्ट्र पपाछु, जणा मदारतामराउंग रापाढ करनाढु (सुर्व ९८०) उपर बताव्या प्रमाणे बीजा जीवोनो वध करबो, संग्रह करवो, तथा बीजा जीवोने दुःख देवुं विगेरे पाप करीने पोताना लो- भनी इच्छा पूर्ण करीने केटळाक मनुष्यो भरतचक्रवर्ती विगेरे (ते जीवोना यता दुःखने नजरे देखीने बैराग्य पामीने) मन वचन कायाना दुष्ट व्यापारने धिकारी श्रुभ व्यापारमां एटले संयम अनुष्ठानमां यत्न करे छे अने महान तपश्चर्या करवाथी तेज भवमां	

Į		X.
আৰা০ /	मोक्षमां जाय छे, अने ते प्रमाणे विचारी संयम अनुष्ठानमां वर्तीने काम भोग तथा हिंसा विमेरे आसवद्वारने त्यागीने शुं करखं ते कहे छे. जेणे भोग त्याग्या ते माणसे मतिज्ञा करीने वीजी वखत भोगना छाछचुन थखुं, अथवा जुठ अथवा असंयममां वर्तचु नहि.	र सत्रम
আমাণ (	कह छ. जज मान त्यान्या त मायस मात्रेज्ञ कराउ पाजा पर्यंत मानना ठाठपुर पदा, मयमा उठ गयमा उत्तात्र ति ति त्यु कर्य कारण के पांच इंद्रियोना स्वादने खातर असंयम सेवे छे पण ते विषयो सार विनाना छे कारण के जे सार वस्तु छे ते मेळववाथी	
॥୫६३॥ 🛛	कारण के पांच इंद्रियोना स्वादने खातर असंयम सेवे छे पण ते विषयो सार विनाना छे कारण के जे सार वस्तु छे ते मेळववाथी तृप्ति थाय छे पण जे वस्तुधी तृष्णा वधे तथी ते निःसार छे, एवुं देखीने तत्व जाणनारो साधु विषय अभिलाप न करे, आ मनु- ब्योना विषयरसो असार छे, अने अनित्य छे एटछंज नहि पण देवताओनुं पण विषय सुख तथा जीवित अनित्य छे ते बतावे छे.	ર્ગાકદરગા
	व्योना विषयरसो अतार छे, अने अनित्य छे एटछंन नहि पण देवताओनुं पण विषय सुख तथा जीवित अनित्य छे ते बतावे छे.	2
	🖗 उपपात (उत्यन्न) थवुं, च्यत्रन (नाज्ञ ्पामवुं) ते जाणीने वि्षय संगना सुखनो त्याग करजे. कारण के विषयसमूह अथवा वधो	L L
	े उपपात (उत्यन्न) थवुं, च्यतन (नाञ्च पामवुं) ते जाणीने विषय संगना सुखनो त्याग करजे. कारण के विषयसमूह अथवा बघो संसार अथवा सर्वे स्थान अशाहवत छे तेथी शुं करवुं ने कहे छे. मोन्न मागथी अन्य असंयम छे ते अन्यने छोडीने अनन्य ज्ञानादिक छे, तेनुं सेवन कर, माहण एटले मुनि तेने आ उद्देश	
	भास मागया अन्य असयम छ ते अन्यन छाडान अनन्य शानादक छ, तेतु त्वन कर, नाहण रटल छान जन जा जर्म आप्यो छे. वळी ते मुनि संयम पाळनारो पाणीओने दुःख न दे, न हणे, न हणावे, न हिंसा करनारने अनुमादे, आ प्रमाणे हिं-	Ř
	है साथी चिट्टत यह चोधुं वत पाळे, ते कहे छे विषयथी उत्पन्न थएल जे आनंद तेने धिकार, तथा स्त्री विमेरेमां राग रहित थहने	
	) आवी भावना भाव, "आ विषयो किंपाक फळनी उपमावाळा छे अने कडवा तुरियाना जेवा कडवां फळ आपनारा छे" एम जा-	Ś
	🔎 लीने ते विषय संख लेवाना परिग्रहना मगत्वने त्यांगी हे. इवे उत्तम धर्म पाळवा माटे कहे छे. अवम एटले मिथ्यादर्शन अवि- 🕻	K.
	रति विगेरे छे तेनाथी उल्ड अनवम एटले संयम छे, तेने देखवाना स्वभाववाळो ते सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्रवाळो थइने उपर किंदा मुजब तुं स्त्री संगनी बुद्धिने द्र कर. विषयोनी निंदा कर, आ मुत्रनो परमार्थ छे.	K.
j2	🕻 कह्या मुजब तुं स्री संगनी बुद्धिने द्र्र कर, विषयोनी निदा कर, आ सूत्रनों परमार्थ छ.	R.

जो अनवमदर्शी छे ते निसन्न छे एटले पाप कर्मोथी खेदी बनीने ते करतो नथी, अथवा पाप कर्मोथी दूर रहे छे. वळी बीज आचा० ही गुणो मेळववा बतावे छे.	ग ४) सूत्रम
अत्या कोहाइमाणं हणिया य वीरे, लोभस्स पासे निरयं महंतं तम्हा य वीरे विरए वहाओ, छिंदिज सायं ॥४६४॥ त्र लहुभूयगामी ॥१॥ गंथं परिण्णाय इहऽज ! धीरे साथं परिण्णाय, चरिज दंते । उम्मज लध्धुं इह माणवेहिं, नोपाणिणं पाणे समारभिजा सि त्तिवेमि ॥द्वितीय उद्देशकः ३-२ ॥	₹ ₩ ₩
कोध जेमां पहेलो छे ते क्रोधादि कषायो छे. तथा जेनावडे मपाय ते मान, एटले अनंतानुबन्धी थिगेरे कषायोना चार भेद हे छे ते अथवा क्रोध अने मान जे क्रोधनुं कारण छे ते गर्बने साधु हणे अने ते हणनारो वीर छे, तथा जेम द्वेषरूप क्रोध मान है हणे, तैमज राग दूर करवा कहे छे. लोभ पण अनंतानुवंधी विगेरे चार मकारनो छे तेनी स्थिति अने विपाकने जो, कारणके तेन स्थिति सुक्ष्म संपराय नामना दशमा गुणस्थान सुधी मोटी छे. अने तेनो विपाक अमतिष्ठान विगेरे नरकवासनी माप्ति सुधी छे.	¥ KI
तेथी सूत्रमां कहुं छे के ''गच्छा मणुआ य सत्तमिं पुढविं'' माछलां अने मनुष्यों मरीने सातमी नारकी सुधी जाय छे, मैं ममाणे ते मोटा लोभयां परवज्ञ थइने सातमी नारकीमां दुःख भोगवे छे, के नेथी सं करन ते कहे छे—	Š
र्ते तथी शुं करवुं ते कहे छे— जो लोसथी आबुं दुःख छे तो पाणी वध विगेरेनी महत्तिथी नरकमां जवुं न पडे माटे वीर पुरुष लोभथी दूर रहे. वळी शोक	r 🔹

आचা৹	and the set	अथवा संसार भ्रमण करावनार भावश्रोतने दूर कर तथा तुं लघु भूत एउले मोक्ष अथवा संयम ते तरफ जनारो लघुभूतगामी था, अथवा लघुभूत थवानी इच्छावाळो लघुभूत कामी बन; फरी उपदेश आपे छे तुं बाह्य तथा अभ्यंतर वे प्रकारे गांठने इपरिज्ञावडे जाणीने हमणांज धीर बनीने पत्याख्यान परिज्ञावडे लोड. बली विषय अभिलाप ते संसार प्रवाह ले तेने जाणीने टांव परले टंटियोने तपन हरीने संयय पान केनी रीने पाने ने हरे	10× 15:	सूत्रम्
<b>ા</b> ઝદ્દપા	- 22 - 22	वळी विषय अभिलाप ते संसार प्रवाद छे ठेने जाणीने दांत एटल्ठे इंद्रियोने दमन करीने संयम पाळ, केवी रीते पाळे ते कहे छे, अहींयां मिथ्यात्यादि शेवालयी आच्छादित संसार कुंडमां जीवरूपी काचवो तुं वनीने श्रुति (ज्ञान भणवुं) श्रद्धा तथा संयममां वोर्य जोडीने काचवो जेम तरी आवे तेम तुं तरोजा, मनुष्य सिवाय मोक्ष नथी, माटे मनुष्यपणामां तरवानुं कखुं पण माणीनी हिंसाना आरंभनां कृत्यो न करतो, पांच इन्द्रियो त्रण वळ श्वासोश्वास अने आयु ते दश माणने धारण करवाथी माणी कहेवाय. तेने दुःख न दे, न दुःख देनारां कृत्य कर. आ प्रमाणे शितोष्णीयअध्ययनमां बीजो उदेशो अर्थरूपे पुरो थयो.	しん ろう ちょう ちょう ちょうちょう	ાકદ્વત્રા
	101-10-100	सुधर्मास्वामीए जंबुस्वामीने कह्युं विगेरे पूर्व माफक जाणवुं. हवे त्रीजो उद्देशो कहे छे. एनो बीजा साथे आ प्रमाणे संबन्ध छे. गया उदेशामां दुःख तथा तेने सहन करवानुं बताव्युं अने ते सहन न करे तो साधु नहि एटऌंज नही पण संयम अनुष्ठान	そうちょうちょう	
	₹ ₽	करे तथा पापकर्म न करेः तोज साधु थाय छे. ते आ उद्देशामां बतावे छे. आ संबन्धवडे आवेला त्रीजा उद्देशाना सूत्र अनुगममां	2	

	ू। सूत्र उचारवुं जोइए. संघिं लोयस्स जाणित्ता, आयआ बहिया पास, तम्हा न हंता न विघायए, जमिणं अन्नमन्न-	5
आचা৹	वितिगिच्छाए पडिलेहाए न करेइ पावं कम्मं, किं तत्थ मुणी कारजं सिया? (सू० ११५)	४) ते सुत्रम
<b>ା</b> ୪ୡୡ୩	र्ट्स द्रव्यर्थो अने भावथी एम वे प्रकारे संधि छे. एटले भीत विगेरेमां फाट पडे ते द्रव्य संधि छे, अने भावथी संधि कर्म विवर रेट छे एटले दर्शनमोहनीयकर्म जे उदयमां आव्युं ते क्षय थयुं अने वीजुं वाकीतुं ज्ञांत छे ते सम्यक्त्वनी माप्तिरूप भावसंधि छे,	ર્ગ <b>શ</b> ાયદ્દા દ્ર
	दे अथवा ज्ञानावरणीय विशिष्ट क्षायोपशमिकभावने पामेल ते सम्यग् ज्ञाननी पाप्तिरूप भावसंधि छे. अथवा चारित्रमोइनीय क्षय उपभ्रमरूप भावसंधि जे छे तेने जाणीने विचारजे के प्रमाद करवो सारो नथी. जेमके लोकमां चोर विगेरे शत्रुना सैन्यथी घेरायेला लोकमां भीत अथवा बेडी विगेरेमां सांधो अथवा छिद्र देखीने प्रमाद करवो सारो नथी तेज ममाणे मोक्षाभिलाषीए कर्म विवर मेळवीने लव क्षण जेवा थोडा काळने पण स्ती पुत्रनां संसारी सुखनो	× • • •
	ू करवा सारा नथा तज प्रमाण मालामिलापर कम विवर मळवान लव तण जवा याडा कळन पण सा उन्ना सतारा छुलना है व्यामोह (प्रेम) करवो सारो नथी; अथवा सांधो तेज संधि छे, ते भावसन्धि ज्ञानदर्शन-चारित्रना परिपालनमां अशुभकर्मना उद- यथी काट पडे; तो पाछुं संघाण करीदेवुं. (कुभावने दूर करवो.) आ क्षयउपन्नमिक विगेरे भावलोकना आश्रयी छे, अथवा सूत्रमां विभक्ति बदलीए; तो, सातमी विभक्ति छेतां लोकमां है इटले, ज्ञानदर्शन-चारित्रने योग्य लोक छे, तेमां भावसन्धि जाणीने अक्षुण्ण (सम्पूर्ण) पाळवाने प्रयत्न करवो.	August State Scale Sc

সামা৹	No.	अथवा सन्धि एटले अवसर थम अनुष्ठान करवानो आव्यो छे तेने जाणीने लोक एटले, १४ प्रकारनां जीवोने उपजवाना १४ स्थान छे, तेने जाणीने जीवोने दुःख देवानुं कृत्य न करवुं. (संधिना त्रण जुदा अर्थ वताव्या. मथममां विवर एटले बाकुं	Š	सूत्रम्
<u>ા</u> કદંગા	うやちたちやちたちやちひ・ちしょう	अथवा फाट बताव्युं के. शत्रुथी घेरातां अजसर जोइने ममाद न करतां नासीजवुं; तेम मोह दूर थतां, संसारयी तरोजवुं; बोजो अधे सांघो बताच्यो. एटछे, जेम गृहस्यो घरमां फाट पडे; तो, प्रमाद कर्या विना पुरीदे तेम साधुने पापना उदयथी चारित्रमां दोष लामे; तो, तरत शुद्धि करीले. त्रीजो अर्थ अवसर कर्यो छे. एटछे, धर्मना अवसरे धर्म करी बोजा जीवोने दुःख थाय; तेबुं इत्य न करवुं एम बताव्युं.) बळी कहे छे के:—हे साधु ! तुं जेम, पोताना आत्माने सुख व्हार्ख गणे छे, अने दुःख अपिय माने छे, तेवी रीते बहारनां जीवो उपर पण मानी ले; अने पोताना आत्मा समान मानीने वधां जीवो सुखना वांच्छक, अने दुःखना द्वेषी जाणीने तेओने न थइन्न; तेम बीजाओथी जुदा जुदा उपायोवढे तेमनो घात न करावीन्न. जो के, बीजा मतना केटलाक साधुओ जीवदयाने सुख्य मानीने स्थूल्यसत्त्व ( मोटा जीव अथवा हाल्ता-चालता जीव ) ने मारता नथी; तोपण, तेओ पोताने माटे रंघावीने खाय छे; तथा गृहस्थ माफक, वस्तुनो संचय करवाथी तेमना लीघे, सूक्ष्म (नाना जंतुओ, अथवा एकेन्द्रिय) जीवो विगेरे हणाय छे, तेथी तेओ घातक छे, एटले वीजा पासे हणावे छे, अने इणनारनी अनुसोदना करे छे. (माटे साधुए तेवो पण दोष न लागे: माटे, साधु माटे रांघेलो आहार न वापरवो; तेम, संचय पण न करवो.) इवे एम	ひろうぶっとうかかんのみのた	<b>ା</b> ଃଝ୍ରା
	Ď	बतावे छे के. उपर प्रमाणे त्रण करणथी हिंसा न करवी. तेटलाथी साधु न कहेवाय; पण जेमां, पापकर्मतुं न करवातुं कारण छे.	2	

G	त बताचे छे. अन्योन्य जे शंका अथवा, एकवीजानो भय अथवा लज्जा, ते लज्जावडे अथवा लज्जाने ध्यानमांलड्ने परस्पर आशंका अथवा अपेक्षावडे, पापना उपादानरूप-जे कर्मतुं अनुष्ठान छे, ते साधु न करे; एटऌं पाप न करवाथी मुनि कहेवाय एटले जो,	1
आचা০		्र सुत्रम
1188<11	ै। एटल, सूत्रमा सरज (श्रष्य गुरुन पुछ छ कः	2 1188cn
L C T	कोइ साधु बीजा साधुओना डर अथवा ल्ल्जनाथी आधाकर्मादि आहार न ले; तो, ते म्रुनि भावसाधु कद्देवाय के नद्दि ? आचार्य कहे ले बीजो व्यापार लोडीने सांभल.	Č
	🖞 बोजो उपाधि जे पापना व्यापाररूप छे, तेने त्यागवाथी भाव साधुपणुं थाय छे, एथी एम समजबुं के, अंतःकरण निर्मळ	
145	)। - नग जनेत अधियाम निषमन्त्रानों ने बने साववारसानों अधियाम करें हो। जे मागवर्गत ने अने संस्थानक नीने-1	Č,
le l	ुछ, तना भारवहन करवामा भगद करान पण बाजा समान साधुना लज्जावड, अयवा ग्रुर महाराजना मयया अथवा गारब (पाताना उत्तम कुळ विगेरेना कारणे कोइ साधु आधाकर्म विगेरे दोषिर आहार विगेरे छोडी पडिलेहणा बिगेरे क्रिया करे; अथवा तीर्थनी	Š
<u>A</u>	कोभा माटे महिनाना उपवास विगेरे लोकप्रसिद्ध किया करे; तो, तेमां तेना मुनिभावपणानुंज कारण जाणवुं. कारणके; तेवी धर्म- किया करतां परंपराण (धीरे धीरे) तेनी शभ भावनी उत्पत्ति थत्रो.	Š.
T Some T State State State State	्रिंची जे पार्थि जे पापना व्यापाररूप छे, तेने त्यागवाथी भाव साधुपर्णु थाय छे, एथी एम समजवुं के, अंतःकरण निर्मळ करीने साधुनां अनुष्ठान करे; तेज भावमुनिपणुं छे, शिवाय नदि. जाप नजेम अधिग्राम विभयत्याजे के बते जावनप्रत्याजे अधिग्राय करे के जात्र जे माराज्यपि के अने मंत्रायाज्य जीवेला	A SCAR SCAR SCAR & CAR & C

	Ż	ં આ પ્રમાળ શુન્ અંતન્મરળથાં વ્યાયારથા રાદત હાલુમાં લાલુપબાલા હતું અહારાય પંતાબ્યાર ત્યારે વિષ્ય દ્વાર્થ્ય વ્યાય છે.	×   स्त्र	म्
आचা৹	R	यनयनो मुनिभाव केवीरीते छे? तेनां विशेप खुलासो शाखकार कई छेः	े है।॥४६	(S11
⊪૪૬૬॥	Re		Č.	
# 4 7 J.	S.	गुत्ते सया वीरे, जायामायाइ जावए' ॥ १ ॥ 'विरागं' रुवेहिं गच्छिजा महया खुडुएहि य,		
	X	आगइं गईं परिण्णाय दोहिनि अंतेहिं अदिस्समाणेहिं से न छिजड़ न भिजड़ 'न' डज्झह		
	5	'न' हंमइ कंचण सबलोए ( सू० ११६) समभाव ते, समता तेने विचारीने एटछे, समतामां रहेलों साधु जे जे करे छे, ते ते कोइपण मकारे दोषित आहार विगेरे	¥ X	
	X	समयाव त, समता तन विचारान एटछ, समतामा रहेला सातु ज ज कर छ, ते ते कहाय नजार रागर जाता गणार तिगर छज्जा विगेरेथी छोडे; अने लोकमां देखाडवा उपवास विगेरे करे; ते बधुं मुनिपणाना भावनुं कारण छे. अथवा, संयय ते जैना-	X	
	S	गम छे. ते आगममां बतावेली विधिए विचारीने संयम-अनुष्ठान करे; ते बधुं मुनिभावनुं कारण छे, एटले आगममां कह्या ममाणे	Ĵ.	
	X	चाळीने अथवा. समताने धारण करीने आत्माने प्रसन्न राखेः अथवा, आगम भणीने विचारीने अथवा, समदृष्टि राखीने छुदा	17 8	
		जुदा उपायोवडे इन्द्रियों तथा मनना अममाद विगेरेथी आत्माने प्रसन्न करे; अने आत्माने प्रसन्त राखवो• ते संयममां रहेछाथी थाय छे, अने तेमां हंमेशा साधुए अपमादीपणुं भाववुं तेज कहे छेः—		
	N.S.	याथ छ, जन तमा इमरा तायुर जनमारा उ मायु तज कर छ. सूछ सूत्रमां 'अणण्ण' विगेरे श्लोक छे तेनो अर्थ कहे छे:—	4	

4	तें जेनाथी बीज़ुं कंइ मोहुं नथी; ते अनन्य परमसंयम छे, तेने परमार्थ जाणनारो ज्ञानी ममादवडे दोष न लगाडे. अर्थात् संय- मुन्नियामां कोइपण वखत प्रमाद न करे. हवे जेम अप्रमादी थवाय ते बतावे छे. इन्द्रियो तथा मन ए वन्नेनी आत्माने कुमार्गे न जवा दइ ग्रुप्त राखे ते आत्मग्रुप्त साधु जाणवो, तथा हंमेशां यात्रा ते संयम	<b>A</b> I
୲୲ଽ୰୦୲୲	ी यात्रा अने संयम निर्वाहमां मात्रा वापरे ते यात्रा मात्रा कहेवाय, मात्रानो अर्थ अतिआहार न छे, एटछे आत्माने जेवीरीते संय-	ીાજીઆ
	🖁 ममां क्षक्ति रहे पण इन्द्रिओ उन्मत्त न थाय, अने संयमना आधाररूप देहतुं मतिपाल्टन लांबा काळ सुधी थाय, तेवीरीते आहार हुः विगेरे वापरे. कढ्ढं छे केः—	
	🖞 आहारार्थ कर्म्म क्रुर्यादनिन्द्यं, स्यादाहारः प्राणसन्धारणार्थम् । प्राणाः धार्यास्तत्त्वजिज्ञास-	4
	त्र नाय, तत्वं ज्ञेयं येन भूयो न भूयात् ॥१॥	S I
	र्दे आहार माटे निर्दोष गोचरी वापरे कारण के आहार छे ते माणोने धारण करवा माटे छे, अने ते पाणोतत्वनी जीझासा	2
	🖗 पूर्ण करवा माटे धारयाना छे, कारण के एवुं तत्व जाणवुं बारंवार जन्म छेवो न पडे. 🖞 हवे ते आत्मा ग्रुप्तता केवीरीते थाय ते गुरु बतावे छे.	J.
	विराग एटले मनोहररूप आंखो आगळ आवे, तो पण तेमां मेम न करे, अहिं रूप छेवानुं कारण आ छे के ते रूप सुंदर दे देखतां गमे तेवानुं मन खेंची ले छे, तेथी सूत्रमां रूप लीधुं छे, खरीरीतेतो पांचे विषयोमां विरागी बनदुं, तथा दिव्य भावनुं	

	रुप होय अथवा क्षुलुक एटले मनुष्यरुप होय ( देवांगना अथवा सुंदर रुपवाळी स्त्री देखीने ) तेमां ललचाय नहिं, अथवा देव संबन्धी के मनुष्य संबन्धी मोटुं नानुं रुप एटले तेमां पण मध्यम रूपवाळी के घणा रूपवाळी देवी के स्त्री होय तो तेमां लल- चानुं नहिं, अहिं ''नागार्जुनीयां' कहे छे.	स्त्रम्
आचা৹	ि संबन्धा के मतुष्य संबन्धी मोंडु नानु रुप एटले तमा पण मध्यम रूपवाळी के घणा रूपवाळी देवी के स्री होय तो तेमां लल- 🖌 ि चानुं नहिं, अहिं ''नागार्जुनीयां' कहे छे.	।।୫୦୫॥
1180811	🖞 विसयंमि पंचगंमीवि, दुविहंमि तियं तियं ॥ भावओ सुटुटु जाणित्ता, से न लिप्पइ दोसुत्रि ॥१॥ 👘 🎗	ř.
	्य अब्द विगेरे पांचे प्रकारना विषयोमां तथा बन्ने प्रकारमां एटळे जे इष्ट अनिष्ट छे, तेमां हीन मध्यम उत्क्रप्टने भावथी एटले परमार्थथी जाणीने रागद्वेषवडे पाप कर्मथी न लेपाय, अर्थात् तेमां रागद्वेष न करे, तेमां शुं आलंबन ले के रागद्वेष न थाय ते	
	🖌 कहे छे. आगमन तथा गमन ते तियैंच अने मनुष्यने चारे गतिमां आववा जवानुं छे. तथा देवता नारकीने तिर्यंच मनुष्यमांथीज 📝	
	🖞 आवचुं जबुं छे, नारकी माफक देवने पण बेज गति अगति छे, फक्त मनुष्यने मोक्ष गतिनो सद्भाव होवाथी पांच गति छे, आ प- 👔	
	ि माणे जीवने गति आगति थाय छे ते विचारीने संसार चक्रवाळमां कुवाना अरटना न्याये भ्रमण छे, ते समजीने अने मनुष्यप- 🧗 णामां भोक्ष मळे छे तेबुं जाणीने सुगतिनो अंत लावनार जे रागद्वेष छे तेने दूर करीने आगति गतिने आपनार रागद्वेष जाणीने	
	ते बन्नेने दूर करी कोइ थ्या जीवने पोते तरवार विगेरेथी छेदे नहिं, तथा भाला विगेरेथी भेदे नहिं, तथा अग्नि विगेरेथी बाळे	
2 2 2	ते बन्नेने दूर करी कोइ श्ण जीवने पोते तरवार विगेरेथी छेदे नहिं, तथा भाला विगेरेथी भेदे नहिं, तथा अग्नि विगेरेथी बाळे नहिं तथा नरकगति विगेरे अथवा अन्नुपूर्वी विगेरे घणी वार विचारीने पोते हणे नहि. अथवा रागद्वेपनो अभाव थाय तो उपर कहेळां पाप पोतानी मेळे दूर थाय, एटळे रागद्वेप छोडनारो मुनि छेदवा विगेरेना	
	अथवा रागद्वेषनो अभाव थाय तो उपर कहेळां पाप पोतानी मेळे दूर थाय, एटळे रागद्वेष छोडनारो मुनि छेदवा विगेरेना 🦨	

	) हे कृत्य पोत्ते न करे, मुत्रमां 'कंचण' विगेरे छे तेनी विभक्ति बदलीने त्रीजीमां अर्थ लइए, तो एम थाय के 'केनचित कोइपण माणस	S
আন্বা০	कृत्य पोते न करे, मूत्रमां 'कंचण' विगेरे छे तेनी विभक्ति बदलीने त्रीजीमां अर्थ लइए, तो एम थाय के 'केनचित कोइपण माणस एवो नथी के आ बधा लोकमां रागद्वेप विनानो होय ते रागद्वेपना अभावे छेदे, भेदे, अर्थात् रागद्वेष छोड्या पछी छेदे भेदे नहिं. जो के आ ममाणे गति आगतिना ज्ञानथी रागद्वेपनो त्याग थाय छे, अने तेना अभावथी छेदनादि संसार दुःखनो अभाव	र्ने स्त्रम
ારહરા	्रियाय छे, तेवुं मुनि जाणे छे, पण वर्तमान सुखछे देखनारा अमे क्यांधी आव्या क्यां जइशुं? अथवा अमने त्यां शुं मळशे, एवो विचार नथी करता, तेथी रागद्देष करीने नवां कर्म बांधीने संसार भ्रमणनी योग्यता अनुभवे छे. एवुं सूत्रकार बतावे छे.	ુ ગાકહરા
	ि विचार नथा करता, तथी रागद्रेंप कराने नवा कमें बाधनि संसार अमणनी योग्यता अनुभवे छे. एवं सूत्रकार बतावे छे. अवरेण पुर्वि न सरंति एगे, किम्मस तीयं किं वाऽऽगमिस्सं । भासंति छगे इह माणवाओ,	X
	विपार गया फरता, तथा राग्रेस फरान गया फन वावान सतार अगणना पान्यता अनुमय छ. एउ सुनकार वताव छ. अवरेण पुर्वि न सरंति एगे, किम्मस तीयं किं वाऽऽगमिस्सं । भासंति एगे इह माणवाओ, जमस्स तीयं तमागमिस्सं ॥१॥ नाईयमटं न य आगमिस्सं, अटं नियच्छन्ति तहागयाउ । विहुय कप्पे एयाणुपस्सी, निज्झोसइत्ता खवगे महेसी ॥२॥ उपरना वे सुत्र गाथानो अर्थ कहे छे. पहेछां हुं कोण हतो ? के हुं हाछ आवो छुं ? एवुं केटलाक मोह अने अज्ञानथी घेरा- येली बुद्धिवाळा जीवो जाणता नथी, एटले आ जीवने नरकादि भवथी उत्पन्न थयेलुं अथवा बाळ कुमार विगेरे वयवाळुं एकठुं थयेलुं पूर्वनुं दुःख विगेरे केवी रीते आवेलुं छे ? अथवा, भविष्यमां केवी रीते थरो ? एटले, आ विषय सुखना वांछक, अने दुः- खना द्वेपी जीवनुं भविष्यकाळमां शुं थरो.? ते तेओ जाणता नथी; पण जो, कदी तेओना इदयमां भूत-भविष्यनी विचारणा होत; तो, तेओने संसारमां रति (आनंद) थात नहीं, कह्युं छे केः	¥ X
K	विहुय कप्पे एयाणुपस्ती, निज्झोसइत्ता खवगे महेसी ॥२॥	
	उपरना वे सत्र गाथानो अर्थ कहे छे. पहेलां हुं कोण इतो ? के हुं हाल आवो छुं ? एवुं केटलाक मोह अने अज्ञानथी घेरा- येली बुद्धिवाला जीवो जाणता नथी, एटले आ जीवने नरकादि भवथी उत्पन्न थयेलुं अथवा बाल कुमार विगेरे वयवाळुं एकठुं	3
	🖌 येली बुद्धिवाळा जीवो जाणता नथी, एटले आ जीवने नरकादि भवथी उत्पन्न थयेलुं अथवा बाळ कुमार विगेरे वयवाळुं एकठुं	X
	्र ययेछं पूर्वनुं दुःख विगेरे केवी रीते आवेछं छे ? अथवा, भविष्यमां केवी रीते थशे ? एटले, आ विषय मुखना वांछक, अने दुः-	đ
	्र वर्षे इर्पे पुग्ल स्वार करी राव गार्थ्व व जनना, गार्ग्यना करी राव पर १९००, जा विषय छर्ल्या पाछक, जन दुज् हे खना द्वेषी जीवन्तुं भविष्यकाळमां शुं थरो.? ते तेओ जाणता नथी; पण जो, कदी तेओना हृदयमां भूत–भविष्यनी विचारणा है होत; तो, तेओने संसारमां रति (आनंद) थात नहीं, कह्युं छेकेः—	X
K	होत; तो, तेओने संसारमां रति (आनंद) थात नहीं, कह्युं छे केः	X

आचा०	केण ममेरथुप्पत्ती कहं इओ तह पुणोऽवि गंतर्व? जो एत्तियंपि चिंतइ इत्थं सो को न निविण्णो? ॥१॥	(सूत्रम
		ไม่สุด
<b>શ</b> ઙ૭ <b>ર</b> ૧	दुःख-संसारथी वैराग्य बाळो न थाय ? (अर्थांत थायज !) पण, केटलाक महामिथ्याज्ञानियो कहे छे केः—आ संसारमां अथवा मनुष्य-लोकमां जेवीगीते हाल मनुष्यो के, बोजां माणीओ जेवी अवस्थामां छे, तेवीनरीते भूतकाळमां स्तीपुरुष नधुंसक सौभाग्य- वाळो, दुर्भाग्यवाळो, इतरो, झीयाळ, ब्राह्मण. क्षत्री, विटशुद्र विगेरे भेदोमां भोगवता हतां; अने तेवुंज भदिष्यमां थवानुं छे. (भा ममाणे जैनेतर एकवादोनो मत कह्यो. ते लोको एवुं माने छे के जेम जीवो हाल्ती दशामां छे, तेवा भूतकाळमां हता; अने हवे पछी रहेशे.) (वीजो अर्थ) जेनाथी बोजो पर (अष्ट) नथी ते संयम अपर छे, तेनाथी जेनुं चित्त रंगायछं छे. तेवो पूर्वकालमां हता; अने हवे विषयसुख विगेरेने (स्थूलभद्रमुनि माफक) याद करता नथी. केटलाक रागद्वेपथी मुकायला भविष्यना देव संबंधी भोगोनी आकांक्षा राखता नथी. वळी आत्मा-रमणतामां रमता मुनिओने अम्रुक संसारी जीवने भूतकालनुं मुखदुःख के, भविष्यनुं थवानुं सुखदुःख लक्ष्यमां रहेतुं नथी; अथवा उत्तम प्र्यानमां वेठेला साधुने केटलो काल वीतीगया; अथवा केटलो वाकी रह्यो ते पण लक्ष्यमां नथी. अथवा लोकोत्तर पुरुषो जेओ रायहेपरहित छे, तेवा केवळी भगवंतो, अथवा चडदपूर्वी मुनिओ संसारी जीवने अनादि	
	है अनन्तकाळ सुधी ( अभव्य आश्रयी, अथवा वीजां वधा जीव आश्रयी ) दरेक काळमां सुख दिगेरे केटलां इतां, अने आवशे तेनी है गणतरी पण कही शकता नथी. है	Ť K

	х¥	बीजा आचार्यो नीचे प्रमाणे कहे छेः—(प्रथमनुं स्त्रकाव्य) बीजी रीते कहे छेः— ''अवरेण पुविं किह से अतीतं, किह आगमिस्सं न सरंति एगे ॥	X	
স্তাবাণ	X			सूत्रम्
		भासन्ति एगे इह माणवाओ, जह स अईअं तह आगमिस्सं ॥१॥"		1+31 m+338
1180811	Įγ į	पूर्व जन्म साथे बीजा जन्मनो सवन्ध जाणता नथी, के केवीरीते अथवा क्या प्रकारे पूर्वे सुख दुःख इतुं, अने भविष्यमां	\$	18981
	10	केवो रीते सुख दुःख यशे ते जाणता नथी. अथवा बीजा वादीओ आम बोले छे के.	*	
	4	आमां शं जाणवानं छे? जेवीरीते हमणां पूर्वना रागट्वेषथी उत्पन्न थएला कर्मवडे जीवने बन्धायलां कर्मनां फळ संसारमां	X.	
	5	भोगचवां पडे छे. तेमज पूर्वे पण इतुं अने भविष्यमां थवानुं छे, (तेमां वधारे शुं जाणवानुं छे?)		
	7 X	अथवा ममाद्र विषय कषाय विगेरेथी कर्मो एकठां थवाथी इष्ट अनिष्ट विषयोने अनुभवता जीवो सर्वज्ञनी वाणीरुप अमृतना	Č	
	X	स्वादने न जाणनारा जेओ छे, तेमने जेम भूतकाळमां संसारमां सुख दुःख अनुभव्युं, तेवुं भविष्यमां पण अनुभवशे.		
	Ď	पण जेओ संसार सम्रद्रथी तरवावाळा छे, तेओ कर्मनुं फळ जाणे छे, ते बतावे छे, ते सूत्रना बीजा काव्यमां कहे छे जे	Ç,	
	K	जीबोन संसारमां फरी आवतुं नथी. तेओ सिद्ध छे, अथवा जेतुंज जाणवातुं छे तेतुंज तेमने ज्ञान छे. तेवा सर्वज्ञो छे, तेओ अतीत	Ť.	
	Ľ	(जना) पदार्थने भविष्यना रुपपणे नथी मानता, तथा भविष्यना पदार्थने भूतकाळना रुपपणे नथी मानता, कारण के परिणतिनी		
	Ŷ	अथवा प्रमाद्र विषय कपाय विगेरेथी कर्मो एकठां थवाथी इष्ट अनिष्ट विषयोने अनुभवता जीवो सर्वक्रनी पाणीरुप अमृतना स्वादने न जाणनारा जेओ छे, तेमने जेम भूतकाळमां संसारमां सुख दुःख अनुभव्युं, तेवुं भविष्यमां पण अनुभवज्ञे. पण जेओ संसार सम्रुद्रथी तरवावाळा छे, तेओ कर्मनुं फळ जाणे छे, ते बतावे छे, ते सूत्रना बीजा काव्यमां कहे छे जे जीवोनुं संसारमां फरी आववुं नथी. तेओ सिद्ध छे, अथवा जेवुंज जाणवानुं छे तेवुंज तेमने ज्ञान छे. तेवा सर्वक्रोछे, तेओ अर्तात (जुना) पदार्थने भविष्यना रुपपणे नथी मानता, तथा भविष्यना पदार्थने भूतकाळना रुपपणे नथी मानता, कारण के परिणतिनी विचित्रता छे, मूत्रमां ''अर्थ'' झब्द फरी छेवानुं कारण ए छे के पर्यायरूप बदछाय छे (बाळक जुवान बुढो ए पर्याय छे अने ते	S	

🕻 बदलाय छे) एण टब्यार्थवणे तो त्रणे अवस्थामां प्रकृणणंज से (बाळपणमां अने बदायणमां जीवनो भेद नथी.)	
अगचा० 🕻 बदलाय छे) पण द्रव्यार्थपणे तो त्रणे अवस्थामां एकपणुंज छे (बाळपणमां अने बुद्धापणमां जीवनो भेद नथी.) अगचा० 🕻 अथवा अतीत अर्थ ते विषय भोगादिक भोगवेलां अने भविष्य संबंधी देवांगनाना विलासने भोगववानां छे. तेने जेओ राग- द्वेषना अभाववाला छे तेओ याद करता नथी अथवा वांछता नथी. (तु झब्द विशेष बतावे छे) जेम मोहना उदयथी केटलाक पूर्वना	I
॥४७५॥ 🗶 अथवा भविष्यना भोगोने वांछे छे, तेम सर्वत्न भोगोने इच्छता नथी; अने तेना मार्गे (ज्ञासन) मां चालनारा पण एवाज निःस्पृहा 🐴	
र्दे होय छे ते बतादे छे, 'विहूय कप्पे.' एटले अनेक मकारे आठ मकारना कर्मने घोनार ते विधत छे. अने कर्म घोचं ते साधनो आचार छे, तेवो कल्प पाळनार हि	
एटल्ले अनेक प्रकारे आठ प्रकारना कर्मने घोनार ते विधूत छे, अने कर्म घोचुं ते साधुनो आचार छे, तेवो कल्प पाळनार त्री साधु विधूत कल्पवाळो कहेवाय, अने तेज सर्वज्ञनो अनुदर्शी कहेवाय छे, अने ते अतीन अनागत विषयसुखनो अभीलापी न होय, त्रि वळी तेने वीजा क्या गुणो होय ते कहे छे.	
पूर्वे बांधेलां अशुभ चीकणां कर्मनो क्षपक एटले नास करनारो छे,अथवा ते भविष्यमां नाज्ञ करनारो थरो [मूत्रमां 'निज्झोस 🐧	
) इत्ता' सब्द छे, तेनो अर्थ वर्तमान अने भविष्यनो लीघो छे] कर्म नाज्ञ करवाने जे मुनि उद्यम करे ते घर्मध्यान अथवा शुरू ध्यान ध्यानार महा योगीश्वरने संसारना सुख दुःखना	
र्दे विकल्पनो नाज थवाथी हवे शुं थज्ञे ते बतावे छे. का अरई के आणंदे?, इत्यंपि अग्गहे चरे, सब्बं हासं परिचज आलीणगुत्तो परिवए,	

	र्षु पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं किं बहिया मित्तमिच्छसि? (सु० ११७)	8
স্বাণ	🖞 इच्छित वस्तुनी अमाप्ति अथवा इष्ट वस्तुनो नाश थतां मनमां जे विकार थाय ते अरति छे, अने इच्छित वस्तुनी पाप्तिमां	रे सूत्रम
ાકભ્રા	अानंद थाय छे, आ अरति के आनंद योगिना चित्तमां होतो नथी, कारणके ते महात्माने धर्मध्यान के शुक्रध्यानमां चित्त रोकावाथी तेने संसारी वस्तुनी अरति के आनंद उत्पन्न थवाना कारणनो अभाव छे. तेथी मूत्रमां कढ्ढं के अरति अने आनंद ए 2 शुं छे? (अर्थात् कंइज नथी) पण संसारी जीवनी माफक तेमणे ते विकल्पने राख्यो नथी.	र् 1) 118७६॥ ४
	जो आ प्रमाणे होय तो तेवा जीवने असंयममां अरति अने संयममां आनंद तेने होवो जोइए एम सिद्ध थयुं, तेनुं आचार्य समाधान करे छे, के तेषुं नथी अने अमारो अभिमाय तमे समज्या नथी, कारण के जेमां रति अरतिना विकल्पनो अध्यवसाय निषेध कर्यों छे, तो बीजा प्रसंगमां पण रति अरति न होय तेज सूत्रकार कहे छे; ए महात्माने अरति अने आनंद बन्ने दृर थवा रूप छे एटछे तेमने तेवो आग्रह नथी तेथी ते 'अग्रह' कहेवाय छे, एनो भावार्थ आ छे के उत्तम साधु शुक्र ध्यानथी वीजे कंड रति आनंद कोइ निमित्ते आवे तो पण तेना आग्रह रहित बने, अने ते बन्नेमां मध्यस्थ रहे (संयम अने असंयम घ्यवहारथी वाह्य कियारूप छे. शुक्र ध्यानवाळाने ते बाह्य कियाओनी श्रेणीमां जरुर नथी; अने ते ध्यानवाळाने थोडा समयमां केवळज्ञान थवातुं छे. ते अपेक्षाए आ वचन छे के, संयममां रति, असंयममां अरति न होय; परंतु शुक्रध्यान ज्ञिवायना चीजा आत्मार्थी साधुने तो कंइक होय छे) फरी उपदेश आपे छे, सर्व हास्थ, अथवा हास्यनां चारणो तजे; अने मर्यादामां रही इन्द्रियोने कवजे रास्वी लीन रहे;	The second second

	र तथा मन, वचन, कायानी सावय-किया छोडवाथी ग्रप्त रहे; अथवा काचबा माफक पोतानुं ज्ञरीर संभाळी राखे; के, कोइ	सूत्रम्
সাৰা০	🏌 जीवने पीडा न थाय; ते संद्रतगात्र मुनि छे, अने ते आलीन गुप्त बहेवाय छे, तेवो मुनि साधुनां अनुष्ठाननो बरोबर रीते करे. 🛛 🛠	
୲୲ଌ୰ଡ଼୲୲	ते मुम्रश्च साधुने पोतानां आत्मवळथी संयम-अनुष्ठान फळवाळं थाय छे, पण पारकाना उपरोध (आग्रहथी) नहीं एम बतावे 🐇	1180911
110081	हे छे. गुरु शिष्यने कहे छेः—हे पुरुष! जो, तें ग्रह (घर) पुत्र, स्त्री, धन-धान्य, सोनुं विगेरेथी रहित तृण अने मणि-मोतीमां, तथा 🔓 टे ढेफुं सोनामां समानदृष्टि राखनार मोक्षार्थी जीवने पण कदाच उपसर्ग आवतां व्याक्कड मति थतां मित्र विगेरेनी आकांक्षा थाय; तो	
	🖞 ते दूर करवा कहे छेः—(हे शिष्य!) षुरुष एटछे, सुखदुःखथी पूर्ण माटे पुरुष अथवा पुरिमां शयन करवाथी पुरुष (जीव) छे, तेमां 🕻	· · ·
	🖞 बधा जीवोमां उपदेश, तथा संयम-अनुष्ठान करवामां मनुष्य योग्य होवाशी तेने आश्रयी कहे छे. एटछे सुझिष्यने कहे; अथवा कोइ	
	्रि पुरुष संसारथी खेद पामेलो खराब अवस्थामां होय; अने ते पोताना आत्माने ज्ञीखामण आपतो होय; अधवा अन्य भव्यात्माने 2 साध उपदेश आपे के—	
	🕺 🦷 '' हे पुरुष! हे जोव! सारां अनुष्ठान करवाथी तुंज तारो मित्र छे, अने पापकर्म करवाथी तुंज तारो बत्रु छे! तोपछी, वीजा 🎗	
	🕻 मित्रने केम कोधे छे? कारण के, उपकार करे ते मित्र छे अने ते उपकारी परमार्थ-दृष्टिए अत्यंत अने एकांत-गुण युक्त सन्मार्गे 🦉	
	🖓 चालता आत्माने छोडीने वोजो कोइ क्रोधवो क्षक्य नथी; अने ,संसारनां कार्यमां सदायकारीपणे वीजाने मित्रपणे मानवो ते	2. •
	भा माइनु विष्टूमन ( पष्टा ) इ. कारण के संसाराना ामत्रताथा परिणाम माटा दुःखमा पडवारुप संसार संमुद्रमा स्रमण कराववाशी 🥊 ते खरी रीते अमित्रज छे! तेनो सार आ छे.	2
	🖞 चाछता आत्माने छोडीने बोर्जा कोइ आधुतो क्षेत्र्य नथी; अने ,संसारनां कार्यमां सदायकारोपणं वीजाने मित्रपणे मानवो ते १ मोइनुं विर्जूभन ( चेष्टा ) छे. कारण के संसारीनी मित्रताथी परिणामे मोटा दुःखमां पडवारुप संसार समुद्रमां भ्रमण कराववाशी १ ते खरी रीते अमित्रज छे! तेनो सार आ छे.	¢ R R

आचा० ॥४७८॥ १४७८॥ १४७८॥	कुमार्गे गयेलो आत्मा चचु छे, सुमार्मे चालनारो मित्र आत्माज छे. कारण के तेथीज दुःख सुख पामे छे अने तेथीज ते अमित्र के मित्र छे. वळी कढ़ुं छे के— अन्येकं मरणं कुर्यात्, संकुद्धो बल्रवानरिः ॥ मरणानि स्वनन्तानि, जन्मानि च करोस्ययम् ।.२॥ एक बळवान बच्च क्रोधायमान यइने घणुं तो एक वार मारी नाखचे, पण कुमार्गे गयेलो आत्मा अनंतां जन्ममरण आपे छे." एटले एम समजबुं के निर्वाण आपनार संयमव्रतने जेणे उचर्या अने पाळ्यां ते आत्मानो मित्र छे. इवे आवो पवित्र आत्मा	रे सूत्रम् १४७८॥ १४७८॥ १४७८॥
	ज जाणिजा उचालइय त जालिजा दूराल्ड्य, ज जालिजा रूराल्ड्य त जालिजा उचाल्ड्य, पुरिसा! अत्ताणमेवं अभिणिगिज्झ एवं दुक्खा पमुचसि, पुरिसा! सचमेव समभिजाणाहि,	A A

*	सचस्त आणाए से उवटिए मेहावी मारं तरइ, सहिओधम्ममायाय सेयं समणु पस्सइ (सू०१९८)	्रे सूत्र	त्रम्
- आचा० 🏌	जे पुरुष विषय संगनां कर्म जाणीने छोडनार होय तेने तुं तारनारो मानजे; तथा बधां पाप धर्मो (कारणो) ने जे आलय	D IIW	૭૬॥
1189311 ×	(पर) दुर छ. ते दूरालय (मांस) अथवा मांस मांग (सयम) छ. ते मांस मांग जन होय ते दूरालयिक छ, इवे हेतु तथा हेतुवाळो पदार्थ जणाववा गत मत्यागत मूल कहे छे.		•
	(बीजी रीते) कई छे, जेने दूरालयिक जाणे तेने उच्चालयिक (तारनारो) जाणे, एनो सार आ छे. जे कर्म तथा आसव दारनो रोकनार छे तेज मोक्ष मार्गमां रहेळो छे अथवा मुक्त थएलो छे अथवा जे सन्मार्गे वर्त्तन करे ते कर्मनो काढनारो छे. अने तेज आन्मानो मित्र छे, तेथी कहे छे, हे पुरुष! हे जीव! आत्मानेज ओळखीने धर्मध्यानथी वहार इन्द्रियोना विषयस्वादने छेता मनने रोकीने आ प्रकारे दुःखना पासामांथी आत्माने मुकावजे! ए प्रमाणे कर्मोने दूर करी आत्मा आत्मानो मित्र बने छे. वळी युरु कहे छे, हे पुरुष! सदाचरणवाळा पुरुषनुं हित करनार सत्य तेज संयम छे. ते संयमनेज बीजा ज्यापारथीज निरपेक्ष तुं बनीने जाण, अने ते ममाणे वर्त्तवानी परिज्ञाबडे मयत्न कर, अथवा आजसत्य जाण, के हे जिष्य! गुरु साक्षिए लीघेलां महाव्रतोनी मति- ज्ञानो निर्वाहकया, अथवा सत्य एटले जैनागम. तेनुं संपूर्ण ज्ञान मेळव, अने मोक्षाभिलापीए ते प्रमाणे व्रतोनुं पालन करवुं. म०ज्ञा माटे? ड०सत्य जैनागमनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तीने मेघावी (बुद्धिमान) साधु मार [संसार] ने तरे छे. वळी सहित ते ज्ञानादिथी युक्त अथवा हित सहित श्रुत चरित्र बन्ने प्रकारना धर्म प्रहण करीने साधु श्रं करे, ते कहे छे.	いたいできょう	

1	अय ते पुण्य अथवा आत्महितने वरोवर रीते देखे ( ते मोक्ष मेळवे ) आ प्रमाणे अप्रमत्त साधु तथा तेना गुणो बताव्या इवे	
<b>आ</b> चा०	र्फ तेथी उलटुं कहे छे.	🕴 सूत्रम
118Coll	दुंहजो जीवियस्स परिवंदणमाणणप्र्यणाए, जंसि एगे पमायंति (सू० ११९)	2   800
1180011		Š.
	े थवा खराब सीते हणायलो ते द्विहत अथवा दुईत (दुःखी) होय ते शुं करे छे. ते कहे छे. आ जीवित केळना गर्भे माफक निःसार कि के ना गीन्तीन जनवान जनवान जनवान ते के केय भूतिना प्रतिचन (तेवन कप्रान्स) पानन (पान प्रेयवन) तथा	\$
:	है छे, तथा बीजळीना चळकाटना झबकारा माफक चंचळ छे. तेवा शरीरना परिवंदन (वंदन कराववा) मानन (मान मेळववा) तथा पूजन (पूजावा) माटे हिंसा विगेरे पापोमां मवर्से छे. परिवंदन ते लोको मारा पछवाडे भमे ते माटे मयत्न करे छे, एटले लावक	8
:	🛠 निजेरेना ग्रांसथी मारु बध शरीर प्रष्ठ तथा संदर देखीने लोको खशीथीज मने वांदशे, तमे श्रीमान् घणा लाखो वर्ष जीवो! विगेरे	
-	ीं बोलने तिरोगे प्रतिवंदन छे. तेज प्रमाणे मान मेळववा कमें बांधे छे के. लोको मार्ड बळ पराक्रम देखीने अभ्यत्थान, विनय, आ-	J.
	¥ सन दान, तथा अंजलि करी माथुं नमावी मने मान आपशे. ते मान न (मान) छे, तथा पूजन माटे वर्त्तनारा कर्म आसववडे आ-	S.
	ूरित्मान बाघ छ. एटल, विद्या भणान हु धनवान थवाथा बाजा माणस दान, मान, सरकार वजागवड मारा सवा विवय वकार 	S
I	भ पालन प्रिंत प्रिंत परिपर करी साथुं नमावी मने मान आपशे. ते मान न (मान) छे, तथा पूजन माटे वर्त्तनारा कर्म आसववडे आ- स्माने बांधे छे. एटले, विद्या भणीने हुं धनवान थवाथी बीजो माणस दान, मान, सत्कार भणामवडे मारी सेव। विशेष मकारे त्माने बांधे छे. एटले, विद्या भणीने हुं धनवान थवाथी बीजो माणस दान, मान, सत्कार भणामवडे मारी सेव। विशेष मकारे करी पूजा करशे, ते पूजन छे, वल्ली, डपरना निभित्ते, एटले बंदन विगेरे माटे केटलाक जीवो रागद्वेपथी हणायला ममाद करे है, करी पूजा करशे, ते पूजन छे, वल्ली, डपरना निभित्ते, एटले बंदन विगेरे माटे केटलाक जीवो रागद्वेपथी हणायला ममाद करे है, क्षे, पण तेओ पोताना हितने माटे हित (धर्म) करना नथी. एथी उलढं कहे छे:—	\$
		t#I

	सहिओ दुक्खमत्ताए पुट्टो ना झंझाए, पासिमं दविए	8
আন্বা০ 🕅	लोकालोकपवं चाओ सुचइ (१२०) त्तिवेमि तृतीय उद्देशो ॥३–३॥	भू सूत्रम
118<511 **	ज्ञानादि युक्त अथवा हितवाळो उपसर्गथी आवेलां दुःख मात्रथी अथवा रोग थवाथी पीढातां व्याकुळ मतिवाळो न थाय ते दूर करवा मयस्न न करे, अथवा इच्छेलुं मळतां राग विकल्प तथा अनिष्ट मळतां द्वेप विकल्प न करे, अर्थात रागद्वेप वश्नेने तजे (न सद्देवाय तो मध्यस्थ बनी दवा करे, अने स्थविर साधुने योग्य उपायनो निषेध न होवाथी संतोषथी करे.) वळी उपर कदेला वधा उद्देशाना रहस्यने समजीने करखुं न करखुं ते विवेकथी समजे! कोण? जे मोक्षमां जवा योग्य छे ते साधु, ए विवेकी साधु क्या गुणो मेळवे?	5 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8
Che of a star of the star of the star	जे आलोकाय (देखाय) ते लोक छे, अने १४ रजु ममाण ते छे. लोकमां आलोक ते लोकालोक छे, तेना मपंचथी मुक्त थाय छे. लोकमां प्रपंच आ छे. पर्याप्त, सुभग दुर्भग तथा नारकीना जीवपणे ओळखाय एकेन्द्रियमां अपर्याप्त, एकेन्द्रिपणे ओळखाय ए ममाणे बधो संसारी मपंच जाणवो. तेनाथी मुकाय एटळे चौद राजलोकमां जीवोत्तुं जुदुं जुदुं रूप तेने मळतां ते नामे गणाय छे. तेवो पोते नहीं थाय. आ प्रमाणे सुधर्मास्वामी कहे छे. त्रीजो उद्देशो अर्थथी समाप्त.	3-4-3-4-3-4-3-4-3-4-3-4-3-4-5-4-

	चोथो उद्देशो	2
आचা০ 🕺	त्रीजो पुरो थवा पछी चोथो कहे छे तेनों आ ममाणे संबन्ध छे. गया उद्देशामां कढ़ुं के फक्त पाप न करवाथी के दुःख सहन	<sup>२</sup> सुत्रम्
แชะจุก 🌶	करवाथी साधुँ न कहेवाय, पण निष्पत्युह (अविघ्रपणे) संयम अनुष्ठान करवाथी साधु थाय. ते क्ताव्युं. अने निष्पत्युहता (अविघ्रपणुं) कषायने दूर करवाथी थाय छे.तेथी हवे पूर्वे कहेल उदेशाना अर्थाधिकारवाळुं सिद्ध करे छे, तेथी आ प्रमाणे संबन्धे आवेल उदे-	્રીા૪૮૨૧
	कथायन दूर करवाया याय छ.तया हव पूर्व कहल उदशाना अयाविकारवाळा सिद्ध कर छ, तया आ ममाण सबन्व आवल उद- शाना सूत्र अनुगयमां सूत्र कहे छे.	S.
	सं वंता कोह च माणं च मायं च लोभं च एयं पासगस्स दंसणं	¢.
	उवरचसत्थस्स पलियंतकरस्स आयाणं सगडन्भि (सू॰ १२१)	đ
5 T 50 T 50	ते माध बानाहि महित हःख मात्रथी घेरायलो छतां अव्याकल मतिवालो आत्महव्य भत लोकालोक प्रपंचथी मक्त थया जेवो	2
(S	पोतानं तथा परनं हित बगाडनार क्रोधने वमन करनारो छे (वम) धातुनो अर्थ दूर करवाना। अर्थमां छे तेनो भविष्यकाळ ऌइए तो	1)
Č.	बीजी विभक्ति लागे, नहितो छडी विभक्ति लागु पडे) अर्थात् शास्त्रमां कहेल अनुष्ठानने जे साधु विधि ममाणे करे, ते थोडा का-	S I
	बीजी विभक्ति लोगे, नहितो छड़ी विभक्ति लागु पडे) अर्थात् शास्त्रमां कहेल अनुष्ठानने जे साधु विधि ममाणे करे, ते थोडा का- ळमां क्रोधने दूर करशे ए ममाणे बीजे पण समजी लेवुं. एटले पोताना उपघात करनार उपर क्रोध कर्मना विपाकना उदयथी क्रोध थाय, जाति कुल रुप बल विगेरे दारणे जे गर्व थाय ते मान ले, परने ठगवा रूप विचार ते माया ले. तव्याना आग्रहनो परिणाम ते लोभ ले. ते वधाने क्षपणा (कर्म खपाववा) तथा उपशम (शांत करबा) तेने आश्रयी आ क्रोध विगेरे चारनो अनुक्रम ले. अनं-	S.
2	याय, जाति कुळ रूप बळ विगर कारण ज गर्व याय ते मान छ, परन ठगता रूप विचार ते माना छ. छ-याना जात्रहना परिणान ते लोभ छे. ते बधाने क्षपणा (कर्म खपाववा) तथा उपग्रम (ज्ञांत करबा) तेने आश्रयी आ क्रोध विगेरे चारनो अनक्रम छे. अन-	<b>Š</b>
X		×

आ ममाणे कोध, मान माया लोभ त्यागवाथी खरी रीते साधुपणुं छे पण कोध हॉयत्यां सुधी साधुपणुं नथी; कहुं छे केः— सामण्णमणुचरंतस्स कसाया जस्स उकडा हुंति । मन्नामि उच्छुपुर्प्सं व निष्फलं तस्स सामण्णं ॥१॥ साधुपणुं पाळता साधुने जो कषायो वधारे श्रमाणमां होय तो शेरढीना फुल माफक तेनुं साधुपणुं हुं निष्फळ मानुं छुं. ॥ जं अज्ञिअं चरित्तं देसूणाएवि पूबकोडीए । तंपि कसाइयमेत्तो हारेइ नरो मुहुत्तेणं ॥२॥ पूर्व कोडीमां थोडा वर्ष ओछां एवं (आटली लांबी म्रुदतनुं) चारित्र पाळ्युं होय, ते जो उत्कृष्ट क्रोध करे तो ते माणस एक मुहुर्चमां साधुपणुं हारी जाय छे. आ बधुं पोतानी बुद्धियी नथी कहुं एवं बताववा गौत्यस्वामी कहे छे के 'एय' विगेरे आ कषाय दूर	
मुहुर्चमां साधुपणुं हारी जाय छे. आ वधुं पोतानी बुद्धिथी नथी कढ़ुं एवुं बताववा गौतमस्वामी कहे छे के 'एय' विमेरे आ कषाय दूर १ करवातुं इमणा उपर बताव्युं, ते बधुं सर्वदर्शी पश्यक साक्षात् देखे छे, कारण के तेमें निवारण (केवळ) ज्ञानदर्शन छे, अने ते १ पश्यक तीर्थकृत् वर्धमना स्वामी छे, अने तेमनुं दर्शन (अभिपाय मंतव्य) आ छे.	

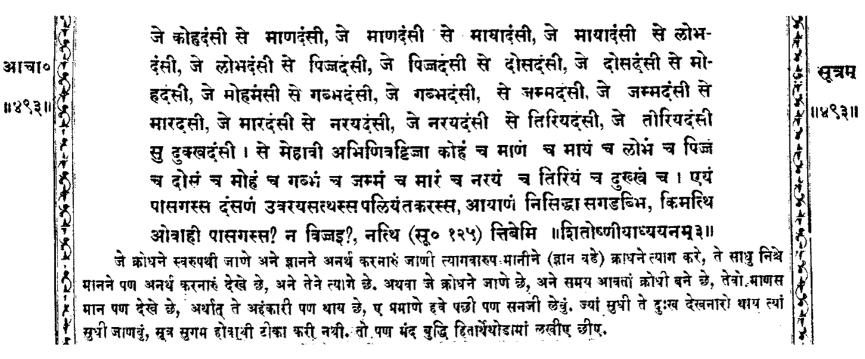
5	अथवा जेनावडे वस्तु तत्त्व यथावस्थित देखाडाय (कहेवाय) ते दर्शन एटछे उपदेश छे, अर्थात् महावीर (वर्धमान) स्वा-	Ť
आचা৹ 🕺	मीनुं कहेलुं छे ते हुं कहुं लुं पण स्ववुद्धियी नथी कहेतो, ते सर्वदर्शी पश्यक केवा छे. के जेनुं आ दर्शन छे ते कहे छे, 'उवरय' विगेरे-जेनुं द्रव्य भावथी (सर्व जोवोने दुःख देवारुप) झस्न बंने मकारे दूर थयुं छे, अथवा ब्रस्तथी पोते दूर रहेला	र् । सूत्रम
ม8c8แก้ เ	छे, अहीं भावज्ञस्तमां असंयम अथवा कषायो जाणवा, तेनाथी पांते दूर छे. तेनो भावार्थ आ छे केः	118<811 2
2	तीर्थकरने पण कपायने वम्या सिवाय निरावण वधा पदार्थने देखनारुं परम (केवळ) ज्ञान माप्त यतुं नथी, तेना अभावमां मोक्ष सुखनो अभाव छे, एथी वीजो पण मोक्ष वांछक साधु जे तेनो उपदेश माने छे अने तेना मार्गे चाले छे तेणे पण कषायतुं	
1 1 1	वमन करदु, बस्तने उपरमनुं कार्थ वतावी बीजापण तीर्थकरनां विशेषण बतावे छे. 'पल्पिंग्तकरस्स' एटछे वधां कर्मनो अथवा संसा- रनो अंत लाववानो जे यत्न बरे ते पर्यतकर छे, तेनुं आदर्शन छे.	
X + X	हवे जेम तीर्थकरे संयमने विघ्न करनार कषाय शस्त्रने दूर करी संसारनो अंत कर्यों तेम वीजो पण साधु जे तेनुं कहेछं करनारो होय ते पण करे, तेवुं बतावे छे.	Ť
A the second sec	'आयाण' विगेरे जेनावडे आठ कर्म आत्य घदेझ साथे एकमेकपणे थाय ते आ दान छे, अथवा हिंसा विगेरे आश्रवद्वार अथवा अढारे पापस्थान छे. 'तेनी स्थितिनुं निमित्त कषायो होवाथी ते आ दान छे. ते कपायोनो वमन करनारो स्वक्वत भिद	
A ST	(कर्म भेदनारो) बने छे. अर्थात् पोते (अज्ञानदत्तामां) पूर्वे जे कर्मों अनेक भवमां एकठां कर्यो होय; तेने भेदी नांखे; ते स्वकृत्भिद् 	Ď.
G	जाणवोः अने जे कर्मोना आदान (वीजरुप)-कपायोने रोके; ते अपूर्वकर्म प्रतिषिद्धमां प्रवेश करनारों छे, अने पोते पोतानां पूर्वकर्मनो	31

K	े मेदनारो छे. तीर्थकरना उपदेशवडे पण, पारकानां करेलां कर्मना क्षयना उपायनो अभाव होय तेथी स्वकृत लीधुं.	8
<b>आचा</b> ৹ 🕻		स्त्रम
	🏹 तेमना ज्ञानमां बधा पदार्थोनी सत्ता व्यापीने रहेली छे. (परंतु करे ते भोगवे ए नियमथी दरेके कर्म कापवा उद्यम करवो जोइए.)	5
<u> </u>	शंका-हेय उपदेय पदार्थने छोडवुं ब्रहण करवुं तेना उपदेशने जाणवाथी सर्वत्र नथी एवुं अमे कहीए छीए. कारण के उप-	<u>X 1186411  </u>
	🗜 देश मात्रथी परोपकार करवाथी तर्थकरपणानी उत्पत्ति घटती  नर्था उत्तर युक्तिना विकलपणाथी  उत्तम पुरुषना मनने तमारुं कहेवुं	5
	🚽 आनंद आपतुं नथी, कारणके उत्तम ज्ञान विना हित अहितनी प्राप्ति तथा त्याग उपदेशनो असंभव छे. अने एक पदार्थनुं पण संपूर्ण	Å.
	ू ज्ञान सर्वज्ञपणा विना घटतुं नथी ते मूत्रकार बतावे छे.	
	े जे एगं जाणइ से सबं जाणइ, जे सबं जाणइ से एगं जाणइ (सू० १२२)	<u>S</u>
K	जे कोइ पण ज्ञानी परमाणु विगेरे एक द्रघ्यने तेना पछीना के पूर्वना पर्याय सहित जाणे, अथवा पोताना अथवा पारकाना	不 *
	े बधा मर्यायोने जाणे छे; कारण के तेवा पुरुषने अतीत अनागतमां बनेला अने बनवाना पर्यायो सहित द्रव्यने जाणवाथी तेने बधी	$\frac{1}{n}$
	वस्तुनुं ज्ञान अतिनाभावीपणे छे. इवे तेने हेतु तथा हेतुवाळा पदार्थ सहित वीजी रीते कहे छे.	K
		<b>Ç</b>
	पर्याय-भेदोवडे ते ते स्वभावनी आपत्तिवडे अनादि अनंतकाळपणे समस्त वस्तु स्वभावमां जाणपणुं थाय छे. कढ्ढं छेः	×.
14		

Ex a	एगद्वियस्स जे अत्थपज्जवा वयणपज्जवा वावि । तीयाणागयभूया, तावइयं तं हवइ द्व ॥१॥ एक द्रव्यना जेटळा अर्थना पर्यायो, अथवा वचनना पर्यायो छे, ते भूत-वर्तमान, भविष्यसहित होय; त्यारे ते द्रव्य थाय छे.
আনা০ 🕺	एक द्रव्यना जेटला अर्थना पर्यायो, अथवा वचनना पर्यायो छे, ते भूत-वर्तमान, भविष्यसहित होय; त्यारे ते द्रव्य थाय छे. 🌾 सूत्रम (उपरना सूत्रनो परमार्थ ए छे के, कोइपण वस्तुमां द्रव्य पोते वस्तु छे छतां, तेमां जे स्वरूप वदलाय छे ते पर्यायो छे पूर्वे 🥵
1186811	जे बटलाया ते भतपर्यायों छे. चालमां छे. ते वर्तमान, अने थवानो ते भविष्यना छे. ए बधांने जे साथे जाणे; तेज एक वस्तुना 🕌 🛿 ४८६॥
2	एक पर्यायने पण जाणे अने ते एक पर्यायने पण बरोबर जाणे; ते सर्वने पण जाणे; अने ते आ गाथामां बताव्युं छे के एक
5	द्रव्यमां तणे काळना पर्यायों छे, अने पर्यायोसदित होय; तेज द्रव्य छे.)
2	उपर कहेल सर्वज्ञ ते तीर्थकर छे, अने तेज सर्वज्ञप्रध सर्व सत्त्वोने उपकार करनारो, अने वनीशको तेवो उपदेश आपे छे ते
	मूत्रकार बतावे छे. सवओ पमत्तरस भयं, सबओ अप्पमत्तस्स नरिथ भयं, जे एगं नामे से बहुं नामे, जे बहुं
the second s	नामे से एगं नामे, दुक्खं लोगस्स जाणित्ता वंता लोगस्स संजोगं जंति धीरा महाजाणं,
	परेण परं जंति, नावकं खंतिजीवियं (सु॰ १२३)
	द्रव्य विगेरेथी सर्व प्रकारे जे भय करनारुं कर्म उपार्जन करे; ते भय, मद्य विगेरेथी जे प्रमादी वने तेने थाय छे. ते बतावे 🕌
*	द्रव्य विगेरेथी सर्व प्रकारे जे भय करनारुं कर्म उपार्जन करे; ते भय, मद्य विगेरेथी जे प्रमादी बने तेने थाय छे. ते बतावे छे के, प्रमादी द्रव्यथी वधा आत्मप्रदेशोथी कर्म एकठुं करे छे. क्षेत्रथी छए दिशामां रहेछुं; काळथी पत्येक समये, अने भावथी

		S.
1 1	हिंसा विगेरेथी भयजनक कर्म चांधे छे.	*
স্তাবা৹	े अथवा सर्वत्र एटले, अहीं अने परलोकमां वंने ठेकाणे प्रमाद करनारने भय छे. पण अभमादीने क्यांय पण भय नथी, ते बितावे छे के, आ लोक के, परलोकमां अपायोथी आत्महितमां जागृत रहेनार अप्रमादीने संसार अपसद (निमकहराम विश्वाधाती,)	र सूत्रम
t.	🖌 તેવાય છે પણ બા છેલા લો) પંચાયમાં બધાલાયાં બાલ્યોદેલમાં માછેલ રફવાર બનયક્લાય લેલાર ગયલર વિવચરલામાં દેવા મળ્યો	
<u> </u>	🗴 थी अथवा अशम कर्मथी कोइ प्रकारे भय नथी: अने कषायना अभावथी अप्रमत्तता थाय छे. तेथी वधां माँइनीयकर्मनो अभाव	3 118501
	🀔 याय छे. तेथी संपूर्ण कर्भनो क्षय थाय छे. तेथी ए प्रमाणे एकना अभावमां घणाना अभावनो संभव थाय छे, तथा एकना अभाव	Ť
	🐧 पण बह अभावश्ची जुदा नथी. तेटला माटे हेत. अने हेतुवाला पदार्थना भावने गत प्रत्यागत मुच्चवर्ड बतावेल ले. जे प्रवर्धमान	
	र शुभ अवयवसायना कंडकमां चढेलो साधु जे, एकला अनंतानुबंधी कोधने क्षय करे छे, ते, मान विगेरे बहुने खपावे छे. अथवा,	3
	🖞 पोतानाज भेदवाळा अधत्याख्यान विगेरेने खपावे छे. तथा, एकला मोहनीयने खपावतां बीजी प्रकृतिओने पण खपावे छे. अथवा	X
	🖞 जे, घणी स्थितिवाळाने खपावे छे, ते साधु अनतानुबन्धी एकने अथवा, मोइनीयकर्मने लपावे छे, ते वतावे छे. जेमके-अगणोतेर	X
	र् ६९ मोइनीय कोडा-कोडी क्षय गया पछी, ज्ञानावरणीय, दुर्ज्ञानावरणीय, वेदनीय, अंतराय, ए चारनी २९ तथा नामगोत्रनी १९	
	ें कोडा-कोडी रूपी गया पछी, अने तेमां पण थोडुं ओछुं, थया पछी मोइनीय कर्मनो क्षपण थवाने योग्य थाय छे, पण, ते शिवाय	λ,
	ी न थाय. तेथी कहा छे के:जे बहु नाम होय; तेज परमार्थथी एकनामवाळो छे. अहीं नामनो अर्थ कर्मपक्रतिनो क्षय, अथवा,	K .
	रे उपशम करनार जाणवो. एक उपश्रम श्रेणीना आश्रयथी एक तथा, बहु उपशम करवावडे बहु उपशमता जाणवी. तथी ए ममाणे रैं बहु तथा, एक कर्मना अभाव शिवाय मोहनीयक्षय अथवा, उपशमनो अभाव थाय; अने तेना अभावमां एटले, जो, मोहनीयक्षय	X
	ે વહુ∴તવા, હવા બન નાં બનાવ ાસવાબ નાદનાવલાય અલવા, હપરામનાં બનાવ વાય; બને તેના બનાવના હેટજ, ગણ માદેશાવસાય તે	X

	ू अथवा, उपशम न थाय; तो. जंतुओने बहु दुःखनो संभव छे, ते सूत्रमां वतावे छे. दुःख एटले असाता्वेदनीय-कर्म अथवा पीढा थाय. ते जीवोने दुःख थतुं ज्ञ-परिज्ञावढे जाणीने, अने मत्याख्यान-परिज्ञावडे	४ ५ सत्रम	
आचা৹	🖌 जेम. तेनो अभाव थाय: तैम. साध ए करवे.	<b>7</b>	
118951	🔓 धन, पत्र, शरीर, विगेरे छे, तेनो ममत्त्व भावनो संबन्ध छे, अने तेनाथी शरीर विगेरेने दुःख थाय छे, ते दुःखना हेतुरुप-उपादान	2 118cc11 2	
	त्रे कारण, अधवा कर्म ने त्याग करवा मयत्न करे छे. एटले, कर्मविदारण करवामां धैर्थ राखनारा धीरपुरुषो जेनावडे मोक्षमां जवाय; के तेवुं चारित्रयान जे, अनेक करोडो भवमां मळवुं दुर्ऌभ छे, अने केटलाक जीवो ते मेळवीने पूर्वना अक्षभकर्मना उदयथी, ममादथी	[ <b>#</b> ]	
	र्द ते हारीजाय छे. एटले, जेम काइने स्वप्नामां मेळवेल धुननो भंडार नकामो थाय छे, तेम ममादथी हारनारने मळेलां चारित्रनो	X	
	🕼 अभवा सम्यत दर्शन विगेरं श्रण रत्नरूप महायान छे, अने जने मोडु यान छे, ते माक्ष छे, तेन धार पुरुषी प्राप्त करे छे,	S.	
	मन्नः-ए वात ठीक छे. पण एक भववडेज महायानरूप चारित्र मेळववाथी मोक्ष मळे के परंपराए मोक्ष मळे. उत्तर-अमे बन्ने प्रकारे मानीए छीए एटले कोइ थोडा कर्मवाळाने योग्य क्षेत्रकाळ मळता तेज भवमां मुक्ति थाय छे, अने		
	x बीजाने परंपराए मोक्ष थाय छ, ते बताबे छ, 'परण पर जण सम्यक्त्व भाष्त कयु, तण नरक तिथच गात अटकावा, अने ज्ञान	<u>S</u>	
	र्भ बीजाने परंपराए मोक्ष थाय छे, ते वताचे छे, 'परेण पर जेण सम्यक्त्व प्राप्त कयु, तेण जरेक तिथच गति अटकीवी, अने झान र माप्त करीने यथाञ्चक्ति संयम पाळीने आयु कर्भ पुरुं थतां सौधर्मादि देवलोकमा जाय छे, त्यांथी पण पुन्य थोडुं वाकी रहे त्यारे र		



আমা০	जे अहंकारी बने ते समय आवतां कपटी पण बने. छोभी पण बने, अने जे छोभी होय, ते अनुक्रमे भेमी पण बने, अने पोतानुं इच्छित न थतां ढ़ेषी पण बने, अने ते मोह करनारो पण थाय, अने ते मोह करीने गर्भमां उत्पन्न थाय पछी जन्मनुं दुःख बेठे, ते मार ( हिंसा अथवा आरंभना कृत्य ) पण करे, अने पछी ते नरक गामी पण थाय, त्यांथी चवीने तिर्यंच थाय, एम परंपराए अनेक दुःखोने ते संसारी जीव भागवे छे, पण जे मेघाबी ( बुद्धिमान ) साधु छे ते क्रोध विगेरेथी दूर रहे छे ते वतावे छे, पटले क्रोध मान माया लोभ प्रेम ढेप मोह गर्भ जन्म मार नरक तिर्यंच विगेरेनां दुःखो क्रोधरुप बीजने त्याग कर-	र् सूत्रम
1182811	🗘 परंपराए अनेक दुःखोने ते संसारी जीव भागवे छे, पण जे मेघाबी ( बुद्धिमान ) साधु छे ते क्रोध विगेरेथी दूर रहे छे ते	11828n
	है वतावे छे, एटले क्रोध मान माया लोभ श्रेम द्वेष मोह गर्भ जन्म मार नरक तियेच विगेरेनां दुःखो क्रोधरुप बीजने त्याग कर-	*
	े वाथी भोगवतो नथी, आ चघुं जे तत्वज्ञान बताव्युं ते वधा उद्देशानुं शरुआतथी ते अहिं सुधी तीर्थकरनुं कहेछं छे, अने ते तीर्थ- र कर जीवोने पीडा करनार शस्त्रने छोडीने आठ कर्मनो अंत करनार थया छे एटछे तेओ कर्मनुं उपादान कारण क्रोध विगेरे प्रथम	
	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	77 <b>7</b>
	ू त्यागान पोताना कमा ज पूर्व बाधला तन मदनारा थया, तआन कवळकान यवाथा ससारा काइपण जातना उपाधा नथा एटछ ट्रेड्रच्यथी सोचुं चांदी विगेरे नथी तेम भावथी आठ प्रकारनां कर्म नथी, आ प्रमाणे शिष्यना प्रक्षमां तीर्थकरने कोइपण जातनी ट्रड्रच्यथी के भावथी कोइ पण जातनी उपाधि छे के नहिं? तेनो उत्तर कह्यो नथी. आ वचन सुधर्मास्वामि जंब्स्वामीने कहे छे, के में भगवानना चरणनी सेवा करतां जे सांभळ्युं तेने अनुसारे तमे कहुं छुं, पण मारी मति कल्पनाथी हुं कहेतो नथी. मूत्र अनुगम कह्यो, चोथो उद्देशो पुरो थयो अने तेनो समाप्तिथी अतीत अनागत नय	7 X
	है द्रव्यथी के भावथी कोइ पण जातनी उपाधि छे के नहिं? तेनो उत्तर कहा नथी.	<b>∛</b> [
	ि आ वचन सुधंमास्वाम जबूस्वामान कह छ, के में भगवानना चरणना सवा करता ज साभळपु तन अनुसार तम कहुं छुं, भि गण गांग पति राजनाथी हूं सहेरो नथी पत अनुसार राखे नरेको परे भगो अने रोने प्रायमिति जनीन नजना ज	
	ि विचारमे सत्रमां धोडामां बताववाधी जितोष्णीय नामनं त्रीकं अध्ययन ममाप्र थयं.	
	्री विचारने स्त्रमां थोडामां वताववाथी शितोष्णीय नामनुं त्रीज़ं अध्ययन समाप्त थयुं.	X

Ģ	सम्यकत्व नामनुं चोधुं अध्ययन.	X
আचা৹	🗍 🚽 त्रीज़ं अध्ययन पुरुं थवाथी इवे चोधुं कहे छे. तेनो आ प्रमाणे—संबन्ध छे. पहेला इस्लपरिज्ञा अध्ययनमां अन्वय व्यतिरेक-	3
2	बडे छ जीवनीकायनुं स्वरुप बतावतां जीव अने अजीव, एम ये पदार्थ सिद्ध कयां; तथा जीवोना वधमां वंध थाय छे, अने ते त्या-	ुं सूत्रम्
- 1183411(L	त्रीज़ अध्ययन पुरुं थवाथी हवे चोथुं कहे छे. तेनो आ प्रमाणे—संबन्ध छे. पहेला क्रस्नपरिक्रा अध्ययनमां अन्वय व्यतिरेक- वढे छ जीवनीकायतुं स्वरुप बतावतां जीव अने अजीव, एम वे पदार्थ सिद्ध कर्यां; तथा जीवोना वधमां वंध थाय छे, अने ते त्या- गवाथी विरति थाय; तेषुं बतावतां आस्रव संवर वे पदार्थ बताव्या; तथा लोकविजय नामना बीजा अध्ययनमां लोको जेम वंधाय छे, अने जेम ग्रुकाय छे. ते बतावतां बंध अने निर्जरा बताबी; तथा त्रीजा अध्ययनमां झीतोष्यरूप-परिसदो सदेवा; ते बतावतां तेना	x 11123511
T 2	अने जेम ग्रुकाय छे. ते वतावतां बंध अने निर्जरा बताबी; तथा त्रीजा अध्ययनमां भीतोष्णरुप-परिसद्दो सद्देवा; ते बतावतां तेना	
2	फळरुप-मोक्ष बताव्यो; तेथी त्रण अध्ययनमां जीव-अजोव, आस्रव, संवर, बंध निर्जरा अने मोक्ष, एम सात पदार्थरुप-तत्त्व बताव्युं; अने तत्त्व पदार्थनुं श्रद्धान (विश्वास) राखवुं; ते सम्यक्त्व कहेवाय छे, ते इवे बताबे छे.	à
5	अने तत्त्व पदार्थनु श्रद्धान (विश्वास) राखवुं; ते सम्यक्त्व कहेवाय छे, ते इवे बताबे छे.	Ϋ́,
2/T		71 U
¥	अर्थाधिकार सम्यक्त्व नामनो छे ते झस्रपरिवामां पथम कहेल छे, अने उद्देशानो अर्थाधिकार अहीं बताववा निर्धुक्तिकार कहे छेः—	X
Ž	आ सनन्धवड आवला आ चाथा अध्ययनना चार अनुयोगद्वार बतावता उपक्रममा अथ अधिकार च मकार छे. अध्ययनना अर्थाधिकार सम्पनत्व नामनो छे ते शखपरिक्रामां पथम कहेल छे, अने उद्देशानो अर्थाधिकार अहींबताववानिर्धुक्तिकार कहे छेः— पढमे सम्मावाओ, बीए धम्मप्पवाइयपरिकत्वा । तइए अणवज्जतवो, न हु बालतवेण मुक्खुत्ति ।१२५।	Ž.
	उहेंसंमि चुउत्थे, समामवयणेण णियमणं भणियं । तम्हा य जाणतंसणतवचरणे होद जहपत्रं ॥२१६॥	K.
k	(१) पहेला उद्देशामां सम्पक्वाद ए नामनो अर्थाधिकार छे. एटछे, अविपरीतवाद ते सम्पग्वाद छे. अर्थात् यथाअवस्थित वस्तुने बतावची. (२) बीजा उद्देशामां धर्ममत्रादिकोनी परीक्षानो विषय छे. एटछे, जेओ धर्मनुं स्वरूप बतावे छे, ते धर्ममत्रादिक	<u> </u>
1	वस्तुभे बतावची. (२) बीजा उदेशामां धर्भप्रतादिकोनी परीक्षानो विषय छे. एटळे, जेओ धर्मनुं स्वरूप बतावे छे, ते धर्मप्रवादिक	<b>(</b> ]
		71

1183711	2	कहेवाय. तेओन्तुं अयुक्त तथा, युक्त कयनने विचारवुं. (३) त्रीजामां, अनवद्य तपन्नुं वर्णन छे. एटले, जे वाळतप करे; तेवा अज्ञान करेलां तपथी मोक्ष न थाय ते अहीं बताव्युं छे. (२१५) चोथा उद्देशामां संक्षेप वचनमां संयतन्नुं स्वरुप बताव्युं छे, तेथी पहेलामां सम्यन्दर्शन, बीजामां सम्यवज्ञान त्रीजामां वाळ तपनो निषेध करवाथी सम्यक् तप बताव्यो छे, अने चोधामां सम्यक् चारित्न बतव्युं. छे, गाथामां 'तरमात' अने 'च' शब्द छे ते बन्ने हेतुमां छे, जेथी ए चारे पण मोक्षनां अंग पूर्वे कह्यां छे, तेथी एम जाणवुं के झान दर्शन तप चरणमां मोक्षाभिलाषी साधुए यत्न करवो, अने तेन्नुं मतिपालन करवा जीवतां सुधी प्रयत्न करतो, आ प्रमाणे वे नाथानो अर्थ थयो. हवे नामनिष्यन्ननिक्षेपामां बतावेल सम्यक्त्व नामनो निक्षेपो कहे छे. नामंठवणासम्म दद्वसम्मं च भावसम्मं च । एसा खल्ठ सम्मस्सा, निख्लेवो चउविद्दो होड् ॥२१७॥ नाम स्थापनानो अक्षरार्थ सुगम छे, अने तेनॉ मावार्थ नाम स्थापना छोडोने द्रव्य अने भाव संबंधी निर्युक्तिकार कहे छे. अहा दव्वसम्म, इच्छाणु लोमियं तेसु तेसु देवेसुं । कयसंखयसंजुत्तो, पउत्त जढ मिण्ण छिण्णां वा ।२१८।	**************************************	रुत्रम ९६॥
	****	अहे दबसम्म, इच्छाणु लामिय तसु तसु दबसु । कयसंखयसंजुत्तो, पउत्त जढ मिण्या छिण्णं वा ।२१८। इ शरीर भव्य शरीरथी व्यतिरिक्त द्रव्य सम्यक्त बतावे छे, इच्छा एटले चित्रनी प्रष्टति (अभिमाय) छे, तेने अनुकुळ करचुं, ते 'ऐच्छानुलोमिक' छे तेवी तेवी रच्छा अने भावने अनुकुळ द्रव्यमां क्रुत विगेरे उपाधिना भेद वडे सात मकारे थाय छे, ते आ प्रमाणे छे.		
	さんよう	(१) कृत एटछे अपूर्व रथ विगेरे बनाच्यो होय, ते रथपां योग्य रीते भागों गोठव्याथी सारा बनावनारने लीघे बेसनारने चित्तमां शांति थाय छे, अथवा जेना माटे ते बनाच्यो ते शोभायमान अने योग्य समयमां जलदी बनावी आपवाथी करावनारने	XI.	

आचा० ॥४९७॥ 🗶	(३) जे वे द्रव्यनो संयोग नवो गुण बनाववा करे पण नाज करवा न करे ते खानार अथवा भोगवनारना मननी समाधिने	८ ८ ४ ४ ४ ४ ४
11 8 50 11 8 4 8 4 8 4 8 4 8 4 8 4 8 4 8 4 8 4 8 4	माटे दुधमां साकर मेळववी त्रिगेरे छे, ते संयुक्त द्रव्य सम्यग् छे. (४) तथा जे प्रयोगमां लीधेलुं द्रव्य आत्माने लाभना हेतुथी समाधि माटे थाय छे, ते पत्त्येक द्रव्य सम्यक् छे. अथवा बीजी प्रतिमां उपयुक्त झब्द छे एटले उपयोगमां लीधेलुं द्रव्य मनने समाधि दायक थाय ते उपयुक्त द्रव्य सम्यक् छे. (५) तथा जढ (त्यजेलुं) भार विगेरे दूर करवाथी चित्तमां ज्ञांति थाय, ते त्यक्त द्रव्य सम्यक् छे, (६) दहीनुं वासण विगेरे फुटी जतां कागडा विगेरेने आनंददायी थवाथी ते भिन्न द्रव्य सम्यक् छे, (७) अधीक मांस विगेरे छेदवाथी [अथवा ग्रुयडामां नस्तर द्रुकवाथी] जे क्षांति थाय ते छिन्न सम्यक् छे, आ साथे पण चित्तने समाधि आपनार होवाथी ट्रव्य सम्यक् छे. पण जो ते बरोबर न थाय तो चित्तमां क्लेज्ञ थतां सम्यक् थाय छे, हवे भाव सम्यक् बतावे छे. तिविहं तु भावसम्मं दंसण नाणे तहा चरित्ते य । दंसणचरणे तिविहं नाणे दुविहं तु नायवं ॥२१९॥ त्रण प्रकारे भावसम्यक् छे, दर्शन ज्ञान चारित्र ए त्रण भेद छे, ते दरेक पण मेदवाळुं छे, ते कहे छे, तेमां दर्शन अने चरण दरेक त्रण प्रकारना छे, ते आ म्याणे.	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

		<u>Ş</u>
সামাণ	अनादि मिथ्यादृष्टिने त्रण धुंज कर्या विनानो होय तेने यथाभद्वत्तकारण बाकीनां कर्म क्षीण थवावाळो दोय तेने सांगरोपम कोडा-कोडीमां थोडी ओछी स्थिति होय; तेने अपूर्वकरणमां प्रंथी भेदाता मिथ्याखने उदय न होय तेवुं अंतःकरण करीने अनिद्वति करणवडे प्रथम सम्यवत्व मेळवे छे, ते औपक्षमिक दर्शन छे, कह्युं छे के.	र्म भू सूत्रम
ાકઢલા	? "उसरदेसं दडे्छयं च विज्झाइ वणदवो पष्प । इय मिच्छत्ताणुद्  उवसमसम्मं लहइ जीवो ॥१॥"	1188/211
	🗴 खारवाळो [उपर] देश [जग्या] मेळवीने जेम बननो अग्नि (दावानल) बुझाइ जाय छे, तेम मिथ्यात्व उदय न आवे. त्यारे	
	र औपश्वमिकसम्यक्त्वने जीव पाते छे. अथवा कोइ उपशमअेणीमां औपश्वमिक सम्यक्त पामे छे. [१] तेज भमाणे सम्यक्त पुद्रलने	8
	अश्रियी ने जे अध्यवसाय उत्पन्न थाय ते क्षायोपश्चमिक छे. [२] तथा दर्शनमोहनीय क्षय थवाथी क्षायिक छे. (३)	<u>G</u>
	भू चारित्रना त्रण भेद	
	(१) दर्शन प्रमाणे चारित्र पण उपशम अेणिनां औपशमिक [२] कषायना क्षय उपशमधी क्षायोपशमिक [३] तथा चारित्र मो-	7 X
	🕈 इनीय कर्मना क्षयथी आयिक चारित्र छे.	S
	की हानना वे भागो छेक्षायोपश्रमिक, अने क्षायिक तेमां चार प्रकारना झान आवरणीय कर्मनो क्षय उपश्रम थवार्था मति झान तिगेरे चार प्रकारनुं क्षायोपश्रमिक ज्ञान छे, अने वधुं घातीकर्म क्षय थवाथी क्षायिक केवळ ज्ञान छे. आ प्रमाणे त्रणे प्रकारमां भाव सम्यक्त्वपणुं बतावे छते वादी शंका करे छे.	Ś
	र्भ विगेरे चार मकारनुं क्षायोपशमिक ज्ञान छे, अने बधुं घातीकर्म क्षय थवाथी क्षायिक केवळ ज्ञान छे. आ प्रमाणे त्रणे मकारमां भाव सम्यक्त्वपणुं बतावे छत्ते बादी बंका करे छे.	
	अा ममाणे त्रणे प्रकारमां भाव सम्यक्त्वपणुं बतावे छते बादी शंका करे छे.	<b>X</b>

भ " जो, एम दर्शन-ज्ञान-चारित्र त्रणेमां सम्यग्वादनो संभव थाय छे, तो, दर्शननोज सम्यवत्ववाद आचा० सम्यग्दर्शननुं अहीं वर्णन करवानुं छे.	
🕉 उतरःते दर्शनना भावना भावी (विद्यमानपणाथीन) ज्ञानचारित्रनो भाव छे. जेमकेमिथ्यादृष्टिने	ज्ञानचारित्र होतां नथी. 🐧 सूत्रम
॥४९९॥ 🖌 [तेने ज्ञान होय; छतां अज्ञान कहेवाय.] अहीं सम्यक्त्वनी भधानता बताववा आंधळा तथा देखता एव 🛉 वाल-[मदबुद्धिवाळा] तथा स्त्री विगेरेना बोध माटे कहे छेः—	वे राजकुमारोत्तुं दर्ष्टात 🕌 ॥४९९॥
🕻 🔰 उदयसेन नामनो राजा इतो. तेने वीरसेन तथा सूरसेन नामे वे कुमारो छे. तेमां वीरसेन आंधळे	छे. तेणे पोताने योग्य 👔
र्यं गांधर्वादिक [गावा विगेरेनी] कळाओ ज्ञीखी; अने वीजा क्रमारे धनुर्वेदनो अभ्याम करीने ळोकमां प्रवंस र्यु सांभळीने वीरसेन क्रुमारे विइप्ति करी के, हुं पण धनुर्वेदनो अभ्यास करु. पछी राजाए तेना आग्रदर्था	नीय पदवी पाम्यो. आ 😯
1 सांभळीने वीरसेन कुमारे विइप्ति करी के, हुं पण धनुर्वेदनों अभ्यास करुं. पछी राजाए तेना आग्रदथी	भाजा आपी; अने योग्य 🥂
🗴 उपाध्यायना उपदेशयी, अने अतिश्चय बुद्धिना कारणथी शब्दवेधी थयो. पछी ते जुवान थयो; त्यारे स	ा अभ्यासथी मळवला
र्भ धनुर्वेदनां झानथी अने उत्तमवर्त्तनथी अगणित चक्षदर्शन सद्-असत्भावथी, तथा शब्द्षेधीपणाथी ज्यारे व	बुराणा लडवा आव्याः 💦
र्य त्यारे राजा पासे युद्धमां जवा मांगणी करी. राजाए आज्ञा आपवाथी विरसेने ज्ञत्रुतुं सैन्य जीतवा मयत्न	हयो; पण सजुए अधपणु / /
े जाणीलीधाथी चुप वेसवाथी बीरसेननुं कंइ न चाल्युं; त्यारे बतुना सैन्ये तेने पकडी लीधो पछी स्रसेने १ पूर्छाने सूक्ष्म तीरोना सेंकडानो वरसाद वरसवी बात्रुना सैन्यने जीती भाइने सुकाव्यो.	ो इत्तांत जाणीने राजने 🥂
र पूछान सूक्ष्य तीरीना संकडाना वरसाद वरसवा बार्चुना सन्यन जाता भाइन मुकाव्या.	
अा भ्रमाणे अभ्यास सारी रीते करी उद्यम करवा छ्तां पण चञ्चनी खामीथी इच्छित कार्य करवा स	थ न थया. तज प्रमाण

आचा० ॥५००॥	अल्लामाणोऽवि निवित्तिं, परिश्च यंतोऽवि सयणधणभोए'। दिंतोऽवि दुहरस उरं, मिच्छद्दिि न सिज्झइ उ ॥२२१॥ एटले भिथ्याद्दष्टि पोताना दर्शनमां कहेली क्रिया करे. जेमके पांच यमो, तथा पांच नियमो विगेरे पाळे तथा पोताना धन सगां तथा भोगोने त्यागे. तथा पंच अग्रिनो ताप तपचा विगेरेथी दुःख सहन करे छतां मिथ्याद्दष्टि दर्शननी खामीथी सिद्धि पद नथीन पामतो, (गाथामां ड शब्द एकवारना अर्थमां छे.) पूर्वे जेम अंध कुमार बच्चने न जीती बक्यो तेम आ कार्य सिद्धिमां असमर्थ छे, जा एम छे तो शुं करखुं? ते कहे छेः— तम्हा कम्माणीयं जे उमणो दंसणंमि पयइज्जा, दंसणवओ हि सफलाणि हुंति तवनाणचरणाइं ॥२२२॥ जेथी सिद्धि मार्मन्नं मूळ सन्यग् दर्शन छे, तेना विना कर्मक्षय न थाय, तेथी कर्म शत्रुने जीतवानी इच्छावाळो मनुष्य सम्यग् र वर्शन मेळववा प्रथम यत्न करे, अते तेनी प्राप्तिमां श्रं थाय ते बतावे छे. के निथे दर्शन पामेलानां तप झान तथा चारित्रनां वधां	अनेत्र सुत्रम सुत्रम ॥५००॥
	ू अनुष्ठानो सफळ थाय छे. तेथी तेमां यत्न करवो.	

आचा० ॥५०१॥ १	खवए य खोणमोहे, जीणे अ सेढी भवे असंखोजा । तद्विवरीओ कालो, संखिज्जगुणाइ सेढाए ॥२२४॥ सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थतां असंख्येय गुणवाळी श्रेणि थाय छे. ते पाछली अडघी गाथावडे वतावेल छे, ते कियाने आश्रयी छे. प्रशः—केवी रीते असंख्येय गुणवाळी श्रेणि थाय? उत्तरः—(१) अहीं मिथ्याद्दष्टि जो जे थोडुं ओछुं एवी कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिवाला ग्रंथिसत्ववाला छे. तेओ कर्म निर्जराने आश्रयी समान छे, (२) अने धर्म पूछवानो उत्पन्न थएली संज्ञावाला पूर्वे कहेलाओथी असंख्येय गुण निर्जरावालां छे. (३) त्यारपछी पूछवानी इच्छावाला बनी साधु समीपे जवानी इच्छावालो असंख्येय गुणे उत्तम जाणवो (४) त्यार पळी गुरुने पूछतां (५) धर्म स्वीकारवानी इच्छा थतां (६) त्यारपछी धर्मक्रिया करतां जे निर्जरा थाय तेना करतां पण प्रथम धर्मक्रिया कर- नाराने वधारे निर्जरा थाय ते असंख्येय गुणी जाणवी, एटलेयुधी सम्यक्त्वनी उत्पत्तिनुं वर्णन कर्धु. त्यार पछी श्रावकव्रत (देक्षविरति) स्वीकरतो तथा स्वीकारेलो विगेरे उत्तरोत्तर गुण पामेलाने असंख्येयगुणी निर्नरा जाणवी,	रे से स्टालम स्टालम ॥५०१॥
No and a second se	नारान वधार निनरों थाय ते असंख्यय गुणा जाणवा, एटछमुधा सम्यक्त्वना उत्पत्तिन वर्णन कयु. त्यार पञ्ची आत्रकव्रत (देशविरति) स्वीकरतो तथा स्वीकारेलो विगेरे उत्तरोत्तर गुण पामेलाने असंख्येयगुणी निर्भरा जाणवी, ए प्रमाणे सर्वविरतिमां पण जाणवुं. तेनाथी पण पूर्वे सर्व विरति लीघेलानी असंख्येय गुणी निर्भरा जाणवी, मूळमां ''अगंतकम्भ से'' छे, तेनो अर्थ अनंतानुवंधी	大手大手大

आश्वा जाणवो, एटले भीम कहेवाथी भीमसेन भामाथी सत्यभामा थाय, ते ममाणे छे. योदनीयकर्भना अरंत भामो छे, तेमे खपाववानी इच्छावाळो असंरूपेय गुण निर्फरा करनारो जाणवो, त्यारपछी क्षपक [अय करनारो] जाणवो, त्यारपछी क्षीण अनं- तानुवंधी कषायवाळो जाणवो, तेज दर्शनमोहनीयनी त्रण प्रकृतिमां क्रियाना सन्दुख्मां उभा रहेल अपवर्शनुं त्रिक जाणवुं, त्यार पछी सात मकृति सीण यवाथी उपत्रमओण्मां चढेलो असंरूपेय गुण निर्जरावाळो जाणवो, त्यार पछी उपद्यांत मोहवाळो नाणवो तत्यार पछी चारित्रमोहनीयने अय करनाने जाणवो, त्यार पछी क्षणिमोदवाळो जाणवो, त्यार पछी उपद्यांत मोहवाळो नाणवो त्यार पछी चारित्रमोहनीयने क्षय करनाने जाणवो, त्यार पछी क्षणिमोदवाळो जाणवो, अहियां अभियुख दिगेरे त्रण यथासंभव योजना करवी, त्यार पछी भवस्य केवळी (जिन) जाणवा त्यारपछी क्षेत्रे जाणवो, अहियां अभियुख दिगेरे त्रण यथासंभव तेथी ए ममाणे कर्म निर्जरा माटे असंख्येय लोकआकाज्ञ मदेज्ञ प्रमाण बनावेल संयम स्थानना मचयथी उत्यन्न थयेल श्रेणि छे; ते उत्तरोत्तर असंख्येय गुणवाळी जाणवी, कारण के उत्तरोत्तर प्रवर्धमान अध्यवसायना कंडकतो स्वीकार छे, जिमे संयम पर्या वधे तेम चारित्रमां आत्यानी निर्मळता वधे.] काळ्यी तो वेथी विपरीत अयोगी केवळी जेटलां कर्म संयोगी केवळी संख्येय गुणवाळी श्रेणिबढे काळ जाणवो, तेनो अर्थ आ जेटला काळमां धर्म पूछवानी रच्छावालो छे, त्यांसुधी नाणवुं, [नीचला गुणस्थानमां काळ वधारे याय अने कर्भ ओछां खरे.] आ प्रमाणे वतावतां सिद्ध कर्धु के सम्यय्दर्शन पामेलाने तप ज्ञान अने चरण सफळ याय छे, पण जो कोइ उपाधि (संसारी वासना) यहे करे तो ते सफळ यतां नथी, ते उपाधि कह छे, ते हवे बतावे छे,
--

आचা৹	आहार उवहिष्रुआ, इड्डिस य गारवेस कइतवियं। एमेव बारसविहे, तवंमि न हु कइ तवे समणो ॥२२५	5
आचाण	अहिरि उपधि पूजा अने आमर्ष औषधि विगेरे रिद्धि छे, अने आहार उपधि अने पूजा रिद्धि छे, अर्थात् तेवी रिद्धि पूजा	1
แห่งรุ่แ	आहार उपधि पूजा अने आमर्ष औषधि विगेरे रिद्धि छे, अने आहार उपधि अने पूजा रिद्धि छे, अर्थात तेवी रिद्धि पूजा मेळववा ज्ञान भणे, अने चारित्र पाळे, तथा ( तेवुं मळवाथी ) त्रण गारवमां बंधाएलो जे क्रिया करे ते कृत्रिय (बनावटी) कहेवाय छे, जेवीरीते ज्ञान चरणतुं अनुष्ठान आहार विगेरे माटे करे, ते कृत्रिम होवाथी मोक्ष न आपे, ते प्रमाणे वार प्रकरना बाह्य	2 2 1 2 1 1 2 1 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2
	अभ्यंतरतपमां पण जाणवुं, अने तेवो संसारी वासना राखनारने अमण भाव न होय, अने असाधुनुं अनुष्ठान गुणवाळुं न थाय, तेथी वासना रहित साधुनुं जे सम्यग्दर्शन पूर्वक तप ज्ञान चरण सफळ छे एम सिद्ध थयुं. माटे सम्यग्दर्शनमां यतना करवी, अने तत्वार्थनुं अद्धान करवुं ते सम्यग्दर्शन छे, अने आ तत्व सघळां कलंकने दूर करीने जेमणे वधा पदार्थोमां सत्ता व्यापी केवळज्ञानने मेळवेलुं छे, तेवा तीर्थकरे वह्यं छे तेने हवे अनुक्रमे आवेला सत्रानुगममां मूत्र बतावे छे. से बेमि जे अईया जे य पडुपन्ना आगमिस्सा अरहंता भगवंतो ते सबे एवमाइरूखन्ति एवं भासंति एवं पण्णतिंति एवं परूत्विति-सब्वे पाणा सब्वे भूया सब्वे जीवा सब्वे सत्ता न हंतवा न अज्ञावेयवा न परिधित्तवा न परीयावेयवा न उद्दवेयब्वा, एस धम्मे सुरु निइए समिच लोयं खेयण्णेहिं पवेइए, तंजहा-उट्टिएसु वा अणुट्टिएसु वा उवट्ठिएसु वा	

आचा० गरएस वा असंजोगरएस वा, तच्चं चेयं तहा चेयं अस्ति चेयं पतुद्यइ (सु० १२६) गौतम (सुधर्मा) स्वामी कहे छे के:जे हुं कहुं छुं ते हुं पोते तीर्थकरनां कहेटां वचनना तल्वने जाणीने कहुं हुं, तेथी मारं गपा चीजो कहेतो नथी; अथवा चौद्धमतमां मानेछं क्षणिकपस्तुं दूर करवावडे कहुं के, जे में पूर्वे कहुं, ते हमणां पण हुंज कहुं छुं, पण चीजो कहेतो नथी; अथवा 'से' शब्दनो अर्थ 'ते' थाय छे, एटछे जे श्रद्धानमां सन्यक्त थाय छे, ते तत्वने हुं कहुं छुं जेओ पूर्व काळमां थया जे वर्तमानमां छे, अने भविष्यमां यरो; ते बधा तीर्थकरो एम कहे छे. वळी पूर्वकाळ अनादी होवाथी अनंता थया; अने भविष्यकाळ अनंतो होवाथी अने सर्वदा तीर्थकर होवाथी अनंता थरो; अने वर्तमानकाळ आश्रवी जे दोवाथी अनंता थया; अने भविष्यकाळ अनंतो होवाथी अने सर्वदा तीर्थकर होवाथी अनंता थरो; अने वर्तमानकाळ आश्रवी जे दिवाथी अनंता थया, ते मा नकी संख्या न होवाथी उत्कृष्ट अथवा जघन्य पदे कहेवाय, तेमां उत्सर्भथी अही द्वीपनी अंदर एकसोने सीतेर थाय, ते आ ममाणे ५-मद्दाविदेहमां एकेक विदेहमां ३२ श्रेणी होवाथी दरेकमां एकेक गणतां १६० याय, अने ५ भरत ५ ऐरावतना मेळवतां के क्ष १७० थाय अने जघन्यथी २० थाय ते आ ममाणे-५ महा विदेहमां महाविदेहनी अंदर रहेछी महा नदीना वेने किनारे		्र अणुवद्विएसु वा उवरयदंडेसु वा अणुवरयदंडेसु वा सोवहिएसु वा अणोवहिएसु वा संजो-	Ŷ	
॥५०४॥ भौतम (सुधर्मा) स्वामी कहे छे के:जे हुं कहुं छुं ते हुं पोते तीर्थकरनां कहेटां वचनना तल्वने जाणीने कहुं छुं, तेथी मारुं वचन मानवा योग्य छे, अथवा वौद्धमतमां मानेछुं क्षणिकपसुं दूर करवावडे कहुं छे, जे में पूर्वे कहुं, ते हमणां पण हुंज कहुं छुं, पण बीजो कहेतो नथी; अथवा 'से' झब्दनो अर्थ 'ते' थाय छे, एटछे जे अद्धानमां सन्यक्त्व थाय छे, ते तल्वने हुं कहुं छुं जोओ पूर्व काळमां थया जे वर्तमानयां छे, अने भविष्यमां यशे; ते बधा तीर्थकरो एम कहे छे. वळी पूर्वकाळ अनादी होवाथी अनंता थया; अने भविष्यकाळ अनंतो होवाथी अने सर्वदा तीर्थकर होवाथी अनंता थशे; अने वर्तमानकाळ आश्रवी जे दूसतते आ प्ररुपणा धती होय; तेमां नकी संख्या न होवाथी उत्क्रुष्ट अथवा जघन्य पदे कहेवाय, तेमां उत्सर्भथी अही द्वीपनी अंदर एकसोने सीतेर थाय, ते आ ममाणे क-महाविदेहमां एकेक विदेहमां ३२ श्रेणी होवाथी दरेकमां एकेक गणतां १६० थाय, अने ५ भरत ५ ऐरावतना मेळवतां	জাৰা০	र्भ गरएसु वा असंजोगरएसु वा, तचं चेयं तहा चेयं अस्तिं चेयं पतुचइ (सू॰ १२६)	Ň	सूत्रम
मूँ मूळी पूर्व पश्चिम साथे छेतां चार चार होय ते पांचेना मळी तीश थाय. अने भरत औरावतमां तो एकांत सुखम विगेरे आरामां	ાતર૦૬૫	गौतम (सुधर्मा) स्वामी कहे छे के:—जे हुं कहुं छुं ते हुं पोते तीर्थकरनां कहेडां वचनना तल्वने जाणीने कहुं छुं, तेथी मारुं वचन मानवा योग्य छ, अथवा बौद्धमतमां मानेछुं क्षणिकपसुं दूर करवावडे कहुं के, जे में पूर्वे कहुं; ते इमणां पण हुंज कहुं छुं, पण बीजो कहेतो नथी; अथवा 'से' शब्दनों अर्थ 'ते' थाय छे, एटछे जे अद्धानमां सन्यक्तव थाय छे, ते तल्वने हुं कहुं छुं जेओ पूर्व काळमां थया जे वर्तमानमां छे, अने भविष्यमां थक्षे; ते बधा तीर्थकरों एम कहे छे. वळी पूर्वकाळ अनादी होवाथी अनंता थया; अने भविष्यकाळ अनंतो होवाथी अने सर्वदा तीर्थकर होवाथी अनंता थक्षे; अने वर्तमानकाळ आश्रयी जे	ちょう ちょうかん ちょうち	ાઝુ૦૪ા

आचा० ॥५०५॥ ४	कहेशे, ए प्रमाणे सामान्यधी तीर्थकरो देव मनुष्यनी परखदामां अर्ध 'मागधी' मां बधा जीवो पोतानी भाषामां समजे तेम तेओ वोले छे, ए प्रमाणे मकर्षथी संशय दूर करवा माटे पामे रहेनारा साधु विगेरेने जीव अजीव आसव बन्ध संवर निर्जरा मोक्ष ए सात पदार्थोंने बतावे छे, (एटले जिनेश्वर देव सात पदार्थोनुं वर्णन करे छे) ए प्रमाणे सम्यग्दर्शन झान चारित्र जे मोक्ष मार्ग छे, तथा मिथ्यात्व अविरति ममाद कषाय योग ए चांच बन्धना हेतुओं छे. स्व अने परभाववडे छती अछती वस्तु तत्वने सामान्य वि- रोषरुष विगेरेना मकारथी बतावे छे, अधवा आ बधां पदो एक अर्थवाळां छे, ते तीर्थकरो शुं बतावे छे ते कहे छे. बधां माजीओ एटले पृथ्वी पाणी अग्नि बायु बनर्स्पति ए एकेन्द्रिय छे, तथा बे त्रण चार पांच इन्द्रियोवाळा जीवा छे, तेमने	2	त्रम्
8.4	रहेशे, तेथी माणी कहेवाय छे; तथा बीजी रीते चौद भेद जीवोना छे ते भूत ग्राम कहेवाय छे, अने वत्तेमानमां बधा जीवों छे,	×	
8	जीवशे, अने पूर्वे जीवता इता, माटे जीव छे ते नारकी तिर्यंच प्रतुष्य अने देव ए चार गतिवाळा छे, तथा वधा ए जीवो पोतान	X	

	करेलां कर्मथी साता असाताना उदयथी छुल दुःख भोगवे छे. तेथी सरब छे, अथवा पाण भूत जीव अने सरब ए बधा एक अर्थ- वाळा शब्दो छे, कारण के तत्व मेद पर्यायोवडे पदार्थने स्वीकारवानो छे, तेथी करीने उपरना बधा शब्दो माणीना पर्यायनाळा छे, ते जीवोने दंड चावर्खा यिगेरेथी हणवा नहिं; तथा बीजा पासे वळजवरी करीने इणाववा नहिं; तथा नोकर, दास, दासी विगेरे उपर ममलभावथी तेमनो संग्रह न करवो; तथा ग्रारि अने मननी पीडा उपनादीने परितापवा ( संतापवा ) नहि; तथा जीवर्था माण दूर करवावडे तेने अपदावण न करखुं. आवो जिनेइवरनो कहेलो दुर्गतिने अटकाववाने ख़ंगळ समान तथा छुमतिनी पगथी ससान धर्म छे, अने ते धर्म पुरुषार्थना प्रधानपणार्थी विश्लेषणो बतावे छे. पापना अनुबन्ध रहित शुद्ध छे, पण बौद तथा जाझणोथी एकेन्द्रियथी पचेन्द्रिय छुधीना जीवोनी हिंसानी अनुमतिने दुःखरूप-कलंक छे. (पटले, बाझणो यज्ञ करावे छे, अने बौद्धना साधु- णे साणु प्राटे राधेखं खाय छे, तेथी बधनी अनुमतिने दुःखरूप-कलंक छे. (पटले, बाझणो यज्ञ करावे छे, अने बौद्धना साधु- जे साधु माटे राधेखं खाय छे, तेथी बधनी अनुमतिने दाख छागे छे,) तेवोदोष जैनधर्ममां नयी. वळी, पांच महाविदेहने आश्रयी ते निरंतर ( नित्य) छे, तथा शाशवत तथा ( मोक गति आपवाथी शाश्वरत छे अथवा नित्य होवाथी शाह्वरत छे, पण एम न थाय; के भवत्वन माफक मयम धरने पछी न थाय; अने घटना अभाव माफक मथम न यरने नित्य थाय; पण आ धर्भ ता त्रणे काळमां शाह्वत छे. बळी, आ जीवसमूहने दुःखसागरमां डुवेल जाणीने तेमांथी पारजवा, जतुनां दुःख जाणनारा एवा केवळी भगवंतोए धर्म जीनेझ्वरनो कहेलो छे. आज मूत्रमां कहेला अर्थने निर्धुत्तिकार मूत्र-स्पर्शीक वे गायावडे कहे छे:— जे जिणवरा अईया, जे संपट्ट जे अणागए काछे । सठवेति ते अहिंतं, वर्दिहति विवर्दिति ।।२२६॥	सुत्रम ॥५०६॥
·	👌 जे जिणवरा अईया, जे संपइ जे अणागए काले । सब्वेति ते अहिंसं, वर्दिसु वर्दिहिति त्रिवर्दिति ॥२२६॥ 🖇	

	भविष्यमां थशे; ते बधाए भूतकाळमां अहिंसा बतावी छे, बतावशे, अने बतावे छे. एटले, छ ए जीवनीकायने हणे नहि, हणावे नहिं अने इणनारने अनुमोदे नहि. ए सम्यकत्वनी निर्धुक्ति छे तीर्थकरनो उपदेश एमना स्वभावथी परोपकारीपणे अपेक्षा विना सूर्य उदय माफक मवर्त्तलो छे, जेम सूर्य बधाने मकाश आपे, तेज ममाणे जिनेश्वर बोध आपे, एटले १२६ सूत्रमां बताव्या ममाणे धर्भ चरण पाळवा माटे उठेला एटले ज्ञान दर्श्वन चारित्रमां भयत्न करनारा अने तेनाथी विपरीत ने धर्ममां उद्यम न करनाराने माटे सर्वज्ञ चण जगतना नाथे तेवा तेवा निमित्तोने उदेशीने धर्म कक्षो छे, ए ममाणे बधे समजवुं. अथवा उठेला अने न उठेला एटले द्रव्यथी बेठेला अथवा न बेठेला जीवो छे, तेभने विर प्रभुए धर्म कक्षो तेमां ११ गण- धरोए उमे उभे धर्म सांभळ्यो, एटले प्रभुना सन्मुख रहीने धर्म सांभळवा अथवा चारित्र प्रश्ल करवा तैयार थयेलाने संभळाव्यो, ते उपस्थित छे, अने तेथी विपरीत त्यां हाजर न होय ते अन उपस्थित ( गेर हाजर) इता, ( आहें निमित्ते सूत्रमां सातमी विभक्ति लीधी छे जेमके चामडामां दीपडा मराय छे. ) बांका—भावथी आवेला चिलाति पुत्र बिगेरेमां धर्म कथा उपयोगी छे, पण गेरहाजर होय तेने धर्म कथा श्रु गण करे ?	
1	ु उत्तरः—जं गेरहाजर होय तेवाने इंद्र नाग विगेरे माफक कमेनी परिणति विचित्र हविाथी अथवी क्षय उपरामना मळववाथा D	<u>S</u>

आवा० आवा० आवा० मणीने अथवा आत्माने दुःख दे (दंडे) माटे दंड छे, ते मन वचन कायाए त्रण प्रकारनो छे, ए त्रण दंडथी दूरथयेला ते उपरत दंड कहेवाय, ते बधा जीव उपर उपकारनी बुद्धिए उपदेश्व देवाय, एटले जेमणे दंड तज्यो छे, तेवा झुनिओ संयममां स्थिरता करो, अने नवा ग्रुणो माप्त करे, अने बीजां दंट न तजेला (प्रदस्यीओ) ते दंडने तजे, माटे तीर्धिकर उपदेश आपे छे, तथा संग्रहकराय ते उपघि छे, ते ट्रव्यथी सोखुं विगेरे छे, अने भावथी कपट छे, ते राखनार उपधिवाला छे, ते सोपघिक छे, वधा तंग्रहकराय ते उपघि छे, ते ट्रव्यथी सोखुं विगेरे छे, अने भावथी कपट छे, ते राखनार उपधिवाला छे, ते सोपघिक छे, वाकीना तेथी उलटा अनुपधिक छे, तेओने माटे पण उपदेश छे, संयोग (संबंध) ते पुत्र स्त्री मित्र विगेरे उपर भेमनो छे, तेमां एक ययेला ते संयोगरत कहेवाय, अने तेथी उल्टा एकत्व भावना भावनारा धुनि असंयोगरत कहेवाय; ते बखेने ५ण भगवाने उपदेश आपेल छे, तेथी ते सत्य छे. (च ज्ञब्द नियम अर्थ बतावे छे, माटे) भगवानट्रं वचन सत्य छे, तेम यथायोग्यपणे वस्तुनो सद्भाव कक्षाधी ते बाच्य पण छे. ते बतावे छे के, प्रधुए आ मपाणे कक्षु के:—"सर्वे जीवो हणवा न जाइए" विगेरे. आ ममाणे सम्यन्दर्शननुं अद्दान राखवुं; अने ते अद्धान-जिनेझ्वरनां प्रवचनमां छे. जे सम्यक्योक्षमार्गने आपनार छे. वळी, ते बधा दंभना मबन्धवी दुर होवाधी मकर्वथी बोल्याय छे, (माटे ते मवचन.) पण, बीजा मतमां तेवो अहिंसा धर्म वताव्यानथी जमके— अन्य मतवाला मयभ कहे के, सर्व जीवोने न हणया. ("न हिंस्यात्सव क्र्तानि") कहीने यडमां पश्चवर्यनी आज्ञा आपे छे. एटले, मधमनां वचनने तेमनां पाछळनां वचनधी बाधा लामे छे. (माटे, ते प्रवचन नथी.) आ प्रमाणे सम्यक्त्वन्नुं स्वरुप कहीने तेनी माप्तिमां श्रुं करखु ते बतावे छे.	***
--	-----

	्रं तं आइतु न निहे निविखवे जाणितु धम्मं जहा तहा, दिद्देहिं निब्वेयं गचिछजा, नो लीगस्रोसणं चरे (सू०्१२७)	N.S.	
आचা৹	प जाइ एगानह एगानह गिनिस्य आणि ए पर्स्त जहा तहा, दिहार मिठवयना च्छ्रेआ, मा छागरसासण पर (सूपराण) भूते मधुए कहेळां तस्वार्थ उपर श्रदा राखवारुप सम्पग्दर्शन मेळवीने कहेछं कार्य न करवाथी दोष लागे; माटे, तेने गोपवे नहि. ते ममाणे संसर्ग विगेरे निमित्तथी मिध्यात्व दूर करीने पण, जीवना सामर्थ्य गुणोने छोडे नहि. (यथान्नक्ति संयम पाळे; पण, भू ममाद न करे) अथवा ज्ञिवमतना के, बौद्धमतनां व्रतो ग्रहण करीने व्रवेध्वरयाग विगेरे छोडीने विधिए गुरु पासे पूर्वे इतो स्थापन	, सूत्रम	
	🔏 ते ममाणे संसर्ग विगेरे निमित्तथी सिध्यात्व दूर करीने पण, जीवना सामर्थ्ध गुणोने छोडे नदि. (यथान्नक्ति संयम पाळे; पण,	1	
1130311	🎢 ममाद न करे ) अथवा झिवमतना के, बौद्धमतनां व्रतो ग्रहण करीने व्रवेझ्वरयाग विगेरे छोडीने विधिए गुरु पासे पूर्वे इतो स्थापन	4 1140911	
	्रे करान दीक्षा सूका देवी नोह. तज ममाण गुरु विगर पास सम्यवस्व लड्न पाछु तज नोह.	Ģ	
	मन्नाः—-शुं करीने ?	X	
	🝸 💿 उः—जेवो धर्म छे, तेवो श्रुतचारित्ररूप–धर्म समजीने अथवा वस्तुओनो स्दभाव समजीने तेना उपर विदवास राखे; तथा ते	2	
	🖌 धर्म जाणीने बीजुं शुं करे ? ते कहे छेःदेखेला सुंदर अने खराब एवां रुपोवडे निर्वेद पामे; (वैराग्य मेळवे.) ते आ प्रमाणेः-	X	
	र्भ धर्म जाणीने बीजुं शुं करे ? ते कहे छेःदेखेला सुंदर अने खराब एवां रुपोवडे निर्वेद पामे; (वैराग्य मेळवे.) ते आ ममाणेः- र्म् सांभळेला बच्दो, चाखेला रसो, सुंघेला गंधो, फरशेला शुभ अने अशुभ स्पत्नीवडे, रागद्वेष थाय; ते न करतां मध्यस्थ रहे; अने	X	
	🌮 विचारे के, एमां रागद्रेप शुं करवो ? वळी पाणी समूढनी अन्वेषणा जे इष्ट वस्तुओने छेवानी अने अनिष्ट वस्तुने त्यागवानी:	Ž.	
	🔆 जे बुद्धि छे, तेवा रागद्वेष साधु न करे, जेने आवी सामान्य लोक जेवी एषणा नथी तेने बीजी पण कुबुद्धि नथी, ते बतावे छे.	8	
	र्स नरिथ इमा जाई अण्णा तस्त कओ सिया ? दिहं सुयं मयं विण्णायं ज	Č	
	र्तु जे बुद्धि छे, तेवा रागईप साधु न करे, जेने आवी सामान्य लोक जेवी एषणा नथी तेने बीजो पण कुबुद्धि नथी, ते बतावे छे. जस्स नरिथ इमा जाई अण्णा तस्स कओ सिया ? दिहं सुयं मयं विण्णायं ज एयं परिकहिज्जइ, समेमाणा पल्ठेमाणा पुणो पुणो जाइं पकप्पंति ॥ सू० १२८ ॥		
		L'1.3	

সাবা৹	जे मोक्षाभिलाषी साधुने लोकैपणा [संसारी वासना ] नथी तेने बीजी आरंभनी प्रदत्ति पण होती नथी, अर्थात् जेणे भोग ते वासना त्यागी, तेने बीजी आरंभ पहत्ति क्यांथी होय? एटले साधुने सायच अनुष्टाननी पहत्ति न होय, कारण के सावच पटत्त ते प्रहस्थीनेज होय छे,	५ भू सुत्रम
ll <i>r</i> 2koll	अधवा इमणांज बतावेली मत्यक्ष सम्यक्तव ज्ञाती जे जीबोने न इणवा संवंधी बतावी ते दथा जेने न होय तैवाने कुमार्भ तजवा तथा सावय अनुष्ठान छोडवारुप बीजी विवेकनी बुद्धि क्यांथी होय ! (अर्थात दया साथेज बीजी मुबुद्धि होय छे.) हवे क्रिप्यनी गति स्थिर करवा कहे, के जे तेने भें कखुं ते सर्वज्ञ देवे केवळज्ञान बढे साक्षात देखेछं छे, ते सेवा करवावढे में सांमळ्युं, ते छघुकर्मवाळा भष्य जीवोने मानवा योग्य छे, तथा ज्ञानावरणीय कर्मना क्षय उपश्रमयी विशेष भकारे जाण्यु, माटे विद्यात छे, तेथी तमारे पण सम्यवत्व विगेरे में तमने जे कखुं तेमां तमारे यत्न करवो, जेओं उपर बतावेल मार्ग न आदरे तेओने थुं थाय छे ते कहे छे, ते संसारी मनुष्यो मनुष्य विगेरे में तमने जे कखुं तेमां तमारे यत्न करवो, जेओं उपर बतावेल मार्ग न आदरे तेओने थुं धाय छे ते कहे छे, ते संसारी मनुष्यो मनुष्य विगेरे जन्ममां अत्यंत ग्रद वनीने वारंवार 'मनोज्ञ इंद्रियोना' विषयमां वारंवार आनंद मानीने करी फरीने एकेन्द्रि वे इन्द्रिय विगेरे जातिमां जन्म ले छे, पण संसारने तरी झकता नथी, जो आ ममाणे तत्वने जाणनारा वर्तमान स्वाद लेनारा छे, जन्ममां आनंद माननारा इन्द्रिय विषयमां लीन थयेला वारंवार नवां जन्म विगेरे साधनारा संसारी जीवो होय तो साधुए श्वं करवुं ते कहे छे, अहो अ राओ य जयमाणे धोरे सया आगयपण्णाणे पमत्ते बहिया पास अप्यमत्ते सया	1149011 1149011

	र परिकमिजासि त्तिबेमि ( सू० १२९ ) सम्यक्त्वाध्ययने प्रथमोद्देशकः ॥ ४१ ।	Š
সাবা৹	दिवसे अने रात्रे मोक्ष मार्गमांज यत्न करतो, परिसह उपसर्गमां न डरनारो जे धीर पुरुष छे, तथा सर्व काळ जेणे सत् असत्नो	ुँ सूत्रम
11 <i>488</i> 11	दिवसे अने रात्रे मोक्ष मार्गमांज यत्न करतो, परिसह उपसगेमां न डरनारो जे घीर पुरुष छ, तथा सबे काळ जेणे सत् असत्नी ﴿ विवेक स्वीकार्यो छे, तेने गुरु कहे छे, के तुं जो, ममत्त जीवो जे ब्रहस्थो छे, अथवा अन्य मतवाळा जेओ घर्मथी वहार रहेला छे, ﴿ तेमनी दुर्दशा देखीने तेचुं दुःख तने न भोगववुं पडे माटे तुं सर्वदा निद्रा विकथा विमेरेथी रहित बनी आंख फरकवा मात्र पण ﴾ ममादी न थइश, अने कर्म शत्रुने जीतवामां अथवा मोक्ष मार्गे जवाथी पराक्रमी बनजे, आ प्रमाणे सम्पक्तजुं स्वरुप बतावनार	¥ 1148811
	र्भु चोथा अध्यायनो पहेलो उद्देशो समाप्त थयो.	2
	बीजो उद्देशा.	Ŕ
	पहेला उद्देशा साथे बीजानो आ ममाणे संबंध छे, के पहेला उद्देशामां सम्पत्त्ववाद वताव्यो, अने ते तेनो शत्रु मिथ्यावाद छे, ते तेने दूर करवाथी आत्मा लाभ मेळवे छे, ते दूर करवो ज्ञान विना न थाय, अने विचारणा विना परिज्ञा न थाय, मिथ्यावादथी (र्टुं थयेल अन्य तीर्थिकोना मतनी विचारणा करवा आ कहेवाय छे, आ संबंधी आवेला उद्देशानुं आ पहेलुं सूत्र छे, जे (आसवा) विगेरे	8-3-8-3-8-
	🔑 छे, अने अहिं जे सम्यक्त्व लीधुं ते सात पदार्थोतुं श्रद्धान करवातुं छे, तेमां मोक्षामिलापीए शस्तपरिज्ञा नामना पहेला अध्ययनमां 🖒 जीवाजीव पदार्थना ज्ञानवडे संसार तथा मोक्षनां कारणोनो निर्णय करवो एठले तेमां संसारतुं कारण आसव अने निर्जरा, संसार	Le Carte
	🖞 मोक्षना अनुक्रमे कारणो छे, तेनुं सम्यक्त बरोबर विचारवा माटे कहे छे.	2

रू छे जे आतवा ते परिस्सवा जे	परिस्तवा ते आसवा; जे अणासवा ते अपरि	स्तवा, जे अपरिस्तवा	
आचा० 🦞 ते अणासवा; एए पए संबु	ज्झमाणे लोयं च आणाए अभिसमिच्चा पुढो प	पवेइयं (सू० १३०) 🛛 🕅	सूत्रम
सूत्रमां जे इब्द छे, ते सामान्यथी जे अनुष्ठानो करवाथी बधी रीते कर्म थ रानां कारण थाय छे, तेनो भावार्थ आ बास्ते मानवाथी ते वस्तुओ तेमने क रहेला महात्माओने फुलनी माळा वि थाय छे, तेथी कह्यु के, जे आसव छे ते उछटुं सूत्र कहे छे, जे परिस्रवो छे ते आस जवात्माने निर्जरानां स्थान छे, तेज ज जवाने आगेवान बनेला जंतुने ते उत्ता	ो लीवेल छे, अने जे आरंभोवढे आठ मकारनां कर्मनो अ सय ते परिसव छे, इवे पूर्वे जे आसवो कर्मवंधनां स्थान ग छे, के सामान्य बुद्धिवाळाने मोइ करावे तेवां फुल्नी कर्मबंधनो हेतु थवाथी आसव छे पण तेज बस्तुओ त जेरे नकामी जेवी लागवाथी तथा संसार अमण करावनारी स्वानीने परिसव एटले निर्भराजुं स्थान छे, तथा वधी व सवो थाय छे, एटले अरिहंत साधु तप संयम दशविध च चम पदार्थों जेने अशुभ कर्मनो उदय होय तेवा अशुभ अ म पदार्थोनी आधातना करवाथी तथा सातारिदि्रसनो	माश्रय करे छे, ते आस्रवो छे, अने ब बताव्यां, ते पोतेज कर्मनी निर्ज- माळा तथा सुंदर स्त्री सुखकरण तत्वने जाणनारा विषयसुखथी दूर जाणीने ते वस्तुओथी तेने वैराग्य स्तुओन्तुं अनेकांतपणुं बताववा तेथी स्तुओन्तुं अनेकांतपणुं बताववा तेथी कवाळा समाचारी अनुष्ठान विगेरे प्रध्यवसायवाळा तथा दुर्गतिमां ऌइ गर्भ करवामां तत्पर मनुष्यने ते	ાપ્યુશ્રા
	र्म माप्तिथाय एवा तीर्थकरो पण तेवाने पापनुं उपाव संयम स्थान छे, तेटलांज बंधने माटे असंयमस्थान छे		

¢ R	यथा प्रकारा यावन्तः, संसारावेशहेतवः । तावन्तस्तद्विपर्यासान्निर्वाणसुखहेतवः ॥ १ ॥	N. CA	
आचा० 🐧	जेटला प्रकारना जेटला संसारना अगणना हेतुओ छे, तेटलाज तेने विपरीत रीते लेवाथी निर्वाण सुखने आपनारा हेतुओ छे.	, सूत्रम्	
1148211		นี้ แหรม	İ
Š.	सम्यगदृष्टि जीव, जेणे संसार समुद्रमांथी नीकळवा माटे विषय अभिळाषो द्र करेळाने सर्वे मोहक वस्तुओ अशुचिरुप अने दुःखनुं कारण छे.	Ç.	
ť	एवं भावनारने संवेग थतां ते मोहक वस्तुओ संसारतुं कारण छतां पण मोक्षने माटे थाय छे.	Č.	
	वळी तेज विषयने उलटा (मतिषेध) सूत्र वडे कहे छे.	2	
	'जे अणासवा ' इत्यादि—मसज्य मतिषेधना क्रिया मतीषेध पर्यवसानपणे 'परिसूव ' आ पदवडेसंबंधनो अभाव दोवाथी आ	×,	
13	पर्युदास छे. ते समजाने छे. एटछे आसन (संसार कृत्य) थी उलटुं अनासन ते वत छे. तो पण ते वतो अशुभ कर्मना उदयथी		
, and the second s	अशुभ अध्यवसाय थतां कर्मने अपरिसव (निर्जरा माटे नहीं) थाय, जेमके कॉकण आर्थ विगेरेतुं चारित्र कर्मनी निर्जरा माटे न थयुं,	*	
	तेमज अपरिसन जे पापनुं उपादान कारण छतां कोइ पण मनचन (जैन झासन) ने उपकार विगेरे करवाथी ते अशुभ कृत्यो	2	
	कणवीर लताने भमडनारा क्षुल्लकनी माफक अनास्रव एटले कर्भवंधननां कारण थतां नथी.	ç	
	(उपरना सूत्रोनो भावार्थ आ छे के जे आस्वव ते बंधनुं कारण छतां कारण विशेवथी ते, कर्मबंघरुपे नथी थतुं, तेम निर्जरानुं		

×	कृत्य करवा छतां तेवा संजोगोना अभावेमन परिणाम वदलातां बंधरूपे थाय छे, तेवीरीते कोइने व्रत लीघाथी अनासव धतां निर्भरा थवी जोइए, छतां कारण बदलातां ते व्रत वंधनरूपे थाय, अने अपरिसूव ते बंधनु कारण छतां संजोगो बदलातां बंधरूपे न थाय, माटे एकांत पकडवुं. पण चुद्धि पूर्वक संजोगो तथा मनना परिणाम विचारी अनुमान करवुं, के बोल्खुं. ) अथवा बीजी रीते बतावे छे.	\$
<b>आचा</b> ० শু	थाय, माटे एकांत पकडवुं. पण बुद्धि पूर्वक संजोगो तथा मनना परिणाम विचारी अनुमान करवुं, के बोल्बुं.) अथवा बीजी	र्भु सूत्रम्
แรงยา 🕻	ि रीते बतावे छे. जि आसूत्र करे-ते आस्रवो (पच विगेरेमां 'अ' लागे छे, तेज प्रमाणे जे परिस्नव करे ते परिस्नवो (निर्जरक) छे. एनी	<b>F</b> 11.75811
4	चोभंगी थाय छे, तेमां मिथ्याल अविरति प्रमाद कषाय योगोवडे जेओ कर्मना अस्रवो (बंधको) छे, तेओज बीजाओना परिस्रवो	2
* × ×	( निर्जेरा करनारा ) छे आ मथम भांगामां पडेला बधा संसारी जीवो चार गतिमां भ्रमण करनार। छे. ते दरेकने प्रत्येक क्षणे आसूव तथा निर्जरा छे पण जेओ आसूव करे तेओ परिसूव न करे, आ बीजो भांगो शून्य छे कारणके, बंधनी जोडे निर्जरा	
2 X	(थोडेघणे अंशे) हंमेशां चालुन छे.	
*	ए प्रमाणे जे अनासूत्रवाळा छे, तेओ परिसूत्रवाळा छे. एटले, तेओ अयोगी केवळी १४ गुणस्थानमां रहेला त्रीजा भागमां छे, अने चोथा भागमां सिद्ध भगवंतो छे, तेओमां अनावपणुं छे, तेम अपरिसूवपणुं पण छे, एमां पहेलो अने छेल्लो भांगो सूत्रमां	S. A.
<b>a</b> *	लीधेछ छे. अने पहेलो छेल्लो छेनाथी मध्यना वे भांगा साथे रहेवाथी आवीगयला जाणवा. जो. एम छे. तो थूं करवं ते कहे छे:	$\mathfrak{P}$
× ×	उपर कहेला पदो (जेनाथी अर्थ समजाय; ते पद छे ते) आसूत्रो विगेरे छे, (अने वीजानो अर्थ समजावा माटे ज्ञब्दना	*
	पयोगथी जे पदो अने अर्थ कहेवा जोग छे,) ते मने योग्यरीते समजवावडे समजेस्रो साधु विचारे के, दुनियाना जीवो आसूवद्वार-	8

			ž	
	15	वडे आवेलां कर्मवडे वंधाय छे, तथा तप अने चारित्र विगेरेथी कर्मोथी मुकाय छे. आवुं तीर्धकरना कहेला आगमने अनुसारे जे	X	
आचा०	đ	आज्ञामां रहे; अने वर्ते ते मुकाय. एवुं जाणीने कर्मथी छुटवा जुदुं बतावेळ आसव, तथा परिसूव समजीने क्यो माणस धर्मचारित्रमां उद्यम न करे ? केवीरीते कहेल छे, ते वतावे छे.		सूत्रम्
	Ð	उद्यम न करे ? केवीरीते कहेल छे, ते बतावे छे.		
ուջչշո	Ç	आसवो छे, ते ज्ञानना प्रत्यनीकपणाथी एटले, ज्ञान भणावनारना गुण भुलवा. भणतां अंतराय करवी; ज्ञान उपर द्वेष करवो;	Ş.	1148411
	Æ	ज्ञाननी अतिशय आताशना करवी; ज्ञानने सम्यक्पकारे न बताववाथी ज्ञानावरणीयकर्म बंधाय छे, नेज प्रमाणे दर्श्वनना अत्रुपणाथी	1	
	Ň	<b>ज्ञानमां बतावेलां विध्नां माफक दर्जनमां विध्न करवाथी एटले, दर्जनने सम्यक्शकारे</b> न बतावबुं; त्यां सुधीनां दोषो लगाडवाथी	1	
	X	दर्शनावरणीयकर्म बंधाय छे. तेज प्रमाणे प्राणीओनुं, तथा भूतोनुं तथा जीवोनुं तथा सतनुं भछं चाही दुःख न आपवाथी शोकनुं	8	
	ľ,	कारण न आपवाधी तथा न झरव्याथी तथा पीडा न आपवाथी तथा न संतापवाथी ( अर्थात निर्मल चारित्र वढे सर्वे जीवोने अभ-	*	
	1 L	कारण न आपवाधी तथा न झुख्याथी तथा पीडा न आपवाथी तथा न संतापवाथी ( अर्थात् निर्मल चारित्र वढे सर्वे जीवोने अभ- यदान आपवाथी) साता चेदनीय कर्भ वंधाय छे, एथी उल्लुं एटले जीवोने असंयम वढे दुःख आपवाथी असाताचेदनीयकर्भ	Š	
	9	बन्धाय छे, तेज प्रमाणे अनतानुंबन्धीना उत्क्रष्टपणाथी तीव्रदर्शन मोहनीयपणे तथा प्रबळ चारित्रमोहनीयना सद्भावधी मोहनीयकर्म	8	
	C	बन्धाय छे, महान आरंभथी तथा घणा परिग्रहथी पंचेन्द्रियना वन्धथी मांसना खावाथी नरकनुं आयु वधाय छे, तथा मायावीपणे जु-	1	
		ठना कारणे तथा खोटा तोल माप करवाथी जीव तिर्यंचतुं आयु वांघे छे. स्वभावे विनयवान तथा सानुक्रोप लज्जाछपणाथी, तथा	$ \mathfrak{D} $	
		अदेखाइ न करवाथी मनुष्यनुं आयु बांधे छे, तथा सराग-संयमथी देशविरति (आवकनाव्रत) तथा बाळतपस्यथी अने अकाम	9	
	$\left  \begin{array}{c} \mathcal{M} \\ \mathcal{M} \end{array} \right $	निर्जराथी देवनुं आयु बन्धाय छे, अने कार्यमां सरळ, तथा कोमळ बचन योग्यरीते बोलवाथी शुभ नाम बन्धाय छे. अने तेथी उलटा	1	
	X	ાપગરાવા વવતુ ગાલુ વન્યાય છે, બંગ જાવના સરજ, હવા જાનજ પંચન વાગ્યરાહ પાજવાથા દીન માન વન્યાય છે. બંગ હવા ઉછેલ -	8	

জান্মত	र्छुणोथी अशुभ नाम बन्धाय छे. जाति, हुळ बळरुप तप, विद्या लाभ अैश्वर्यनो मद न करवाथी ऊंचगोत्र बन्धाय छे, अने विगेरेनो मद करवाथी, तथा पारकानी निंदा करवाथी नीचगोत्र बन्धाय छे, दान, लाभ भोग-उपभोग, अने वीर्य ए पांचन राय करवाथी अंतरायकर्भ बन्धाय छे. आज उपर कहेला आस्रवो छे. इवे परिस्रवोधुं स्वरूप बतावे छे:— अनज्ञन विगेरे बाग्र अने अभ्यंतर-तप ते कर्मनी निर्जरा करनार परिस्रव छे. आ प्रमाणे आस्रव करनार अने निर्ज नार मेदोसहित जीवो बताव्या छे, ते बधा जीव विगेरे सात पदार्थो मोक्ष सुधी छे ते जाणवा. आ पदार्थोने तीर्थकर तथा भगवन्तोए लोकोत्तर ज्ञानवडे जाणीने जुदा जुदा बतावेल छे, अने तेत्र प्रमाणे तेमनी आज्ञामां वर्तनार बीजो कोइपण स	ग आति 🕺 <sup>ना अंत-</sup> 🏌 सुत्रम्
1148ฐก	अनज्ञन विगेरे बाह्य अने अभ्यंतर-तप ते कर्मनी निर्जरा करनार परिस्नव छे. आ प्रमाणे आसव करनार अने निर्जन भू अनज्ञन विगेरे बाह्य अने अभ्यंतर-तप ते कर्मनी निर्जरा करनार परिस्नव छे. आ प्रमाणे आसव करनार अने निर्जन	रा कर- 💭 ॥५१६॥
	पूर्व निरेतुं ज्ञान प्रावनार जीवोनां हितने माटे बीजाओने पण उपदेश आपे छे, ते बतावे छे:	गणवर है। धु चौद क
•	र्षे विगरेनुं ज्ञान धरावनार जोवानां हितने माट बाजाभाने पण उपदेश आप छ, ते बतावे छः— अधाइ नाणी इह माणवाणं संसारपडिवण्णाणं संबुज्झमाणाणं विन्नाणपत्ताणं, अद्यावि संता	. <b>(</b> )
	अदुवा पमत्ता अहा सचमिणं तिवेमि, नाणागमो मच्चुमुहस्स अस्थि इच्छा पणीय।	
	र्दं वंकानिकेया कालगहिया निचयनिविट्ठा पुढो पुढो जाइं पकप्पयंति (सू० १३१) वधा पदार्थोने बतावनार ज्ञान छे. ते ज्ञान ने होय; ते ज्ञानी कहेवाय. ते ज्ञानी प्रवचनमां मनुष्योने उपदेश करे छे.	मनुष्य 🖌
	के विशेष पदायान बतावनार ज्ञान छ. त ज्ञान न हाय; त ज्ञाना कहवाय, त ज्ञाना मवचनमा मनुष्यान अपदश कर छ. ते छेवानुं कारण ए छ के, पचेन्द्रिय सांभळे समजे; तो पण, तेओ संपूर्ण चारित्र तथा संवर लइ ज्ञके नहि; अने देवता विगेरे पण आदरी शके नहि वळी, केवळीने उपदेशनी जरुर नथी; माटे संसारमां रहेलां घातीकर्मवाळां जीवोने आ उपदेश अप	सांभळे, 🦌 राय छे. 🖌

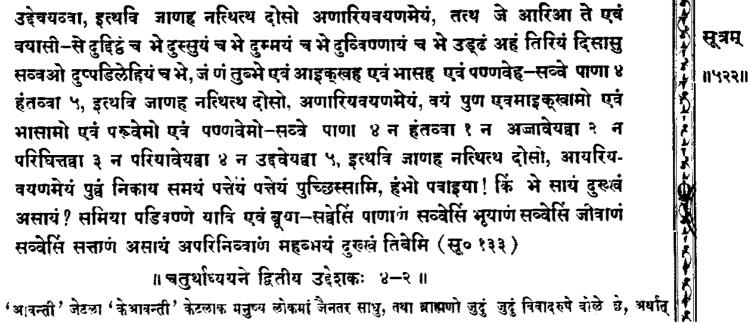
े विद्यान प्राप्त प्रदेश के सितनी प्राप्त अने अहित खोडवानो विचार करवानं जेने ज्ञान होय. तथा वधी पर्याप्तभोधी पर्याप्त एटले संज्ञी	सूत्रम् ।५१७॥
---	------------------

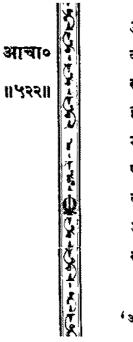
স্রান্বা৹	्रे जाणेला करुणायोग्य रागद्वेप विषयना अभिलापने जडमूलथी उखेडवाने केम समर्थ न थाय, आ वातने बीजी रीते न माने, तैथी बतावे छे 'अहासच ' विगेरे. आजे में कहुं अने कहेवाय छे, ते सत्य छे, एतुं हुं कहुं छुं के जेवी रीते सम्पत्तव अथवा चारित्रना पु परिणाम जे दुर्ऌभ छे, ते पामीने प्रमाद न करवो, शिष्य कहे छे ठीक पण शुं आधार लड्ने प्रमाद न करवो ! ते कहे छे, 'नाणा	भू भू भूत्रम
ા <b>પ્ડ</b> શ્ટના	्री गमो ' विगेरे, एटले कोइ पण वखत संसारमां रहेलो जोव मृत्युना मोढामां न आवे एवं नथी, क्युं छे केः— तु वद्त यदीह कश्चिदनुसंततसुखपरिभागलालितः । प्रयत्नशतपरोऽपि, विगतव्यथमायुरवाप्तवान्नरः कोइ डाह्यो माणस पूछे के वोलो, के अहींआ रोज सुखनां परिभोगथी लाड लडावेलो अने सेकडो मयल्न करीने राखेलो पण	* 1149201 5 7 7
	न खन्छ नरः सुरोधसिद्धासुरकिन्नर नायकोऽपि यः। सोऽपि कृतान्तदन्तकुलिझाकमेण कृशितो न नइयति॥ देवताओना समूह अने सिद्ध विद्याताळो तथा असुरकित्ररनो नायक पण अथवा मनुष्य पण एवो कोइ नथी, के जे पुरुष ज-	~ 大いてのかてましてました。

		विषयने अनुकूळ पट्टीत (इच्छा) ममाणे अहीं विषयना सन्मुख जेमां कर्मनो बन्ध छे, ते तरफ अथवा संसारना सन्मुख मकर्षपणे जेओ गएला छे तेओ इच्छा मणीत छे. जेओ तेवा छे. तेओ वंकनी अथवा असंयमनी जे मर्यादा छे, तेनो आश्रय लीघेला ते	ž	
সাৰা৹	Č,	जेओं गएला छ तेआ इच्छा मणीत छे. जेओ तेवा छे. तेओ वंकनी अथवा असंयमनी जे मंघोदा छे, तेनी आश्रय लोधला त वंकानिकेत छे, अथवा जेमचुं वांकुं निकेत छे, तेवा छे, (व्याकरणना नियमथी मूत्रमांकनो काथयेल छे.) अने जेओए असंयमनी म-		सुत्रम्
1148311		र्यादा (इद) लीधी छे. तेओं काल (कोत)थी, घेराता कर्मनां उपादान कारण जे सावद्य कर्मनां अनुष्ठान छे, तेमां रक्त बनीने वारं- वार एकेन्द्रिय जाति विगेरेमां नवां नवां जन्म मरण भोगवे छे, अथवा काल ब्रहितनो बीजो अर्थ एम लेवो के केटलाक जीवो एम	N.	1148311
	Š	चिंतवे के धर्म करीछं, चारित्र ऌइछं, एवी आजाथी बेसी रहे, ( अथवा आ दिताग्निना च्याकरणना मयोगयी अथवा आर्थ वचन	2	
	Ď	ममाणे परनिपात करतां ) गृहितकाल बब्द लेतां, केटलाक एवं इच्छे के पाछली चयमां के मरणना अंत समयमां अथवा पुत्र परणाव्या पत्नी धर्म करीशुं, इमणा नहि, एवी उमेद राखनारा सावद्य आरंभमां रक्त बन्नी इच्छा प्रमाणे वक्र असंयममां रहीने भवि्ष्यने	Ş	
	Į,	भरोसे रहीने अर्भ करवानुं राखी वर्तमानमां पाप रक्त वनी पृथक पृथक (जुरी जुरी) एकेन्द्रिय जाति विगेरमां जन्म-मरण कर छ.	Ŷ	
		वीजी मतिमां 'एत्य मोहे पुणो पुणो' पाठ छे. तेनों अर्थ आ छे, के उपर कहेली रीते इच्छा एटले, इंद्रियोने अनुक्ल कर्म- रूपमोहमां डुवेल्या वारंवार एवां पाप करे छे के, तेनी संसारथी अमच्युति (नमुक्ति) थाय, संसारचमण कर्यांज करें; तेथी शुं याय ते बतावे छे:	P	
	¥	याय त काव छः— इहमेगेलि तत्थ तत्थ संथवो भवइ, अहोववाइए फासे पडिसंवेयंति, चिटं कम्मेहिं कूरेहिं चिटं परिचिट्टइ, अचिटं कूरेहिं कम्मेहिं नो चिटं परिचिट्टइ, एगे वयंति अदुवावि नाणा नाणो वयंति अदुवावि एगे (सू० १३२)	Ì. ₽	
	X	अचिटं कूरेहिं कम्मेहिं नो चिटं परिचिट्टइ, एगे क्यंति अदुवावि नाणा नाणो वयंति अदुवावि एगे (सू० १३२)	Ś	

॥५२०॥ इतां पण जैनेतर अथवा जैनमतना पासत्था (स्वेच्छाचारी) साधु गं औदेशिक विगेरे दोषित आदारने निदोंप बतावनारा नरक विगेरेना दुःखना अनुभवो (स्पर्शने) मोगवे छे, (ते इन्द्रियोथी सौथी वधारे परवश बनेला) नास्तिकन्तुं मानवुं बतावे छे के:	সাৰা৹	लि मंत्रमा कहा। प्रमाण तुआ इच्छान अनुसार तेच्या बनावी झन्द्रयान पेशे यह तन अनुकूळ आपारान नरक पिगर स्थानमा गपला 📗	स्त्रम
	<b>શપ્</b> રન્ગ	छतां पण जैनेतर अथवा जैनमतना पासत्था (स्वेच्छाचारी) साधुआं औदेशिक विगेरे दोषित आदारने निर्दोष बतावनारा नरक विगेरेना दुःखना अनुभवो (स्पर्श्वने) मागवे छे, (ते इन्द्रियोथी सौथी वधारे परवश बनेला) नास्तिकनुं मानवुं बतावे छे केः— विच खाद च चारुलोचने !, यदतीतं वरगात्रि तन्न ते। नहि भीरु ! गतं निवर्त्तते, समुदायमात्रमिदं कलेवरम् ॥ ते मतनो नायक ब्रद्ध्पति पोतानी विधवा बेनने कुमार्गे दोरवा कहे छे केः—" हे सुंदर लोचनवाळी ! इच्छत पी, खा. हे सुंदर श्वरीरवाळी ! जे गयुं ते तारुं नथी ! हे बीकण ! गयेखं पाछं आवतुं नथा ! आ परमाणुओना सग्रुह मात्रज शरीरनुं खोखं छे. (अर्थात् जे बरीरवडे धर्म साधवानो छे, तेना वडे भोगोमांज रक्त थवानुं बताव्युं: अने तेनी भोळी बेनने विवेक न होवाथी तेना फांसामां कसी, अने तेमनां अथम आचरणोथी अनेक जीवोने कुमार्गे दोरवानुं स्थान मळ्युं.) हवे वैशेषिक मतनुं थोढुं वर्तन द्वणह्य छे. ते बतावे छे, के वैशेषिक मतवाळा पण सावय योगना आरंभोओ छे, तेओ वोले	11 <b>'</b> 3 <b>2</b> 0 11

		¥ ·
আचা৹	र् में मक्षः	एँ १) सूत्रम्
जा पाण	उत्तरःवधा नहीं, पण जे अत्यंत कर वधवंधन विगेरेनी क्रिया वडेज (चीकणा कर्म बांधो) वैतरणी तरण असिपत्र वनपत्र	X N
ાા પરશા	🗼 पडवानी तथा शाल्मली दूसनं आलिंगन विगेरेथी थएल नरकनी भयंकर वेदनानी विरुप दशाने भोगवतो सातमी विगेरे नरकमां वसे	ું શપ્રશ્ણ હ
	) छे, पण जे अत्यंत हिंसावाळा कर्मों न करे ते घणी पीडावाळां नरकोमां उत्पन्न थतो नथी, ठीक, एम इत्रे, पण आवुं कोण कहे । छे, 'एगे वयंती' त्यादि चौद पूर्वी विगेरे मुनिओ कहे छे, अथवा जेने सकळ (बधा) पदार्थोनुं बतावनारुं ज्ञान छे, ते ज्ञानी बोछे	5 5
	र छ, 'एग वयता' त्यादि चाद पूर्वा विगरे मुनिआ केई छ, अथवा जन संकळ (वया) पदायानु बतावनारु कान छ, ए काना पाछ गुंतिया जेवुं दिव्यज्ञानी केवळी बोछे छे तेमज श्रुत केवळी बोछे छे, तथा जे श्रुत (ज्ञान वाळा) केवळी बोछे छे, तेज निरावरण	r r
	🥍 केवळज्ञानी बोले छे, (ते पत्यागत सूत्रवहे जाणहुं के) 'नाणी ' विगेरे-ज्ञानी केवळी जे बोले छे तेवुं श्रुत केवळी यथाथे बोलता	×
	🚇 होवाथी ते एकज छे, कारण के केवळी प्रभुने ट्रेक पदार्थ साक्षात देखाय छे, अने श्रुत केवळी तेमना उपदेश प्रमाणे वर्ते छे.	
	🗡 तिथी बोलवामां पण एक वाक्यता (सरखापणुं) छे; ते कहे छे, तथा वादीओंनो विवाद तथा तेमनुं समाधान कर छे.	x Y
	💃 आवंती केयावंती लोयंसि समणा य माहणा य पुढा विवायं वयंति, से दिष्टं च णे सुयं च	\$
	र्भ णे मयं च णे विण्णायं च णे उड्डं अहं तिरियं दिसासु सब्वओ सुपडिलेहियं च णे-सब्वे र्भ पाणा सब्वे जीवा सब्वे भूया सब्वे सत्ता हन्तब्वा अज्जावेयब्वा परियावेयब्वा परिघेत्तब्वा	Ś.
	र्पु पाणा सब्वे जीवा सब्वे भूया सब्वे सत्ता हन्तव्वा अज्जावेयव्वा परियावेयव्वा परिघेत्तव्वा	8





आचा० ॥४२३॥	1 10	केटलाक अन्यदर्शनीओ परलोकने बताववानी इच्छावाला पोताना मंतव्यना पेमयी बीजानुं मंतव्य जुठुं ठराववा विवाद करे छे, जेमके भागवत मतना लोको कहे छे के पचोस (२५) तलना ज्ञानथी मोक्ष थाय छे. आत्मा सर्बव्यापि छे, गुण रहित छे, चैतन्य बक्षणवाळो छे, अने विशेष रहित सामान्य तत्व छे, तथा वैशेषिक मतवाला कहे छे, द्रव्य विगेरे छ पदार्थना परिज्ञानथी मोक्ष छे, समवायिज्ञान गुणवडे इच्छा प्रयत्न द्वेष विगेरे गुणोथी गुणवान् आत्मा छे, परस्पर निरपेक्ष सामान्य विशेषरुप तत्व छे, शाक्य मतवाला कहे छे, परलोकमां जनार आत्मान नथी, निश्वयथी सामान्य क्षणिक वस्तु छे, मीमांसक कहे छे, के मोक्ष तथा सर्वज्ञनो अभाव छे, तथा केटलाक मतमां पृथ्वी विगेरे एके,न्द्रिय जोवा नथी, बीजा केटलाक बनस्पतिमां पण अचेतनपणुं माने छे, तथा केटलाक बेयेन्द्रि विगेरे कुमी विगेरेमां जंतुपणुं मानता नथी, अथवा जीवपणुं मानवा छतां तेना वथमां वंध मानता नथी, अथवा	ALAN PARA PARA	त्रम् ।३ं॥
	18-0-x-2-x-2-x-2-x-2-x-2-x-2-x-2-x-2-x-2-x	अल्य मात्र वंध माने छे, तथा हिंसामां पण भिन्न वाक्यपणुं छे, ते कहे छेः— प्राणी प्राणिज्ञानं घातकचित्तं च तद्रताचेष्टा । प्राणेश्च विप्रयोगः पञ्चभिरापद्यते हिंसा ॥ जीव जीवतुं ज्ञान, घ.त करनारतुं चित्त, अने तेमां रहेळीचेष्टा पाणा साथे वियोग, आ ममाणे पापने जाणवाथी हिंसा थाय छे. तथा औदेशिकना परिभोगनी आज्ञा आग्रवा विगेरेनी जे विरूद्ध वात छे, ते पोतानी मेळे विचारवुं, प्र-ते व्राह्मण तथा श्रमणो धर्म विरुद्ध जे वोछे छे, ते सूत्र बढेज वतावे छे, अन्य दर्श्वनीतुं कहेवुं आ छे केः—('से दिहं चेण इत्यादि ' थी छइने 'नत्थित्य दोसोत्ति,') दिव्यज्ञानवडे अमे अथवा,	こうでなくろもちろ	

	🖗 अमारा धर्मना नायको, (तीर्थकरो) जास रचनाराष साक्षात् जोयुं छे. अयवा, अमारा मोटा ग्रुरु पासेथी अमे तथा अमारा वटग्रुर	×
आचা৹	र पासेथी गुरुए सांभळ्युं छे. अथवा ते धर्मनायकनी पासे सेवामां रहेनारा जिष्योए एम मान्युं छे. अथवा तेमने आ युक्तिए युक्त	र् सूत्रम्
	र्रु होवाथी मान्य छे. अथवा अमोने अथवा, अमारा धर्मनायकने आ जाणीतुं छे, ते तत्व मेदना पर्यायोवडे अमोए अथवा, अमारा	X
1135811	र धर्मनायके पारकाना उपदेश्वथी नहिः पण, स्वयं जाणेलुं छे के, उपर नीचे तथा, चार दिन्ना, चार खुणा मळी दन्ने दिन्नामां तथा,	<u> 117581</u>
	🗙 बधां प्रमाणो ते, प्रत्यक्ष अनुमान ऊपमान आगम अर्थापत्ति विगेरेशी तथा, मनना निश्वयथी अमे तथा अमारा गुरुए विचारी लीधुं	5
	🗍 छे के:-सर्वे माणो, सर्वे जीवो, सर्वे भूतो, सर्वे सत्वो हणवा, हणाववा; संग्रह करवो; सतापवा; दुःखी करवा तेमां कंइ दोष नथी;	*
	🛉 तेम धर्मकार्यमां पण समजवुं के, याग यह करवामां अथवा, देवताने बळिदान आपवामां माणी हणाय; तो, पापनो बंध नथी. आ	<b>V</b>
	👫 प्रमाणे, केटलाक जैनेतर सन्यासीओ तथा पोताने माटे रसोइ बनावेली जमनारा बाह्यणो धर्म विरुद्ध तथा, परलोकविरुद्ध बोले छे.	*
	🌒 आ मगणे, तेमनं बोलवं जीवहिंसातं होवाथी पापना अनुबंधवाळं बचन अनार्थप्रणीत (रचेलुं) छे, पण जेओ तेवा हिंसक इन्द्रिय	
	🕻 मिय नथी. तेवाओं शुं कहे छे ? ते बतावे छे.	S.I
	(तत्र वाक्यनी क्रम्आत करवा अथवा निर्धारण माटे छे.) जेओ देन्न भाषा तथा चारित्र वडे आर्थ ( उत्तम सुणवाळा ) छे.	7
	🕈 तेओ एम कहे छे. के अन्य मतवाळाए जे कब ते तेमणे खराब रीते देखेलं छे. अर्थात तमोए अथवा तमारा गुरु तथा धर्मना	2
	ते नायकोए जीव हिंसानी पुष्टि करो तेथी नीचला दोषो तमने लागु पढे छे. (णं वाक्यालंकारमां छे) वळी तमे याग अथवा देवताना है बलिदानमां हिंसाने निर्दोष मानो छो, परंतु आर्य पुरुषो तेमां पण दोष माने छे. एवं बतावीने हवे आर्य पुरुषो पोतानो मत स्था-	X
	में बलिटानमां हिंसाने निहोंच मातो को, पांत आगे प्रत्यो तेमां पण होच माने छे. एवं बतावीने हवे आर्थ प्रत्यो पोतानो मत स्था-	¥
		<b>X</b>

	Ž	पन करे छे अने कहे छे, अमे आवुं कहीए छीए, अने मरुपणा करीए छीए केः-वधा माण, जीव, भूत, सत्व ए चारे शरीरधारी जीवो छे, तेमने हणवा नहिं, हुकम चलाववो नहि, संग्रह करवो नहि, संतापवा नहि, पीटा आपवी नहि, उपद्रव करवा नहि. अ-	×	
आचা৹	¥.	जीवो छे, तेमने हणवा नहिं, हुकम चलाववो नहि, संग्रह करवो नहि, संतापवा नहि, पीडा आपवी नहि, उपद्रव करवा नहि. अ-	े सूत्रम्	
	7	होंआज दोष नथी. (अर्थात कोइपण जीवने कोइ पण रीते पीडा न आपनारुं संयमज निर्दोष छे,) आ आर्य पुरुषोनुं चचन छे. आवुं कुडेवाथी दिंसा मिय जैनेतर कहे छे, के अपने तमारुं वचन अनार्थ लागे छे. जैनाचार्थ — तमारुं कहेवुं तमारा एक दिलवाळा मित्रोज स्वीकारी शकज्ञे. कारण के ते युक्ति रहित छे. तेने माटेज फरी	Ĩ.	
॥५२५॥	4	आवुं कुइेवाथी हिंसा मिय जैनेतर कहे छे, के अपने तमारुं वचन अनार्थ लागे छे.	💯 ાપરપા	
	X	जैनाचार्थतमारुं कहेवुं तमारा एक दिल्वाळा मित्रोन स्वीकारी शकज्ञे. कारण के ते युक्ति रहित छे. तेने माटेज फरी	5	
		कई छ, के पोतानी बाक ( वाणी ) रुप यंत्र वडे बंधायला बादीओ ऐतानी कवाणीथी पाछा नहि फरे. ( आग्रह पकडी राखके )		
		तेवा वादी (जैनेतर) ने तेमना मानेला आगमनी व्यवस्था करीने तेतुं विरुप (अनुचित) पणुं बताववा वढे जैनाचार्थ प्रश्न पुछे	2	
	5	छ. अथवा प्रथम प्रश्न करनारा दरेक बादीओन व्यवस्थापीने जैनाचार्थे तरफथी प्रश्न पूछाय छे के-बोली (वाद करनारा जैनेतर	×.	
	Ŷ	वंधुओ तमने साता ( मुख) मनने आनंद उपजावनारा छे, के दुःख? जो एम कहे के मुख वहाछ छे, तो तमारा आगम (सिद्धांत)	Ó	
	Ŷ	ने पत्यक्ष तथा लोकना मानवा ममाणे वाधा थशे. ( तमारी सिद्धांत खोटो थशे. ) करी तेओं छबाइथी जुटुं कहे के अपने दुःख	Q.	
		भिय छे, तो तेवा वादीओने पोतानी वाक् जालमां वंधायलाने आ प्रमाणे कहेवुं, के तमने जेम दुःख घिय छे तेम सर्वे माणी मात्रने	¥	
	* *	दुःख पिय नथी, पण अपिय छे, अज्ञांतिकर छे, यहा भयरुप छे. छतां हठ ब्रहीने ते न माने तो कहेवुं, के तमारुं बोलवुं सत्य	5	
	ż	ुरेस गांध पान पान पान के न्यारस के पुरा नेहुं प्रमाण मळवुं दुर्छभ छे के सुखने बदले दुःख कोइ प्रम पिय माने ? माटे तमारे अथवा क्यारे थाय, के ते ममाणरुप बने, पण तेवुं ममाण मळवुं दुर्छभ छे के सुखने बदले दुःख कोइ प्रम प्रिय माने ? माटे तमारे अथवा दरेक मोक्षामिलाषी के सुखना अभिलाषीए कोइश्य जीवोने हणवा नहिं, पीडवा नहिं तथा केदमां नाखवा नहिं विगेरे जाणवुं. ते	7	
	ř	टरेक मोक्षामिलापी के सखना अभिलापीए कोइश्ण जीबोने हणवा नहिं, पीडवा नहिं तथा केटमां नाखवा नहिं विगेरे जाणवं, ते	¥	
	۲,	ער אין ארי אין אין אין אין אין אין אין אין אין אי		

	र इलवामां दोप छे, छतां इणवामां दोप नथी. एवुं मानवुं ते अनार्थ वचन छे. (इति श्रब्द समाप्ति माटे छे) आवुं सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे. उपर बताव्या भमाणे ते वादीओने तेमना वचनयंत्रवढेज बांधीने तेमनी अनार्यता बतावी. आ संबंधमां रोइ- पु गुप्त मंत्री जेणे जैनागमनुं तज्ज सारी रीते जाण्युं छे तेणे मध्यस्थपणुं धारण करीने तमाम मतवाळानी परिक्षा करवा वडे जेम निरा-	3
<b>ાપ્ડર્ક્</b> યા	करण कयुं ते निर्युक्तिकार गाथाओ बडे कहे छे. खुड्डग पायसमासं, धम्म कहंपि य अजंपमाणेणं। छन्नेण अन्नलिंगी, परिच्छिया रोहगुत्तेणं ॥ २२७ ॥ आ गाथा वडे संक्षेपथी श्रुल्लकतुं दृष्टांत कहुं छे, गाथाना पदना संक्षेपवडे राजसभामां वधा बादीनी धर्मकथा मगट सांभळीने रोहगुप्त मंत्रीए बादीओनी परीक्षा करी. आ गाथानो वधारे खुलासो नीचेनी कथाथी जाणवो. ते कहे छे के चंपानगरीमां सिंहसेन राजनो मंत्री रोहगुप्त महामंत्री इतो ते जिनेश्वरना मंतव्यमां निर्मळ इदयवाळो बनीने सत्त असत्वादना विचारनी चर्चा पूछतो इतो, ते समये जे जेने इच्छित ते तेणे सारुं कहूं, ते समये चुप बेठेला मंत्रीने राजाए कहूं, धर्म विचारो जणाववामां तमे कांइ केम बोलता नथी? मंत्री बोल्योः-आ वादीओना स्वपक्षना आग्रहवाळां वचनोवडे धुं लाभ थाय ? माटे आपणे विचार करीए, पोतानी मेळे धर्म- प्रिक्षा करीए. आ प्रमाणे बधा वादीओने झांतिचुं वचन कहीने राजानी आज्ञा लडने नीचलुं एक पद बनावी नगरमां लटकाव्युं.	* + * * * * * * * * * * * * * * * * *
	सकुंडलं वा वयणं न व'त्ति, आ गाथाना वीजां त्रण पद मेळवी आखी गाथाभंडारमां राजा पासे मुकावी. पछी जाहेर दांडी दूँ पीटावी कह्युं के आ पद सिवाय त्रण पद नवां बनावीने राजा पासे जे गुरु लावशे, तेने राजा मों माग्या दान आपशे, तथा तेनो	7 7 7

आचा० ॥५२७॥	भक्त बनशे. आ गायाना पदने सर्वे वादीओ पोताने घेर छड़ गया. सातमे दिवसे राजाना सभामंडपमां सर्वे वादीओ आव्या तेमां परित्राड (परित्राजक) बोल्यो. भिक्रखं पविट्ठेण मएऽज दिटं, पमयामुहं कमलविसालनेत्तं। वक्खित्तचित्तेण न सुट्ठु नायं,	सूत्रम् ॥४२७॥
	सकुंडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २२८ ॥ भिक्षामां प्रवेश करेलाए में आजे ममदा (युवान स्ती) नुं मोटुं जोयुं जेमां कमळ सरखां नेत्र इतां पण मारुं व्याप्तिप्त होवाथी मने बरोबर खबर न पडी, के तेना मोढामां (कानमां) कुंडल इतां के नदि (आ गाथानो अर्थ सुगम छे परंतु कुंडल इतुं के नदि तेनी शंका रहेवानुं कारण फक्त तेणे चित्तनो व्याक्षेप बताव्यो. ) आ वादीमां वीतराग (त्याग) दशा न जोवाथी, तथा पूर्वे आपेली गाया प्रमाणे अर्थ न मळवाथी, तिरस्कार करीने राजाए रस्तो पकडाव्यो, पछी तापस बोल्योः— फल्लोद एएंग मि गिहं पविट्ठो, तत्थासणस्था पमया मि दिट्ठा। वकि्खत्तचित्तेण न सुटु नायं, सकुडलं वा वथणं न वत्ति ॥ २२९ ॥ फलना उदय वढे हु घरमां पेठो, त्यां आसन जपर स्ती वेठेली हती, पण व्याक्षिप्त वित्तधी में बराबर निर्णय न कर्यो, के ते स्त्रीना कानमां कुंडल छे के नहि. ? (आमां पण वैराग्य न होवाथी तेने रजा आपी.) पछी बौद्ध अनुयायी वोल्योः— मालाविहारंमि मएऽज्ञ दिट्टा, उवासिया कंचणभुसियंगी। वकि्खत्तचित्तेण न सुटु नायं,	

आचा० ॥५२८॥	सकुंडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २३० ॥ मालना विदारमां में आजे एक उपासिका (ते मतने माननारी स्त्री) जोइ, ते सुवर्णना भूषणे भूषित इती. पण व्याक्षि चित्त वडे में न जोयुं, के कानमां कुंडळ छे के नदि. ? आ प्रमाणे बीजा तीर्थीओ (वादीओ) ए पोतानुं कही वताव्युं पण कोइ जैन साधु न आव्यो, त्यारे राजाए कधुं के ते बोलावी लावो. तेथी मंत्रीए एक नानो साधु हतो पण तेने वैराज्य दश्वाए परिणमेलो जाणी गोचरीमां आवेलो हतो, तेने मत्यु (उगता प्रभात) नी माफक राजा आगळ आण्यो तेथी राजाए ते चोथा पदने आपी उत्तर मागतां क्षुल्लक साधुए कधुं, खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स, अडझप्पजोगे गयमाणसस्स । किं मडझ एएण विचिंतएणं ! सकुंडलं वा वयणं न वत्ति ॥ २३१ ॥ क्षमा धारण करनारा, काम दमन करनारा. इन्द्रिओने जीतनारा अने अध्यात्ममां रक्त एवा मारा जेवा मुनिने ज्ञा माटे चि तववुं, के ते प्रमदाना कानमां कुंडळ छे के नहि ? आमां अजाणपणानुं कारण क्षांति विगेरे गुणो धारणतुं कारण बताव्युं, प चित्तना विक्षेपतुं कारण न वत्तव्युं, तेथी राजाने तेनी निस्पृदता उपस्थी धर्म भावनानो उल्लास वध्यो, पछी राजाए पर्मतत्व पुछन क्षुल्लक साधुए माटीनो एक गोळो भींत तरफ उल्लाली सूचना करीने चाल्या मांडचुं, त्यारे राजाए पूछ्य के आप पूछ्या छतां घ	मामा रूम्रह्न-२२ <mark>२०२०</mark> २४२२२२-२२१२३२४	114361
	र खुड़के साधुए माटाना एक गोळा भात तरफ उछाळा सूचना करान चाळवा माडचु, त्यार राजाए पूछ्यु के आप पूछवा छता थ () केम कहेता नथी ? त्यारे तेणे कहुं, हे भोळा राजा ! आ भीना सुका गोळाओना फेंकवाथी में धर्म कहाो छे, ते वे गाथाथी बतावे हे ()		

স্যান্বা০		सूत्रम्
ાપ્ડરઙ્ગા	जे भीनो तथा सूको गोळो छे ते बन्ने माटीना छे, भींत उपर फेंकतां जे भीनो छे, ते त्यां भींत उपर आगरो ए भमाणे दुष्ट बदिवाळा जेओ कामनी ठालसावाळा छे. तेओज संसारवासनामां ग्रद्ध थरो. पण जेओ विरक्त छे, तेओ सुका गोळा माफक संसा-	<b>!</b> પરઽડા
	रवासनामां गृद्ध नहिं थाय. तेनो भावार्थ कहे छे. जेओ अंग प्रत्यंग जोवाथी चिम्रुख छे, तेओ खीनुं मोहुं जोता नथी, अने जेओ अंग प्रत्यंग जोवामां उत्सुक छे, तेओ काम वासनाथी गृद्ध थयेला भीना गोळा माफक खीनुं मोहुं जुए छे, अने तेज जीवो लाल- से सावाळा होवाथी संसारपंक अथवा कर्मकादव तेमने लागे छे, पण जेओ क्षमा विगेरे गुणोथी युक्त संसारसखियी विम्रुख छे. काष्ठ	
	हे सावाळा हावाया संसारपक अयवा कमकादव तमन लोग छ, पण जआ समा विगर गुणाया युक्त संसारछलया विछल छर भाठ (निस्पृह) मुनिओ छे तेओ सुका गोळा माफक होवायी क्यांय पण लागता नथी. सम्यक्तव अध्ययनमां बीजा उद्देशानी निर्धुक्ति तथा बीजो उद्देशो समाप्त थयो.	
	त वध निरवे तप केया विना क्षेय न थाय. माट इव त तपनु बणन कर छ. आ संबंधा आवला त्राजी उद्देशीनु आ पहले स्त्र छ.	

2	उवेहि णं बहिया य लोगं, से सबलोगंभि जे केइ तिण्णू, अणुवीइपास निकूखत्तदंडा, जे केइ	X
আবা০ ৃ	सत्ता पलियं चयंति, नगमुयचा धम्मविउति अंजु, आरंभजं दुक्खमिणति णचा, एवमाहु संमत्तदंसि-	र् सूत्रम्
1143011	णो, ते सबे पावाइया दुकुखस्स कुसला परिण्णमुदाहरंति इय कम्मं परिण्णाय सबसो (सू० ४२४)	173112501
8	पूर्वे बतावेलो संसारभिय लोक समूह ले, तेने धर्मथी विमुख जाणीने तेनी उपेक्षा कर, अथवा तेनुं अनुष्ठान सारं न मान,	Š.
l.	च शब्दथी जाणवुं के तेनो उपदेश न सांभळ. पासे न जा, तेमनी सेवा न कर तथा विशेष परिचय न कर, (आ बधुं नवा शि-	L.
1	ष्यने गुरु समजावे छे तुं न जइब-विगेरे-के जो त्यां जाय तो साधु धर्मनी विरुद्ध तेओ स्नान; इच्छित भोजन, मठ बांधी रहेवुं	4
5		
á	परिचय करे तो वखते तेवाने पण प्रसंगोपात ठेकाणे छावे ) जे संसारप्रिय बेपवारीनो परिचय न करतां तेनी उपेक्षा करे ते क्या	Ó
Ĩ.	उत्तम गुणो मेळवे, ते कहे छे के:-ते निस्पृही साधु वधा मनुष्यलोकमां जेओ विद्वान ( आत्मार्थी ) छे, तेमनाथी पण सर्वोत्तम विद्वान थशे.	<u>Č</u>
1	मन्नःलोकमां केटलाक विद्वानों छे. के तेमां आ श्रेष्ठ थरो ! 'अणुवीइ ' विगेरे जे केटलाक निक्षिप्त दंडवाळा छे, अर्थांत	+
3	जेमणे काया मन वचन वडे प्राणीने दःख आपनारो दंड त्याग कर्थो छे. ते विद्वानो थाय छेन. एवं विचारीने हे शिष्य! तं तेमने जो	1. T
<b>†</b>	प्रश्न:-जीवोने हथ्य आपनाम तेओ क्या छे ! ते कहे छे, के जेमणे धर्मनं तत्त्व जाण्यं छे तेवा सखवाळा साधओ दृष्ट	3
	ावगर आपर छ, तमा दिल लागवाथा त स्वाकारता साधु ग्रहस्थ पण न रक्षा, न पुरा साधु यथा, परतु गाताय साधु जरर पडता परिचय करे तो वखते तेवाने पण प्रसंगोपात ठेकाणे लावे ) जे संसारप्रिय बेपवारीनो परिचय न करतां तेनी उपेक्षा करे ते क्या उत्तम गुणो मेळवे, ते कहे छे के:-ते निस्पृही साधु बधा मनुष्यलोकमां जेओ विद्वान (आत्मार्थी) छे, तेमनाथी पण सर्वोत्तम विद्वान थशे. पक्षःलोकमां केटलाक विद्वानो छे, के तेमां आ श्रेष्ठ थशे ! 'अणुवीइ' विगेरे जे केटलाक निक्षिप्त दंडवाळा छे, अर्थात जेमणे काया मन वचन वडे प्राणीने दुःख आपनारो दंड त्याग कर्यो छे, ते विद्वानो थाय छेन, एवुं विचारीने हे शिष्य ! तुं तेमने जो पक्षःजीवोने दुःख आपनारा तेओ क्या छे ! ते कहे छे, के जेमणे धर्मनुं तत्त्व जाण्युं छे तेवा सलवाळा साधुओ दुष्ट कर्मने त्यजे छे, अने ते प्रमाणे जेओ दन्डथी दूर रहे छे, तेओ आढे कर्मने इणे छे, तेन विद्वन् छे. तेषुं आंखो वींची विचारीने	<i>.</i> #

चा० 🎧 पछी जो, एटले विवेकवाळी बुद्धिथी तेने तुं धारण कर. मन्नःक्या पुरुषो वधां कर्मोने क्षय करे छे ! उत्तरःते कहे छे, 🛛 🦉 सूत्र	म्
२१॥ 🔨 'नरे ' इत्यादि माणसोज संपूर्ण कर्मक्षय करवाने समर्थ छे, पण बीजी गतिवाळा नहि. तेमां पण बधां मजुष्यो मोक्षमां जनारा 🏅 ॥५३१ २१॥ 🐧 नथीः पण जेओप अर्चाते. शरीरना संस्कारो ( शोभानो ) त्याग करवाथी जेमनुं शरीर मरण जेवुं छे अर्थात जेमणे शरीरनो मोह	<u>ti</u>
में मुकी तेने पुष्ट करखुं; के शोभावबुं ए सपछं त्याग कर्युंछे. ( मेघकुमारे जेम बीतराग प्रभुना उपदेश्वथी आंखो सिवाय श्वरीरना बीजा अगगोनी ममता उतारीने दवा विगेरेनो पण त्याम कर्यो इतो; अथवा आखा श्वरीरनी चामडी जीवतां उतारी; तो पण कोइना उपर	
🍒 कोप न कर्योः तेवा खंधकग्रनि माफक थाय छे. ) तेवा साधू सर्व कर्मनो क्षय करे छे. अयवा अर्चा एटळे तेज अने ते पण क्राध 🕵	
ए छे, अने तेना कहेवाथी बीजा कषायो पण जाणी छेवा. तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे केः-जे पुरुषमांथी कषायरूप-अर्चा सर्वथा नष्ट 🥳 पामो छे, तेवा अकषायी पुरुषोना आठ कर्म नाज्ञ थाय छे. वळी, अुतचारित्ररूप-धर्मने जाणनारा ते धर्मविदो छे, ते कुटिलतार-	
छ, अने तना कहवाथा बाजा कपाया पण जाणा छवा. तना अथ आ प्रयोग छ कः-ज पुरुषमाया कपायरप-अपा तबया मष्ट पामो छे, तेवा अकषायी पुरुषोना आठ कर्म नाञ्च धाय छे. वळी, अतचारिवरूप-धर्मने जाणनारा ते धर्मविदो छे, ते क्वटिलतार- हित (सरळ) छे. मक्षः-तेम हश्चे; पण बीजा साधुए शुं आलंबन लड्ने तेवुं करवुं ? उत्तरः'आरंभज ' विगेरे. सावद्यक्रिया-अनुष्ठानना आरंभथी थयेछं आरंभज ते, कृत्य दुःखरूप छे, एवुं बधां माणीओने पत्यक्ष छे. अर्थात् खेती, नोकरी वेपार विगेरे आरंभमां मवर्तेलो मनुष्य, बरीर, तथा मननां दुःखने भोगवे छे, ते वाणीथी पण कहेवाय नहि. (पटछं वधुं छे,) ते साक्षात् संपूर्ण देखनारा ( केवळबानी) ए कहेछं छे. आ बधु दुःख स्वयं-अनुभवसिद्ध जा- णीने तेओ बरीरशोभारहित (मृतार्चा)तथा धर्मविद तथा सरळ वने छे, एवुं केवळबानीओ कहे छे ते बतावे छे. आ ममाणे केवळबानीओए कहेछुं छे. मक्षः-केवा पुरुषोए ते कहेछुं छे ? उत्तरः-समत्व-दर्शीओ, (सम्यक्त्व-दर्शीओ) अथवा समस्त देख-	
प्रमत्यक्ष छे. अर्थात् खेती, नोकरी वेपार विगेरे आरंभमां प्रवर्तेलो मनुष्य, अरीर, तथा मननां दुःखने भोगवे छे, ते वाणीथी पण	
👔 कहेवाय नहि. (एटर्ल्ड वर्धु छे,) ते साक्षात् संपूर्ण देखनारा (कवळकाना) ए कहलु छ. आ वधु दुःख स्वय-अनुभवासद आ- ही णीने तेओ क्षरीरक्षोभारहित (मृतार्चा)तथा धर्मविद तथा सरळ वने छे, एवुं केवळज्ञानीओ कहे छे ते बतावे छे. आ भयाणे	
्रि केवळज्ञानीओए कहेळुं छे. मक्ष:-केवा पुरुषोए ते कहेळुं छे ? उत्तर:-समत्व-दर्ज्ञीओ, (सम्पक्त-दर्ज्ञीओ) अथवा समस्त देख-	

সাৰা৹	र्भू नाराओए कहेलुं छे. एटले आ उद्देशानी श्वरुआतथी सघळुं तेमणे कह्युं छे, प्रश्नः—शाथी तेओए ते कहेलुं छे ? जत्तरः—तेओ बधा सर्व विद छे. अने मावादिका एटले प्रकर्ष-मर्यादावडे बोल्याना आचारवाळा यथावस्थित पदार्थने बता-	सूत्रम्
आचाण	🥂 वचा तथा शरीर, मन संबंधी दःखो बतावनारा अथवा तेन मळ कमेने स्वरुप बताववामां क्रुंशळ छे. के जे बतीववाथी ते दुर करवा 🕻	
ાપ્ડર્ગા	उपाय जाणनारा बनीने ते वधा उत्तम पुरुषोए इ परिज्ञा वडे जाणीने ते पाप छोडवा मत्याख्यान परिज्ञा वडे त्याम करेछ छे. आ ममाणे कर्मवंध उदय सत्ताना बताववाथी (बीजा पण) ते ममाणे जाणीने सर्वे प्रकारे क्रुझळ बनीने तेओ मत्याख्यान	ાઙરૂસા
	की अभिनेत्रां केनेवेथे उदय सत्तानां वताववाथा (वाजा पर्य) ते नेवाण जायांच तत्व मकार उत्तर प्रकृति १५८ छे तेने जाणीने 🕻	
	भारक्षवि कार्य कर छे. अयवा मूळ उपर मक्रोतमा वया नदान जायान एटळ पूळ मक्रात जाठ, उपर मक्रात ए उ छ या आपर पू कर्मवंधनो त्याग करे छे अथवा प्रकृति स्थिति अनुभाव प्रदेश ए चार मकारोथी जाणीने त्यामे छे, अथवा बंध सत्ताना कारणो बढे कर्म स्वरुप जाणीने त्यामे छे. हवे ते उदयना मकारो बतावे छे. मूळ प्रकृतिना त्रण उदयस्थान छे, (१) आठ भकारनो,	
	🔰 वडे कर्म स्वरुप जाणीने त्यांगे छे. हवे ते उद्यना प्रकारो बतावे छे. मूळ प्रकृतिना त्रण उदयस्थान छे, (१) आठ प्रकारनो,	
	ND (२) सीत प्रकारना (३) चार प्रकारना-एटल आठ प्रकात साथ चंद्र तो आठ प्रकारना, अने त कोल्या अनाए अनेत अनव्यान 🔛	
	अश्विया छ. भच्य न आश्रया अनादि सात तथा सादि सात छ. अन माइनायना उपसम अवदा तथ हाथ, लाग सात नमारण श्व अन्य जटय छे. अने घातिकर्म चारे क्षय थतां बाकीना चार कर्मनो उटय छे. हवे उत्तर मकतिना उटय स्थान कहे छे. ज्ञानावरणय अने	
	अश्रियी छे. भव्य ने आश्रयी अनादि सांत तथा सादि सांत छे. अने मोइनीयनो उपन्नम अथवा क्षय होय, त्यांग सात मकारनों ते उदय छे, अने घातिकर्म चारे क्षय थतां बाकोना चार कर्मनो उदय छे, हवे उत्तर मकुतिना उदय स्थान कहे छे. ज्ञानावरणय अने अंतरायनुं पांचे मकारनुं एक उदयस्थान छे. दर्शनावरणीयना बे छे दर्शन चतुष्कना उदयथी चार अने कोइ पण निद्रा साथे पांच	
	त्र अतरायचु पाय मकारतु एक उदयस्थान छ. पर्शावरणाचना न छ परान पुरुषता उप्पता पार कर कर त्य त्या प्रार ताण कर त्य है वेदनीय कर्मनुं सामान्यथी एक उदयस्थान साता के असातानुं छे. कारण के साता असाता विरोधी होवाथी बन्ने साथे उदयमां एक है वखते न होइ, मोहनीयकर्मनां नव उदयस्थान छे, ते कहे छे दश, नव, आठ, सात, छ, पांच, चार, वे, एक. ए नवनी विगत-ते	
	ि बिखते न होइ, मोहनीयकर्मनां नव उदयस्थान छे, ते कहे छे दश, नब, आठ, सात, छ, पांच, चार, ब, एक. ए नवना विगत-त र	

		X
1	Ҟ दशमां भिथ्याल अनंतानुवंधीथी संज्वलन सुधी ४ क्रोधनी चोकडी–ए प्रमाणे माननी चोकडी पण होय ते पमाणे कपटनी चोकडी	X
आचা৹	र्युं होय, तथा खोभनी चोकडी होय एटले कोइ पण चोकडीनी चार होय, ते मळी पांच थइ. छट्टो कोइ पण एक वेद होय, हास्य सति	🕻 सूत्रम
	🖌 अथवा अरति शोकतुं जोडऌं होय भय तथा जुगुप्सा मळी कुल १० थइ. उपरनी द्शामांथी कोइ जीवने भय के जुगुप्सामांथी एक	$\mathbf{\Sigma}$
॥४३३॥	🛠 न होय तो नव, अने वस्ने न होय तो आठ, अनंतानुवंधीनी एक दुर थतां ७ रही, मिथ्यात्वना अभावमां छ रही, अपत्याख्याननी 🏻	र ॥५३३॥
	🥇 उदयना अभावमां ५, मत्याख्यान आवरणना उदयना अभावे ४ हास्यरतिन्नं जोडलं कोइ पण न होय तो २ अने वेदना अभावमां	Ċ.
	🖓 फक्त संज्वल्जन एकनो उत्र्य रह्यो. आयुष्पतुं पण एकज उदयस्थान ले. कारणके चारमांतुं कोइ पण एक होय, नाम कर्मना उदयनां	5
1	र १२ स्थान छे. २०, २१, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ९, ८ तेमां संसारमां रहेला सयोगी तेर गुणस्थान सुधीना	S.
	रे १२ स्थान छे. २०, २१, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ९, ८ तेमां संसारमां रहेळा सयोगी तेर गुणस्थान सुधीना ते जीवोने नामकर्मना दन्न उदयस्थान छे. अने अयोगि गुणस्थानवाळाने छेवटना बेज छे. अहों बार ध्रुव उदयकर्म मक्रति प्रथम बता-	X
	💃 ने छे. तेजस 'कार्मण ' शरीर ने, वर्णगध रस स्पर्श्न ४ चोकडुं अगुरुलघु, एक स्थिर, एक अस्थिर, एक शुभ, एक अशुभ, एक	2
	🔊 निर्माण, इछ बार तेमां वीस तीर्थकर केवळी ज्यारे सम्रुद्घात करे त्यारे कार्मण शरीरयोगीने होय छे. ते कहे छे, मनुष्यगति	8
	💃 एक पचेन्द्रियजातिओ त्रस एक वादर एक पर्याप्त एक सुभग एक आदेय एक यग्नकीर्ति एक त्रणे उपर कहेली ध्रुवउदयनी बार मळी	ť.
	🧚 कुळ २० थइ. अने एकवीसथी एकवीस सुधीनां उदयस्थानो जीव गुणस्थानना भेदथी अनेक भेदवाळां होय छे. ते ग्रंथ वधी जवाना	$[\mathbf{\hat{p}}]$
	🕺 भयथी वधा अहीं कहेता नथी, पण जाणवा माटे एकेक कहे छे. पथम एकवीसनो एक कहे छे, गति एक, जाति आनुपूर्वी एक	5
	💃 इस एक बादर एक पर्याप्त अथवा अपर्याप्त एक कोइ एक सुभग एक अथवा दुर्भंग आदेव अथवा एक अनादेव यज्ञकीर्ति अथवा	<b>F</b>
•		1 . 1

l.	र एक अयज्ञ आ नव तथा उपर कहेली ध्रुव बार मळी एकवीस थइ इवे चोवीसनो एक भेद कहे छेः	3
आचा॰ 🖁	तिर्यंग गति एक एकेन्द्रिय जाति एक औदारिक शरीर एक हुंडसंस्थान एक, उपघात एक पत्येक अथवा एक साधारण स्था-	र्भूत्रम
117380 1	्रे ख़बनी बार मळी चोबीस थड़. ते चोबीचमांथी अपर्याप्त दूर करी पर्याप्तक तथा पराघात १ मेळवतां २५ थड़. अने छवीश तो	ર્ પ્રાપરૂશા
	🖞 केवळीने उपर जे वीस कही छे तेमां उदारिक शरीर एक आगोपांग एक संस्थान एक प्रथम सहनन एक उपघात एक प्रत्येक 🛛	<u>Š</u>
S	्रिक मळी मिश्रकाययोगमां छवीज्ञ होय छे. ते छवीञमां तीर्थकरनाम <b>्रमेळवतां तीर्थकरने मिश्रकाय योगमां सत्या</b> वीस होय छे. तिमां प्रजस्त विद्वायोगति मेळवतां अट्टावीस अने ते अट्टावीसमांथी तीर्थकर नाम दूर करी उच्छ्वास एक सुस्वर एक पराघात	7 5
	🕻 एक मेळवतां (२७+३) त्रीस थड तेमांथी सुस्वर आंछी करतां २९ तथा ते ३० मां तीर्थकर नाम मेळवतां ३१ थड. पण	7 5
K	नवनो उदय तो मनुष्य गति एक पचेन्द्रिय जाति एक त्रस एक बादर एक पर्याप्त एक सुभग एक आदेय एक यज्ञकीति एक तीर्थंकर एक ए नव तीर्थंकरने अयोगी गुणस्थानमां होय छे. पण तीर्थंकर नाम सिवाय सामान्य केवळी अयगीने तो आठ होय छे	Š.
Ś	🕻 गोत्रनुं तो सामान्यथी एकज उदय स्थान छे. उंच अथवा नीच कोइ पण एक होय छे. कारण के बन्ने एक बीजाथी विरुद्ध छे.	Ť.
4	∦ उपर वताच्या ममाणे कर्म9क्वतिना उदयवडे अनेक भेदो जाणीने पत्याख्यान  परिज्ञावडे ते तोडवा प्रयत्न करे छे. जो एम छे तो ∬ ( नवा साधुए ) शुं करवुं ते कहे छे.	7 5
\$	इह आणाकंखो पंडिए अणिहे, एगमप्पाणं संपेहाए धुणे सरारं, कसेहि अप्पाणं जरेहि अप्पाणं-जहा	<u>Š</u>
L 4	₩2 •	4 I

आचा० ॥५३५॥ ४	पुरुष इन्द्रियोना विषय तथा कपायथी बंधातां कर्म छे. तेना बढे हणाय ते निहत अने तेम न हणायतो अनिहत छे. उपर बतावेल आज्ञाकांक्षी पंडित तथा भावरिपुत्री अनिहत गुणवाळो आ मवचन (जैन मार्ग) मां छे. बीजे नथी अने जे साधु अनिहत छे ते परमर्थथी कर्मनो सारी रीते ज्ञाता छे. अने ते शुं करे ते कहे छे. 'एगमप्पाणं ' इत्यादि. ते अनिहत अस्निह साधु पोताना एकला आत्माने धन धान्य सोतुं पुत्र स्त्रो तथा पोताना क्षरीर विगेरे (पुद्गल उपाधि) थी जुदुं जाणीने क्ररीर विगेरे बधानो मोह छोडे (संभावनामां लिङ पत्थय छे.) तेथी एम सुचच्युं छे के आत्माने बधी उपाधीथी जुदो देखे तोज	हि दि दि दि दि दि दि दि दि दि दि दि दि दि
	भा संसार अनर्धनो सारज छे, अने अहीं कोण केनो स्वजन अथवा परंजन छे ? वथाए संसारमां भमता स्वजन अने परंजन	

আন্ম০ ঠু	छे ते पर थइ पाछा स्व थाय. अने केटल क फरी देखाव देता नथी. ( अर्थात् समुद्रमां तणातां अपार समुद्रमां ज्यां भेगा थवानो तथा स्थिर रहेवानो तथा मळवानो निश्वय नथी, तथा थोडो काळ पण एकता रहेवानो निश्वय नथी, त्यां कोण पोतानुं के पारकुं छे?)	र् र र्भुः सूत्रम्
॥୳ଽଽଽ୲୲	विचिन्त्यमेतद्भवताऽहमेको, न मेऽस्ति कश्चित् पुरतो न पश्चात् । स्वकर्म्मभिश्रीन्तिरियं ममेव, अहं पुरस्तादहमेव पश्चात् ॥ २ ॥	0 2 1143 E 11
	रवकस्मानज्ञाल्यारय ननव, अह पुरस्तादहनव पश्चात् ॥ र ॥ उपर मगणे विचारी हुं एकलो छुं, अने मारे पहेलां के पछवाडे कोइ नथी, परंतु मोहनीयकर्मथी आ एक मारा तारानी	
ۍ ړ	भ्रांति छे. खरीरीते तो पहेलां पण हुं अने पछी पण हुं पोते पोतानो स्वजन छुं एवी भावना तमारे भाववी.	<u>r</u>
1	सदैकोऽहं न मे कश्चित्, नाहमन्यस्य कस्यचित्। न तं पर्श्यामि यस्याहं नासौ भावीति यो मम ॥ ३ ॥	2
i.	हुं सदा एकल्लो छुं. मारो कोइ पण नथी, तेम हुं बीजा काइनो पण नथी, हुं जेनो थाउं, तेवो मने कोइ देखातुं नथी ! ( कर्मसंबंध	2
*	छुटतां सौ रस्ते पडे छे.) तेम मारो भविष्यमां याय तेवो पण कोइ नथी. एकः प्रकुरुते कर्म्म, सुनक्त्येकश्च तत्फलम् । जायते म्रियते चैक, एको याति भवान्तरम् ॥ ४ ॥	S.
a a a a a a a a a a a a a a a a a a a		
Т. Х	मकलोज जाय के बिमेरे चितवे वली ते भव्यात्मा माध शं करें ? ते कहे के:-"कसे हि अप्याणं जरेहि अप्याणं ? निरोरे पर (जनो)	8
1 1 1 1	आत्मा जे 'शरीर' छे. तेने तपरुप कष्ट वडे अथवा चारित्र विगेरेथी कुश (दुईल्ल) बनाव, अथवा कृष एटले कर्म तोडवामां हुं समर्थ	\$

	रे। के के ? प्रारं विचानी सभावन्ति नेमां एवं का नग नग परल करिएने जीवी बचानी हे परले तपनरे करित वर्त कर के बढापाणी	č
आचা৹	र छुं ? एम विचारी यथाञ्चकि तेमां यत कर, तथा जर एटल शरीरने जीर्ण बनावी दे, एटले तपवडे शरीर एवुं कर के बुद्वापाथी जीर्ण जेवुं लागे, अर्थात् विगइनो त्याग करीने आत्मा (शरीर) ने दुर्वळ बनावी देजे. प्रश्नः-शा माटे ? उत्तरःजेम सार रहित (सुकां) लाकडांने इव्यवाह (अग्नि) शीघ्र वाली मुके छे, ए ट्रष्टांतवडे उपदेश आपे छे के तुं कर्म-	र्म सूत्रम्
୲୲୳ଽଡ଼୲୲	अत्तरः	& ાતકલ્શા
	रे ने बाळी मुक. 'एवं अत्त समाहिए '-उपर भमाणे आत्मा समाहित एटळे ज्ञानदर्शन चारित्रवडे आत्मसमाहित (समाधिवाळो) ( छे ते आत्मसमाहित छे, अर्थात् शुभ व्यापारवाळो छे. (अथवा व्याकरणना नियमथी विशेषणने प्रथम ळेवाथी आत्मा समाहितने ) बदले ) समाहित आत्मारुप थाय छे, तेवो तुं बन. एटले जे अस्तिह (स्तेहरहित वैरागी) होय अने ते तप करे ते तपरूप अमि	A A
	र्ग वहें कर्मरूप काएने बाळी मुके छे, उपर कहेला स्वार्थने दृष्टांत तथा बोधने गाथावढे निर्युक्तिकार कहे छे. जह खलु झुसिरं कहे, सुचिरं सुकं लहुं डहइ अग्गी, तह गलु खवंति कम्मं, सम्मचरणे ठिया साहू ॥नि.२३४	
	र्ते जेम सुका पोला लाकडाने अग्नि जलदी वाळे तेम उत्तम चारित्र पाळनारो साधु कर्मलाकडांने क्षीघ्र बाळे छे आ प्रमाणे पथम स्ने- इरहित बनीने द्वेषनी निष्टत्ति करवा कहे छे 'विर्मिच कोहं ' विगेरे कारणे अथवा आ कारणे अति क्रूर अध्यवसायवाळा क्रोधने	
	र्थे छोड, अने कोधथी बरीर कंपे छे माटे कहे छे के तुं निष्कंप बनी जा शुं भावीने? ते कहे छेः— इमं निरुद्धाउयं संपेहाए, दुक्ख़ं च जाण अदु आगमेरसं, पुढो फासाइं च फासे, लोयं च पासवि- फेंदमाणं, जे निब्वुडा पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिय, तम्हा अतिविज्ञो नो पडिसं ज्ञ-	

🐒 लिजासि त्तिबेमि ॥ (सू॰ १३६) चतुर्थे तृतोयः ॥४-३॥	
आचा० 🕺 आ मनुष्यपणुं परिगलित आयुवाळुं विचारीने क्रोध विगेरेने छोडी देजे वळी दुक्खं विगेरे-तथा क्रोध विगेरे कषायोथी बळ- 🦹	सूत्रम्
🗘 ता मनच्यने मन संबंधी जे दःख उत्पन्न थाय छे. तेने जाण. तथा ते क्रोधथी जे नवां कर्म बंधाय तेनं भविष्यमां पण उत्पन्न थवा- 🗴	(879) 14301

	में चिन्हरुप बिग्रा अने पिंगावने मेळवी विलेपन कर, तो जाति थहों, अने ते प्रमाणे पत्रे न करके कर्म न्याने तेते जाति थर, अने	<u>S</u>
आचা৹	में चिन्दरुप विष्टा अने पिशावने मेळवी विलेपन कर, तो शांति थशे. अने ते प्रमाणे पुत्रे न छुटके कर्यु त्यारे तेने शांति थइ, अने पिता मरीने सातमी नरकमां गयो. आ दष्टांतथी पापी पोते दुःख भोगवे छे तेम तेनी दायपीट जोड़ बीजां सगां पण दुःख भोगवे छे ते वताव्युं ) गुरु कहे छे:-हे शिष्य ! जेओ कोघ विगेरे नथी करता; ते केवां होय छे ? ते सांभळ. 'जे निव्वुडा' विगेरे, पण	, , सूत्रम
<b>ા</b> ઙર્ડા	ू छ त वताल्यु ) एर कह छः-ह । घट्य ! जभा काथ विगर नथी करता; त केवा हाय छे ? त सांभळ. 'ज निच्चुडा ' विगर, पण ते जेओ तीर्थकरना वोधथी निर्मळ हृदयवाळा छे, तेओ विषय अने कषाय अधिना बुझावाथी निष्टत्त (क्षांत) थयेलां पापकर्ममां ते निदान (वासना) रहित बनेला छे. तेओ परमसुखना स्थानने पामेला छे. अर्थात् औपक्षमिक सुखने भजनारा होवाथी प्रसिद्ध् छे.	र् ॥ <b>५३९॥</b>
	﴿ निदान (वासना) रहित बनेला छे. तेओ परमसुखना स्थानने पामेला छे. अर्थात औपन्नमिक सुखने भजनारा होवाथी प्रसिद्ध छे. २ मुश्रः—तेथी श्रुं समूजवुं ? उत्तरः-तम्हा विगेरे. ते रागद्वेषथी घेरायेलो दुःखी थाय छे, तेथी अति विद्वान के जेणे,	È
	र शास्त्रोंनो परमार्थ जाण्यो छे, तेवाए क्रोधाविवडे आत्माने बाळवो नहि. अर्थात् क्रोधादि आवतां तेने ज्ञांत (दूर) कर, ए ममाणे ] सुधर्मास्त्रामी जंवुस्वामीने कहे छे.	S
	ું	\$
	🧩 ः-ः चोथो उद्देशो ः-ः	
	त्रीजो उद्देशो कह्यो, तेनो आ कहेवाता चोथा उद्देशा साथे आ ममाणे संबंध छे; गया उद्देशामां निरवद्य तप वताव्यो, अने ते संपूर्ण रीते	1
	🦿 सारा संयममां रहेला मुनिने होय छे, तेथी संयम बताववा चोथो उद्देशो कहे छे, तेना आवा संबंधवी आवेला चोथा उद्देशानुं आ मथमसूत्र छे.	7
	त्री जीजो उद्देशों कहों, तेनों आ कहेवाता चोथा उद्देशा साथे आ प्रमाणे संबंध छे; गया उद्देशामां निरवध तप वताव्यो, अने ते संपूर्ण रीते सारा संयममां रहेला मुनिने होय छे, तेथी संयम वताववा चोथो उद्देशों कहे छे, तेना आवा संबंधथी आवेला चोथा उद्देशानुं आ मथमसूत्र छे. आवीलए पवीलए निप्पीलए जहित्ता पुवसंजोगं हिच्चा उवसमं, तम्हा अविमणे वीरे, सारए	×.

	रू। समिए सहिए सया जए, दुरणुचरो मग्गो वीराणं अनियटगामीणं, विगिच मंससोणियं, एस पुरिसे	
आবা৹	र्व द्विए वीरे, आयाणिजे वियाहिए, जे धुणाइ समुस्सयं वसित्ता बंभचेरंसि ॥ सू० १३७ ॥	्रे स्त्रम
ાાપુરગા	'आवीछए' इत्यादि आपीडन कर, अर्थात अविकृष्ट (थोडा) तपवडे श्वरीरने दुःख आप आ मथम दीक्षा अवसरे छे, पण	1148011
	🚰 सेवा करनार अंतेवासी वर्ग जेणे अर्थसार ( रहस्य ) मेळव्युं छे, तेवां म्रुनि श्ररीरने त्यनवानी इच्छाथी मास अर्धमासनो तः कर-	5
	र्ग वा वडे निश्वयथी पडे, झिप्य कहे छे के ठीक कर्मक्षय करवा माटे तप करे छे, पण ते पूजालाभ कीर्ति माटे करे तो शुं थाय ? है गुरु कहे के ते माटे करे तो झरीर पीडवानो तपरुप उपदेश निरर्थकज थयो. ते माटे बोजी रीते कहे छे. कर्म अथवा कार्मण झरी-	5 1
	र वा वड निवयया पर, गरुप कर छ फ ठान करने परिया नाए पर कर छ, पन ते पूरारणने कार्य पर ते. उपान के पूँ गुरु कहे के ते माटे करे तो सरीर पीडवानो तपरुप उपदेश निर्धकज थयो. ते माटे बोजी रीते कहे छे. कर्म अथवा कार्मण शरी- र रनेज पीडे (सूत्रपाठ थोडो रही गयो देखाय छे) अहींया पण आपीड, प्रपीड, निष्पीड. कार्मण शरीर पीछवा माटे जाणवां. सूत्र- पाठ आवो जोइए, " आवीलए, पवीलए, निष्पीलए कम्मं " अथवा मंदबुद्धिवाळा माटे त्रणेनी अवस्था बतावे छे, के आपीडन ते चाथा गुणस्थानथी लड़ने सातमां सुधीमां थोडी थोडी तपास्या करे, अने आठमा नवमा गुणस्थानमां प्रपीडन ते मोटी तपास्या करे,	Š
ļ	्र पाठ आया आइए, जायालए, ग्यालए, ग्यालए कम्प जपता परवाल्याला गाउँ गावा पार्थ्या पाति के, के जायाच्या य है चांधा गुणस्थानथी लड्ने सातमां सुधीमां थोडी थोडी तपास्या करे, अने आठमा नवमा गुणस्थानमां भ्रपीडन ते मोटी तपास्या करे,	X
	🛉 अने १०मा गुणस्थानमां निष्पीडन ते मास क्षपण विगेरे मोटो तप करे अथवा उपशम श्रेणीमां आपीडन, क्षपक श्रेणिमां भपीडन, 🎾 अने बैळेबी अवस्थामां निष्पीडन तप जाणवो. शुं करीने तेवो तप बतावे छे, जहिता-विगेरे; पूर्वसंयोग ते पातानी पासे जे कंइ 📡 घान्य घन सोन्तुं पुत्र स्ती विगेरे हतुं, ते त्यागीने तप करे, अथवा पूर्वे असंयम जे अनादि :भवोना अभ्यासथी संबंधी हतो, तेने	Č,
	🖇 घान्य घन सोनुं पुत्र स्ती विगेरे हतुं, ते त्यागीने तप करे, अथवा पूर्वे असंयम जे अनादि अयोना अभ्यासथी संबंधी हतो, तेने	S

	🖉 छोडीने तप करे, वळी 'हिया विगेरे, (हि घातुनो अर्थ गतिवाचक छे तेथी) पामीने (मेळवीने) शुं ? ते कहे छे. इन्द्रिय तया	ž.
आचা৹	🚺 यनने जोतवारूप जपत्रम अभवा संगत गेळवीने तप करे तेतों सार आ छे. के असंयम छोटी संयम प्रारण करीने तप तथा चारित्रना 🖬	सूत्रम्
1148811	🕻 निश्चल झांति मेळववी ते कहे छे. 'तम्हा' इत्यादि, जेम कर्मक्षय माटे असंयमनो त्याग, तेथी अवइये संयम मळे, तेमां चित्तनी 🕻	8 1138511
	अभांति न होय, तैथी अवीमना एटछे मोगकषायमां अथवा अरतिमां जेनुं मन गयुं ते विमन, तेवो जे न होय ते अविमना, अर्थात् रागद्वेपनी उपाधिथी जेनुं मन चंचळ नथी तेवा भांत स्थिर मनवाळो साधु होय. प्रक्षः-ते क्यो छे ?	
	) रागधपना उपाधिया जनु मन चचळ नया तवा श्रात स्थिर मनवाळा साधु होय. प्रश्नः-त वया छ ! () उत्तर:-त्रीर ! जे कर्म विदारण करवामां समर्थ छे, अने 'सारए ' इत्यादि. सुआरत एटले सारीरीते जीवन पर्यंतनी मर्यादा	¥. 8.
	ए संयम अनुष्टानमां रक्त रहे ते स्वारत कहेवाय, पांच समितिए समित तथा हितयुक्त ते सहित अथवा ज्ञानादियुक्त वनीने सदा	
	रागध्यना उपायिया जुलु मन चचळ नया तथा सवा सात स्थिर मनवाळा सायु हाय. नत्र स पंपा छ : उत्तर:- चीर ! जे कर्म विदारण करवामां समर्थ छे, अने 'सारए ' इत्यादि. सुआरत एटले सारीरीते जीवन पर्यंतनी मर्यादा ए संयम अनुष्टानमां रक्त रहे ते स्वारत कहेवाय, पांच समितिए समित तथा हितयुक्त ते सहित अथवा ज्ञानादियुक्त वनीने सदा ( हमेश ) एकवार गुरुए अर्पण करेलो संयम भारवाळो ते शिष्य संयमभारनी यतना करे. मः-वारंवार शा माटे संयम अनुष्टाननो ( हमेश ) एकवार गुरुए अर्पण करेलो संयम भारवाळो ते शिष्य संयमभारनी यतना करे. मः-वारंवार शा माटे संयम अनुष्टाननो उपदेश करो छो ? डः-ते दुरानुचर छे, दुःखे करीने अनुचराय (पळाय) तेवो छे. मः-शुं ? डमार्ग ते संयम अनुष्टान विधि- मक्षः-केवाओने ? डःजममत्त साधुओने, मः-केवाओने ? अन्विर्त ते मोक्ष छे. तेमां जेमने जवानी इच्छा छे तेवाओने आ संयम पाळवो कठण छे ते केवीरीते पाळ्यो कहेवाय? ते बतावे छेविगिंचव-विगेरे मांस शोणित जे अहंकार तथा काम वास- ना वभारनाम ले तेने तिकृष तम अनुष्ठान वहे जितेनकर (टरकर ) आवाधी जटां जाणी तेने झोणवदि, आ वीर प्रुषोन्ग	5
	मक्षः-केवाओने ? उः-अममत्त साधुओने, मः-केवाओने ? अनिवर्त ते मोक्ष छे. तेमां जेमने जवानी इच्छा छे तेवाओने	r S
	💙 आ संयम पाळनों कठण छे ते केवीरीते पाळयों कहेवाय ? ते बतावे छे-विगिचव-विगेरे मांस शाणित जे अहंकार तथा कॉम वास- 🗴 ना वधारनागां छे, तेने विकृष तुप अनुहान बहे, विवेचकर (टरकर) आत्याथी जुटां जाणी तेने, शोषावीटे, आ वीर पुरुषोना	<b>*</b> :
	र्द्र ना वधारनारां छे. तेने विक्रष्ट तप अनुष्ठान वढे विवेचकर (द्रकर) आत्याथी जुदां जाणी तेने झोपावीदे, आ वीर पुरुपोना दे मार्गनुं अनुचरण छे, एम जाणवुं. जे आवी रीते तपकरी क्षरीरने सुकवे, तेने शुं गुण थाय छे, ते कद्दे छे, 'एष' विगेरे मांसकोणी-	

সাম্বা৹	तने सुकवे, ते पुरि (नगर) मां शयन करवाथी पुरुष छे, अने द्रव ते संयम छे ते संयम जेने होय ते द्रविक पुरुष छे, अथवा द्रव्यभूत छे कारण के तेज मोक्षमां जाय छे, कर्मशत्रु जीतवामां समर्थ होवाथी ते वीर पण छे, मांसज्ञोणीत ज्ञोषवानुं बताव्याथी ते वीजा पदार्थो मेद चरवी विगेरे ज्ञोषवानुं पण वताव्युं जाणवुं. कारण के मांस सुकातां ते पण साथे सुकाइ जाय छे; वळी आया-	५ १ ९ सूत्रम्
<u>ા</u> પ્ડેકરા	्री णीजे विगेर एटले वीर पुरुषोना मार्गे चालनारो जे मांस लोही सुकवे, ते मोक्षाभिलाषीओने आदानीय प्रात. मानवाजोग वचन अनलो विक्रमत शाम ले. प्र'	ર્ગ ાાપ્કશ્વા
	ू मेल निर्देशने गांव कर्मोपचयने तपचारित्रवढे धुणावे. (कृन्नकरे-दूरकरे) ते आदानीय तथा व्याख्यात (स्तुत्य पूज्य) थाय छे, आ में ममाणे अभमत्त साधुनुं स्वरूप बताब्धुं. इवे तेषुं संयम न पाळनारा जे प्रमत (प्रमादी साधुओ) छे तेनुं वर्णन करे छे:—	2
	्रा मगाण अमेनच साधुनु सर्स्य बताब्यु. हव तेषु सयम न पाळनारा ज प्रयत (प्रमादा साधुआ) छ तनु वणन कर छः— त्रि नित्तेहिं पलिच्छिन्नेहिं आयाणसोयगढिए बाले, अव्वोच्छिन्नबंधांणे अणभिकंतसंजोए तमंसि	С Х
	🖇 अवियाणओ आणाए लंभो नस्थि त्तिबेमि (स॰ १३८)	Ĝ
	जे पदार्थ तरफ छइ जाय-अर्थात् पदार्थनो निर्णय करवा जे दोरे, ते नेत्र विगेरे पांच इन्द्रियो छे, तेना वडे पोताना विषयने	
	👔 प्रहण करना नड ज पाप याय, त अटकावान सांधु थता जगतपा सारा पुरुषांथी प्रजनीक थड ब्रह्मचयेमां रहेना छतां एण जरीकी 🛛	DI
	रे तेने मोडनो उदय थवाथी सार्वच कृत्यमां संसारभ्रमणना बीजरूप कर्मना इन्द्रियोना विषयोरूप स्रोत (प्रवाहो) अथवा मिध्यास है अविरति ममाद कपाय योग छे तेमां ग्रद्ध थाय ते आदान स्रोत ग्रुद्ध बने. मः-कोण ? उः-बाळ (अक्क) छे, ते राग द्वेषरुप	× 10

1148311 1	महा मोहथी मलिन अंतःकरणवाळो ग्रद्ध बने. मः-पछी ते केवो थाय ? डः-अवोच्छिन्न विगेरे-एक सरखां संकडो जन्ममरण था- पनार एवं आठ प्रकारना कर्मरूप बंधन तेने मळे छे; वळी 'अणभि.' जेणे संसारना संयोगरुप धन धान्य सोत्रुं, पुत्र सी, विगेरेनो पोह अथवा असंयमनो संयोग छोड्यो नथी; ते 'अनभिकांत संयोगी' छे, तेवा इसाधुने इन्द्रियोने अनुकुळ विषयलालसाना अंधारामां अथवा मोहरूप अंधकारमां पवर्तेलानुं पोतानुं खरुं दित अथवा मोक्षउपायो तेणे न जाणवायी तीर्थिकरनी आझा (उपदेशनो) छाभ तेने यवानो नथी एवं हुं कहुं छुं अथवा तेने आझा एटले सम्यत्तवनो लाभ थवानो नथी. (भविष्यमां) पण धर्म मळवो दुर्लभ छे. कारण के, सूत्रमां नास्तिक खब्द छे ते अच्यय त्रणे काळ आश्रयी छे. जस्स नस्थि पुरा पच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया? से हु पन्नाणमंते बुद्धे आरंभोवरए, संम- मेयंति पासह, जेण बंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं पलिछिंदिय बाहिरगं च सोयं, निक्कं- मदंसी इह मच्चिएहिं, कम्माणं सफलं दट्टण तओ निज्जाइ वेयवी (सू० १३९) जे कोइएण बालमूर्क्ष साधु कर्मादान स्रोतमां ग्रद्ध थयेल छे तथा एकसरखां जन्ममरण बांध्या छे. तथा संकर्मा का क्रिय कार्य हो के प्रांतन स्रोतमां यद्ध यरेन छे तथा एकसरखां जन्ममरण वांध्या छे. तथा संकर्का प्रत्य हु कार्य हु कर्मांदान स्रोतमां यद्ध यरेत छे तथा एकसरखां जन्ममरण वांध्या छे. तथा संवर्का प्रत्य क्रि कर्मादान स्रोतमां यद्ध यरेह छे तथा एक क्र सा जा की जेणे सम्यक्त यूर्व मेळवी तेनो स्वार न छे ? अर्थात जेणे सम्यक्त यूर्वे माम्र करेल इन्ने; तेनेज वर्तमालमां मळे छे. कारण के जेणे सम्यक्त पूर्व मेळवी तेनो स्वार	x 1148311 x x x x x x x x x x x x x	
	ज काइरेज बोळपूर्य तांचु कवादान सार्तना हुछ पपछ छ तरा एकरार्तना प्रवार नवात जावार करा तरा तरा कार्यक नथी; अझानअंधकारमां भूल्यो छे, तेने पूर्वजन्ममां धर्ममाप्ति नहोती; भविष्यमां पण थवानी नथी; तेने मध्यजन्ममां क्यांथी थवा- नी छे ? अर्थात् जेणे सम्यक्त्व पूर्वे माप्त करेल दृशे; तेनेज वर्तमानमां मळे छे. कारण के जेणे सम्यक्त्व पूर्वे मेळवी तेनो स्वाद लीघो तेने पाछो मिध्यात्वनो उदय थतां अपार्ध पुद्रळ परावर्तनना काळे पण थवो; पण सम्यक्त्व वमेलाने फरी सम्यक्त्वनो असं-		

त कह छ:
---------

आचा० ॥५४५॥	जेनां दूर थयां ते निष्कर्भदर्झी छे, 'इह'–आ संसारमां मर्च्य [माणस] लोकमां जे निष्कर्मदर्झी छे! तेज बाढा अभ्यंतर परिष्रह छेदनाराओ छे, शुं आधार लड़ने परिग्रहने छेदे अथवा निष्कर्मदर्शी बने ते कहे छे, 'कम्माणं' विगेरे मिथ्यात्व अविरति प्रमाद कषाय योगोवडे जे कर्म वन्धाय छे. ते झानावरणीय विगेरेनुं सफळपणुं देखीने एटले झानावरणीयनुं फळ झान ढंकावुं छे, दर्भन- आवरणीयनूं देखवामां विघ्ररुप छे, वेदनीयनुं फळ रोग विगेरे दुःखो झुखो भोगववाना छे.	पू र म म म म म म म म म म म म म म म म म म
	पक्षःबधां कर्मना विपाकना उदयने इच्छता नथी ? मदेश उदयने पण सद्भाव होय छे. अने तप करवाथी क्षय पण थाय छे त्यारे कर्मनुं सफळपणुं केवी रीते घटे. आचार्यनो उत्तरःते दोष नथी, अमने बधा प्रकारनुं इच्छवापणुं अहीं नथी, पण द्रव्य पूर्णपणुं मानीए छीए अने ते छेज, एटले दरेकने आठज कर्मनो उदय छे, एम नहि पण बधा जीव आश्रयी सामान्यथी जोतां आठे कर्मनो सदभाव छे; तेथी ते कर्मनुं अथवा कर्मनुं मूळ आश्रव छे. तेनाथी निश्वपर्थी नीकळी जाय, अर्थात्आश्रव आवे तेवुं कृत्य न करे. मःकोण न करे ? डः-वेदविद् जेना वढे सघळुं चर-अचरवेदाय, ते वेद जैनागम छे, तेने जाणे ते वेदविद् जाणवो अर्थात् सर्वक्रना उपदेशमां वर्तनारो होय ते आ नवां कर्म न बांधे. आ अमारा एकलानो अभिमाय नथी; पण सर्वे तीर्थक- करोना आ आशय छे ते बतावे छे. जे खलु भो ! वीरा ते समिया सहिया सयाजया संघऽदंसिणो आओवरया अहातहं लोयं उवेहमणा पईणं पडिणं दाहिणं उईणं इय सच्चंसि परि (चिए) चिट्टिंसु, साहिस्सा-	937-977-977-977-977-977-97

ম আন্না০ ম	मो, नाणं वीराणं समियाण सहियाणं सयाजयाणं संघड दंसीणं आओ व रयाणं अहा तहं लोयं समु वेहमाणाणं किमस्थि उवाहो ?, पासगस्स न विज्जइ नस्थि तिवेमि (सू० १४०)	४ ४ ४ सूत्रम
1148811	। चतुर्थे चतुर्थः ४-४। इति सम्यक्त्वाध्ययनम् ॥ ४ ॥ सम्यग्वाद अने निरवद्य तप तथा चारित्र कहुं. इने, तेतुं फळ कहे छे:-'जेखलु' विगेरे (खलु शब्द वाक्यनी श्रोभा माटे छे.) जे पूर्वे अनंता तीर्थकरो थया तथा थवाना छे, अने वर्तमानमां केटलाक छे, तेओ कर्मशत्रुने विदारवामां समर्थ होवाथी वीरो छे, समितिथी युक्त तथा ज्ञानादिश्री सहित छे. सारा संयमथी यत्नावाळा छे. 'संघड दंसिणोति शुभ अशुभने निरंतर संपूर्णदर्शी (देख- नार) छे. पापकर्मरूप-आत्मार्था उपरत छे. तेओ जेवीरीते लोक चौदराज प्रमाण छे, तेने अथवा, कर्मलोक जे बधी दिशा पूर्व	5 1148511 5
<b>Š</b>	भार) छ. पारमपर प्रत्य प्रतिथा उत्ता छ. तथा जवारात छान पादता मनाव छ, तथ जवया, कनलजा ज वया दिसा पूच विगेरेमां रहेल छे, तेनी जीव अजीवनी व्यवस्थाने देखनारा छे. तेओ सत्य संयमतपमां स्थिर रहेला छे. अर्थात् तेमने त्रिकाळ विषय संबंधी संपूर्ण देखाय छे. पूर्वे अन्ता थया; ते संयममां रह्या. पंदर कर्मभूमिमां संख्याता तीर्थकर-संययमां रहेला छे, तथा भविष्यमां अनंता थवाना छे. तेओ संयममां स्थित रहेशे; तेओनो त्रणे काळनोज अभिषाय (वोध) छे, ते हुं तमने कहीश; एवुं सुधर्मास्वामी शिष्योने कहे ले:-तमे सांभळो. पूर्वे कहेलां उत्तम विशेषणोवाळानुं झान (अभिपाय) आ छे के, जे कर्मजनित उपाधि छे, ते नारक विगेरे चार योनिमां जन्म लेवो; सुस्वीदुःखी, सुभग, दुर्भग, पर्याप्त-अपर्याप्त विगेरे नवां नवां मळे छे के नहि ? ते संबंधी परमतवाळाने शंका छे के ? फरी मळी श्वके ? तेथी, ते तीर्थकरो साक्षात् जोइने कहे छे के:-तेवा साक्षात् देखनाराने ते ते	F BACK
S.	संबंधी परमतवाळाने शंका छे के ? फरी मळी शके ? तेथी, ते तथिकरो साक्षात् जोइने कई छ के:-तेवा साक्षात् देखनाराने ते ते	¥

সাৰাগ	र्द वस्तु उपर मोह न रहेवाथी ममता छुटीजवाथी तेवा पद्रयक (केवळ बानी) ने कर्मजनित उपाधि भविष्यमां मळवानी नथी; ते पु ममाणे हुं पण कहुं छुं पण आ हुं मारी बुद्धिश्री कहेतो नथी, मुत्रानुगम कह्यो. चोथो उद्देशो समाप्त थयो, नय विचार लेमांज योडो बतावी दीघो छे. चोधुं सम्यक्त्व नामनुं अध्ययन समाप्त थयुं. (टीकाना स्लोक ६२० थया.)	र ४ १ १ १ १ १ १
<b>ા</b> પ્કછ્યાં	' लोकसार' नामनुं पांचमुं अध्ययन. चोधुं अध्ययन कह्या पछी हवे पांचमुं अध्ययन कहे छे. तेनो आ प्रमाणे संबंध छे. गया अध्ययनमां सम्यत्त्वतुं स्वरुप वताव्युं; अने तेनी अंदर ज्ञान रहेलुं छे, ए सम्यत्त्व तथा ज्ञाननुं फळ चारित्र छे, अने चारित्रज मोक्षनुं अंग प्रधानपणे छे, तेथी ते लोकमां साररूप छे. ते चारित्रनुं प्रतिपादन करवा माटे आ अध्ययन छे. आवा संबंधयी आवेला आ लोकसार अध्ययनना उपक्रम विगेरे चार अनुयोगद्वार थाय छे ते प्रथम उपक्रम द्वारमां अर्थाधिकार वे प्रकारे छे. अध्ययननो विषय पहेला अध्ययनमां कह्यो छे, अने उदेज्ञानो निर्धुक्तिकार गाथाओ वडे कहे छे. हिंसगविसयारंभग, एग चरुत्ति न मुणीपढमगंमि विरओ मुणित्ति चिइए, अविरयवाइ परिग्गहिओ ॥२३६॥ तइए एसो अपरिग्गहो, य निविन्नकामभोगोय ।अवत्तरस्सेगचरस्स, पद्यवाया चउत्थंमि ॥ २३७ ॥ हरओवमो य तव संयमगुत्ती निरसंगया य पंचमए। उम्मग्गवज्ञणा छट्टगंमि, तह रागदोसेय ॥२३८॥	1148011 148011

1148C1	रत वादी होय, ते परिग्रह राखनारो बने छे, ते आ बीजा उद्देशामां वतावशे. त्रीजा उद्देशामां पूर्वे कहेलो अविरत ज्यारे परिग्रह वालो मुनी बने छे, अर्थात कामभोगनी वासनाथी दूर रहेलो ते मुनी छे, ते आमां वतावेल छे. चोथा उद्देशामां अव्यक्त (अगीतार्थ) ने सूत्रअर्थ भण्या विना तथा सूत्रार्थ परिणम्या विना एकलो फरवाथी दुःखो भोगववां पढे छे ते बताव्युं छे. पांचमामां हदनी उपमाए मुनी ए थवुं, एटले जल भरेलो हद (होज) पाणी न झरी जाय, तो मर्श्नसवायोग्य छे तेम बनादर्शन चारित्रथी सदा साधु भरेलो होय, अने विसरी न जाय, तथा ते तप संयम गुप्ति तथा निःसंगता राखे, तो ते शोभे छे, एम बताव्युं छे. छठा उद्देशामां उन्मार्ग (कुमार्ग) न्रुं वर्ज्जन छे एटल कुष्टष्टि तथा रागद्वेप छोडवात्रुं बताव्युं छे, आ ममाणे त्रण गाथानो अर्थ थयो, नामनिष्यन्ननिक्षेपामां	X
2 2 2	्रियाग ग्रेपु गिवन व प्रति क्यां प्रति का प्रति व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	
		Di

1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	(मथम जे ग्रहण कराय, ते आदान छे. तेनी साथे पद बब्द जोडतां आदान पद ययुं अने ते करणभूत बढे 'आवन्ती' ते तम छे. अध्ययननी अंदर शब्धातमां (आवन्ती बोलाय छे) ते आदान पद नाम थयुं तथा गुण वढे जे नाम बने, ते गौण अने तेथी जे नाम पढे ते गौण नाम छे. ते हेतुथी लोकसार नाम छे. चौद रज्जु ममाण लोक छे तेनां सार (परमार्थ) लोकसार छे. वे पदवाछं आ नाम छे तेथी लोकना तथा सारना दरेकना चार मकारे निष्नेषा थाय छे, नाम-स्थापना द्रव्यभाव छे तेमां नाम लोक ते कोश्तुं नाम लोक होथ. चौद राजलोकनी स्थापनाचुं चित्र ते स्थापाना लोक छे. तेनी स्थापना नीचली ज्या गाथाओथी जाणवी. तिरिअं चउरो दोसुं, छद्दोसुं अठ दसय एकोको । बारस दोसुं सोलस, दोसुं वीसा य चउसुं तु ॥१॥ पुण रवि सोलस, दोसुं बारस दोसुं तु हुंति नाथवा। तिसु दस तिसु अठच्छ, य दोसु दसुं तुचचारि ॥२॥ ओयरिय लोअमज्झा, चउरो चउरो यसहदिं णेया। तिअतिअ दुग ढुग, एकेकगं च जा सतमोए उ ॥३॥ ( गाथानो परमार्थ गुरुगमधी जाणवो कारण के टीका नर्था) द्रव्य लोकतुं सरुप जीव पुद्गल घर्म अधर्म आकान्न काल प छ द्रव्यनो समुह जेमां छे ते द्रव्य लोक छे. अने भावलोक औदयिक औपन्नमिक चिगेरे छ भाव वालो छे ते जाणवो. अथवा सर्व द्रव्य पर्थय युक्तस्वर्फ्यकोले जाणवो. सारना पर निश्लेपां नाम स्थापना मुगपने छोडी द्रव्य सार कहे छे. सबस्स थूल गुरुए, मडझे देसप्यहाण सरिराई। धण एरंडे वइरे, खइरं च जिणादुरालाई ॥ २४० ॥ एमां पूर्वार्थ अने पश्चिमार्थमां यथासंख्य अनुक्रमे सार गणवां वथामां यन सार भूत छे, जेपके आ कोटीसार (करोडपति)	
5	एमां पूर्वोर्ध अने पश्चिमार्थमां यथासंख्य अनुक्रमे सार गणवां वधार्मा धन सार भूत छे, जेमके आ कोटीसार (करोडपति )	

	🖞 छे अथवा पांच कपदिका (बाळकोनी रनवानी कोडीओ) वाळो छे. स्थूळमां परंडो सार छे (अहीं सार बब्द मकर्षवाची छे.)	5
आশ্বা০	है छे अथवा पांच कर्पार्दका (बाळकोनी रनवानी कोडीओ) वालो छे. स्थूळमां परंडो सार छे (अहीं सार शब्द मकर्षवाची छे.) स्थूळ मध्ये परंडो अथवा भींडो प्रकर्ष थयेलो छे, गुरुपणामां वज्र भारे छे. मध्यमां खेरनुं झाड छे, देशमां आंवो अथवा वेणुं छे. ते प्रधानमां ज्यां जे मधान भाव अनुभवे ते सचित्त अथवा अचित्त के मिश्रज होय ते, तथा सचित्तमां वे पगवाळो अपद छे, तेमां	सुत्रम
<u>ા</u> પ્યુવા	्रिविश्वाल देश ज नवान नाव अनुनेव ते तावत अपने आवत के मिश्रेज होय ते, तथा सावसमा व पंगवाळा अपद छे, तमा ते वे पगमां तीर्थकर छे. चो पगमां सिंह छे. अपद (झाडो) मां कल्पद्यक्ष छे. अचित्तमां बैड्र्य मणिरत छे मिश्रमां तीर्थकरज ज्यारे हे विश्विति होय छे, ज्ञरीरोमां मुक्ति जवाने योग्य तथा विज्ञिष्ट रुपनी माप्ति (तीर्थकर चक्रवर्तीने आश्रयी) होवाथी औदारिक मधान	440
	र्भ विभूषित होय छे, अरीरोमां मुक्ति जनाने योग्य तथा विश्विष्ठ रुपनी माप्ति (तीर्थेकर चक्रवर्तीने आश्रयी) होत्रांची औदारिक मधान है छे, गाथामां आदि शब्द शरीर साथे छेवाथी खामिल करण अधिकरणमा सारता योजवी, जेमके खामीपणामां गोरसनुं सारभूत	
	🍸 घी छे, करणपणामां मणीरवनी सारतावाळा मुकुट वडे राजा शोभे छे, अधिकरणमां दहींमां घी, पाणीमां कमळ उमेलुं शोभे छे 🕇	Ś
	र्दे विगेरे छे. इवे भावसार बतावे छे. #	S
	🕺 भावे फलसाहणया फलओ सिखी सहूत्तम वरिद्वा। साहणय नाण दंसणसंजमतवसा तहिं पगयं ॥२४१॥	
	1. भाव विषयमां सार विचारतां फळनुं साधन तेज सार छे. जे, म्तलब माटे किया करीए ते माप्त थाय. (जेमके-विद्यार्थी क् से बरस सुधी भणे अने पास थाय; त्यारे भावसार छे.) जोके, आ फळ पाप्ति प्रधान छतां ते मळे. पछी तेनो अंत पण आवीजाय	
	🕙 अने अनिश्चित पण छे. तेथी ते, अनेकांत अनात्यंतिक छे. ते कारणधी परमार्थथी जोतां निःसार छे. पण तेथी जलटं पटले किन्नि 🧏	
	पदज मेळववुं सार छे. ते केवुं छे ? डःते उत्तम सुखवडे श्रेष्ट छे. कारणके, ते एकांत सुखवाळी, अत्यंत सुख आपनारी सिद्ध-	

आचा॰ 🏌	गति छे. तथा तेमां कोइ जातनी वाधा नथी, माटे ते सर्वोत्कुष्ट छे, अने तेनां साधनो मकृत (चालु) उपकारक झान दर्भन संयम, अने तप छे ते भावसार सिद्धिफल मेळववा तेनां साधन झानादिक छे तेमां आपणुं कार्य छे. एटले झानदर्भन चारित्ररुप-भाव सारवडे अहीं अधिकार छे. तेथी ते ज्ञान विगेरे जे सिद्धि (मोक्ष) ना उपायो छे, तेनी भावसारता बतावे छे. लोगंमि कुसमएस य काम परिग्गहकुमग्गलग्नोसुं। सारो हु नाणदंसणतवचरणगुणा हियटाए । २४२॥	Š Į	नुत्रम्
1144811 1448811 14488 1448 1448 1448 14			1 <b>4481</b>

आचा० 🕺 भयम संका छोडी दे, अमारा करेला तप विगेरेनुं फल मोक्ष आपशे के नहि, एवो विकल्प ते शंका छे, ते 🕺 सूत्र ॥५५२॥ 🖇 शंकानुं पद ते निमित्तकारण छे, जेमके जिनेश्वरे कहेला इन्द्रियोथी न जणाय, एवा झीणा विषयो होवाथी ते फक्त आगम ममाणे 🧍 ॥५५ मानवा जोइए, तेमां न समजतां संदेह थाय तो पण ते छोडीने आ ज्ञानादिक सार जे पूर्वे बतावेल छे, तेने इढ पणे (स्थिरचिरो)	त्रम्
॥ ४४२॥ 🖇 शंकानुं पद ते निमित्तकारण छे, जेमके जिनेश्वरे कहेला इन्द्रियोथी न जणाय, एवा झीणा विषयो होवाथी ते फक्त आगम ममाणे 🗴	
ि मानवा जाइए, तमा न समजता सदह याथ ता पण त छाडान आ झानादिक सार ज पूर्व बेतावल छ, तम हह पण (स्थिरायर)	પરા
💯 क्रमांगे चालनाराओथी ठगाया विना निश्वलपणे मानवां, तथा पाळवां, ते शंका दूर करवा गयाना पाछला वे पदमां कह्युं छे के 💟	
र्भे जीव छे, आम प्रथम जीवने बधा पदार्थमां प्रथम छेवाथी अने जीवमधान होबाथी बीजा अजीव विगेरे पदार्थों पण जाणी छेवा, 🐺	
त वधा पदाया विद्यमान छ) तया जाव वाळा ( शरारवारा का विना शरारना) जाव जाव छ, अया जावश पता ए सत्तारा का कि ही जीव शुभ अशुभ कर्मना फलने भोगवनारो, अने ते 'हुं पोते ' एम प्रत्यक्ष साध्य छे, अथवा तेने थती इच्छा द्वेष प्रयत्न विगेरे का-	
🏅 होना अनमानश्ची पण साध्य छे. तेज प्रमाणे अजीवो पण धर्म अधर्म आकाश पुदगलने गति, स्थिति, अवगाह आपवाना; तथा बे 🕵	
र्भ िने न्हेंप्रतर हेन्द्रत से तेशी जंग रजायित भगां में प्रमाणे आमत-चंतर तंघ निर्जया प्रमातिश्वामान से काश्याते. प्रमान	
पु अणु विगर स्कथना इतुरूप छ. तथा, पाय प्रव्यातल पया, ए पनाल जालन समर पर्यातणरा पर्यातवर्गाल छ. मार्यपत, उस्ता र्थ प्रधानपणे छे. आ पदार्थमां आदिजीव अने अंते मोक्ष ग्रहण करवाथी वचला पदार्थों आवी जाय छे. एटले जीव तो सूत्रमां साक्षात छे, अने मोक्ष हवे पछी बतावे छे के, परम तेज पद ते, परमपद छे. एम जाणवुं के, मोक्ष शुद्धपद कहेवातुं होवाथी विद्य- मान छे. कारणके, ते बंधथी विरुद्धपक्षमां छे, अथवा बंधनी माथे अविनाभाविषणे छे. (एटले बंध त्यारेज कहेवाय के कोइपण	
र्भ भं मधानपणे छे. आ पदार्थमां आदिजीव अने अंते मोक्ष ग्रहण करवाथी वचला पदाथों आवी जाय छे. एटले जीव तो सूत्रमां असाक्षात छे, अने मोक्ष हवे पछी बतावे छे के, परम तेज पद ते, परमपद छे. एम जाणवुं के, मोक्ष शुद्धपद कहेवातुं होवाथी विद्य- अस्ति मान छे. कारणके, ते बंधथी विरुद्धपक्षमां छे, अथवा बंधनी माथे अविनाभाविषणे छे. ( एटले बंध त्यारेज कहेवाय के कोइपण अस्ति मान छे. कारणके, ते बंधथी विरुद्धपक्षमां छे, अथवा बंधनी माथे अविनाभाविषणे छे. ( एटले बंध त्यारेज कहेवाय के कोइपण	
्र मान छ. कारणक, त वंधथा विरुद्धपक्षमा छ, अथवा बंधना साथ आवनाभाविषण छ. ( एटळ बंध त्यारेज कहेवाय क काइपण ु	

आचा०	अंशे वे पदार्थ जुदा पडे. जो, जुदा न पडे तो, एकज कहेवाय ते वंध न कहेवाय. माटे, जुदा पडे; ते मोक्षजीवने कर्मरूपी–अजीव पदार्थ प्रहळ स्कन्धरुपे कंइ अंशे मळेल्रो ते सर्वथा जुदो पडे; ते संपूर्ण मोक्ष छे, अने थोडे अंशे जुदो पडे; ते देशमोक्ष छे. ) इवे,	र् सूत्रम्
મજપરા મુ મ જ	अंधे वे पदार्थ जुदा पडे. जो, जुदा न पडे तो, एकज कहेवाय ते बंध न कहेवाय. माटे, जुदा पढे; ते मोधजीवने कर्मरूपी-अजीव पदार्थ धुद्रळ स्कन्धरुपे कंइ अंशे मळेळो ते सर्बया जुदो पढे; ते संपूर्ण मोध छे, अने थोडे अंशे जुदो पढे; ते देशमोध छे.) हवे, मोध जो होय; पण, ते माप्त करवानो जपाय न होय; तो, माणसो शुं करे ? तेथी ते वतावे छे. 'यतना' एटछे, रागद्रेष छोडवामां यत्न करवो; ते मथय लक्षणरूप-संयम पण विद्यमान छे. तेथी, आ भयाणे जीव अने परमपद विद्यमान छे, ते (मोधमां) शंका दूर करीने हानादिक-सारपदने मेळववा हढ मयब करवो, तेनाथी पण अपर अपर (चढतो) सार तया श्रेष्ठगति छे. पत्तुं वतावी उपक्षेप कहे छे: लोगस्स उ को सारो ?, तस्स य सारस्स को हवइ सारो ?। तस्स य सारो सारं, जइ जाणसि पुच्छिओ साह ॥ २४४ ॥	स स स स स स स स स
to a the second se	चउद राजभगाणनों जे लोक छे, तेनो शुं सार छे ? ते सारनो शुं सार ? ते सारनो शुं सार जो ए तमे जाणता हो; तो, हुं पुछुं छुं माटे कहो. लोगस्स सार धम्मो, धम्मंपि य नाणसारियं विंति । नाणं संजमसारं, संजमसारं च निद्याणं ॥ २४५ ॥ बधा लोकनो सार धर्म छे, धर्मनो सार डान छे, डाननो सार संयम छे, संयमनो सार निर्वाण छे, आ ममाणे नामनिक्षेपो	G.

से कामा, तभो से मारंते, जओ से मारंते तओ से टूरे, नेव से अंतो नेव टूरे ( सु० १३१ ) 'आवन्ती '-विगेरे, जेटला जीवो, मजुष्य, अथवा बीजा असंपत छे, तेमांना केटलाक चौद राजममाण लोकमां ग्रहस्य लोकमां ग्रहस्य, अथवा अन्य तीर्धिक लंक छे, तेओ, छ जीवनीकायाना आरंगमां मवर्तीने अनेक प्रकारे विषयना रसीया बनी धरपुरा धरपुरा धर्म, अर्थ, काम माटे, प्रयोजन आवतां जीवोनों घात करे छे ते बतावे छे. धर्मनिमित्त ते, बौच (पवित्रता) माटे पृथ्वीकाय प्रमं, अर्थ, काम माटे, प्रयोजन आवतां जीवोनों घात करे छे ते बतावे छे. धर्मनिमित्त ते, बौच (पवित्रता) माटे पृथ्वीकाय (काची माटी) ने दुःख दे छे. घन मेळववा खेती विगेरे करे छे. काम ( शरीरक्षोभा ) माटे आधूषण विगेरे बनावे छे. ए म्प्राणे बीजी कायोनी हिंसा करवा संबंधी पण जाणचुं. हवे, अनर्थथी (वीनामयोजने ) ते फक्त क्रोसलना माटेज शिकार विगेरे माणीनो नाझ करानारी क्रीयाओ करे छे, तेथी, ए ममाणे प्रयोजने अथवा अपयोजने प्राणीओने हणी; ते छ जीवनीकायाना स्थानमां विविध मकारे सुक्ष्मवादर पर्याक्षक-अपर्यायक्षक विगेरे मेदवाळां एकेन्द्रिय विगेरे माणीओने दुःख दे छे. पछी तेमांज पोते अनेक- वार उत्तव्र थाय छे. अथवा, ते छ जीवनीकायाने बाधा करी तेनाथी बंधायलां कर्मवडे तेज कारोमां उत्तवन शदाने वेवा मकारोवडे कर्मोने भोनवे छे, ते संवंघमां नागार्जुनीआ आ ममाणे कहे छे: " जावंति केइ लोए छकाय बहंसमारंभति अटाए अणाटाए वा " विगेरे सुत्रमां जानो अर्थ आवी गयो छे. क्षेका-एम हक्षे; पण, ज्ञा माटे आवां कर्यों जीव करे छे के, जे अन्य कायमां जड़ने	
--	--

आचा०	ू भोगववां पढे छे ? उत्तर ' गुरुसे०' विगेरे तलने नहीं जाणनारा ते जीवने सुंदर झब्द विगेरे इच्छवा योग्य काम ( विषयो ) दुःखे- करीने छोडवा योग्य छे ? कारणके, अल्प सत्त्ववाळा जेमणे पुण्यनो समूह पूरो नथी कर्यो; तेओंने ते उल्लंघवुं दुष्कर छे, तेथी ते	्रे सुत्रम्
	ि कायामां आरंभ करे छे. अने तेथी पाप वंधाय छे. तेथी शं थाय ते कहे छे. ते संसारी जीवे छ जीवनिकायने टाख देवाथी तथा	2 (g-9-1)
૫ઙઙઙ૫	कायामां आरंभ करे छे, अने तेथी पाप वंधाय छे, तेथी शुं थाय ते कहे छे, ते संसारी जीवें छ जीवनिकायने दुःख देवाथी तथा अधिक विषयलालसा करवाथी पोते मारे ते आयुष्यनो क्षय (मरणवज्ञ) ने पान्न थाय छे, अने मरेला जीवने जन्म अवत्र्य थवानो	ાષ્ડ્રપ્ડા
C	🕴 छे, जन्ममां पाछुं मरण थवानुं, ए प्रमाणे जन्म मरणरुप संसारसमुद्रमां उपर आववुं. नीचे जवुं, तेथी जीव छुटतो नथी, पछी	
(	ूर्वी खें ते शुं करे छे, ते कहे छे, ' जओ ' विगेरे जेथी ते मृत्युना मध्यमां पडेलो परम पदना उपायो ब्रान विगेरे रवत्रयथी, अथवा रे तेनुं कार्य मोक्ष तेथां दूर रहे, अथवा सुखनो अर्थी ते कामने त्यजतो नथी, अने विषय रस न छोडवाथी पाछो मरणना मुखमां	Ŷ
	्रिजी जाय छे, तेथी जन्म जरा मरण रोग जोकथी घेरायेछो सुखथी दूर रहे छे, ते अधिक विषय रसीयाने मृत्युना सुखमां पडतां शुं	Ş
	[ थाय छे ते कहे छे 'नेवसे.' विगेरे पछी ते विषय सुखना किनारे आवतोज नथी तेनो अभिलाष हृदयमां रहेवाथी काम वासनाने 🥻	
	र्भ न त्यागवाथी संसारधी दूर नथी थतो, अथवा जेने अधिक विषय आस्वाद छे ते कर्मनी अंदर छे के वहार छे ! उत्तर:-'णेबसे.'	51
	ुत जावकरना मध्यमा भिन्नग्रथा होनाया नथाज; कारणक, भावष्यमा तना कर अवश्य क्षय थशा तम दूर पण नथा; कारणक अकोटी कोटी (कोडा कोडी) सागरोपप्रयां थोडंओळं गुवी तेनी फिश्रति छे, पर्वे कडेलां कपणोशी चारिवनी प्राप्रियांज ते कईनी	5
(	्री अंदर नथी तेम दूर नथी. एम बोलवुं जन्य छे. चारित्र आत्मामां एकवार फरइयुं होय; तो तेनो मोक्ष थाय छे, अथवा जेणे आ	F.
	र्रु ते जीवकर्मना मध्यमां भिन्नग्रंथी होवाथी नथीज; कारणके, भविष्यमां तेनां कर्म अवश्य क्षय थशे तेम दूर पण नथी; कारणके के कोटी कोटी (कोडा कोडी) सागरोपममां थोडुं ओछुं एवी तेनी स्थिति छे, पूर्वे कहेळां कारणोथी चारित्रनी माप्तिमांज ते कर्मनी अंदर नथी तेम दूर नथी एम बोलवुं ज्ञक्य छे. चारित्र आत्मामां एकवार फरइछुं होय; तो तेनो मोक्ष थाय छे, अथवा जेणे आ दे प्राणोनुं लेवारुप कर्म न कर्धु, ते संसारना अन्तर्भूत छे। के बहार वर्ते छे! तेवी ज्ञक्कानुं। समाधान करे छे, ते जीव रक्षक साधुनां	k i

স্তাদা৹	ू घातिकमों क्षय थवाथी केवळी ते संसारना मध्यमां न गणाय, तेम दूर पण नथी, कारणके चार अघातिकर्म बाकी छे, आ ( केव- ळीने आश्रयी छे ) जेणे प्रंथी भेद करीने दुष्प्राप्य पत्नुं सम्यक्त्व पाप्त कर्युं अने संसारना आरातीय तीरे ( मोक्षमां जवानी तैयारी-	५ ५ स्त्रम
	🖞 बाळो ) केवा अध्यवसायवाळो होय छे, ते कहे छे:	
<u>ાાપ્યપ્રદ્ાા</u>	🖌 से पासइ फुसियमवि कुसग्गे पणुन्नं नित्रइयं वाएरियं, एवं बालस्स जीवियं मंदस्स अविय-	र्भ ॥५५६०
	🖞 णाओ, कूराइं कम्माई बाले पकुबमाणे तेण दुक्खेण मृढे विप्परिआसमुवेइ, मोहेण गब्म 🚽	5
	मरणाइ एइ, एत्थ मोहे पुणो पुणो [ सू० १४२ ]	X
	ते जेनुं मिथ्यात पडल (पडदो) दूर थयेल छे, अने सम्यक्त्वना प्रभावथी संसारनी असारत। जाणेली छे, (दृइय धातुनो अर्थ प्राप्तिना अर्थमां छे ) ते जाणे छे के, कुन्नना अग्रभागे रहेला पाणीना बिंदु माफक संसारी ( बाल ) जीवनुं आयुष्य छे, अने ते पाणीना	
	अर्थमां छें) ते जाणे छे के, कुन्नना अग्रभागे रहेला पाणीना बिंदु माफक संसारी (बाल्र) जीवनुं आयुष्य छे, अने ते पाणीना	2
	र विंदु उपर उपरथी आवता पाणीना बीजा बिंदुथी मेरणा थतां वायुना झपाटाथी पढतां वार न खागे, तेम आ वालजीवतुं जीवित	3
l	है छे, तेनुं सलमात्र जीवित जाणीने, तल जाणनारो ढाबो साधु तेमां मोह न करे, माटे बाळ शब्द लीघो छे, एटले बाळ ते अझानी	Ē
	हे हे, ते अज्ञानपणाथी जीवितने बहु माने छे, तेथी बाळ छे, मंद छे, सद्असत्ना विवेकथी शून्य छे, तेथी बुद्धििन होवाथीज पर-	2
	र्थने जाणतो नथी, अने परमार्थने न जाणवाथीज जीवितने बहु माने छे, अने परमार्थ न जाणवार्था ते शुं करे छे, ते कहे छे, (कुरागि ' विगेरे ते निर्दयतानां कृत्यो करे छे, हिंसा जूट विगेरे जे बीजा लोकोने आश्चर्य पमाडे तेवां महान पाप अथवा अढारे	<b>X</b>
ŀ	🖁 'कुरागि' विगेरे ते निदंगतानां कृत्यो करे छे, हिंसा जूट विगेरे जे बीजा लोकोने आश्चर्य पमाडे तेवां महान पाप अथवा अहारे	\$

ાલ્યુગા	うちょうちょちょうち	छे, तेना वडे मूढ थयेलो नवां अशुभ कर्म बांधे छे, तेनाथी गर्भमां जाय छे, पछी जन्म बालावस्था कुमार यवन बुढापो विगेरे तेने मळे छे वळी ते विषय कपाय विगेरेथी कर्म नवां बांधीने आयुना क्षयथी मरण पामे छे, आदि श्रब्दथी पाछो गर्भ जन्म विगेरे मेळवे, एम जाणवुं. पछी ते नरक विगेरेनां दुःख पामे छे, ते कहे छे. 'एत्थ' उपर कहेला मोढ कार्य ते गर्भ मरण विगेरेमां वारं- वार अनादि अनंत चार गतिरूप संसार कांतारमां ते जीव भ्रमण करे छे, पण तेनाथी मुक्त यतो नथी, त्यारे केवीरीते भ्रमण न करे ? उत्तरःमिथ्याल कषाय अने विषयना अमिलापथी दर रहेतो ते केवी रीते दर थाय ? उत्तरः-विशिष्ट ज्ञाननी उत्पत्ति-	1- + + +	सुत्रम् ॥५५७॥
	オンキンキンキン	मोइनीयकर्म तेनो अभावथी विश्विष्ट ज्ञान, ते पण मोहनीयकर्म दूर यवाथी ए ममाणे इतर इतर आश्रय दोष खुलोज थाय छे, ? एटले एम थयुं के ज्यां सुधी विशिष्ट ज्ञान माप्ति न थाय त्यां सुधी कर्म ज्ञांत करवानी महत्ति पण न थाय. डः-तमारो कहेलो दोष लागतो नथी. कारण के अर्थ (पदार्थ) नो संज्ञय आवतां पण महत्ति यती देखाय छे, ते मूत्र कहे छेः संसयं परिआणओ संसारे परिस्नाए अवड्, संसयं अपरियाणओ संसारे अपरिझाए अवड् (सू॰ १४३)	2-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0	

সাম্বা০	बजे वाजुमा अंत्र जेमां देखाय त्यां संग्रय थाय छे, ते अर्थ संग्रय अने अनर्थ संग्रय एप वे मेद छे, अहीं अर्थ ते मोस, तथा दूमोसनो उपाय छे, तेमां मोसमां संग्रय नथी, कारण के तेने परम पद एम स्वीकार्यु छे, पण तेना उपायमां संग्रय होय तो पण दूमहत्ति थाय छे, अर्थ संग्रय ते महत्तिन्नं अंग छे, अने अनर्थ ते संसार अने संसारना कारणो छे, तेना संदेहमां पण निहत्ति थाय	भू भू सुत्रम
แรงะแ	🗡 छेज, कारण के अनर्थ संजय ते निर्हात्तिनुं अंग छे, पर्थ। अर्थमां अथवा अनर्थमां रहेला संजयने जाणतो होय तेने हेय उपादेयनी 📡 प्रहृत्ति थाय छे, तेज परमर्थिथी संसारतुं परिक्रान छे, ते बतावे छे, ते परिक्रानवडे संजयने जाणनाराथी चार गतिवाळो संसार	Å 1144611
	ें अथवा तेतुं मूळ कारण मिथ्माल आवरति विगरे अनथपण इ परिहावड जाणलु थाय छे, त बतावे छे, अने मत्याख्यान परिहा- र बडे त्याग थाय छे, पण जे संजयने नथी जाणतो, ते संसारने पण नथी जाणतो, ते बतावे छे, 'संजय' संदेहने क्ले मकारे न जाल-	<b>*</b>
	र् नारानी हेय अपादेयनी महत्ति नहीं थाय, अने महत्ति विना संसार अनित्य छे, अशुचिधी भरेखो छे, घणां दुःख आपनारो छे, निःसार छे. श्म दे जाणतो नधी, आ निश्वम केवी रीते थाय-के ते संझय जाणनारे संसार जाण्यो छे ? तथा शुं निश्चय करनो ? ड:-संसरना परिज्ञानचुं कार्य विरतिनी माप्ति थाय छे, तेथी सर्व विरतिमां मुष्ठ (श्रेष्ट) विरतिने बतावना कहे छे.	<u> </u>
	जे छेए से सागरियं न सेवइ, कहु एवमवियामओ बिइया मंदरस बाख्या, लदा हुरत्था पडिलेहाए आगमित्ता आणविजा अणासेवणय ति विमि ( सू०-१४४) जे छे एजे निषुष छे, जेजे गुण्य पाप जाण्यां छे, ते मैथुन (संसार संबंध) मन वरन कायाथी करतो नथी, तेनेज संसार	
	पडिलेहाय आगमित्ता आणविजा अणस्वणयः कि बीम (सू०-१४४) जे छे एजे निषुष छे, जेजे पुण्य पाप जाण्यां छे, ते मैथुन (संसार संबंध) मन वरन कायाथी करतो नथी, तेनेज संसार	Š

आचা৹ 🕺	जाणनारो कहेवो, ( ते जे स्त्रीसंग मन वचन कायथी न करे ) पण मोहनीयकर्मना उदयथी जे पासत्था (क्विथिल साधु) छे, ते सेवे छे, अने सेवीने पछी साता तथा गौरव नाग्न थवाना भयथी शुं करे ते कहे छे, कट्टु एकांतमां क्रुचाल सेवीने गुरु विगेरे ए	र् सूत्रम्
ાાઙઙઙ઼ા	पूछतां जुटुं बोळे आवी रीते जुटुं बोली पाप छुपावनारने शुं थशे ते कहे छे, 'बिइआ' अबुद्मिानने मथम तो कुकर्म कर्यु ते अज्ञा- नता छे, अने पाछुं जुटुं बोलतां मृषावादनो दोप लागे छे, तथा ते फरी न करवापणे फरी अनुत्थान (चालु) छे, आ संबंधे	્રું ાાપપર્ગા
Č	नतो छ, अने पाछु जुटु बोलता मृषावादना दोप लाग छ, तथा त फरा न करवापण फरा. अनुत्थान (चालु) छ, आ संबध   नागार्जुनीआ आ ममाणे कहे छे:—	
R.	" जे खल्ज विसए सेवई सेवित्ता वाणालोएइ, परेणवा पुढो निण्हवइ, अहवा तं परंसएण	A A
R R	वा दोसेण पाविद्वयरेण वादोसेण उवलिं पिजंति "	X
A A A A A A A A A A A A A A A A A A A	जे कुकर्म करे करीने आछोचना करतो नथी, अथवा वीजाए पूछतां जुठुं वोछे छे, अथवा पापी पोताना दोषो	Y.
lÇ,	वडे वधारे वधारे छेपाय छे. जो एम छे, तो शुं करतुं, ते कहे छे, 'छदाहु ' कामो माप्त थये छते पण 'हुरत्थे '	8
	चित्र भलक (मनि) माफक तेनां कटवां फल जाणीने चित्रशी ते बहार करें (अशवा हवाव्य अपि अश्रमां लर रेफने) आसम् श्रमो	171
$\mathbf{P}$	ते बीजाना अर्थमां मथम विभक्ति लेतां) आवो अर्थ थाय छे के, मेळवेला होय, ते विपाकद्वारवडे विचारीने तथा ते शब्दादिनां	
5	ते बीजाना अर्थमां प्रथम विभक्ति लेतां) आवो अर्थ थाय छे के, मेळवेला होय, ते विपाकद्वारवडे विचारीने तथा ते शब्दादिनां कडवां फळ जाणीने बीजाने तेबां पाप करवानी आज्ञा पण पोते न आपे, तेम पोते पण छोडे, एवुं सुधर्मास्वामी कहे छे, जे में पूर्वे कह्युं, ते में एक सरखो श्रेष्ट ज्ञान प्रवाह मेळव्यो छे, अने शब्दादिनां कडवां फळने जाणवाथी देखवाथी जिनेश्वरना वचन	Ď
(Ç.	पूर्व कहुं, ते में एक सरखो अेष्ट ज्ञान पवाह मेळव्यो छे, अने ज्ञब्दादिनां कडवां फळने जाणवाथी देखवाथी जिनेश्वरना वचन	Ş

आच।৹ ॥५६०॥	र उपर मने आनंद थयो छे, (मथम भगवानतुं वचन सांभळ्युं, तेथी कडवां फळ जाण्यां पछी अनुभच्युं तेथी विश्वास थयो) तेथी हुं कहुं छुं के:- पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे, इत्थ फासे पुणो पुणो, आवंती केयावंती लोयंसि आरंभजीवो, एएसु चेव आरंभजीवी, इत्थवि बाले परिपचमाणे रमई पावेहिं कम्मेहिं असरणे	भू भू सूत्रम भू ॥५६०॥
	सरणंति मन्नमाणे, इहमेगेसिं एगचरिया भवइ, से बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोभे बहुगए बहुनडे बहुसढे बहुसंकप्पे आसवसत्ति पलिउच्छन्ने उद्वियवायं पवयमाणे, मा मे	5
	रे केइ अदक्सू अझायपमायदोसेणं, सययं मुढे धम्मं नाभिजाणइ, अद्या पया माणव ! कंम- कोविया जे अणुवरया अविजाए पलिमुक्खमाहु आवद्यमेव अणुपरियहंति त्तिबेमि (१४५)	5
	॥ लोकसारे प्रथमोदेशकः ५-१॥ हे एकांत धर्म रक्त मनुष्यो ? तमे देखो ? (रुपमां बहु वचन छेवाथी आदि झब्दनो अर्थ थाय छे, एटछे रुपआदि ) के रुप जिनेते मनियोचा यस जे साम कटनां फल आपनार असार छे, तेमां गढ़ थयेला अथवा संसारमां प्रहेला जीवो स्वाद लग्ने गली	5
	॥ लाकसार अथमाइशकः ९-९ ॥ हे एकांत घर्म रक्त मनुष्यो ? तमे देखो ? (रूपमां बहु वचन छेवाथी आदि अब्दनो अर्थ याय छे, एटळे रुपआदि ) के रुप विगेरे इन्द्रियोना रस जे खास कडवां फळ आपनार असार छे, तेमां ग्रद्ध थयेला अथवा संसारमां पढेला जीवो स्वाद लड़ने पछी दुःख भोगववा नरक विगेरे पीडा स्थानमां गयेला छे, ते माणीओने जुओ ? (कोइने नरक उपर विश्वस न होय तो कसाइखानामां दु पशु पक्षीओने गळे छुरी फरती देखो, के ते पशु पक्षीओ आवी दक्षामां पढवानुं शुं कारण छे, तथा पशुने मारनारा मरावनारा	

<b>आचा</b> ०	मांसनो खाद करनारनी शुं दन्ना थन्ने, ते पण विचारो ?) ते विषय रसना खादुओ इन्द्रिओने वन्न थर शुं फळ मेळवे ते कहे छे, 🖗 (प्रत्यफासे' आ संसारमां इन्द्रियथां परवन्न थयेलों मूढ बनीने कर्मनी परिणतिरुप स्पन्नोंने वारंवार तेवा तेवा स्थानोमां ते भोगवे,	सुत्रम्
<b>ા</b> પ્ડ <b>હે</b> શા	'एत्थफ़ासे' आ संसारमां इन्द्रियथां परवक्ष थयेलो मूढ बनीने कर्मनी परिणतिरुप स्पर्क्षोने वारंवार तेवा तेवा स्थानोमां ते भोगवे, 'एत्थफ़ासे' आ संसारमां इन्द्रियथां परवक्ष थयेलो मूढ बनीने कर्मनी परिणतिरुप स्पर्क्षोने वारंवार तेवा तेवा स्थानोमां ते भोगवे, पाठांतरमां 'एत्थमोहे' छे, आ संसारमां मोह ते अज्ञान अथवा चारित्र मोहमां वारंवार मूढ बने छे, कोण ? उत्तर:-आवंती-जे कोइ गृहस्थ आ लोकमां पेट भरवा पाप आरंभ करनारा छे तेओ ( वीजाने दुःख देइने ) पोते पाछां तेवां दुःख मेळवे छे, बळी ते गृहस्थोने आश्रय करीने रहेल आरंभ करनारो करावनारो अनुमोदनारो जनेतर के पासत्थो वेष विदंबक साधु छे, ते पण गृह- स्यो माफक दुःख भोगवे छे, ते बतावे छे, पएसु सावध आरंभमां पढेला गृहस्थोमां झूरीर निर्वाह माटे रहेतो जैनेतर के पासत्थो साधुपण आरंभजीवी होथ, ते पूर्वे बतावेलां दुःखनो भोगीयो थाय, वळी गृहस्थ के जैनेतर तो दूर रहो, पण जे संसारसमुद्रथी तरवारुप सम्यक्त रत्न मेळ्वीने मोक्षनुं एक कारण विरति परिणाम पामीने पण जो पापकर्मना उदयथी चारिजने पूरु न पाळे तो ते पण सावध अनुष्ठान करनारो बने छे, ते कहे छे 'एत्यवि' आ अईत् मणीत संयम मेळवीने रागद्वेपथी व्याकुल बनेलो अंदरथी ये ते पण सावध अनुष्ठान करताते विषयनी आकांक्षार्थी रमे छे, ? कोनी साथे ? उत्तर:-पाप कृत्योवढे विषयरस लेवा सावय अनुष्ठानमां विच ला ला ब्रा अनुष्ठान करताते विषयनी आकांक्षार्थी रमे छे, ? कोनी साथे ? उत्तर:-पाप कृत्योवढे विषयरस लेवा सावय अनुष्ठानमां विच ला ला अथवा उत्कांत्र करतो विषयनी आकांक्षार्थी रमे छे, ? कोनी साथे ? उत्तर:-पाप कृत्योवढे विषयरस लेवा सावय अनुष्ठानमां चित्र लगाढे छे, शुं करतो ? 'असरण' कार्याक्रि अथवा पापकर्मथी बळते जो के सावय अनुष्ठानना अन्नरण छे, छता तेनुं झरण छेतो भोगनी इच्छावाळो अज्ञान अंधकारथी छवायेलो दृष्टि पर्ण विदंबको दुराचारोने आचरे छे, ते वतावे छे, 'इडमे' आ मनुष्य केनेतर दूर रहो पण मवज्या (दीक्षा) छेड़ने पण केटलाक वेष विदंबको दुराचारोने आचरे छे, ते वताचे छे, 'इडमे' आ मनुष्य कि नेतर दूर रहो ए पा वराय ते चरण अथवा चर्य एकलानी चर्या ते एक चर्या ) ते एकलविहारीपणुं मन्नस्त अमन्नरत एम के मेदो	<b>ા</b> જ્ક્ષ્ણ
	ू जनतर दूर रहा पंग मवज्या (दाता) ७३न पंग कटलाक वर्ष विद्वका दुराचारान आचर छ, त बताव छ, इहम आ मनुष्य २ र् एकला फरे छे, (चराय ते चरण अयुवा चर्या एकलानी चर्या ते एक चर्या) ते एकलविहारीपणुं मन्नस्त अमन्नस्त एम बे मेदो	

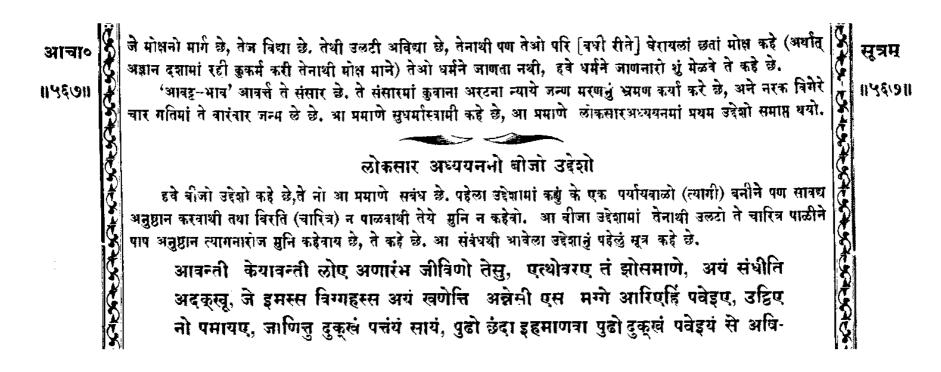
	र्भ छे. तथा ते टव्यथी भावशी एम बे भेटे छे. तेमां टव्यथी ने ग्रहस्थ पाखंडी विगेरेनं विषय कषाय विगेरे माटे एकलानं फरवं थाय.	
স্তান্থা	📲 🔏 ते द्रुव्यर्थी पतिमा धारण करेला गच्छपार्थी नोकळला जिनकल्पनि संघ विगरनी कांध मोट एकला) जेचु पढ ते छ, अन भावथी 📑	े सूत्रम
<b>ા</b> કુદરા	। 🗘 तो प्रशस्त एक चर्या राग द्वेषना विरहथी थाय छे, तेमां द्रव्यथी तथा भावथी एकचर्या ते केवळ झान उत्पन्न न यथेला तीर्थंक- 💢 रोए संयम लीधा पछीनो छद्मस्य काल छे, बाकीना वधा चार भांगामां आवे छे, तेमां मथम अमन्नस्त ' द्रव्य एक चर्यातुं ' दृष्टांत	ાપ્લરા
	💃 रोष संयम लीधा पर्छानी छद्मस्य काल छ, बाकौना बंधा चार भोगामा आवे छ, तमा मथम अमझस्त ' द्रव्य एक चयोर्नु ' दृष्टांत 🖊	5
	र्क कहे छे:-पूर्वे देशमां धान्य पूरक नामना संनिवेश्वमां जुवान वयमां देवकुमार जेवा रुपवान तापसे गामना नीकळवाना रस्ता उपर छठनो तप श्वरु कर्यो, वीजा तापसे पासेना गाममां पर्वतनी सुफामां अठम तप करीने अतापना छेवा लाग्यो पछी गाममांथी नीक-	0
	📝 छठनो तप श्वरु कयों, बीजा तापसे पासेना गाममां पर्वतनी सुफामां अठम तप करीने अतापना छेवा लाग्यों पछी गाममांथी नीक- 🕇	5
	🐧 ळतां ते तापसने ठंड ताप सहेतो देखीने लोकोए तेना गुणोथी रंजीत थइने आहार विगेरेथी तेनुं सन्मान कर्धुं, लोकोए पूजतां 🕽	
	र्दे ळतां ते तापसने ठंड ताप सहेतो देखीने लोकोए तेना गुणोथी रंजीत थइने आदार विगेरेथी तेनुं सन्मान कर्युं, लोकोए पूजतां तथा सत्कार करतां ते तपासे लोकोने कहुं के माराथी पण चीजो पद्दादनी गुफावाळो तापस वधारे कष्ट सदन करे छे, तेथी लोकोए	
	📝 तेने वारंवार स्तुति करतो जोइ तेमणे ते बीजा तापसनी पण पूजा करी, अने पारकाना गुणा गावा दुष्कर छे, एम जाणीने तेनो 🦉	
	🖞 पण सत्कार कर्यो. आ मयाणे बन्ने भाइए एकला रहीने पूजाबा माटे तप कर्यो, तैथी ते अभन्नस्त छे. आ प्रयाणे बीजा पण एक	
	र्म पण सत्कार कर्यो. आ ममाणे बन्ने भाइए एकला रहीने पूजाबा माटे तप कर्यो, तैथी ते अभन्नस्त छे. आ प्रमाणे बीजा पण एक रे चर्यांना दृष्टांतो यथा संभव विचारी ळेवा. आ प्रमाणे सूत्रार्थ कहेतां सूत्र स्पर्शिक निर्युक्तिवडे निर्युक्तिकार कहे छे.	
	अ चारो चरीया चरणं, एगटं वंजणं तर्हि छक्क। दब्वं तु दारु संकम जल थल चाराइयं बहुहा ॥२४६॥	

आचা৹	ने चार (ते चर धातुनो अर्थ गति तथा खावाना अर्थमां छे, तेनुं भावमां चार रुप बने छे,) तथा चर्या झब्द ( ३-१-१०० ना ते सूत्र ममाणे) बने छे, तेम चरण पण बने छे. एक ते अभिन्न, अर्थ (समान अर्थ) वाळा ते एकार्थ कहेवाय छे. जेना वडे अर्थ म मगट कराय ते व्यंजन झब्द छे, अर्थात् चार, चर्या अने चरण ए त्रणे झब्द एक अर्थवाळा छे, तेथी तेना जुदा निश्लेपा छ मकारे के जोग स्थापना मुगमने छोडीने झ शरीर भच्य शरीरथी जुदो 'द्रव्य चार' ते अडधी गाथामां क्ताव्यो छे, 'द्व्वं तु' तु झब्दनो के जान को जान को क्या का का का कर कर का	हें सुत्रम्	
<b>ા</b> પ્ક્ર્ગ	🖌 मगट कराय ते व्यंजन ज्ञब्द छे, अर्थात् चार, चर्या अने चरण ए त्रणे ज्ञब्द एक अर्थवाळा छे, तेथी तेना जुदा निश्लेपा छ मकारे	้ แหรุรม	
	🖞 छे, नाम स्यापना मुगमने छोडीने इ शरीर भच्य शरीरथी जुदो 'द्रव्य चार' ते अडधी गाथामां क्ताव्यो छे, 'दव्वं तु' तु झब्दनो		
	ે ગય પ્રથય છે. દેવને ગોવી શાંગ થોને છે. દોય (અંગ્રેટ) માંએ છે. ઉપાલમી તેવી મ્યાએમી મોલ છે. તેથી ઉપાયમ એક છે. ઉ જોય છે.		
	जलमां स्थलमां अनेक मकारे चाले छे, एटले लाकडानो पूल विमेरे पाणीमां बनावे छे, अने स्थलमां खाडा विमेरे ओळंगवा माटे	$\mathbf{k}$	
	🔨 लाकडां गोठवे छे, तेमज जलमां लाकडानी नाववडे चलाय छे, जमीन उपर रथ विगेरेथी चलाय छे तेमज आदि शब्दथी ते लाकडुं		
	🖡 महेल बनाववा विगेरेमां दादर बनाववामां काम लागे छे, तथा जे जे द्रव्य एक देशथी बीजा देशमां जवा माटे वपराय ते द्रव्य		
	ने चार छे. इने क्षेत्र चार निगेरे कहे छे,	$\mathbf{P}$	
	🖌 खित्तं तु जंमि खित्ते, कालो काले जहिं भवे चारो। भावंमि नाण दंसण, चरणं तु पसत्थ मपसत्थ ॥२४७॥	Ş.	
	🖈 ु जे क्षेत्रमां चार (चाळवानुं) करीये अथवा जेटऌं क्षेत्र चालीए, ते क्षेत्र चार कहेवाय छे, ते प्रमाणे जे कालमां चालीए, अथवा	5	
	🖌 जेटलो काळ चालीए ते काळ चार छे.		
	भाषमां चारके चरण ने मकारतुं छे, मन्नस्त चरण अने अप्रशस्त छे. तेमां प्रशस्त चरण ते 'ब्रान दर्शन अने चारित्र' छे, अने	Š	

সাৰা০ পু স	एनाथी उल्रद्धं अमग्रस्त चग्ण ते ग्रहस्थ अने अन्यदर्शीनीओनुं संसारी वर्तन छे. नेथी आ ममाणे द्रव्य विगेरे चार पकारनुं चरण बताबीने वर्तमानमां उपयोगीपणे साधुनो मन्नस्त भाव चार प्रश्न द्वाराए निर्युक्तिकार बतावे छे. लोगे चउद्विहंमी, समणस्स चउबिहो कहं चारो? होई विई अहिगारो, विसेसओ खित्तकालेसुं ॥२४८॥	४ ∦ ∱ सुत्रम
1148811 X 1 1	चार भकारना द्रव्य क्षेत्र काळ अने भावरुप लोकमां अम सहेनार ते अमण (यति)नो केवीरीतनो द्रव्यादि चार मकारनो चार छे ? उत्तरअहीं घृति (धैर्यता) नो अधिकार छे, एटले चार भकारे धैर्यता राखवी.	) 19 1148811
17 × 18	चार प्रकारनी वैर्घता द्रव्यथी वैर्घता—एटळे अग्स (रस रहित) तथा विरस ते तुच्छ तथा छरूखुं विगेरे भोजन मळे, तो पण तेमां वैर्घता राखवी. क्षेत्र वैर्घता—एटळे कुतीर्थिके ळोकोने पोताना रागी बनाव्या होय, अथवा कुदरतीज ळोको अभद्रक होय (तो साधुनुं वहु मान	7 5 7 5
****	न करे तैथी) साधुए उद्वेग न करवो, काळ धैर्षता—ते दुकाळ विगेरे मुझ्केलीना वखतमां जेवुं भोजन विगेरे पळे, तेमां संतोष राखवो.	30-50
-55-255 S-25-55	भाव धैर्यता—ते कोंड् आक्रोन्न करें हांसी करें अपमान करे, तोपण क्रोधायमान न थवुं, पण विशेष करीने तो क्षेत्रकाळमां इल्रकापणुं होय त्यां वधारे धैर्यता राखवानी छे, कारण के माये तेना निमित्तेज द्रव्य अने भावमां अधैर्यता थाय छे. हवे फरीथी द्रव्यादिकना भांगाथी साधुनो चार कहे छे.	

आचা৹ 🖇	पात्रोतरए अपरिग्गहे अ गुरुकुलनिसेवए जुत्ते । उम्मग्गवज्जए रागदोसविरए य से विहरे ॥२४९॥	र्म् सूत्रम्
l i i i i i i i i i i i i i i i i i i i	पावोवरए अपरिग्गहे अ गुरुकुलनिसेवए जुसे । उम्मग्गवज्जए रागदोसविरए य से विहरे ॥२४९,॥ 'पापोपरतः'—एटळे पापना हेतु जे सावच अनुष्ठान हिंसा, जूठ अदत्त आदान (चोरी) अने ब्रग्नचर्ध भंग ए पापोथी पोने दूर रहे, तथा परिग्रह न राखे ते अपरिग्रह एटले द्रव्यचारमां पांचे महात्रत पळवानुं वताव्यु, तथा क्षेत्र चार हवे वतावे छे के–गुरु- कुल ते गुरु पासे रहेवुं, तथा नेनी सेवामां रहेवुं. एटले आखी जोंदगी सुधी गुरुना उपदेज्ञ विगेरेथी ( तेमनुं मन मसन्न करीने ) चारित्र निर्मळ पाळवुं, आथी काळ चार बताव्यो. के आखी जोंदगी सुधी वधो काल गुरुनी आज्ञामां वर्तवुं.	l l
	हवे भावचार कहे छे, साधु मार्गर्थ। उलटो ते उन्मार्ग छे, एटले कोइ पण जातनुं कुकर्म होय तेनुं वर्जन करे, ते उन्मार्ग वर्जक छे. तथा रागद्वेषथी विरक्त बनीने ते साधु विद्यार करे तथा संयम अनुष्ठान योग्यरीते करे. निर्धुक्तिकारे चार बताव्यो.	
	े कारी) बने. तथा क्रुरुकुचादि (क्रुचेढ़ा) तथा ५ ल्क (खोटी) तपत्र्या करीने बहु कपटी बने अने आ वधुं क्रुत्य आहार विगेरेना लोभथी करे माटे ते बहु लोभी वने, अने तेज कारणथी वहु रजवाळो एटले बहु पापरूप कर्म रजवाळो अथवा आरंभ विगेरेमां बहु रक्त बने तेथी बहुरत कहेवाय छे, तथा नटनी माफक भोगो (संसारी सुख) लेवा वहु वेषो घारण करे ते बहु नट कहेवाय.	2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2

आন্বা০ 🖇	तेज पमाणे घणा प्रकारे ब्रडपणुं करे तेथी बहु बठ कहेवाय, तथा संसारी ऊत्यना घणा विचारो करे तेथी बहु संकल्पी (संकल्प- बाळो) कहेवाय एज प्रमाणे चोर विगेरेनी पण एक चर्या (अप्रवस्तमां) जाणवी, आवी रीतनो होय तेनी केवी अवस्था थाय, ते कहे छे:- 'आसव' विगेरे-आस्रवो ते हिंसा विगेरे छे, तेमां सक्त (संग) राखे ते आस्रव सक्त कहेवाय, अर्थात् हिंसा विगेरे पाप कर- नारो होय. 'पल्तितं'-ते कर्म-तेनावडे अविच्छिन्न छे. एटले कर्मथा अवष्टव्य (लेपायलो) छे. आवीरीते अनेक दुर्गुणवाळो होय, छतां पण पोते (लोकोने ठगवा) शुं कहे ते कहे छे:	भू भू सूत्रम भाषद्द्या
	डट्टिय—धर्म चरण (चारित्र) माटे हुं डटम करनारो छुं, एटले पतित साधु पण एज ममाणे बोले के हुं चारित्र पाछं छुं, अने ते ममाणे न पाळवाथी कर्म वढे लेपाय छे, अने ते साधु वेषधारी मोढेथी पोताने साधु बोलतो आस्रवोमां वर्ततो छतां आजी- विकाना भुथथी केवी रीते वर्ते छे. ते कहे छे. 'भामे'–मने बीजा कोइ पाप करतां न देखो एथी ते पाप छानां करे छे, अथवा ते	
	अझानथी अथवा प्रमादना दोपथी पाप करे छे, बळी 'सयायं'-सतत (निरंतर) मोइनीय कर्मना उदयथी अथवा अझानथी मूढ बनेलो अहा अने चारित्र धर्मने जाणतो नथी, एटले तेने धर्भ अधर्म नो विवेक नथी, जो आप छे, तो शुं करवुं ते कहे छेः	*****



For Private and Personal Use Only

	हिंसमाणे अणवयमाणे, पुढो फासे विपणुन्नए (सू॰ १४६)	<b>X</b> <b>X</b>	
- आবা০	🔪 आ मनुष्य लोकमां जेओ केटलाक मनुष्यो आरंभ रहित जीवनारा छे, अहीं आरंभ एटले सावद्य अनुष्ठान अथवा भमादीपणुं छे कहुं छे के	$ \Sigma $	सूत्रम्
<b>ા</b> પક્ષ્ટા	अादाणे निक्खेवे, भासुस्सम्गे अ ठाणगमणाई । सद्दो पमत्तजोगो, समणस्सवि होइ आरंभो ॥१॥	2	ા પદ્ધ ના
	कोइ पण वस्तु छेवी के मुकवी, बोलवुं. मल परठवो, स्थानमां रहेवुं. अथवा जवुं आववुं, आ वधुं कार्य साधु जो ममादथी करे, तो तेने आरंभ (नो दोष) लागे छे, पण तेथी उलडुं ते ममाद न करे, तो अनारंभी कद्देवाय छे, तेवुं निरारंभ जीवन गुजारे छे, तेवा	5	
	साधुओ समस्त आरंभथी निद्वच थएल्या छे, अने जे ग्रहस्थीओ पुत्रकलत्र के पोताना बरीर विगेरेना रक्षण माटे आरंभ करे छे, तेमना उपर जीवन गुजारे छे, तेनो भावार्थ आ छे, के सावच अनुष्ठान करनार ग्रहस्थो छे, तेमना आश्रचे पोताना देइनो निर्वाह	<b>7</b> 1	
	करवावाळा अनारंभ जोवनवाळा ने साधुओ होय छे, जेम कादवना आधारे रहेल छतां कपळ निर्छेय होय छे. नेम तेओ निर्छेप छे.		
	) जो एम छे, तो शुं समजवुं. ते कहे छे, आ सावय आरंभवाळा कर्तव्यमां संकुचित गात्रवाळों बने. अथवा अहीं जिनेश्वर कहेला धर्ममां रही पापारंभर्थी निटत्त थाय. मञ्च-ते शुं करें? उ०-ते सावय अनुष्ठानथी आवेल (थता) कर्मने क्षय करतो मुनि भावने भजे	R	
	( प्रश्नशुं आलंबन लड्ने उपरत थाय ? उ०-'अयंसंघी' विगेरे (अविवक्षित) कर्म बताच्या विनानों घात होय ते एण अकर्षक घात	#	
	2 थाय छे. जेमके, जो ? मृग दोडे छे ! एम अहीं पण ''अद्राक्षीत्'' किया छतां पण असंघि एम प्रथमा विभक्ति करी छे.) आ पत्यक्ष ] नजरे देखातो आर्यक्षेत्रमुकुलमां जन्मइन्द्रियांनी पूरी बक्ति धर्मनी श्रद्धा तथा वैराग्यलक्षणवाळो अवसर मळ्यो छे, अथवा मिध्यात्वनो	Ś	

11 45 6 9,11 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9	सय थयो छे. अथवा मिथ्यालनो हाल तेने उदय नथी, एटले सम्यत्तवनी माप्तिना हेतुभूत कर्मविवर लक्षणवाळो संघि [अवसर] अथवा धुम अध्यवसायना जोडाणरूप संघि तने मळ्यो छे, तेने तारा आत्मामां स्थापन करेलो तुं नजरे जो, एथी हवे तुं एक क्षण पण ममाद न करजे. विषय विगेरेना कारणे ममादी न धइझ, क्यो ममादी न थाय ? उत्तरः-'जे इमस्स' जे एटले जेणे तल प्राप्त कर्यु, एवा तलज्ञानीने ' जेना वडे आठ मकारतुं कर्म ' विशेष करीने ग्रहण थाय ते इन्द्रियांवाळुं विग्रह (शरीर) औदारिक छे, तेनो आ वर्त्तमाननो समय [क्षण] सुख्यमां के दुःखमां वीत्यो. अने भविष्यमां वीतशे. ते दरेक क्षण झोधवानो खभाव छे, ते अन्वेषी कहेवाय छे, अने ते सदा अममत्त रहे छे, आचार्य कहे छे के आ हुं नथी कहेतो पण 'एसमग्गे' आ कहेलो मोक्ष यार्ग आर्य पुरुषोए कहेलो छे.एटले बधा त्यागवारूप धर्भ (कुतीर्थ विगेरे) थी दूर रही मॉक्ष किनारे पहोंचेला एवा तीर्थंकर गणघरोए मकर्षथी पूर्वे कहेलो छे, वळी तीर्थकरोए पूर्वे कहेलो अने हवे कहेवातो मार्ग कहा छे, एटलुंज नही पण ते प्रमाणे वर्तवालुं छे.ते कहे छे. 'उट्टिप'-संधि (अवसर) मळेलो जाणीने धर्मचरण माटे तैयार थएलो तुं [साधु] एक लणमां पण प्रमाद न करीश. वळी बीजुं शुं समजवातुं छे? ने कहे छे–जाणिचु-दरे- क प्राणीन्ने दुरुख अथवा तेतुं मूळ कारण कर्भ जाणीने तथा मनने प्रसन्न करनारं स्रख जाणीने तुं ममादी न धइश. वळी दरेक जीवने दुःख अथवा कर्म जुदुं छे, एटलुंज नहि पण कर्मनुं मूळ कारण अध्यवसाय पण दरेक माणीनो जुदोज्र छे.ते वतावे छे, 'धुढो' जेओनो अभिमाय मथक् छे तेओ मधक् छंदवाला कर्क के. एटले जुदी जुदी जातना बन्धना अध्यवसायना स्थानवाळा छे. तेओ 'इह'	
SPECIAL SCIENCE	दुःख अथवा कर्म जुदुं छे, एटलुंज नहि पण कर्मनुं मूळ कारण अध्यवसाय पण दरेक प्राणीनो जुदोज छे.ते बतावे छे, 'धुढो' जेओनो अभिमाय मयरु छे तेओ मथक् छंदवाळा कहेवाय छे. एटले जुदी जुदी जातना बन्धना अध्यवसायना स्थानवाळा छे. तेओ 'इद' ते आ संसारमां अथवा संज्ञावाळा संज्ञी लोकमां मनुष्यो छे. अने तेज प्रमाणे बीजा जीवो पण जाणवा, अने दरेक संज्ञी पाणीनो जुदो जुदो संकल्प होवाथी तेना कार्यरूप कर्म पण जुदुंज छे, अने तेना कारणरूप दुःख पण जुदा रुपवाळुं छे, अने कारण भेद	

স্তাবা৹	SPE SPE	थाय तो अक्दये कार्य भेद थाय छे, तेथी पूर्वे कहेछं फरीयाद करवाबीने कहे छे, 'षुढो' दुःखना उपादानना भेदथी पाणीओतुं दुःख पण जुदुं जुदुं बताव्धुं कारण के बधा पाणीओने पोताना करेळां कर्म भोगववामां इश्वर (समर्थ)पणुं छे, पण वीजातुं करेछं पोते न भोगवे आहुं मानीने शुं करे ? ते कहे छे, से–्ते अनारंभ जीवी साधु पत्येक पाणीना सुख दुःखना अध्यवसायने जाणनोरो	४ १ १	त्रम्
1149011	ž	जटा जटा उपायों वर्ड माणीओंनी हिसा न करती तथा जुठू न बीछती, (संयम पाळ) तम ते पूर्ण जी (मुत्रमा माक्रुतनी अथवी )	1/ II4	\ <b>9</b> 91
	S	आर्ष वचनथी 'पइय'नो लोप थयो छे. ए ममाणे पर स्वमां पण ज्यांपद न लीधुं होय त्यां लेवुं) आवीरीते जीवहिंसा न करनारो	5	
	Ş.	बीज़ुं शुं करे ते कहे छे, पुटो−ते पांच महावतमां स्थिर रहीने जे पमाणे संयम पाळवानी घतिज्ञा लीघी छे. ते प्रमाणे पाळवामां उद्यम	90 1	
i.	Y,	करे, अने परिसह उपसर्गो आवतां तेनाथी थतः ज्ञीत उष्ण विगेरे स्पर्श अथवा दुःखना स्पर्श आवे तेने सहन करी अक्कुल न थाय		
	Ś	पण संसार असार छे विगेरे जुदी जुदी भावनाओवडे (धर्ममां) पेरे, अने पेरणा ते सम्यक्षकारे सहेवुं. पण ते दुःख पडवाथी आत्माने	X	
	¥	ट:स्वी न मानवो. (व्याकुल न थवुं) पण जे समभावे रही परीषहोने सहे, तेने शुं गुणो थाय, ते कहे छेः—	N	
	Þ	एस समिया परियाए वियाहिए, जे असत्ता पावेहिं कम्मेहिं उदाहु ते आयंका फुसंति, इति	Э́р	
	3	उदाहु धोरे ते फासे पुटो अहिया सइ, से पुढिं पेयं पच्छा पेयं भेउरधम्मंविद्धंसणंधम्ममधुवं	۲ ۲	
Î	S	अणिइयं असासयं चयावचइयं विपरिणामधम्मं, पासह एयं रूवसंधि (मू० १४७)	5	
	Ś	आप वचनथा 'पश्य ना लोप यया छ. ए ममाण पर स्वमा पण उपापद म लोपु होप त्या लघु) आवारात जावाहता म फरमारा बीज़ुं शुं करे ते कहे छे, पुट्टो-ते पांच महाव्रतमां स्थिर रहीने जे ममाणे संयम पाळवानी घतिज्ञा लीघी छे. ते ममाणे पाळवामां उद्यम करे, अने परिसह उपसर्गो आवतां तेनाथी थतः ज्ञीत उष्ण विगेरे स्पर्श अथवा दुःखना स्पर्श आवे तेने सहन करी आकुल न थाय पण संसार असार छे विगेरे जुदी जुदी भावनाओवडे (धर्ममां) मेरे, अने मेरणा ते सम्यक्षकारे सहेवुं. पण ते दुःख पडवाथी आत्माने दुःखी न मानवो. (व्याकुल न थवुं) पण जे समभावे रही परीषहोने सहे, तेने शुं गुणो थाय, ते कहे छेः— एस समिया परियाए वियाहिए, जे असत्ता पावेहिं कम्मेहिं उदाहु ते आयंका फुसंति, इति उदाहु धोरे ते फासे पुट्टो अहिया सइ, से पुद्विं पेयं पच्छा पेयं भेउरधम्मंविद्धंसणंधम्ममधुवं अणिइयं असासयं चयावचइयं विपरिणामधम्मं, पासह एयं रूवसंधि ( मू० १४७ ) पूर्वे कहेलो जे परीषहोनो मणोदक [सहेनारो] सम्मक् अथवा अभिता श्वमा भाववाळो पर्याय ते वारितने ग्रहण करीने सम्यक्र		

<b>भाचा</b> ०	पर्यायवाळो चने अथवा शमिता (ज्ञांतस्वभावी) दीक्षावाळो बने तेज स्तुत्य थाय छे पण बीजो नहिं, आ प्रमाणे परिषह अने जप- सर्भमां अक्षोभ्यपणुं बतावीने हवे व्याधिनी सहन शीलता बतावे छे. 'जे असत्ता' एटले जेमणे कामवासनाने दुर करी तृष्ण अने मणि	हैं भू सूत्रम्
1150811	तथा माटीचुं ढेफुं तथा सोनामां समान भाव धारण कर्यो छै, तेवा समताने पामेला भुनिओ पापकृत्योमां असक एटले पापना उ- ) पादानना अनुष्ठानथी दूर रहेला छे, तेमने कदाचित् आतंक ते शीघ्र जीवने पण दूर करे तेवा जीवलेण शूळ विगेरे व्याधिओ पीडा 	1 3 4 4 5 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7

	Þ	स्वक्रुतपरिणतानां दुर्नयानां विपाकः। पुअरपि सहनीयोऽन्यत्र ते निर्गुणस्य । स्वयमनुभव-	Ň
आবা৹	Ś	तोऽसौ दुःख मोक्षाय सचो। भवशतगतिहेतुजोयतेऽनिच्छतस्ते ॥ १ ॥	्री सुत्रम्
<b>ા</b> કછરમ	S S S	पोतानां करेलां दुष्ट क्रुत्योनो उदयमां आवेलो आ विपाक (फ़ळ) आवेल छे. ते तारे मध्यस्थ रहीने सइन करवो लोइए. ते प्रमाणे विपाक सइन करतां शीघ्र दुःखथी मोक्ष (छुटकारो) थशे. पण जो तुं भोगववामां सपता नहीं राखे तो ते विपाक नवा सो भवनो हेतु थशे ( चार गतिमां सेंकडो वार जन्म मरण करवां पडशे ) वळी आ औदारिक शरीर घणो काळ सुधी पण रसायण	ર્ પ્રાપ્લરના સ
	C S S S	भवनो हेतु थत्रे (चार गतिमां सेंकडो बार जन्म मरण करवां पडत्रे) वळी आ औदारिक शरीर घणो काळ सुधी पण रसायण विगेरे अमूल्य औषधोथी पोष्या छतां पण माटीना काचा घडाथी पण निःसारतर (तइन नकाम़ुं) वधी रीते हमेत्रां नान्नपामनारूं छे ते बतावे छे, 'मिदुर बम्भ ' अथवा पूर्वे अने पछी पण आ औदारिक शरीर हवे पछी कहेवाता धर्मवाळुं छे, पोतानी मेळे भेदाय ते मिदुर छे ते धर्मवाळुं जे होय, ते भिदुर धर्मवाळुं छे, एटल्ले आ औदारिक शरीरने सारी रीते पोच्युं होय, तो पण वेदनानो उदय थतां माथुं पेट आंख छाती विगेरे अवयवोमां पोतानी मेळेज भेदन याय छे, तथा हाथ पग विगेरे अवयवो पोतानी मेळेज विध्वंस (सून्य) थता होवाथी विध्वंसन धर्मवाळुं छे, तथा जेम रात्रीना अंते नकी सूर्योदय थाय, ते छुव कहेवाय, पण न्नरीर तेवुं न होवाथी अधुव कहेवाय छे, तथा अमच्युत (नान्न न थाय) अनुत्पन्न (उत्पन्न न थाय) एवा एक स्थिर स्वभाववाळुं कूटनी अंदर नित्य रहेलुं छे, ते नित्य कहेवाय, पण तेवुं नित्य क्षरीर न होवार्था अनित्य छे, तथा तेवा तेवा राया इष्ठ पाणीनी धारा माफक भाषत होय तेवु न्नरीर न होवाथी अञ्चाश्वत छे, तथा इष्	5

आचा० के कुळ आहारना भोजनथी घृति उपष्टंभ विगेरेमां औदारिकक्षरीर वर्गणाना परमाणुना अपचयथी चय तथा घटवाथी अपचय छे; एवा अाचा० के अर्मवाळुं होवाथी अयापचयिक छे, एथीज विविध परिणामवाळुं छे, तेथी ते विपरिणाम धर्मवाळुं छे, जो आवी रीते शरीर नाश-	सुत्रम्
॥ ५७३॥ है वत छे, तो ते शरीर उपर शुं अनुबन्ध (ममल) होय ? अने कइ रीते मूर्छा होय ? तेथी आ शरीरवढे कुशल (धर्म) अनुष्ठान विना श्रे बीजी कोइ पण रीते सफळता नथी; ते कहे छे:	ાષ્ટ્રહરૂ ા
पासइ आ रुपसंधि (योग्य अवसर) ने जुओ ! के नाभ्रवंत धर्मथी घेरायछं आ औदारिक शरीर छे, तेमां पांचे इन्द्रियोनी संपूर्ण झक्तिना लाभनो अवसर छे, अने ते देखीने जुदा जुदा रोगोथी उत्पन्न थयेला स्पर्ज्ञोना दुःखनो उत्तम साधु सइन करे, आ प्रमाणे (इदयचक्षुथी) देखनारने शुं थाये, ते कहे छे: समुप्पेह माणस इक्काययणरयस्स इह विप्प मुकस्स नस्थि मग्गे विरयस्स सिवेमि ( सू० १४८ ) सारी रीते देखाताने आ भेदुर धर्मवाळुं श्वरीर छे, एवुं विचारतां तेने मार्ग नथी. अर्थात् चार गतिमां भ्रमण नथी. ते कहे छे. एटले आ आत्मने बधा पापारंभोथी पर्यादामां लेवाय (कवजे रखाय) अथवा कुग्रल (धर्म) अनुष्ठानमां उद्यमवाळो कराय, तो ते आयतन कहेवाय अने ते झानदर्शन चारित्र ए त्रणमां एक रूपे होय तो ते एकायतन छे, अने तेमां रमणता करे तो आत्मा अकायतनरत छे, तेवा निस्पृदी झानी मुनि 'इह' आ झरीर अथवा आ जन्ममां विविध उत्तम भावनाओवढे शरीरना अनुपन्धयी दि	

आच्र	पम कड़ं, अथवा तेज जन्ममां वधा (आठे) कर्मनो सय थवाथी तेने नरकादि मार्भ नर्था. मझा-कोने ! डा-जे हिंसा विगेरे आध द्वारोथी निरुत्त छे. तेने संसार अमण नथी. आ ममाणे सुधर्मास्वामी कहे छे के हुं मारी स्वकल्पनाथी नथी कहेतो पण जे व वर्धमानस्वामीए दिव्य ज्ञानवढे जाणीने वचनथी कढ़ुं ते हुं तमने कहुं छुं. आ ममाणे विरत ते सुनि छे, एम कढ़ुं, हवे अवि वादी ते परिग्रहवाळो छे, एम पूर्वे कहेछुं, ते सिद्ध करे छे:- आवंति केयावंती लोगंसि परिग्गहावंती, से अप्पं वाचहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंत्तं वा अचित्तमंत्तं वा एएसु चेव परिग्गहावंती, एतदेव एगेसि महब्भयं भवइ, लोग वित्तं च णं उवेहाए, एएसंगे अवियाणओ ( सू० १४९)	गत हैं रि के सूत्रम् त- त
<u>  </u> ୟଡଃ	र् बादी ते परिग्रहवाळो छे, एम पूर्वे कहेलुं, ते सिद्ध करे छे:- अावंति केयावंती लोगंसि परिग्गहावंती, से अप्पं वाबहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा	2 2 1170811
	अचित्तमंतं वा एएसु चैव परिग्गहावंती, एतदेव एगेसिं महब्भयं भवड़, लोग वित्तं च णं दुं उवेहाए, एएसंगे अवियाणओ ( सू० १४९ ) जे कोर प्रवण्धो आ लोकमां परिग्रयक के तेमनी प्राप्ते आवी रीतनो प्रसिद्ध के, 'मे अर्थ वा' जे प्रसिदाय (लेवाल)	2
	2) जे कोइ मनुष्यों आ लोकमाँ परिप्रदयुक्त छे तेमनी पासे आवी रीतनों परिप्रद छे, 'से अर्प्य वा' जे परिप्रदाय (लेवाय) 🗙 परिग्रह छे ते अल्प (थोडो) होय, जेम छोकराने रमावानी कोडीओ, विगेरे अथवा धनधान्य, सोन्रुं, गाम, देइा, विगेरे घणो प	ते भू रि- के
	🌔 ग्रह होय: अथवा तूण, लाकडुं विगेरे मूल्यथी अणुं ( ओछी किंमतनुं ) होय: अथवा प्रमाण (कदमां) नानुं वज्र (हीरो) वि	नेरे 1
	होय; अथवा मूल्पथी तथा ममाणथी स्थूळ (मोटुं) हाथी घोडा विगेरे होय: अने आ वस्तुओ सचित्त अथवा अचित्त होय. बतावेळा परिग्रहवडे परिग्रहवाळा बनीने ए परिग्रह राखनारा ग्रहस्थीओ साथेज वेषधारी साधुओ रहेनारा होय. (जेमके ग्रहस् घर अने वेषधारी मठ के स्वमालिकीनो उपाश्रय तथा ग्रहस्थने धन तेम वेषधारीतुं द्रव्य, तथा ग्रहस्थने नोकर-चाकरने बेटा-बेटी	खं रू नो 🗙

आचा॰ 🖇	परिवार. तेम वेषधारीने नोकर-चाकर अने चेळा-चेळीनो व्यवसाय आ ममत्वभावे परिग्रद छे. ) अथवा आ छ जीवनिकायमांज अथवा विषयभूत विस्तूरूप] थोडुं विगेरे जे द्रव्य कढ्युं; तेमांमूर्छा करतां परिग्रदधारी बने छे.	ँ } स्₅	रम्
11×0×11	अथवा आ छ जीवनिकायमांज अथवा विषयभूत [वस्तुरूप] योडुं विगेरे जे द्रव्य कह्युं; तेमांमूर्छा करतां परिग्रहधारी बने छे. तेज भमाणे अविरत [संसारी] रह्या छतां हुं विरत छुं, एवुं बोल्लतो अल्प∸परिग्रह राखवाथी पण परिग्रहधारी बने छे. एज ममाणे बीजां व्रतोमां पण जाणवुं. कारणके तेणे आस्त्रवोनुं निवारण न करवाथी एक देश (थोडो) अपराध करवाथी पण संपूर्ण अपराध-	א די וועי אי	૭૬૬
	पणानो संभव थाय छे. इंका-जो, आ प्रमाणे अल्पपरिग्रह पण राखवाथी परिग्रहपणुं थाय छे. तो. हाधमां भोजन करनारा दिगम्वर-[वस्तरहित] तथा सरजस्क बोटिक विगेरे जे छे, तेओ अपरिग्रहवाळा ग्रुनि यशे. कारणके, तेमने तेवा थोडा परिग्रहनो पण अभाव छे. आचार्यनुं समाधानतेम नथी; कारणके, 'परिग्रहोनो अभाव छे.' ए हेतु अप्रसिद्ध [जूटो] छे. सांभळो सरजस्कने अस्थि विगेरेनो परिग्रह छे, अने बोटिकोने पीच्छी विगेरेनो परिग्रह छे. आ (बाह्य परिग्रह छे,) तथा अंदरनो परिग्रह पण छे. कारणके, शरीरधारी छे, तथा आहार विगेरे परिग्रह तेमने विद्यमान छे. धर्मने टेको आपवारूप ते होवाथी निर्दोष छे एम कहेशो; तो, अमने पण ते समानज छे. तो पछी, दिगम्बर (नग्नपणाना) आग्रहनो कदाग्रह शा माटे जोइए ? हके, जे अल्प (थोडो) विगेरे पण परिग्रह राखे छे, अने अपरिग्रहपणानो अभिमान राखे छे,	2 8 4 8 4	
S. C.	आब्रइनो कदाग्रह शा माटे जोइए ? इके जे अल्प (थोडो) विगेरे पण परिग्रह राखे छे, अने अपरिग्रइपणानो अभिमान राखे छे, तेमनो आहार क्ररीर विगेरे मोटा अनर्थने माटे थाय छे, ते बतावे छे 'एत द्वेव' ए अल्पबहुपणा विगेरेना परिग्रहवढे केटलाकने परिव्रहपणुं नरकावि गमनना हेतुरणाथी अथवा बघाने तेनो अविश्वान थतों होवाथी महामयरूप थाय छे, कारणके आ प्रकृति	P CX	

STREET,	(स्वभाव) परिग्रहनी छे, अयवा ते परिग्रहधारी पोते बधायो चमके छे. [ के मारो परिग्रह कोइ न लइ ले ! ] अथवा दिसम्बरने आ न्नरीर नभाववा आहारादिक लेवा बीजुं अल्प पात्र लकत्राण (कपडुं) विगेरे रुप धर्मोपकरणना अभावथी ग्रहस्थना घरमां आहार वापरतां सम्यग् उपायना अभावथी अविधिए अशुद्ध आहार विगेरे स्वातां कर्मबन्ध्रथी उत्पन्न थएल महाभयनो हेतु होवाथी महाभय	GI
11492 114	वापरतां सम्यग् उपायमा अभावथी अविधिए अशुद्ध आहार विगेरे खातां कर्मवन्ध्रथी उत्पन्न थएल महाभयनो हेतु होवाथी महाभय छे, तथा आ धर्म झरीरने बधी रीते आच्छादन (ढांकवाना) अभावथी बीभत्स होवाथी बीजाओने महा भयरूप छे. आ ग्रभाणे परिग्रह महाभय छे, तेथी कहे छे के 'लोग'-असंयत लोकनुं अल्प विगेरे विशेषवाळुं द्रव्य तेने महाभयरूप छे, ( सूत्रमां च झब्द पुनः ना अर्थमां छे, णुं वाक्यनी झोभा माटे छे) अथवा लोक वित्तने बदछे लोकहत लड़ए तो आहार भय मैथुन परिग्रह संज्ञावाळुं लोकहत्त छे. ते लोकतुं वलण मोटा भयने माटे छे. पत्नुं उत्तम साधुए झ परिज्ञावडे जाणीने मत्याख्यान परिग्रा- बहे ते लोकोनी संसारी चेष्टाओने त्यागी देवी, ते त्यागनारने शुं थाय, ते कहे छे, 'एएसंगे'-ए थोडुं घणुं द्रव्य संग्रह करवातुं अ- थवा झरीर आहार विगेरेनी मूर्छाने न करवाथी ते परिग्रह राखवाथी थतुं दुःख ते साधुने न थाय बळीः से सुपडिखुऊं सुवणीयंति नच्चा पुरिता परमचक्स्यू विपरिक्कम्मा, एएसु चेव बंभचेरं त्तिबेमि, से सुर्य च मे अज्झरथयं च मे-बधरमुक् लो अज्झरथेव, इरथ विरए अणगारे दीराहयं ति- तिक्खए, पमत्ते बहिया पास, अपमत्तो परिवए, एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जासि त्तिबेमि (सु० १५०) लोकसारअध्ययने द्वितीयोहेशकः ॥५-२॥	1130411 130411

आचा॰ 🏅	से०ते परिग्रह छोडनारने सारीरीते पतिबद्ध तथा सारी रीते उपनीत ज्ञान विगेरे छे, (परिग्रह छोडनारने सारीरीते त्रण रत्नोनी पाप्ति छे) एवं जाणीने गुरु कहे छे, हे मानव ! तुं परम ज्ञान चक्षुवाळो बनीने अथवा मोक्षनी एकदृष्टिवाळो बनीने जुदी	ू ए २ सूत्रम्
∦ଏଓଓା  ଜୁ	रत्नोनी माप्ति छे) एवं जाणीने सुरु कई छे, हे मानव ! तुं परम झान चक्षुवाळो बनीने अथवा मोक्षनी एकद्दष्टिवाळो बनीने जुदी जुदी जातना तप अनुष्ठाननी विधिवडे संयम अनुष्ठानमां पराक्रम कर' जा माटे आ पराक्रम करवानो उपदेज्ञ करे छे ? 'एएमुचेव' जेओ आ परिग्रहथी विरक्त बनीने परम चक्षुवाळा थया छे, तेओमांज परमार्थथी ब्रह्मचर्ध छे, पण बीजामां नथी, कारणके ब्रह्म चर्थनी नववाड बीजामां नथी, अथवा ब्रह्मचर्य नामनो आ श्रुतस्कंघ छे, अने तेनुं वाच्य पण ब्रह्मचर्थ छे, ते आ ब्रह्मचर्य परिग्रह न	ર્ષ દુ
	राखनाराओमांज छे. आ प्रमाणे सुधर्यास्वामी कहे छे, के में कढ़ुं, अने इवे कहीश, ते बधुं सर्वज्ञना उपदेशयी कहुं छुं, ते बतावे छे, 'सेम्रअंचमे'—जे जे कढ़ुं, अने जे इवेकहीश, ते में तीर्धकर पासे सांगळ्युं छे, अने ते प्रमाणे मारा आत्यामां स्थिर थयुं, माटे	18
Š	अध्यात्म छे, एटले मारा चित्तमां पण तेज ममाणे छे, शुं छे? ते बतावे छे, बन्धथी मोक्ष ते बन्ध प्रमोक्ष छे, ते अध्यात्ममांज छे, अने अध्यात्म ते ब्रह्मचर्य छे, ब्रह्मचर्यवाळानो मोक्ष छे. वळी इत्थ आ परिग्रह राखवाथी विरत तेछे, प्र०-कोण छे? ड०-जेने गृह नथी ते अणगार छे, ते साधु दीर्धरात्र (आखी जींदगी) सुधी परिग्रहना अभाववाळो बनीने भूख तरस विगेरेनां आवेलां कष्टोने	× S
* s	सहन करे, बळी ग्रुरुउपदेश करे छे. ' पगत्ते '-विषयो विगेरे प्रमादोथी धर्मथी विग्रुख थएला गृहस्थो तथा वेषधारीओने तं जो.	C
k	देलीने शुं करवुं ? ते कहे छेः—अभमत वनीने संयम-अनुष्ठानमां यत्न करे. वळी, 'एयम्' आ पूर्वे कहेळुं संयम-अनुष्ठान मुनिनुं सर्व स्वमौन छे. ते सर्वइनुं कहेळुं छे, ते सारीरीते पाळवुं आ ममाणे हुं कहुं छुं.	Ş

	त्रीजो उद्देशो. बने नीनो कोनो को तेने अर्थ आ प्राणो के नीना कोलागं का है। अनियनानी के प्रसिद्धनानों के सने आ	
আৰা০ স্ব	इदे त्रीजो उद्देशो कहे छे. तेनो अर्थ आ ममाणे छेः−वीजा उद्देशामां कख्रुं केः−अविरतवादी ते परिग्रहवाळो छे, अने आ त्रीजा उद्देशामां तेथी उऌटुं कहे छे. अ( प्रमाणे संबन्धथी आवेऌा आ उद्देशानुं पहेऌुं सूत्र कहे छे.	ी सूत्रम् र
1149611	आवंती केयावंती, लोयंसि अपरिग्गहावंती एएसु चेव अपरिग्गहावंती, सुचा वइं मेहावी	A 1130511
2	पंडियाण निसामिया समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए जहित्थ मए संधी झोसिए एवमझत्थ	3
5	संधी दुज्जोसए भवइ, तम्हा बेमि नो निंहणिज वीरियं (सू० १५१)	5
Ţ	संधी दुज्जोसए भवइ, तम्हा बेमि नो निहणिज्ज वीरियं (सू० १५१) आलेकमां जे कोइ परिव्रइवाळा विरत साधुओ छे. ते बघाए आ अल्प विमेरे द्रव्य छोडे; छते अपरिव्रहधारी मुनि बने छे, अथवा छ जीवनीकायमां ममत्त्वभाव तजवाथी अपरिव्रहधारी थाय छे.	Ś.
		đ
13	मः—ठीक. पण, अपरिग्रहभाव केवी रीते बने ? ने कहे छे. 'सोचा वईति' ( वीजी विभक्तिना अर्थमां मथम विभक्ति छे,	2
S.	तेथी) बाणी ते आ तीर्थकरे कहेला आगमरूप-आज्ञाने सांभळीने मेघावी (पर्यादामां रहेलो) अतज्ञान भणेलो हेयऊपाटयने	
- It	समजी तत्त्व ग्रहण करावानी पटत्ति जाणनारो बने; तथा, पंडित ते मणधर आचार्य विगेरेनां विधि नियमरूप-वचनोने सांभळी	ž
$\mathbf{\tilde{z}}$	सचित्त-अचित्त वस्तुनो जाण वनी तेना परिव्रहनो त्याम करी अपरिव्रही बने पःठीक तेम इशे; पण, निरावरण ज्ञान उत्पन्न	Š
S.	समजी तत्त्व प्रदण करावानी पटत्ति जाणनारो बने; तथा, पंडित ते गणधर आचार्य विगेरेनां विधि नियमरूप-वचनोने सांभळी सचित्त-अचित्त वस्तुनो जाण बनी तेना परिव्रहनो त्याग करी अपरिव्रही बने पर्शठीक तेम इन्ने; पण, निरावरण ज्ञान उत्पन्न थएला तीर्थकरोनो क्ये समये वाणीनो यांग (उपदेश) थाय छे, के अमे सांभळीए ?	5

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

আৰা০	डत्तरः—धर्मकथाना अवसरमां, मः–तेओए केवो धर्म कन्नो ? एवी शंका दूर करवा कहे छे. 'समिय' समता एटछे, त्रजु- मित्रमां समभाव राखवो; तेनावडे आर्थोए धर्म कहेलो छे. कह्युं छे केः—	सूत्रम
	जो चंदणेण बाहुं, आर्ळिपइ वासिणाव तच्छेति । संथुणइ जोअणिंदति, महेसिणो तत्थ समभावा ॥१॥ जो चंदणेण बाहुं, आर्ळिपइ वासिणाव तच्छेति । संथुणइ जोअणिंदति, महेसिणो तत्थ समभावा ॥१॥ जे कोइ भक्तिथी ग्रुनिने ग्रुजा उपर चंदननो छेप करे, अथवा वांसलाथी वामडी छोले, अथवा कोइ स्तुति करे, कोइ निंदे, तो पण ते ग्रुनि बधा जीवो उपर समभाव राखे छे. (तेज प्रहर्षि छे) अथवा आर्य एटखे देशथी भाषाथी के उत्तम आवरणयी तेओ आर्थ (सुधरेला) छे, ते बधा उपर भगवाने समभाव राखी उपदेन्न आपेलो छे. तेज कह्यं, छे के: जहा पुण्णस्त कत्थइ, तहा तुच्छस्स करथइविगेरे जेम पुण्यवानने धर्म संभळावे, तेम तुच्छने पण धर्म संभर्णावे अथवा शमि (शम शांतिधारक) नो भाव ते शमिता ते झांत इदय राखीने बधा हेय धर्म (कुरीवालो) ने त्यागवाथी आर्थ बनेला तेमणे मकर्षथी अथवा मथमथी आ धर्म कह्यो छे अर्थात् पांचे इन्द्रियो तथा मनने कवजे करवा वढे (केवळज्ञान म.प्त करी) तीर्थकरोए धर्म कह्यो. ठीक एम हन्ने, तेवीरीते वीजाओए पण पोताना अभिमाय ममाणे धर्मी कह्या छेज, आवी शंका थाय, ते दूर करवा आचार्य कहे छे, के तेम नहीं. आ धर्म भगवानेज कह्यो छे, ते कहे से, 'जहेत्थ' विगेरे देवता अने मजुष्यनी सभामा भगवाने आ ममाणे कह्यं, जेम में अर्ही ज्ञान विगेरे मोक्ष संघि (अवसर) सेवन कर्यो छे, अथवा आ ज्ञानदर्शन चारित्ररूप मोक्षमा भां अथवा समभावरुपमां तथा इन्द्रिय नोइन्द्रियना उपज्ञममां में	1149911 } }

সাৰা৹	मोक्षाभिछाषी बनी पोतानी मेळज संघाय (ते संधि) अथवा जे कर्मसंतति वन्धाय अने एक भवथी बीजा भवमां साथे जाय ते आठ मकारना कर्मसंततिरूप छे. तेने क्षय करी में (तीर्थकरोए) घर्म कह्यो. तेज मोक्ष माग छे, पण बीजो नहीं. ते कहे छे जेम में अहीं कर्मसमूह (संधि) तोड्यो. तेम अन्यत्र बीजा अन्य तीर्थी के कहेला मोक्षमार्गमां कर्मसंततिरूप संधि दुःक्षप ते दुःखे करीने	भू यू सूत्रम्
แระอท	अहा कमसमूह (साध) ताड्या. तम अन्यत्र बाजा अन्य ताया के कहला माक्षमागमा कमसतातरूप साथ दुःक्षय त दुःख करान अस्य थाय तेम छे, कारण के ते असमीचीनपणे होवाश्री तेमां खरा उपायनो अभाव छे. जो जिनेश्वरे अहीं कर्म संघि तोडचो छे, तो शुं समजवुं ते कहे छे, जेम आज मार्गमां रहीने उत्क्रष्ट तपश्चर्यावढे भें कर्म स्वपाच्युं, तेज म्माणे अन्य मुम्रुघ्नु पण संयम अनुष्ठानमां तथा तपमां पोतानी शक्तिने योजे, पण प्रमाद न करे, सुधर्मास्थामीए पोताना	11401
	त्र जा जिन पर जहा कम साथ ताड्या छ, ता छ समजबु त कह छ, जम जाज मागमा रहान उत्क्रष्ट तपत्र्यावह म कम दि खपाच्युं, तेज ममाणे अन्य मुम्रुधु पण संयम अनुष्ठानमां तथा तपमां पोतानी शक्तिने योजे, पण प्रमाद न करे, सुधर्मास्थामीए पोताना ते शिष्यने वह्युं, के आ ममाणे परम कारुष्यथी भींजायेला हृदयवाळा अने परहितनो एक उपदेश देनारा श्रीवीरवर्धमानस्थामीए	2
	र सपाच्युं, तेज ममाणे अन्य मुम्रुश्च पण संयम अनुष्ठानमां तथा तपमां पतिानी शक्तिने योजे, पण प्रमाद न करे, सुधर्मास्वामीए पोताना भिष्ठ्यने कहुं, के आ प्रमाणे परम कारूप्यथी भींजायेलः इदयवाळा अने परहितनो एक उपदेश देनारा श्रीवीरवर्धमानस्वामीए अमने कहुं छे. पक्ष क्यो माणस एवी क्रिया करनारो थाय ? ते कहे छे. जे पुठ्युट्टाई नो पच्छा निवाई, जे पुठ्युट्टाई पच्छा निवाई, जे नो पुठ्युट्टायीनो पच्छा निवाई सेऽवि तारिसिए सिया, जे परिन्नाय लोगमन्ने सयंति ॥ सू० १५२ ॥ जे कोइए संसारनो (अस्थिर) खभाव जाणवावडे धर्म चरणमा एक तत्पर मनवाळो बनीने प्रथमथी दीक्षाना अवसरे संयम	2
	से रवि तारिसिए सिया, जे परिन्नाय लोगमन्ने संयंति ॥ सू० १५२ ॥	Ž
	जे कोइए संसारनो (अस्थिर) खभाव जाणवावडे धर्म चरणमां एक तत्पर मनवाळो बनीने मथमथी दीक्षाना अवसरे संयम अनुष्ठान करवाने तैयार थएलो होय ते 'पूर्वोत्थायी' छे, अने पछीथी अद्धा तथा संवेगथी विशेषथी वधता परिणामवाळो होय, तो ते चारित्रथी छष्ट यतो नथी, (पडवाना स्वभाववाळो ते निपाती छे. एटले चारित्र लेइने निपात करे ते निपाती छे, आवो निपाती	
	🔇 ते चारित्रथी भ्रष्ट थतो नथी, (पडवाना स्वभाववाळो ते निपाती छे. एटछे चारित्र छेइने निपात करे ते निपाती छे, आवो निपाती	Ś.

<b>आ</b> चा॰	न होय ते नोनिपाती कहेवाय) एटले सिंहपणे घरथी नीकळी दीक्षा ले, अने लीघा पछी सिंह माफक पाळे, ते गणधर भगवंत 🕅	सुत्रम्
1146811	न होय ने नोनिपाती कहेवाय) एटले सिंहपणे घरथी नीकळी दीक्षा ले, अने लीघा पछी सिंह माफक पाळे, ते गणधर भगवंत जेवा पहेला भांगामां साधु जाणवा. बीजो भांगो सूत्रवडे बतावे छे, पहेलां चारित्र ले ते पूर्वोत्यायी पछी कर्म परिणतिना विचित्रपणाथी तेवी भवितव्यताना का- रणे नंदिषेण माफक पडी जाय (चारित्र मूकी दे) अने कोइ तो गोष्ठामाहिल माफक सम्पग्दर्शनथी पण दूर थाय.	ાપ્ડલ્શા
1	🚺 🔰 त्रीजा भांगामां अभाव होवाथी लीधो नथी. ते आ छे. 'जनापुब्बुहायां पच्छानिवीती' एटळ पूर्व दीक्षा छ, ता पछा निपति 🕂	. Î
	हैं जेणे पूर्व दीक्षा लीधी नथी; ते पाछळथी पडतों नथी, ते आवरत एटले, गृहस्थ जोणवा; तन सम्यग् विरातना अभावथा (दे 1) पोते दीक्षा छेतो नथी: अने दीक्षा लीघा पछीज पडवानों संभव थाय: पण, दीक्षा लीघा विना तेनो संभव न होबाथी पडतो नथी;	
	अथवा ते भांगामां शाक्यमत विगेरेना साधुओ जाणवा. क.रण के तेमनामां चारित्र छेवुं अने मुकीदेवुं ए जैन रीतिए बस्नेनो अभाव छे. क्रंकाःग्रहस्थो चोथा भांगामां छे ते बोळवुं योग्य छे, कारणके तेमनामां सावद्यअनुष्ठान छे, अने दिशा न छेवाथी महावतने छे छेवानी मतिझारूपमंदीर (मेरु) पर्वतना आरोप (चडवा)ना अभावथी पडवानो अभाव छे. पण शाक्यमत विगेरेने दीक्षा छेवाथी	2 5
	र्ष पडवानो संभव छे, तो केवी रीते पडवानो अभाव न होय ? द्रि उत्तरः'सोपि'-ते शाक्यादि साधु साधुसग्रुदायने पण पंचमहाव्रतभारना आरोषणना अभावथी तथा तेमनां अनुष्ठान	

আৰা৹ <b>ম</b>	सावद्य व्यापारवाळां होवाथी पूर्वोत्यायी नथी, तेम दीक्षाना अभावथी पश्चात् निपाता पण नथी तेथी ते ग्रहस्थ समानज छे, कारण के ते बन्नेमां आस्रवद्वारोतुं रोकण नथी, अथवा उदायी राजाने मारनारा विनय रव साधु जेवो कपटी चोथे भांगे छे. तेज ममाणे बीजा पण जेओ सावद्य अनुष्ठान करनारा छे. ते पण तेवाज छे, ते बतावे छे. जेओ खयूथ्या (जैन मतना) पासत्था (पतित साधु	प्र भूमि भूमि	म्
114/211	बीजा पण जेओ सावध अनुष्ठान करनारा छ. ते पण तेवाज छे, ते बतावे छे. जेओ खयूथ्या (जैन मतना) पासत्थों (पतित साधु विगेरे बन्ने मकारनी परिज्ञावडे लोकखरूपने जाणी (वत समजीने छेइने) पाछा रांधवा रंघाववा माटे तेज लोक (गृहस्थो)ने		
	विगेरे बन्ने प्रकारनी परिक्रावडे लोकखरूपने जाणी (वत समजीने छेइने) पाछा रांधवा रंधाववा माटे तेज लोक (ग्रहस्थो)ने आश्रये रहे छे, अथवा ग्रहस्थने शोत्रे छे (तेना उपर ममल करी आधाकर्मी आहार ले छे.) तेओ पण ग्रहस्थ सरखाज जाणवा,	S.	
	आ पोतानी बुद्धिथी नहीं पण शासकारतुं वचन छे, ते बतावे छेः— एयं नियाय मुणिणा पवेइयं, इह आणाकंखी पंडिए अणिहे, पुबावररा यंजयमाणे, सया सीलं सुपेहाए	Ś	
¢,	सुणिया भवे अकामे अझंझे, इमेण चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ? ॥ सू॰ १५३ ॥	Ś	
¢,	एतद्—जे उत्थान निपात विगेरे पूर्वे वताव्युं. ते केवळ ज्ञानना अवलेकनवढे जाणीने तीर्थकरे कह्युं छे, अने आ बीजुं कह्युं छे, 'इह' आ मौनींद्र पवचनमां रद्देको तथा तीर्थकरना उपदेशने सांभळवानी इच्छावाळो ते, आज्ञाकांक्षी आगमना अनुसारे पटत्ति	Ś	
S,	करनागे छे. प्र:-कोण एवो छे ? ड:-सद-असदना विवेकने जाणनारो तथा स्नेइरहित रागद्वेपथी मसक्त रातदिवस गुरुनी आज्ञामां	21	
Č,	रहेनारो यत्नवाळो थाय; ते बतावे छे. रात्रिना पहेला पहोरे तथा छेला पहोरे सदाचारथी वर्ते; अने वचला वे पहोरमां यथोक्तवि- घिए निद्रा ले, अने वैरात्रादिक (सूत्रार्थ-चिंसन) करे. आ ममाणे रात्रिनी यत्ना बतावथी दिवसतुं पण समजी लेवुं कारणके,	<u>,</u>	
S.	घिए निद्रा छ, अने बरात्रादिक (सूत्राथ-चिसन) कर. आ ममाण रात्रिना यत्ना बतावथा दिवसनु पण समजा छेवु कारणक,	8	

স্তান্তা	आदिअंत छेवाथी मध्यनुं अवश्य आवी जाय छे. 'किं च' वळी 'सदा' सर्वकाळ १८००० भेदवाळुं झीलव्रत अथवा संयम पाळे; अथवा झीळ चार मकारनुं छे. महाव्रतने सारीरीते पाळवां, त्रण गुप्तिओ पाळवी.	ते 1 स्त्रम्
1146311	पांच इन्द्रियोनुं दमन करतुं; कपायनो निग्रह करवो. आ ममाणे चार मकारतुं झोळ विचारीने मांसना अगेपण पालने करजे; पण एक नीमेष ( आंखने फरकवानो काळ) मात्र पण ममादिवज्ञ न थइश. प्रः-नयो माणस ज्ञीलनो संशेक्षक थाय ? ते कहे छे:- जे झीलनां रक्षणनं फल (मोक्षगमन) छे. तथा क्रुझील सेववानुं फल नरकगमन विगेरे आगमधी जाणे छे, ते गीतार्थसाधु	「   'YC੩    本
Ş		
	े उपलक्षणथी मूळगुण (महावत) ९ण लीघां, तेथी अर्हिसक सत्यवादी ९ण थाय, विगेरे समर्जी छेवुं. इंका—जीवयी बरीर जुदुं छे, आवी भावना भावनार तथा पोतानुं बळ वीर्थ गोपच्या विना धर्म करनार १८००० झीलींग	
	धारण करनारने तथा उपदेक्षमां कहेवा मुजब वर्त्तवा छतां पण मारो सर्वथा कर्ममल दर नथी थयो, तेथी तमे तेलुं असाधारण कारण कहो ! के जेना वडे हुं कीघ संपूर्ण कर्ममल कलंकथी रहित थाउ, हुं आपना उपदेक्षथी सिंह साथे पण युद्ध करीक्ष, कारण के कर्म क्षय करवा माटे हु तैयार थयो छुं, तेथी कंइ पण मने अज्ञक्य नथी तेनो उत्तर सूत्रकार आपे छे, इन्द्रिय तथा मनरूप औदारिक क्षरीरवडे तुं युद्ध कर, कारणके ते विषयम्रुखनो पिपासु वनी	A-5-4-5-

স্তাৰা৹	र्म स्वेच्छाए चाली तारुं अहित करे छे, तेथी एनेज सुमार्गे चालीने बन्न कर, बीजा बाग्र जन्न साथे युद्ध करवानी ज्ञी जरुर छे ? अंदर रहेला तारा छ रिपुनो जय करवाथी बधुं कार्य सिद्ध थरो, तेथी बीजुं कंइ पण वधारे दुष्कर नथी पण आज संयम विमेरे सामग्री अगाथ संसारसम्रुद्रमां भटकता जीवने करोडो करोडो (हजारो) भवे पण मळवी दुर्लभ छे ! ते सूत्रकार बतावे छे:—	भ र भूत्रम्
ાાકટશા	र्म जुद्धारिहं खल्ज दुल्लहं, जहित्थ कुसलेहिं परिन्नाविवेगे भासिए, चुए हु बाले गब्भाइसु रज्जइ,	2 114-281
		2
1	अस्ति चय पंतुच्चइ, रूबाल वा छणाल वा, स हु एग सविद्धपह मुणा, अन्नहा लागमुवह- माणे, इय कम्म परिण्णाय सबसो से न हिंसइ, संजमई नो पगब्भइ, उवेहमाणो पत्तेयं सायं, बण्णाएसी नारमे कंचणं सबलोए एगप्पमुहे विदिसप्पइन्ने निबिण्णचारी अरए पयासु ॥१५४॥	S
	🕻 वण्णाएसी नारमे कंचणं सबलोए एगप्पमुहे विदिसप्पइन्ने निबिण्णचारी अरए पयासु ॥१५४॥	Ĩ.
	💒 દ્રાપ્ત છે, અચાત તે દુઃલ્યોળ માંસ ચાય છે, જાણે છે. જો	242
-	ननु पुनरिदमतिदुर्रुभमगाधसंसारजलधिविश्रष्टम, मानुष्यं खद्योतकतडिछताविलसितप्रतिमम् ॥ १ ॥ आ अति दुर्लभ मनुष्यपणुं अगाध संसारसम्रुद्रमां पडेलाने खरजुवा (अगीयो कीडो) जेवुं के वीजळीना बनकारा जेवुं थोडो जन्म प्रवेगकं गरेकं हे । निगेरे समजब जोवा	5
	आ अति दुर्लभ मनुष्यपणुं अगाध संसारसम्रुद्रमां पडेलाने खरजुवा (अगीयो कीडो) जेवुं के वीजळीना झबकारा जेवुं थोडो काळ रहेनारुं मळेळुं छे ! विगेरे समज <sup>बु</sup> जोइए.	8
	S काळ रहेनारं मळेलुं छे ! विगेरे समज <sup>बु</sup> जोइए.	<b>S</b>

৽आषा	अथवा नीजी मतिमां ' जुद्धारियं च दुछहं ' पाठ छे, तेमां संप्राम (लडाइनुं) युद्ध भनार्य [जंगलीपणानुं] छे, अने परिषह विगेरेथी लडवुं ते आर्थ युद्ध छे, तेथी ते दुर्र्लभ छे. माटे हे ज्ञिष्य ! तेनी साथे युद्ध कर, तेथी तारां वधां कर्षना क्षयरूपमोक्ष थोडा	सुत्रम्
	अथवा नीजी मतिमां ' जुद्धारियं च दुछहं ' पाठ छे, तेमां संग्राम (रूडाइचुं) युद्ध अनार्य [जंगलीपणाचुं] छे, अमे परिषद विगेरेथी लडयुं ते आर्थ युद्ध छे, तेथी ते दुर्रुभ छे. माटे दे झिच्य ! तेनी साथे युद्ध कर, तेथी तारां बधां कर्मना सयरुप-मोक्ष योडा वर्खतमांज थन्ने; अने तेथी भावयुद्ध करवा योग्य औदारिक-शरीर मेळवीने कोइक मजुष्य तो, तेज भवे मरुदेवी माफक बधां कर्मनो सय करे छे, कोइ तो, भरत राजा म.फक (धूर्व भवो आश्रयी) सात आठ भवमां मोक्ष मेळवे छे, अमे कोइ ती अर्धपुद्रल परावर्तन थया पछी मोडा मेळवे छे, पण अपर (अभवी) मोक्षे नहीं जाय जा माटे ? ते कहे छे, जेम जे प्रकारे आ संसारमां इन्नल तीर्थ- करोए परिज्ञा विवेक (परिज्ञान विज्ञिष्टता) कोइनो कंइ पण अध्यवसाय संसारनो विचित्र हेतु वताव्यो छे, अने तेज चुद्धिमाने स्वीका- रवो जोइए, इवे पूर्वे कहेलुं परिज्ञानचुं जुदालुदापणुं बताववा कहे छे, (भघ्य अने अभघ्यपणुं स्वभाववीज छे. भव्य काळांतरे पण मोक्षमां जज्ञे, पण अभव्य नहीं जाय) कोइ दुर्लभवोधि दुर्लभ पण मजुष्यपणुं पामीने तथा मोक्षगमनना एक हेतुरूप धर्म पामीने पण कर्मना उदयथी फरीथी पण धर्मथी ऋष्यद वाल ( सूर्स ) जीब गर्भ विगेरेमां जाय छे, एटछे गर्भ जेवां मध्म छे, एवी कुमार यौवन विगेरे अवस्थाओमां ग्रुद्ध थढ़ जाय छे, अने (एने भियमानीने) ए अवस्थाओ साथे मारो वियोग न थाओ एवा विचारवालो बने छे, अथवा धर्मथी भ्रष्ट धढ़ने एवां काम करे छे, के जेनावढे ते बाळजीव तेवी तेवी गर्भ विगेरेनी पीडाओना स्थानमां उत्यन्न याय छे, ''रिज्जइ'' (कोइ मतिमां पाठ छे) एटछे जाय छे (एवो अर्थ छेवो) म०ठीक, एम इन्ने पण आचु इन्फ्र इन्द्रियना विषयमां रागी थएलो, अथवा रस इन्द्रियमां सर्भ इन्द्रियमां रागी थएलो	5
K	🕻 अने इवे पछी पण तेज कहे छे, 'रूपे'-चक्क इन्द्रियना विषयमां रागी थएलो, अथवा रस इन्द्रियमां स्पर्न्त इन्द्रियमां रागी थएलो	X

সা <b>খা</b> ০	सिएामां प्रवर्ते छे, क्षणनो अर्थ हिंसा छे, तेथी जेम ते हिंसामां वर्त्ते छे, तेम जूठ विगेरेमां पण प्रवर्त्ते छे, पण रुप विषयोमां प्रधान होवाथी तेथा ते रुपवाछं होवाथी (तुर्त तेमां मन दोडतुं होवाथी) लीधुं छे. अने आस्तव (पाप) द्वारोमां हिंसा मुख्य अने प्रथम होवाथी ते लीधेल छे, अर्थात अज्ञानी माणस रुप विगेरे माटे धर्मथी अष्ठ थडने गर्भ विगेरेनां दःख भोगवे छे. एम आ जिनेवरना	र् सूत्रम्
	तिशेमी मरत छ, तेणनी अथ हिसा छ, तथा जम ते हिसामी वर्त्त छ, तम जुठ विगरमा पेण मर्वत्त छ, पेण रुप विषयामा प्रधान होवाथी ते था ते रुपवाळुं होवाथी (तुर्त तेमां मन दोडतुं होवाथी) लीधुं छे. अने आसत (पाप) द्वारोमां हिंसा मुख्य अने मथम होवाथी ते लीघेल छे, अर्थात अज्ञानी माणस रुप विगेरे माटे धर्मथी ऋष्ट यइने गर्भ विगेरेनां दुःख भोगवे छे. एम आ जिनेश्वरता मार्गमां कहेल छे, पण जे डाह्या माणसे आ विषय रसने पाळुं गर्भादि गमननो हेतु जाणीने पोते धर्मथी ऋष्ट न थइने हिंसा विगेरे आसत द्वारथी दूर रहे छे, ते केवो थाय, ते कहे छे. ते एकलोज जीतेन्द्रिय मुनि त्रण जगतने माननारो बनीने सम्यग् रीते तेणे आसत द्वारथी दूर रहे छे, ते केवो थाय, ते कहे छे. ते एकलोज जीतेन्द्रिय मुनि त्रण जगतने माननारो बनीने सम्यग् रीते तेणे मोक्ष मार्ग पग तले खुंदी नांख्यो छे, एटले ज्ञान दर्शन चारित्रवडे मोक्ष मार्ग संमुख कर्यो छे. तथा बीजी प्रतिमां 'संविद्ध भये' पाठ छे, एटले ते जीतेन्द्रिय मुनिष्ट भय जाण्यो छे, एटले जो हिंसा विगेरे आसतवद्वारथी दूर रहे ते मुनिन खुंदेला मोक्ष मार्गवाळो छे. वळी बीजी रीते मुनि होय ते कहे छे, जे विषय कपायर्था पराभव पामेलो छे, हिंसा विगेरे कुत्यमां रक्त छे, तेवो गृहस्थ अथवा पासंदी जन समूह छे तेने राधवा रंधाववामां अथवा औदेशिक तथा सचित्त आहार बिगेरेमां रक्त छे. तेवानी ( दुर्दशा विचारी ) तेनी संगति न करतो, अने तेवा पाममां पोताना आत्माने न जोडतो, अश्वभ व्यापार छोडीने, मोक्ष मार्ग जाणनारा मुनि बने छे, लोकने उलटा मार्गे चालेला जोइने पोते श्व करे ? ते कहे छे. पूर्वे कहेला अश्वभ हेतुओथी जे कर्म बांच्युं छे तेना उपादान कारणो संपूर्ण इ परिज्ञावडे समजीने मत्याख्यान परिज्ञावडे सर्वथा छोडे, केवीरीते छोडे ते कहे छे. 'स' ते कर्म छोडनारो काय वाचा अने मन वडे जीवोनी हिंसा न करे, न मरावे, मारताने भल्छो न जाणे, वळी पापोना उपादानमां प्रवत्ति पोताना आत्माने रोके, अथवा सत्तर प्रकारना संयममा आत्माने लोडे, अथवा आ चार	

স্তাবা৹	र्म र संपूर्ण पाळवा संयम माफक पोते आचरण करे, वळी 'नो पगब्भइ' एटले असंयम कर्ममां (पापना उदयथी) पवर्त्ततो छतां मगल्भता र (धृष्टपणुं) न करे, पापना उदयथी छानुं क़कर्म करे तो पण लज्जायमान थाय, (पश्चात्ताप करे) पण घृष्टता न करे ( के एमां युं पाप	्त्रम्
11 <b>4</b> 56911	संपूर्ण पाळवा संयम माफक पोते आचरण करे, वळी 'नो पगब्भइ' एटले असंयम कर्ममां (पापना उदयथी) मवर्चती छतां मगल्भता (अष्टपण्यं) न करे, पापना उदयथी छातुं कुकर्म करे तो पण लज्जायमान थाय, (पश्चात्ताप करें) पण घृष्टता न करें ( के एमां युं पाप छे ?) वळी, आ वताववाथी एम सूचव्युं के मोक्ष मार्ग जणेलो सुनि कोध न करे, न जाति विगेरेनो अहंकार करे, न कपट करे, न लोभ करे शुं आलंबीने आ करे ? ते कहे छे. 'उरशेक्षमाणः' वधां पाणीना मनने पोतातुं अनुकुळ ते साता (सुख) छे, पण बीजाना सुख बडे पोते सुखी नथी, तेम पारकाना दुःखे दुःखी नहीं, तेषुं जाणीने पोते हिंसा न करे, दरेक माणीना सुखने वि- वारतो सुनि शुं करे ? ते कहे छे, जेनावडे मर्श्वसा थाय ते वर्ण (कीर्ति) छे. तेनो अभिलापी बनीने बधा लोकमां कोइपण जातनो पापारंभ न करे. अथवा तपसंयम विगेरेनो आरंभ पण यशकीर्तिं माटे करे नहीं, पण मवचन (जैनज्ञासन)नी मभावना माटे करे, तेवा मभावको नीचे सुजव छे: प्रावचनी धर्म्मकथी वादी नेमित्तिकस्तयस्वी च। विद्यासिद्धः रूयातः कविरपि चोद्धात्तका स्त्वष्टो ॥१॥ सिद्ध तं भणेलो, धर्म कथा कहेनार, वादी (न्यायनो अभ्यासी) ज्योत्सी (जोर्झी) तपश्चर्या करनार, विद्या (चमत्कारवाल)) सिद्ध तं भणेलो, धर्म कथा कहेनार, वादी (न्यायनो अभ्यासी) ज्योत्सी (जोर्झी) तपश्चर्या करनार, विद्या (चमत्कारवाले)) सिद्ध मंत्रवाळो. कवि ए आठ धर्मना मभावको छे. अथवा वर्ण ते रेप, तेनो अभिलापी न वने एटले सुर्गधी तेल विगेरे नलगाहे, केवो बनीने आ सदाचार पाळे? 'एको'-वर्था मलकललंक दूर थवाथी एक ते मोन्न छे, अथवा रागद्वेपना रहितरणाथी एक ते संयम छे. देमां जेत्रं सुख गएछं छे, तथा मोन्न अथवा तेना जपायमां एक दृष्टि (लक्ष्य) राखीने कंश्यण पापारंभ न करे, वळी मोन्न त्रा दू	પ્રત્ણા

आचा०	संयम तरफ छे. ते दिशा, अने ते सिवायनी बीजी विदिशा छे, तेमांथी मकर्षे तरेलो ते विदीक् मतीर्ण छे, अने एवो होय ते आरंभ रहित बने, कुमार्गनो परित्याग करवाथी ते पापारंभनो अन्वेषी न होय, वळी चरण ते चार छे, अने ते अनुष्ठान छे. निर्वि- ण्णनुं अनुष्ठान करे ते निर्विण्णचारी छे, क्यांथी होय? ते कहे छे. 'प्रजास्वरतः' वारंवार जन्मे ने प्रजा (प्राणीओ) तेमां अरत होय, पटळे तेना आरंभथी निहत्त होय, अथवा ममल विनानो होय, अने शरीर विगेरेमां पण जे ममल रहित होय ते निर्विण्णचारीज होय छे, अथवा प्रजा (स्त्रीओ) तेमां अरक्त होय ते आरंभमां पण निर्वेद (मोहरहित) होय, कारणके कारणना अभावमां कार्यनो पण अभावज होय छे, अने जे मजामां अरक्त अने आरंभरहित छे, ते केवो होय? ते कहे छे:—	र् सूत्रम्
1146611	एटले तेना आरंभथी निष्टत्त होय, अथवा मयल विनानो होय, अने श्वरीर विगेरेमां पण जे मयल रहित होय ते निर्विण्णचारीज होय छे, अथवा मजा (स्त्रीओ) तेमां अरक्त होय ते आरंभमां पण निर्वेद (मोहरहित) होय, कारणके कारणना अभावमां कार्यनो पण अभावज होय छे. अने जे मजामां अरक्त अने आरंभरहित छे. ते केवो होय ? ते कहे छे:	e nyeza S
	से वसुमं सबसमन्नागयपन्नाणेणं अप्पाणेणं अकरणिजं पावकम्मं तं नो अन्नेसी, जं संमंति पासहा तं मोणंति पासहा जं मोणंति पासहा तं संमंति पासहा, न इमं सकं सिढिलेहिं	5
	अहिजमाणेहिं गुणासाएहिं वंकसमायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसंतेहिं, मुणी मोणं समायाए धुणे सरीरगं, पंतं छ्हं सेवंति वीरा सम्मत्तदंसिणो, एस ओहंतरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरए	5
	वियाहिए त्तिबेमि ॥ सू० १५५ ॥ लोकसारेतृतीयोद्देशकः ॥ ५–३ ॥ बसु ते द्रव्य छे, अने अहीं तेनो अर्थ संयम छे, ते जेने होय ते निद्वचारंभवाळो छे. अने ते मुनि बसुवाळो छे, तथा जे	

আন্বা৹	आत्माने सर्व सम्पत्मकारे आवेखे [ मळेखं ] महान ते बधा पदार्थोंनो भकाज्ञ करनारुं छे. तेवा आत्मावडे ( पदार्थोतुं पुरुं झान माप्त करेखाए ) जे पापकृत्यो करवा योग्य नथी ते पोते कदीपण करवाने इच्छतो नथी, अर्थात पोते परमार्थने जाणेखो होबायी पोते सावध अनुष्ठान करतो नथी, जे सम्यग् मझान छे, आ जगत मत्यागत सूत्रवडेज बतावे छे. सम्यग् एटछे सम्यग्झान अववा सम्यक्त छे. तेनी साथे चारित्र छे, आ बलेतुं सहभावपणुं होवाथी एकतुं प्रहण करवाथी बीजुं पण् प्रहण करेखं जाणवुं, ए न्याय छे, जे	सुत्रम्
114C 9.11	सावध अनुष्ठान करतो नथी, जे सम्यग् प्रझान छे, आ जगत पत्यागत सूत्रवडेज बतावे छे. सम्यग् एटछे सम्यग्झान अथवा सम्यक्त छे. तेनी साथे चारित्र छे, आ बजेनुं सहभावपणुं होवाथी एकनुं प्रहुण करवाथी बीजुं पण प्रहण करेखुं जाणवुं, ए न्याय छे, जे आ सम्यग्झान अथवा सम्यक्त्व छे. ते [ हे ज्ञिष्यो ] तमे जुओ के मुनिनो भाव ते मौन छे, पटछे संयम अनुष्ठान ते मौन छे. तेने	ાપ્ડલ્ગા
	े जुओ, तथा जे मौन छे, ते सम्यग्ज्ञान अथवा निश्चय सम्यक्त्व छे. ते तमे जुओ, कारणके ज्ञाननुं फळ बिरति छे. तथा ज्ञान छे ते सम्यक्त्वने मकट करवापणे छे. तेथी ते सम्यक्त्वज्ञान चरण त्रणेनी एकता जाणवी. अने आ जेवा तेवाथी पाळवुं ज्ञक्य नथी, माटे	
	कहे छे के आ सम्यक्त्व विगेरे त्रण सारीरीते करवां तेने क्षक्य नथी ने कोने ? क्विथिल पुरुषो जेओ अल्प परिणामपणे मंद वी- र्थवाळा छे, तथा जेमनांमां संयम तपनी थीरज तथा इढपणुं नथी तेमने संयम पाठवो अक्षक्य छे, वळी [आद्रैः] पुत्र कलत्र विगेरेना मेमथी जेमनुं इदय भींजायछुं छे, तेमने पण संयम दुष्कर छे, तथा जेमने गुणो ते क्वब्द विगेरेनो आस्वाद छे, तेमने संयम अक्षक्य	5
	छे, वळी वक्र समाचारवाळा (कपटी) ओने अझक्य छे, तथा विषय कपाय विगेरेथी प्रमादी छे तथाजेओने घर उपर ममल छे. ते छे, वळी वक्र समाचारवाळा (कपटी) ओने अझक्य छे, तथा विषय कपाय विगेरेथी प्रमादी छे तथाजेओने घर उपर ममल छे. ते अगर सेवनारा (मठधारी बनेला) ने पाप वर्जनरूप संयम (मौन) अनुष्ठान करतुं अशक्य छे, [सूत्रमां अ नो लेप थवाथी गार छे. पण अगार लेवुं.] मः-त्यारे केवी रीते झक्य थाय? सुनि ते त्रण जगत्ने माननारो, तेनुं मौन ते मुनिपणुं (वधां पापकर्म त्यागवारूप) छे. ते प्रहण करीने औदारिक क्ररीर अथवा कर्म क्षरीर दूर करे, ते घूनन (दूर करवुं) केवी रीते थाय ? ते कहे छे, पान्तवासी अथवा	

স্তাৰা৹	भ बाल चणादि अथवा अल्प आहार ले, ते पण विगइ रहित छलो ले, आवो आहार कोण ले ? वीर पुरुषो कर्म विदारण करवाने समर्थ होय तेवा, वळी ते केवा ले ? सम्यक्त्वदर्शिओ अथवा समत्वदर्शिओ ले, अने जे तुच्छ छलो आहार लानारो ले, तेने शुं गुण थाय ते कहे ले के, उपर बतावेल उत्तम गुणवालो भावौध (संसार) ने तरे ले, कोण तरे ? ग्रुनि होय ते, (अने तेवा गुण	भू री सूत्रम्
แรงจม	👔 धारण करावया ) इमणाज वतमानकाळमा ताण (तया जवा)ज छ, अने त बाह्य अभ्यतर संगना अभावया सक्त जवाज छ. 👘 👔	2 1149011
	🗙 मः—आवो कोण छे ? उः—जे सावद्य अनुष्ठानथी दिरत होय ते. आ ममाणे बताव्यो सुधर्मास्वामी कहे छे के में एम	
	🛱 भगवान महावीर पासे सांभळ्युं ते तमने कढ़ुं.	*
	🖌 ।) लोकसारअध्ययनमां त्रीजो उद्देश्वो समाप्त थयो ।।	8
	S Constant	<u>í</u>
	🛃 चोथो उद्देशो.	
	👔 हवे चोथो उदेशो कहे छे, तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे, पहेला उद्देशामां हिंसा करनार विषयारंभ करनार एकलविहारी होय	Ś
	🖌 तो एण तेने मनित्वनो अभाव बताव्यो. एण बीजा अने त्रीजामां तो हिंसा अने विषयारंभ तथा परिव्रह छोडवावडे साधएणं छे	
-	र्ते तथा हिंसा करनार परिग्रहधारीना दोषो बताव्या. अने तेनाथी विरत (म्रक) होय तेज मुनि छे. एम बताव्यं. अने आ चोथा	$\mathbf{k}$
	र्दे तथा हिंसा करनार परिब्रहधारीना दोषो बताव्या. अने तैनाथी विरत (मुक्त) होय तेज मुनि छे, एम बताव्युं. अने आ चोथा अं उद्देशामां एकला फरनाराने मुनिपणानो अभाव छे, तेथी तेनो दोषो बताववावडे कारणो कहे छे. आ ममाणे संवन्धवी आवेला	5
	) चोथा ब्रदेशांचुं आ पहेछं सूत्र छेः	S

সান্বা৹	गामाणुगामं दूइजमाणस्स दुजायं दुप्परकंतं भवइ, अवियत्तस्स भिक्खुणो ॥ सू० १५६ ॥	र सूत्रम
<b>II'S</b> S7II	बुद्धि बिगेरे गुणोनो ग्रास करे (नाम करे) ते ग्राम छे. एक गामथी बीजे गाम जबुं ते ग्रामानुग्राम छे, दूयमान ते विचरतो (धा- तुना अनेकअर्थ छे) अर्थात गाम गाम जे साधु तेने केवो दोष लागे ते कहे छे, दुष्ट गमन ते दुर्यात छे पटले एकलो विचरे तो निनीदय छे, तेने अनुकूल मतिकूल उपसर्गना कारणे कांतो अरणीक मुनि माफक ते ग्रहस्थ बनी जाय. तथा गतिमां भेद करवाथो दुष्ट व्यंत- रीनी जंघा छेदवा माफक (प्रतिकूल उपसर्भमां चारित्रथी अश्रद्धावाळो) थाय, एटले एकलविहारीने गमन करतां उपरनो दोष लागे छे, तथादुष्ट पराक्रांत एटले एकलो साधु जे मकानमां रहे, तेने चारित्रश्रष्ट थवानुं कारण थाय छे. जेमके स्थूलभद्रनी इर्षा करनार कोझ्या वेक्याने घेर चोमासुं करवा जनार सिंह गुफावासी मुनिने पतित थवा वखत आव्यो, अथवा चतुष्ट्रभीषित भर्तृकाना घेर रहेला मुनिने पोते महासत्ववान होवाथी अक्षोभ होवा छतां पण दुष्पराक्रांत थयुं, पण ए ममाणे बधाने दुर्यात दुष्यराक्रांत यतुं नथी, ते बता- ववा विशेष खुलासो करे छे, के अव्यक्त (भिक्षा लेनार् ते) भिक्षुने ते दोष लागे छे, ते अव्यक्त स्थुत अने वयथी थाय छे. ते बतावे	1149.211 149.211
	ि छे, श्रुति अञ्यक्त ते आचार मकल्प (ब्रहत् कल्प) अर्थथी न भण्यो होय, आ स्थविरकल्पीने आश्रयी छे, पण गच्छथी निकळेला जिनकल्पीने नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तु सुधीनुं झान जोइए. अने वयथी अव्यक्त ते गच्छमां रहेलाने १६ वर्ष अने जिनकल्पीने ३० वर्षनी उंगर जोइए, अर्ही चोमंगी याय छे. [१] जे श्रुत तथा वयथी अव्यक्त ( अपूर्ण ) छे तेने एकलविद्वार न कल्पे, कारण के तेने संयम तथा आत्मा ( पोता )नी	5

সামা০	ि विराधनानो संभव छे. [२] श्रुतथी अव्यक्त पण वयथी व्यक्त छे, तेने पण अगीतार्थपणाथी संयम तथा आत्म विराधनानो संभव होवाथी एकड विहारनो निषेघ छे.	. सुत्रम्
<b>શ</b> બ્લુરા	न विहारना निषय छ. [३] तथा श्रुतथी व्यक्त पण वयथी अव्यक्त होय तेने पण बाळकपणाथी सबै प्रकारे पर भवना कारणे अने विशेषथी चोर तथा के कुलिंगि (अन्य दर्भनी बाबा बिगेरे) नो भय छे, तेथी तेने पण एकलविहार न कल्पे. [४] पण जे बस्ने प्रकारे व्यक्त छे, तेने कारण पढे अथवा प्रतिमा स्वीकारी होय, अथवा (उचित्त सोबतीना अभावे) एकल-	ાપ્યુરા
	🖌 विहार करवो पढे तो करे, आवाने पण कारणना अभावमां एफछविदारनी आज्ञा आपी नथी. कारण के ते  एकछविद्वारमां इर्या 🕅 र्रे मधिति तया गप्ति विगेरेमां घणा ढोषो थाय छे. ते बतावे छे.	5
	[१] एकलो भगतां जे इर्यापय (मार्ग) जोतो चाछे, तेने पछवाडे क्रतरा विगेरेनुं देखवुं बनी क्षके नहीं, अने क्रतरा विगेरेने देखवा जाय तो इर्या पयतुं भान न रहे, ए प्रमाणे वधी समितिओनुं जाणी छेवुं, वळी अजीर्णना कारणे अथवा वायुना रोकवायी अथवा रोगो उत्पन्न यतां संयम तथा आत्मानी विराघना थाय. तेथी जैन न्नासननी पण हीलना याय, तथा तेना उपर दया खावीने	I.
	प्रदर्भो तेनी चाकरी करे, तो अज्ञानपणाथी छकायनुं उपपर्दन करतां संयमने वाधा उपजावशे, अने तेवो दयाछ युदस्थ न मळे तो युदवा न करवाथी ते साधुनी आत्मविराधना थाय, तया अतिसार (झाडा) विगेरेमां पेशाव झाडा, विगेरेथी क्षपडां तथा शरीर खर- इंदाइ जवाथी दुगंच्छा आवतां लोको जैन धर्मनी हीलना [निंदा] करे, वळी गामडा विगेरेमां रहेतां ब्राझण विगेरे केश खंचन विगेरेथी	ע

	रें अधिक्षेप [तिरस्कार] करतां परस्पर विवाद थतां मारामारीनो पण वखत आवे, आ वधुं गच्छमां रहेलां समुदायमां विचरताने न समवे, कारण के क्रोध विगेरे थतां गुरु उपदेस आपी बन्नेने शांत राखे. क्रां छे छे	
<b>आ</b> षा०	🤾 संभवे, कारण के क्रोध विगेरे थतां गुरू उपदेश आपी बन्नेने शांत राखे. कर्षु छे छे	) सूत्रम्
<b>ા</b> ઙઙ્ર્શ	S STRATTORING STRA	D 1149,311
	एँ छे. अर्थात् समुदायमां रहेनारो कोइयी लडे तो गुरु उपदेश आपे के आ मार विगेरेनु दुःख पण सारुं छे. कारण के पाछळथी दुर्गतिनो संभव नथी पण जे संघाडाथी जुदो पडी एकलो विचरतो होय तेने फक्त दोषोनोज संभव छे. साहंमिएहिं संमुज्जएहिं एगागिओ अ जो विहरे। आयंक पउरयाए छकाय वहंमि आवडइ ॥ १ ॥	8
	र दुगातना समय नया पण ज संघाडाया जुदा पडा एकला विचरता हाय तन फक्त दायानाज समय छ. ते साहंमिएहिं संमुज्जएहिं एगागिओ अ जो विहरे । आयंक पउरयाए छकाय वहंमि आवडइ ॥ १ ॥	7 8
	र्म साहंमिएहिं संमुज़एहिं एगागिओ आ जो विहरे । आयंक पउरयाए छकाय वहंमि आवडइ ॥ १ ॥ पोताना सम्रदायना साधु योग्य विदार करता होय, तेमने छोडीने जे एकलो विचरे, तेने रोगोनो वघारो थतां छकायना वधमां	¥ S
	🐧 ते पडे छे, (दोषो लगाडे छे)	ぞ 
	🤾 एगागिअस्स दोस्सा इत्थी साणे तहेव पडिणीए । भिक्खऽवसोहि महत्वय तम्हा सविइजए गमणं ॥२॥	
	👔 एकला फरनाराने स्त्री कूतरो तथः पत्यनीकथी दुःख थवा संभव छे, तथा गोचरीनी अशुद्धि तथा महाव्रतमां पण दोपो लागे	÷.
	🖒 माटे बीजा साधु सहित विचरवुं. पण गच्छमां रहेनाराने तो घणा गुणो थाय छे, तेनी निश्राए बीजो बाळ हद वमेरेने उद्यत वि-	5
1	ूँ हारनो स्वीकार थाय, कारणके पोते तरवामां समर्थ होप, ने बीजो अक्षक डुबतो कोइ लाकडाने वलगेलो होय, तेने पण पोते तारे	Ž.

জাৰা৹	छे, आ ममाणे गच्छमां पण योग्य विहार करनारो बीजा सीदाता (येसी रहेला) ने विहार करावे छे, आ ममाणे एकला विचरताना दोषोने जाणीने तथा गच्छमां विचरताना गुणो जाणीने कारणना अभावमां पंडित अने जम्मरलायक साधुए पण एकलविहार न करवो, तो अगीतार्थ अने नानी उपरवाळाए तो क्यांथी एकल विहार करवो ?	सूत्रम्
<u> </u>	कड्डाजेनो संभव होय तेनो मतिषेध थाय, पण एकाकी विहारनो संभव नथी कारण के क्यो मूर्ख साधु सोवतीओने छोडीने 🕻 वधा दुःखोतुं स्थान एवो एकछ विहार पसंद करे!	1145811
	उत्तरः	
	स्वतंत्रता जे रोगरूप छे, तेने औषघतुल्य माननाराने वधां दुःस्रोना मवाइमां तणाताने वचवा माटे सेतु [पूल] समान संपूर्ण कल्याणतुं एकस्थानरूप-शुभ आचारना आधाररूप-गच्छमां रहेनारा साधुने ममादयी भूल यतां तेने ठपको अपाय; त्यारे, ते साधु सदुपदेशने न गणतां सारा धर्मने विचार्या विना कषाय-विपाकनी कढवाशने दीलमां न छेतां परमार्थने विचार्या विना कुल पुत्रता	}
	ि सदुपदर्शन न गणता सारा यमन विचाया विना कराय—विपाकना कडवाउन दालमा न छता परमायन विचाया विना कुल पुत्रता भू (स्वानदानी) पछवाढे मूकी वचन मात्रथी पण कोइने ठपको आपतां सुखना बांछको बनवा माटे न गणाय एटली आपदाबाळा थवा ज	
	(सानदानी) पछवाडे मूकी वचन मात्रथी पण कोइने ठपको आपतां सुखना वांछको बनवा माटे न गणाय एटली आपदावाळा थवा माटे गच्छमांथी नीकळी जाय छे, अने पछी तेओ आ लोक तथा परलोकना अपायो (दुःखोने) मेळवे छे. कई छे:	
	जह सायरंमि मीणा, संखोहं सायरस्स असहंता। णिति तओ सुकामी निग्गयमित्ता विणस्संति ॥१॥ जेम सागरमां रहेलां माछलां सम्रुदनो क्षोभ न सहन करीने मुख मेळक्या बहार जतां नाम्न पामे छे, तेज ममाणे मुखाभिलाषी	
	जेम सागरमां रहेलां माछलां सम्रुद्रनो क्षोभ न सहन करीने मुख मेळक्वा बहार जतां नाक्ष पामे छे, तेज ममाणे मुखाभिलाबी 🙀	ļ

	र साथ एकलो पडतां नाज पासे के. ते नीचली साधायां बनाबे के	
<b>आ</b> चা৹	रे साधु एकलो पडतां नाज पामे छे, ते नीचली गाथामां बताबे छे. एवं गच्छसमुद्दे सारणविईहिं चोईया संता। णिति तओ सुहकामी, मीणा व जहा विणस्संति ॥१॥ गुच्छ सम्रद्धां ग्रहेत साधने प्रगटनी प्रेयतां प्रेयता तात्रों से तंपनी जीवनी लगा के ने जलाय तंत्रक प्रायस	स्त्रम्
<b>ા</b> યલુલ્લા	में गच्छ समुद्रमां रहेता साधुने ममादथी भूलतां प्रेरण करतां पोते कंटाळी नीकळी जाय; तो, ते सुखना वांच्छक माछला से माफक नाश पामे छे.	ાપ્ટ્યા
	🕺 गच्छंमि केइ पुरिसा सउणो जह पंजरंतरणीरुद्धा। सारणवारणचोइय पासत्थगया परिहरंति ॥३॥	(
	🐧 🔰 अङ्गनी पक्षीने जो. पांजरामां पूरेल होय; तो, जीवहिंसा विगेरे न करी अके. तेज ममाणे स्मारण ( दोषने याद कराववा )	¥
	्री वारण (पापयी अटकाववा) अने धर्ममां प्रमाद करवाने भेरणा करवाथी पासत्था (ढीलापणाने) पाम्या होय; छतां पण गच्छमां	2
	र रहेला साधुओ पाछा सुधरी जाव ळे.	5
	🔇 जहाद्यापोयमपक्ख जायं, सवासया पविउमणं मणागं तमचाइया तरुणमपत्तजायं	<u>í</u>
4	🦂 ढंकादि अवत्तगमं हरेजा ॥ ४ ॥	
	जेम पक्षीचुं बच्चुं पाँखो विनानुं पोताना माळामांथी नीकळवानी इच्छा करे; त्यारे, पांखोना जोर विनानुं ते बच्चुं आम तेम	
	🖇 कुदका मारतां तेने मोर विगेरे उपाडी जाय छे. उपर प्रमाणे सिद्धांत पूरा भण्या विना, अने छायक उम्मर विना सुरुष ठपको ह	S.
	के इदका मारतां तेने मोर विगेरे उपाडी जाय छे. उपर प्रमाणे सिद्धांत पूरा भण्या विना, अने लायक जम्मर विना गुरुष ठपको दे आपतां जे समूदाइथी रीसाइ नीकळी जाय; ते तीर्थीक घ्वांत्र विगेरेथां आष्ट्र थाय छे ते आस्त्रकार बताबे छे:	

স্তাহা০	वयसावि एगे वुइया कुप्पंति माणवा, उन्नयमाणेय नरे महया मोहेण मुज्झइ, संबाहा बहवे- भुज्जो २ दुरइकम्मा अजाणओ अपासओ, एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स दंसणं तदिडीए तम्मुत्तीए तप्पुरकारे तस्सन्नी तन्निवेसणे जयं विहारी चित्त निवाई पंथनिज्झाई पलि बाहिरे,	भू भू सूत्रम् भू ॥५९६॥
1149 <b>६</b> 11 🔓	वाचिम प्रणो महिल्ला ॥ म० १५७ ॥	ହି ॥ <b>୯</b> ९६॥
	कोइ वखत तप संयमनां अनुष्ठान विगेरेमां खेद आवतां; अथवा, प्रमादथी भूछतां गुरु विगेरेए धर्मना कारणे वचनथी पण टपको आपतां परमार्थने नहीं जाणनारा केटलाक साधुओ क्रोधायमानथाय छे, अने बोले छे के, "भा गुरुए मने आटलावधा साधुओ वच्चे ठपको आप्यो. में शुं गुनोह कर्यो हतो ? अथवा, आ बीजा पण तेवी भूल करनारा छे. मने पण एटलोज अधिकार छे. तेथी मारा जीवितने पण धिकार हो ! विगेरे विचारतां महामोहना उदयवडे क्रोधरूप-अंधारावडे ढंकायली चक्षुवाला तेओ साधुनो (श्वांतिरूप)-सम्रुचित आचार छोडीने बचे मकारे झानथी तथा, वयथी अज्ञक्त बनेला जेम, समुद्रमांथी बहार जतां माछलुं नाज पामे; तेम गच्छमांथी नीकळीने तेओ एकला फरतां धर्मभ्रष्ट थाय छे, अथवा कोइ माणस वचनथी एम कहे के: "आ माधामां लोच करावेला मेलथी सरीर गंधातावाला मगत अवसरे (दहाडो चडेज) आपणे देखवा. (अर्थात आ अपशुकन थया के सामा मल्ल्या.) आवुं बोलतांज केटलाक साधु क्रोधश्री अंधा बनी जाय छे, अथवा कोइनो स्पर्क्ष थाय; तोपण, कोधायमान	るでのためためためとう

आचा० रे जाण्यो होय	छे, अने कोपायमान यइ बीजा साथे लढे; तेथी एवा अनेक दोषो जे गुरुथी जुदा पड्या होय; सिद्धांत य; तो तेने रक्षकना अभावे दोषो थाय; पण, गुरु साथे होय; तो, लडनारने उपदेश आपे के:	नो परमार्थ न 🖁	सुत्रम्
॥५९७॥ २ आकृष्टन बुद्धि केम करवो रे केम करवो जो र जो र जा वारेने उन्नत (घर्ष रे मंझाय छे	न मतिमता तत्त्वार्थांन्वेषणे मतिः कार्या । यदि सत्यं कः कोपः ? स्यादन्तां किं तु क (मान पुरुषे कोध करतां विचार करवोः अने तत्त्व घोधवामां बुद्धि जोडवी. जो, ते कद्देनारतुं बोलवुं सत्य (मान पुरुषे कोध करतां विचार करवोः अने तत्त्व घोधवामां बुद्धि जोडवी. जो, ते कद्देनारतुं बोलवुं सत्य ? अने तेतुं बोलवुं जूटुं होय; तो, तारे कोप शुं काम करवो ? (कारणके के ते तने लागतुं नयी.) (कारिणि कोपश्चेत्, कोपे कोपः कथं न ते ! धमार्थकाममोक्षाणां प्रसद्य परिपान्धिनि तारे बगाडनार उपरज कोप करवो होण, तो ते कोप उपरज तारो कोप केम यतो नथी कारण के धर्म अर्थ ज अतिश्चय विघ्रकारक आ कोप छे, (कोपवाळो माणस चारेने भूली जाय, अने अनर्थ करे छे) विगेरे मश्च ( अतिश्चय विघ्रकारक आ कोप छे, (कोपवाळो माणस चारेने भूली जाय, अने अनर्थ करे छे) विगेरे मश्च ( या टएको आपतां आ लोक अने परलोकनुं बगाडनार स्वपरने बाधा करनार कोधने लोको पकडी राखे एटछे कार्थ अकार्यना विचारना विवेकथी शुन्य याय छे, तेवो माणस मवळ मोहनीय कर्मना उदयथी अथवा आ एटछे कार्थ अकार्यना विचारना विवेकथी शुन्य याय छे, तेवा मुझायलाने कोइष शीखामण आपवा कांइ क ए वाणीथी तिरस्कार कर्यो होय त्यारे, पोते जाति विगेरे कोइपण जातनो मद उत्पन्न थतां मानरूप मेर्डपर्य न थाय छे, के हुं आवो ! तेनो पण आ तिरस्कार करे छे, घिकार छे मारी उंच जातिने ! घिक् छे मा	इयिन ॥ ९॥ होय; तो, कोप ॥ २ ॥ काम अने मोक्ष ए-न्या कारणे छे ? उ:-जेने ज्ञानना उदयथी ज्ञां होय, अथवा	114°,011

	घिक् छे मारा ज्ञानने ! आ ममाणे अभिमानग्रहथी वेरायेलो. वचनना ठपका मात्रथी पण गच्छमांथी नीकळी जाय छे, अथवा नीकळ्या पछी बीजा साथे क्लेज्ञ करवाथी विटंबना पामे छे अथवा कोइ ओछी बुद्धिवाळा मनुष्ये तेने कुलाव्यो होय के आ उत्तम कूळमां उत्पन्न थएलो, सुंदर चेहरावाळो, तीक्ष्ण बुद्धिवाळो कोमळ, वचनवाळो बधां झाल्ल, जाणनारो. भाग्यज्ञाळी सुखथी सेववा	
आবা৹ 🖇	नाकळ्या पछा बाजा साथ चल्ल्य करवाया विद्यना पान ७ जपवा कार जाला दुद्ध्वाळा मतुरुप एन कुलाण्या होय के जा उत्तम कूळमां उत्पन्न थएलो, सुंदर चेहरावालो, तीक्ष्ण बुद्धिवाळो कोमळ वचनवालो बधां झाख जाणनारो भाग्यशाळी सुखथी सेववा	सूत्रम्
ાાયલ્ડા 🕻	योग्य छे, एवां साचां ज् <b>ठां वचन सांभळीने उंचे चढावेलो अ</b> हंकारी बनीने भहान चारित्रमोदथी अथवा संसारना मोदयी छुंझाय छे, अने ते अहंकारथी महाशोहे छुंझायेलाने कोइ बचनथा पण जरा ठपको आपे, तो गच्छमांथी नीकळी जतां ओऌं भणवाथी माम माम	114961
1300 PUS	विचरतां शुं दुःख थाय ते कई छे, ते ओछुं भणेठाने एकला फरतां उपसर्ग संवन्धी पीडा थाय, अथवा जुदा जुदा रोगो संवन्धी पीडा वारंवार थाय ते पीडाओने एकला विचरता साधुने सास्नोने न जाणवाथी निरवद्य विधिए दूर करवी मुझकेल छे, केवा साधुने मुझकेल छे ? ते कहे छे ते जुदी जुदी रीते आवेली पीडाओ सारी रीते सहेवानो उपाय न जाणवाथी, तथा सारीरीते सहे- वानुं फळ न जाणतो होवाथी तेने ते पीडा सहेवी मुझ्केल छे, पछी आतंक पीडाथी पीडाइ आकूळ बनेलो एषणाशुद्धिने पण त्यजी दे, प्राणीने थतुं दुःख पण विसरी जाव वारु (वचन) रुप कंटकथी मेरायलो अंदर पण क्रोध करीने बळे पण आवी उत्तम मावना न भावे के, आ पीडाओ मारा कर्मना विपाको उदयमां आच्याथी थइ छे पण, बीजो माणीतो. तेमां निमित्त मात्र छे. वळी आत्मद्रोह्नममर्यादं मूढमुज्झितसत्पथम् । सुतरामनुकम्पेत, नरकार्झिष्मदिन्धनम् ॥ १॥	

আৰা০	आवी उत्तम भावनाओ आगमने न भणवाथी आपरिमलित मतिवाळाने होती नथी. आ बतावीने गुरुमहारज झिष्योने कहे छे केः—आ एकला फरनाराने बाधा दूर करवी ग्रुइकेल होवाथी अजाणपणाथी पीडा देखवा विना मारा उपदेवथी हुं बहार न जतो	सुत्रम्
1149.311		II49,9,11
de se	ते कहे छे:-ते आचार्य महाराजनी दृष्टि जेमां होय; ते भगाणे हेय उपादेय पदार्थोमां वर्तवुं; (जेम कहे तेम करवुं;) अथवा संयममां 🕻	
	सर्वसंगथी विरति करी (ममत-त्यगी) ने संयमकृत्य करवां; तथा पुरस्करने सर्वत्र आगळ स्थापवो; अने ते ममाणे आचार्थ संबन्धी वर्तवुं; तथा आचार्यनी संज्ञा प्रमाणे आचरवुं. अर्थात् तेमनुं कहेलुं ध्यानमां लड् पछी ते प्रमाणे वर्तवुं; पण पोतानी मतिकल्पनाथी कंड पण कार्य न करे; तथा गुरुनुं निवेज्ञन ते पोतानुं करे; पटले सदा गुरुकुळ-वास सेवे; त्यां गुरुकुळमां वसतो केवो थाय ? ते	
C A	कई छे. यतनाथी विहार करनारो थायः यतनाधी पछेढणा डिकरतो प्राणीने उपमर्दन न करे. वळी, आचार्यना चित्त (अभिप्राय) प्रमाणे क्रियामां प्रवर्तेः ते. चित्तनिपाती कहेवाय छे, तथा गुरु कोइ जग्याए गया होय तो, ते तरफ ध्यान राखेः ते पंथ निर्ध्वायी	
	कदेवाय; तथा गुरुना संथारानो देखनार ते संस्तारक मलोकी. अने गुरु झुरूया दोय; तो आदार कोघे; ते विगेरे दरेक रीते गुरुनी आराधना करवाथी सदा गुरुनो आराधक बने. वळी, दरेक वखते गुरुनो अवग्रह कार्यप्रसंग सिवाय आगळपाछळ साचवे, (कार्य- प्रसंगे अवग्रद्दमां जाय, नहि तो साडात्रण द्दाथनी अंदर न जाय,) आ सूत्रथी त्रण इर्या उदेशकमां रही छे. ( तेमां इर्यासमितिनुं	
Ś	र्भ प्रसंगे अवग्रहमां जाय, नहि तो साडात्रण हाथनी अंदर न जाय,) आ सूत्रथी त्रण इर्या उद्देशकमां रही छे. ( तेमां इर्यासमितितुं 🕻	

की वर्णन छे,) वसी कोइ पण कार्यमां गुरुष मोकस्पो होब, तो भाणीओने साढात्रण हाथनी जग्यामां क्रोधतो तेने दुःख न थाय	3
ताचा॰ 🕌 तेम यतनाथी चाले बळीः— से अभिकमुमाणे पडिकममाणे संकुचमाणे पसारेमाणे विणिवद्यमाणे संपलिजमाणे एगया गुण-	र्भ सुत्रम्
६००॥ 🥻 समियस्स रीयओ कायसंफासं समणुचिन्ना एगतिया पाणा उद्दायति, इहलोगवेयणविज्ञावडियं,	🍄 ાા૬૦૦ાા
जं आउहिकयं कंमं तं परिझाय विवेगमेइ, एवं से अप्पमाएण विवेगं किटइ वेयवी ॥ सू० १५८॥ ते साधु सदा गुरूनी आहा म्माणे चालनारो होय छे, ते अभिक्रम जतो के पाछो फरतो, के हाथ पगने संकोचतो हाथ विगेरे अवयवने पसारतो, बधा अधुभ वेपारथी पाछा हटतो, होय त्यारे बरोबर रीते बधी बाजुए हाथ पग विगेर	13
ते साधु सदा गुरूनी आहा प्रमाणे चालनारो होय छे, ते अभिक्रम जतो के पछो फरतो, के हाथ पगने संकोचतो	: 6
हाथ विगेरे अवयवने पसारतो, बधा अशुभ वेपारथी पाछा हटतो, होय त्यारे बरोबर रीते बधी बाजुए हाथ पग विगेर री शरीरना अवयवोने तथा तेना स्थानोने रजोहरण विगेरेथी पूंजीने गुरुकुल्वासमां बसे, त्यां रहेनारनी विघि कहे छे	8
🕺 जमीन उपर एक उरु (जांघ) स्थापीने बीजो उंचो राखीने देसे, निश्वळ स्थाने तेम न वेसाय तो भूमि देखीने पूंजीने कुकडीन	T S
17 बेसवा प्रमाणे संकाच, अथवा जरुर पड लावा पहांजा पण कर छुबु होय; तो पण मरिसी माफक छुव. कारणक ते भारने वोज	
माणीनो भय होवाथी एक पासे सुवे, तथा हमेझां सचेतन सुवे, तेज ममाणे साधुने पासुं फेरवचुं होय तो पण देखीने पूंजीने केन्द्रे प्रज प्रमाणे क्यी कियाओ पंजी प्रपार्जीने यतनाथी करे: आ प्रमाणे अप्रपादीपणे किया करतां अवदय बनवाकाळने	
र्म प्राणीनो भय होवाथी एक पासे सुवे, तथा हमेक्स सचेतन सुवे, तंज पमाणे साधुने पासुं फेरवचुं होय तो पण देखीने पूंजीने के फेरवे एज पमाणे बधी कियाओ धुंजी पमार्जीने यतनाथी करे; आ प्रमाणे अपमादीपणे किया करतां छतां अवदय बनवाकाळने हैं छीधे शुं थाय, ते कहे छे, कदाच ते ग्रुणयुक्त साधुने अपमत्तपणे बर्धा अनुष्ठान करवा छतां, जतां आवतां संकोचतां पसारतां पाछ	, K

সাঘা৹	Į.	फरतां ममार्जन करतां कोइपण अवस्थामां पोतानी कायाना समागममां आवेला संपातिम (उडता) केटलाक जंतुओ परिताप पामे, केटलाक ग्लानी पामे, कोइनो अवयव नाज्ञ पामे, अने अंतअवस्था तो सूत्रकारज बतावे छे के, केटलाक माणथी पण दूर थाय छे,	र् सुत्रा	Ą
Ę0\$	うちょうかんちょうちょうと	केटखाक ग्लानी पामे, कोइनो अवयव नाग्न पामे, अने अंतअवस्था तो सूत्रकारज बतावे छे के, केटलाक माणथी पण दूर थाय छे, आमां कर्म संबन्धी विचित्रता छे, जैल्लेक्सी अवस्थामां रहेला साधुने मझक विगेरेना कायनो स्पर्भ थतां कोइ जंतु मरण पामे, तो पण बन्धना उपादान कारण योगना अभावथी बन्ध नथी. उपन्नांत तथा क्षीणमोह तथा संयोगी केवलिने स्थिति निमित्त 'कपायो' ना अभावथी एक समयनोज बन्ध छे. अश्रमत्त साधुने जघन्यथी अंतर्भ्रहूर्त अने उत्क्रष्टथी कोडाकोढी सागरोपमनी अंदरनो बन्ध छे, पण ममत्त साधुने अनाकुट्टीना कारणे तथा विना देखे वर्तन करवाथी कोइ प्राणीनो पोताना पग विगेरेयी स्पर्भ थतां तेने उपतापना विगेरे यतां जघन्यथी तथा उत्कुष्टवी अममत्त माफक छे, पण प्रमादना कारणे कांडक विजेष बन्ध छे. अने ते तेज भवे क्षेपाय (द्र थइ शके) छे, ते सूत्र बढेज बतावे छे. आ जन्ममांज भोगवद्युं, ते आलाकवेदन छे, तेनावढे भोगवव्रुं ते आलोकवेदनवेद्य छे, तेथी आवी पडेलुं थे आलेकवेदनवेद्य आपतित छे, तेनो भावार्थ आ छे, प्रमत्त यतिए पण जे विना इच्छाए भूल करी ते कायना संघटन बिगेरेथी कर्म बन्ध थयो, ते आ भवना अनुवन्धरूपे छे, ते भवे खेरवी झकाय तेम छे, आछाने विचेन इच्छाए भूल करी ते कायना संघटन बिगेरेथी कर्म वन्ध थयो, ते आ भवना अनुवन्धरूपे छे, ते भवे खेरवी झकाय तेम छे, आछाने विचेक करवो, मायशित ले कहे छे, आगममां कहेल कारण विना (फक्त भ्रुल्था) प्राणीने दुःख दीधुं होय, तो इ परिक्राए जाणीने विवेक करवो, मायशित ले कहे छे, आगममां कहेल कारण विना (फक्त भ्रुल्थी) प्राणीने दुःख दीधुं होय, तो इ परिक्राए जाणीने विवेक करवो, मायशित ले कु हे ते दन्न मकारतुं छे, (ने गुरु पासे लेड्रे) अथवा तेनो अभाव करे, अर्थात एतुं कृत्य करे के तेनो अभाव थाय, कर्मनो जेम अभाव याय, ते बतादे छे, 'एव'—हवे बतावे ते उपाय प्रमाणे ते कोधादिथी करेला कृत्यना विवेक माटे वेदविद् (ज्ञाता) साधु ममादने दूर करी दन्न मकारमांथी कोइ पण मकारतुं जे योगय होय, ते सम्पय अनुष्ठानबहे करीने अभाव करे अथवा तीर्यकृत		<b>a</b> ¦n
	k	ुममादन दुर करा दन्न मकारमाथा काइ पण मकारनु ज याग्य होय, ते सम्यग् अनुष्ठानवडे करीने अभाव करे अथवा तीर्थकुर 🛛		

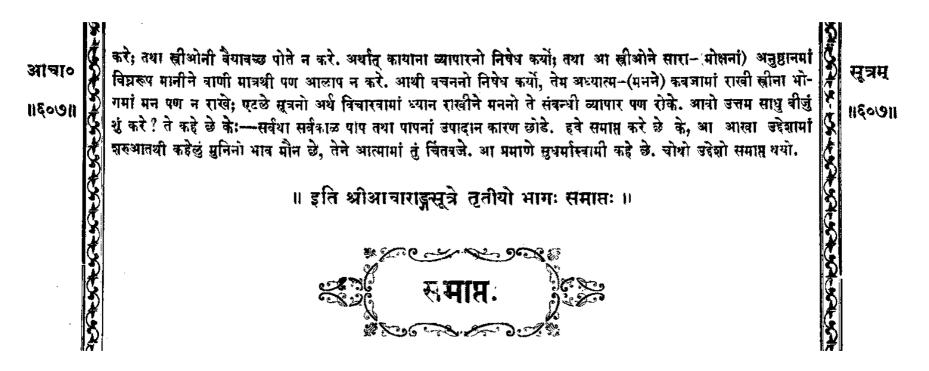
	तेज वेदविद् छे अथवा आगम जाणनारा गणधर चौद पूर्वी विगेरे म्रुनिओ अप्रमादयडे छीघ्र अभाव करे छे. इवे अममादी पं रीतनो होय छे, ते कहे छे.	केवी 🎽
আৰা০ 🕺		र्भु सुत्रम्
ાદવ્સા 🐇	से पभूयदंसी पभुयपरिक्राणे उवसंते समिए सहिए सयाजए, दहुं विडिवेएइ अ- प्पाणं किमेस जणो करिस्सइ ?, एस से परमारामो जाओ लोगंमि इत्थोओ, मुणिणा	ર્ગ <b>શહે</b> લ્સા સ
× 4	हु एयं पवेइयं, उब्बाहिजमाणे गामधम्मेहिं अवि निब्बलासए अवि ओमोयरियं कुजा अवि उड्ढं ठाणं ठाइजा अवि गामाणुगामं दूइजिजा अवि आहारं वुर्च्छि-	1000
Š	दिजा अवि चए इत्थीसु मणं, पुत्रं दंडा पच्छा फासा पुठवं फासा पच्छा दंडा, इच्चेए कलहासंगकरा भवंति, पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्ञा अणासेवणाए त्ति-	
****	बेमि, से नो काहिए नो पासणिए नो संपसारणिए नो मामए णो कयकिरिए वइग्रुत्ते अज्झप्पसंवुडे परिवजड सया पावं एयं मोणं समणुवासिजासित्तिबेमि	Ś
	(सू० १४९) ॥ ५-४ ॥ लोकसारे चतुर्थः ॥	5

আনা০	ते साधु प्रमादना विपाक विगेरेतुं अथवा अतीत अनागत वर्त्तमानना कर्मविपाकतुं प्रभूत (घणुं रद्दस्य) देखवाना स्वभाववाळो होवाथी मभूतदर्झी कहेवाय छे, पण वर्त्तमाननो स्वार्थ देखीने कांइ पण न करे, तथा सत्व [जीव समूह ] तुं रक्षण करवाना	सुत्रम
॥६०३॥	उपायमां घणुं झान घराचे, अयवा संसार अमण तथा मोक्ष मेळववानां कारण घणी रीते जाणे, माटे 'मेभूत परिज्ञानी' कहेवाय छे, अर्थात संसारतुं जेवुं खरूप होय तेवुं वधा जीवोने बतावे छे, 'किंच'-वळी कवायनो उदय न करे, तेथी अथवा इन्द्रिय अने मनने कवजामां राखवाथी 'उपज्ञांत' छे, तथा पांच समितिवडे अथवा सम्यग् रीते मोक्षमार्ग तरफ चालवाथी समित छे. तथा ज्ञान	ાદ્વ્રા
	विगेरेथी सहित छे, तथा सदा यब करवाथी सदायत छे, आ प्रमाणे अपपत्त बनीने गुरु सेवामां रहेतो, पोताना प्रमादथी पूर्वे करेलां अशुभ कृत्योनो अंत करे छे, ते साधु स्ती विगेरेना अनुकूल परिषइ आवतां शुं करे, ते कहे छे. 'दृष्ट्रा' सीओने पोताना आ- त्माने उपसर्ग करवाने आवती देसीने विचारे के, हुं सम्यग् दृष्टि छुं, तथा पंच महावतनो भार में लीघो छे, झरद ऋतुना चंद्र समान निर्मल कुलमां में जन्म लीघो छे. हुं अकार्य त्यजवा माटेज तैयार थयो छुं, ते स्तीसमूइने देखी विचारे, के आ सीओथी मारे	8
	शुं मयोजन छे ? में जीववानी आज्ञा त्यम करी छे, आ लोकतुं सुख सर्वथा छोद्धु छे, तेथी ते स्ती मने शुं उपसर्ग करवानी छे ? मारुं मन केम चलायमान करको ? अथवा विषयोतुं सुख दुःख रुपे परिणमवाथी मने आ स्तीओ शुं सुख आपवानी छे ? अथवा पुत्र कलत्र विगेरे मने काल ब्रडपक्षे, अथवा रोगो पीडको, त्यारे ते केवीरीते बचावी सकको ? अथवा आ ममाणे स्तीओना खभावने चिंतवे ते सूत्रकारज बतावे छे. के आ सीसमूह रमणता करावे माटे आराम छे, तथा परम आराम होवाथी परमाराम छे, तेषुं सुख देखाडनारी स्ती तल जाणनार ब्रानी साधुने पण तेनाहास विलास उपांग तथा आंखना कटाक्ष देखडवा विगेरे विवोकवढे ते सुंग्रवे छे, भा लोकमां	5

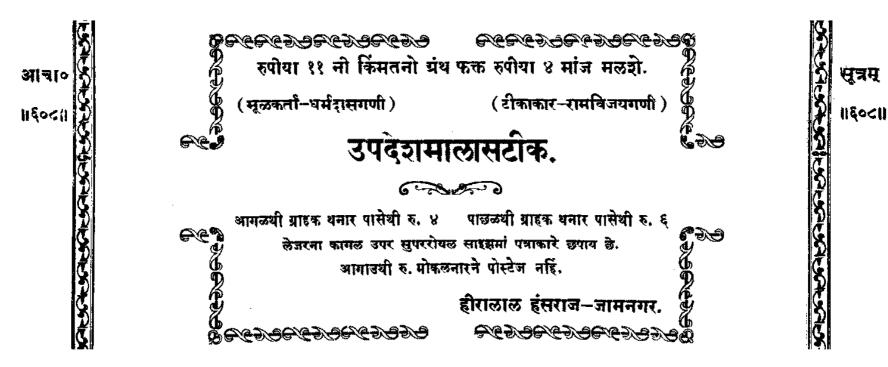
<b>आच</b> ि ॥६०२॥	जे कोइ सीसमूह छे तेने मोहरूप जाणीने तेओ पोते पुरुषने न त्यजे, ते पहेलां पोते त्यत्रवी, आ तीर्थकरे कहेलुं छे, ते बतावे छे, 'इनिना' श्री वर्धमानस्वामोने केवळझान उत्पन्न थया पछी तेमणे कहुं छे के:-सीओ भाव बन्धनरूप छे' एवं पूर्वे प्रकर्षथी कहुं छे, अने आ पण कहुं छे के अतियय मोहना उदयथी पीढायलां ने 'उद्वाध्यमान' छे मः-जाथी? डः-इन्द्रियोना ग्राम एटछे तेओ- ना धर्ममां फसतां पीढाय त्यारे गच्छमां रहेला होय तो ग्रुरु समजावे. मः-केवी रीते ? डः-ते कहे छे के तेवो साधु निर्वछ निःसार एटछे छप्ल्लुं म्रुकुं खानारो बने, अथवा निर्वळ बनीने खाय, अर्थात् घणी तपस्या करवाथी शरीर याकतां इन्द्रियोना विषयो पण शांत थइ जाय छे, कारणके आहार ओछो छेवाथी बळ ओछुं धइ जाय छे, ते बतावे छे. अवमोदरी (ओछुं लावुं ते) करे, अने जो अंतमांत खावा छतां पण मोह झांत न थाय, तो तेथी पण अस्तिग्ध आहार वाल चणा विगेरेना ३२ कोळीया मात्र खाय, तेथी पण शांत वावा छतां पण मोह झांत न थाय, तो तेथी पण अस्तिग्ध आहार वाल चणा विगेरेना ३२ कोळीया मात्र खाय, तेथी पण शांत न थाय, तो कायोत्सर्ग विगेरे काय क्छेशनो तप करे, ते बतावे छे. उर्ध्वस्थाने रहे तथा झीत अथवा उष्णता विगेरेमा (एटले ठंडमां नदी फिनारे अने उनाळामां तपेली रेतीमां) काउसग्ग करे, तेथी पण श्वांत न थाय, तो गाम गाम विचरे जो के कारण विना विहार निषेध्यो छे, छतां मोह शांत करवा रोज चाली चालीने काया यकवीने मोह दूर करे, एथी वधारे थु कहे ? अर्थात् जे कारणयी विषय इच्छा दूर थाय, तेखुं छत्य करे अने छेवटे आहार पण त्याग करे, अतिपात करे (उंचेयी पढीने मरे) उद्दन्यन करे (गळे फांसो खाय) पण सीमां मन न करे, (अपि समुखयना अर्थमां छे) सीमां जे मन गयुं, ते त्यजे, तेना परि-	57-57-57-57-57-57-57-57-57-57-57-57-57-5	सूत्रम् ॥६०४॥
	अयात ज कारणया विषय इच्छा दूर याय, तबु कृत्य कर अन छवट आहार पण त्यांग कर, आतपात कर (उचथा पढाने मरे) उद्दवन्धन करे (गळे फांसो खाय) पण स्नीमां मन न करे, (अपि समुचयना अर्थमां छे) स्नीमां जे मन गयुं, ते त्यजे, तेना परि- त्यागमां वे प्रकारना कामो (इच्छा काम मदन काम) पण दूरथी त्यजेला जाणवा. कर्षु छे के— काम जानामि ते रूपं, सकल्पात् किल जायसे । न स्वां संकल्पयिष्यामि, ततो मे न भविष्यसि ॥ १ ॥	****	

সাৰা৹		सुत्रम्
<b>ାା</b> ସ୍ ୦୯ <u>୪</u> ଶ	पक्षःपण चा माटे स्नीमां मन न करवुं ? डः-स्तीसंघमां वर्तनारो अपरमार्थ दृष्टिवाळो मथमथीज ते स्तीनो संग न छोडवा पैसो पेदा करवा खेती वेपार विगेरेनी सावद्य क्रिया करतो अगणित (अल्पंत) भूख तरस ठंड ताप विगेरेना परिषहो सहेवाना आ छोकमांज दुःखरूप दंडो सहे छे, अने ते दंडो स्त्री संवन्ध करवा पहेलांज कराय छे, (तेथी पूर्वे कखुं छे) अने स्त्री म्रहण कर्या पछी विषयना निमित्त्तथी बंधायला पापवडे नरक विगेरेनां दुःखोना स्पर्श्तो भोगववा पडरो, स्त्रीना अकार्यमां मवर्त्तेलाने पूर्वे दंड अने पछी दिषयना निमित्त्तथी बंधायला पापवडे नरक विगेरेनां दुःखोना स्पर्श्तो भोगववा पडरो, स्त्रीना अकार्यमां मवर्त्तेलाने पूर्वे दंड अने पछी दाथ पग विगेरे छेदावाना स्पर्शो छे, अथवा पूर्वे (कोइ स्त्री साथे छुपुं कुकृत्य करतां) ताडना (लाकडीनो मार) विगेरे छे अने पछी- थी स्त्रीनो संबन्ध तथा आर्लिंगन चुंबन विगेरे छे ते बतावे छे. बन्दी ए आणेल अने रोकेल राजकुमारीए गवाक्षमांथी फेंक्यो ते नीचे पडेल आवीलने छेवाथी राजपुरूषोए देखवाथी ठोक्यो, त्यारे राजकुमारीने मूर्छा धवाधी तेने देखतां इन्द्रदत्त वणिकने मथमथी दन्दा सावा पड्या, अने पाछळ्यी कन्या मळतां स्पर्श वि- गेरेतुं सुख मळ्युं, अथवा कोइने मथम सुख विगेरेना स्पर्शो छे, अने पाछळ्यी ललितांग कुमारनी माफक वीजा व्यभिचारीओने दूरख पढे छे. 'किंच' वळी आ सी संबन्धो रुन्न संग्रानो सङ्ग (संयन्ध) करावे छे, अथवा कल्प्र (काध) तथा आसङ्ग ते राग छे, ए-	(कुलन्स    <b>द्<b>र</b>]]</b>
	टे टे रागद्वेप करावनारा छे, जो एम छे तो शुं करे, ते कहे छे. ऐहिक अमुष्पिक (आ लोक परलोक) संबन्धी अपायोना कारणे सौ 🕻 संगनी प्रत्युपेक्षावडे 'आगमेचत्ति' जाणीने आत्माने आसेवन (क्रुचाल) थी रोके, आ ममाणे हुं कहुं छुं, ते तीर्धकरना बचन	

आ <b>चा</b> ० ১	ममाणे कहुं छुं स्तीसंगमां दुःख छे, माटे संग न करवो. वळी ते त्यागवानो उपाय बतावे छे. 'स' ते स्तीसंगनो त्यागी मुनि स्त्रीना कपडांनी, वेषनी तथा अणगारनी कथा न करे, आ ममाणे ते त्यजाय छे, तथा तेमने नरकमां ऌइजनारी तथा स्वर्गमोक्षमां विघ्ररूप अर्गला जेवी जाणीने ते स्त्रीनां अंगउपांगने न देखे, कारण के स्त्रीओने देखतां तेना	भू भू सुत्रम्
11408(1)	कटाक्षो महान अनर्थने माटे थाय छे. कहुं छे केः— सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति पुरुषस्तावदेवेन्द्रियाणां, रुजां तावद्विधत्ते विनयमपि समालम्बते तावदेव ॥	ર્ચ ાહ્વ્હા જ
Z		7



For Private and Personal Use Only



Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

The second of the second se

For Private and Personal Use Only

